मूसा की पञ्च पुस्तक

PENTATEUCH

IN

HINDÍ.

Society of Inquiry.
Sept 1852.

मूसा की पांच पुस्तकें

हिन्दी में

अमेरिकन बैबल सुसैटी के लिये छापा किया गया

THE

PENTATEUCH

IN

HINDI

PRINTED FOR THE AMERICAN BIBLE SOCIETY.

ALLAHABAD:
PRINTED AT THE PRESBYTERIAN MISSION PRESS

व्यवस्था

या

मूसा की पञ्च पुस्तक

हिन्दी में

आमेरिकन बैबल सुसैटी के लिये छापा किया गया ।

THE

PENTATEUCH

IN

HINDÍ.

PRINTED FOR THE AMERICAN BIBLE SOCIETY.

ALLAHABAD:
PRINTED AT THE PRESBYTERIAN MISSION PRESS.
Rev. Jos. Warren, *Superintendent.*
1851.

उत्पत्ति की पुस्तक।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

आरंभ में ईश्वर ने आकाश और पृथिवी को सिरजा॥ २।
और पृथिवी बेडौल और सूनी थी और गहिराव पर
अंधियारा था और ईश्वर का आत्मा जल के ऊपर
डोलता था॥
३ और ईश्वर ने कहा कि उंजियाला होवे और उंजियाला हो
गया॥ ४। और ईश्वर ने उंजियाले को देखा कि अच्छा है और ईश्वर
ने उंजियाले को अंधियारे से बिभाग किया॥ ५। और ईश्वर ने उंजि-
याले को दिन और अंधियारे को रात कहा और सांझ और बिहान
पहिला दिन हुआ॥ ६। और ईश्वर ने कहा कि पानियों के मध्य में
आकाश होवे और पानियों को पानियों से बिभाग करे॥ ७। तब
ईश्वर ने आकाश को वनाया और आकाश के नीचे के पानियों को
आकाश के ऊपर के पानियों से बिभाग किया और ऐसा हो गया॥ ८।
और ईश्वर ने आकाश को स्वर्ग कहा और सांझ और बिहान दूसरा
दिन हुआ॥ ९। और ईश्वर ने कहा कि स्वर्ग के तले के पानी एकही
स्थान में एकट्ठे होवें और सूखी दिखाई देवे और ऐसा हो गया॥ १०।
और ईश्वर ने सूखी को भूमि कहा और एकट्ठे किये गये पानियों को
समुद्र कहा और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है॥ ११। और ईश्वर ने
कहा कि भूमि घास को और साग पात को जिन में बीज होवें और

फलवंत पेड़ को जो अपनी अपनी भांति के समान फलें जिन के बीज
भूमि पर उन में होवें उगावे और ऐसा हो गया॥ १२। और भूमि ने
घास और साग पात को अपनी अपनी भांति के समान जिन में बीज होवें
और फलवंत पेड़ को जिस का बीज उस में होवे उस की भांति के समान
उगाया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है॥ १३। और सांझ और
बिहान तीसरा दिन हुआ॥ १४। और ईश्वर ने कहा कि दिन और
रात में बिभाग करने को स्वर्ग के आकाश में ज्योति होवें और वे चिन्हों
और ऋतुन और दिनों और बर्षों के कारण होवें॥ १५। और वे पृथिवी
को उंजियाली करने को स्वर्ग के आकाश में ज्योति के लिये होवें और
ऐसा हो गया॥ १६। और ईश्वर ने दो बड़ी ज्योति बनाईं एक बड़ी
ज्योति दिन पर प्रभुता के लिये और उस्से छोटी ज्योति रात पर
प्रभुता के लिये और तारों को भी॥ १७। और ईश्वर ने उन्हें स्वर्ग के
आकाश में रक्खा कि पृथिवी पर उंजियाला करें। १८। और दिन पर
और रात पर प्रभुता करें और उंजियाले को अंधियारे से बिभाग करें
और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है॥ १९। और सांझ और बिहान
चौथा दिन हुआ॥ २०। और ईश्वर ने कहा कि पानी जीवधारी
रेंगवैयों की बहुताई से भर जाय और पच्ची पृथिवी के ऊपर स्वर्ग के
आकाश पर उड़ें॥ २१। सो ईश्वर ने बड़ी बड़ी मछलियों और हर एक
रेंगवैये जीवधारी को जिन से पानी भरा है उन की भांति भांति के
समान और हर एक पच्ची को उस की भांति के समान बहुताई से उत्पन्न
किया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है॥ २२। और ईश्वर ने उन को
आशीष देके कहा कि फलमान होओ और बढ़ो और समुद्रों के पानियों
में भर जाओ और पच्ची पृथिवी पर बढ़ें। २३। और सांझ और
बिहान पांचवां दिन हुआ। २४। और ईश्वर ने कहा कि पृथिवी हर
एक जीवधारी को उस की भांति भांति के समान अर्थात् ढोर और रेंग-
वैये जंतु को और बनैले पशु को उस की भांति के समान उपजावे और
ऐसा हो गया॥ २५। और ईश्वर ने बनैले पशु को उस की भांति के
समान और ढोर को उस की भांति के समान और पृथिवी के हर एक
रेंगवैये जंतु को उस की भांति के समान बनाया और ईश्वर ने देखा कि

अच्छा है॥ २६। तब ईश्वर ने कहा कि हम मनुष्य को अपने स्वरूप में
अपने समान बनावें और वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों
और ढोर और सारी पृथिवी पर और पृथिवी पर के हर एक रेंगवैये
जंतु पर प्रधान होवें॥ २७। तब ईश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में
उत्पन्न किया उस ने उसे ईश्वर के स्वरूप में उत्पन्न किया उस ने उन्हें नर
और नारी बनाया॥ २८। और ईश्वर ने उन्हें आशीष दिया और
ईश्वर ने उन्हें कहा कि फलवान होओ और बढ़ो और पृथिवी में भर
जाओ और उसे बश में करो और समुद्र की मछलियों और आकाश के
पक्षियों और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जीवधारी पर प्रभुता करो।
२९ और ईश्वर ने कहा लो मैं ने हर एक बीजधारी साग पात को जो
सारी पृथिवी पर है और हर एक पेड़ को जिस में फल है जो बीज उप-
जावता है तुम्हें दिया यह तुम्हारे खाने के लिये होगा॥ ३०। और
पृथिवी के हर एक पशु को और आकाश के हर एक पक्षी को और
पृथिवी के हर एक रेंगवैये जीवधारी को हर एक प्रकार की हरियाली
भी खाने को दिई और ऐसा हुआ॥ ३१। फिर परमेश्वर ने हर एक
वस्तु पर जिसे उस ने बनाया था दृष्टि किई और देखा कि बहुत अच्छी
है और सांझ और बिहान छठवां दिन हुआ॥

२ दूसरा पर्ब्ब॥

यों स्वर्ग और पृथिवी और उन की सारी सेना बन गई॥ २। और
ईश्वर ने अपने कार्य को जो वुह करता था सातवें दिन समाप्त
किया और उस ने सातवें दिन में अपने सारे कार्य से जो उस ने किया
था बिश्राम किया॥ ३। और ईश्वर ने सातवें दिन को आशीष दिई
और उसे पवित्र ठहराया इस कारण कि उसी में उस ने अपने सारे कार्य
से जो ईश्वर ने उत्पन्न किया और बनाया बिश्राम किया॥ ४। यह स्वर्ग
और पृथिवी की उत्पत्ति है जब वे उत्पन्न हुये जिस दिन परमेश्वर
ईश्वर ने स्वर्ग और पृथिवी को बनाया॥ ५। और खेत का कोई साग
पात अब लों पृथिवी पर न था और खेत की कोई हरियाली अब लों
न उगी थी क्योंकि परमेश्वर ईश्वर ने पृथिवी पर मेंह न बर्साया था,

ओर कोई मनुष्य न था कि भूमि की खेती करे॥ ६। और पृथिवी
से कुहासा उठता था और समस्त भूमि को सींचता था॥ ७। तब
परमेश्वर ईश्वर ने भूमि की धूल से मनुष्य को बनाया और उस के
नथुनों में जीवन का श्वास फूंका और मनुष्य जीवता प्राण हुआ।
८। और परमेश्वर ईश्वर ने अदन में पूरब की ओर एक बारी लगाई
और उस मनुष्य को जिसे उस ने बनाया था उस में रक्खा॥ ९। और
परमेश्वर ईश्वर ने हर एक पेड़ को जो देखने में सुन्दर और खाने में
अच्छा है और उस बारी के मध्य में जीवन का पेड़ और भले बुरे के ज्ञान
का पेड़ भूमि से उगाया॥ १०। और उस बारी को सींचने के लिये
अदन से एक नदी निकली और वहां से विभाग होके चार मोहाने हुए॥
११। पहिली का नाम फ़ैसून जो हवीलः की सारी भूमि को घेरती है
जहां सोना होता है॥ १२। उस भूमि का सोना चोखा है वहां मोती
और बिल्लौर होता है॥ १३। और दूसरी नदी का नाम जैहून है जो
कूश की सारी भूमि को घेरती है॥ १४। और तीसरी नदी का नाम
दिजलः है जो अस्सूर की पूरब ओर जाती है और चौथी नदी फुरात
है॥ १५। और परमेश्वर ईश्वर ने उस मनुष्य को लेके अदन की बारी
में रक्खा जिसतें उसे सुधारे और उस की रखवाली करे॥ १६। और
परमेश्वर ईश्वर ने मनुष्य को आज्ञा देके कहा कि तू इस बारी के हर
एक पेड़ का फल खाया कर॥ १७। परन्तु भले और बुरे के ज्ञान के पेड़
से मत खाना क्योंकि जिस दिन तू उस्से खायगा तू निश्चय मरेगा॥ १८
और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि मनुष्य को अकेला रहना अच्छा नहीं
मैं उस के लिये एक उपकारिणी उस के समान बनाऊंगा॥ १९। और
परमेश्वर ईश्वर भूमि से हर एक बनैले पशु और आकाश के सारे पक्षी
बनाकर उन को मनुष्य के पास लाया कि देखे कि उन के क्या क्या नाम
रखता है और जो कुछ कि मनुष्य ने हर एक जीते जंतु को कहा वही
उस का नाम हुआ॥ २०। और मनुष्य ने हर एक ढोर और आकाश
के पक्षी और हर एक बनैले पशु का नाम रक्खा पर आदम के लिये उस
के समान कोई उपकारिणी न मिली॥ २१। और परमेश्वर ईश्वर ने
मनुष्य को बड़ी नीन्द में डाला और वुह सो गया तब उस ने उस की

पसुलियों में से एक निकाली और उस की संती मांस भर दिया॥ २२
और परमेश्वर ईश्वर ने मनुष्य की उस पसुली से जो उस ने लिई थी एक
नारी बनाई और उसे नर पास लाया॥ २३। तब नर बोला यह तो
मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस वुह नारी कहलावेगी
क्योंकि यह नर से निकाली गई॥ २४। इस लिये मनुष्य अपने माता
पिता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक मांस
होंगे॥ २५ और मनुष्य और उस की पत्नी दोनों के दोनों नग्न थे और
लज्जित न थे॥

३ तीसरा पर्ब्ब ।

अब सर्प्प भूमि के हर एक पशु से जिसे परमेश्वर ईश्वर ने बनाया
था धूर्त्त था और उस ने स्त्री से कहा क्या निश्चय ईश्वर ने कहा
है कि तुम इस बारी के हर एक पेड़ से न खाना?॥ २। स्त्री ने सर्प्प से
कहा कि हम तो इस बारी के पेड़ों का फल खाते हैं॥ ३। परन्तु उस
पेड़ का फल जो बारी के बीच में है ईश्वर ने कहा है कि तुम उस्से न
खाना और न छूना न हो कि मर जाओ॥ ४। तब सर्प्प ने स्त्री से कहा
कि तुम निश्चय न मरोगे॥ ५। क्योंकि ईश्वर जानता है कि जिस दिन
तुम उस्से खाओगे तुम्हारी आंखें खुल जायेंगी और तुम भले और बुरे
की पहिचान में ईश्वर के समान हो जाओगे॥ ६। और जब स्त्री ने
देखा कि वुह पेड़ खाने में सुस्वाद और दृष्टि में सुन्दर और बुद्धि देने के
योग्य है तो उस के फल में से लिया और खाया और अपने पति को भी
दिया और उस ने खाया॥ ७। तब उन दोनों की आंखें खुल गईं और
वे जान गये कि हम नंगे हैं सो उन्हों ने गूलर के पत्तों को मिला के सीआ
और अपने लिये ओढ़ना बनाया॥ ८। और दिन के ठंढे में उन्हों ने
परमेश्वर ईश्वर का शब्द जो बारी में चलता था सुना तब मनुष्य और उस
की पत्नी ने अपने को परमेश्वर ईश्वर के आगे से बारी के पेड़ों में
छिपाया॥ ९। तब परमेश्वर ईश्वर ने मनुष्य को पुकारा और कहा कि
तू कहां है॥ १०। वुह बोला कि मैं ने तेरा शब्द बारी में सुना और
डरा क्योंकि मै नंगा था इस कारण मैं ने अपने को छिपाया॥ ११।

और उस ने कहा कि किस ने तुझे जताया कि तू नंगा है क्या तू ने उस पेड़
से खाया जो मैं ने तुझे खाने से बरजा था॥ १२। और मनुष्य ने कहा
कि इस स्त्री ने जो तू ने मेरे संग रक्खी मुझे उस पेड़ से दिया और मैं ने
खाया॥ १३। तब परमेश्वर ईश्वर ने उस स्त्री से कहा कि यह तू ने
क्या किया है स्त्री बोली कि सर्प्प ने मुझे बहकाया और मैं ने खाया॥
१४। तब परमेश्वर ईश्वर ने सर्प्प से कहा कि जो तू ने यह किया है इस
कारण तू सारे ढोर और हर एक बन के पशुन से अधिक स्रापित होगा
तू अपने पेट के बल चलेगा और अपने जीवन भर धूल खाया करेगा॥
१५। और मैं तुझ में और स्त्री में और तेरे बंश और उस के बंश में
बैर डालेंगा वुह तेरे सिर को कुचिलेगा और तू उस की एड़ी को कुचि-
लेगा॥ १६। और उस ने स्त्री को कहा कि मैं तेरी पीड़ा और गर्भ
धारण को बहुत बढाऊंगा तू पीड़ा से बालक जनेगी और तेरी इच्छा
तेरे पति पर होगी और वुह तुझ पर प्रभुता करेगा॥ १७। और
उस ने आदम से कहा कि तू ने जो अपनी पत्नी का शब्द माना है और
जिस पेड़ का मैं ने तुझे खाने से बरजा था तू ने खाया है इस कारण
भूमि तेरे लिये स्रापित है अपने जीवन भर तू उस्से पीड़ा के साथ
खायगा॥ १८। वुह कांटे और ऊंटकटारे तेरे लिये उगायेगी और तू
खेत का साग पात खायगा॥ १९। अपने मुंह के पसीने से तू रोटी
खायगा जब लों तू भूमि में फिर न मिल जाय क्योंकि तू उस्से निकाला
गया इस लिये कि तू धूल है और धूल में फिर जायगा॥ २०। और
आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव: रक्खा इस कारण कि वुह समस्त
जीवतों की माता थी॥ २१। और परमेश्वर ईश्वर ने आदम और
उस की पत्नी के लिये चमड़े के ओढ़ने बनाये और उन्हें पहिनाये॥ २२।
और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि देखो मनुष्य भले बुरे के जान्ने में हम में से
एक की नाईं हुआ और अब ऐसा न होवे कि वुह अपना हाथ डाले और
जीवन के पेड़ में से भी लेकर खावे और अमर हो जाय॥ २३। इस
लिये परमेश्वर ईश्वर ने उस को अदन की बारी से बाहर किया जिसतें
वुह भूमि की किसनई करे जिस्से वुह लिया गया था॥ २४। सो उस
ने मनुष्य को निकाल दिया और अदन की बारी की पूर्ब ओर करो-

बीम ठहराये और चमकते हुए खड्ग को जो चारों ओर घूमता था जिसतें जीवन के पेड़ के मार्ग की रखवाली करें।

४ चौथा पर्ब्ब।

और आदम ने अपनी पत्नी हवः को ग्रहण किया और वुह गर्भिणी हुई और उस्से क़ाइन उत्पन्न हुआ और बोली कि मैं ने परमेश्वर से एक पुरुष पाया॥ २। और फिर वुह उस के भाई हाबील को जनी और हाबील भेड़ों का चरवाहा हुआ परन्तु क़ाइन किसनई करता था॥ ३। और कितने दिनों के पीछे यों हुआ कि क़ाइन भूमि के फलों में से परमेश्वर के लिये भेंट लाया॥ ४। और हाबील भी अपनी झुंड में से पहिलौंठी और मोटी मोटी लाया और परमेश्वर ने हाबील का और उस की भेंट का आदर किया॥ ५। परन्तु क़ाइन का और उस की भेंट का आदर न किया इस लिये क़ाइन अति कोपित हुआ और अपना मुंह फुलाया॥ ६। तब परमेश्वर ने क़ाइन से कहा तू क्यों क्रुद्ध है और तेरा मुंह क्यों फूल गया॥ ७। यदि तू भला करे तो क्या तू ग्राह्य न होगा और यदि तू भला न करे तो पाप द्वार पर है और वुह तेरे वश में होगा और तू उस पर प्रभुता करेगा॥ ८। तब क़ाइन ने अपने भाई हाबील से बातें किईं और यों हुआ कि जब वे खेत में थे तब क़ाइन अपने भाई हाबील पर झपटा और उसे घात किया॥ ९। तब परमेश्वर ने क़ाइन से कहा तेरा भाई हाबील कहां है वुह बोला मैं नहीं जानता क्या मैं अपने भाई का रखवाल हूं॥ १०। तब उस ने कहा तू ने क्या किया तेरे भाई के लोहू का शब्द भूमि से मुझे पुकारता है॥ ११। और अब तू पृथिवी से स्रापित है जिस ने तेरे भाई का लोहू तेरे हाथ से लेने को अपना मुंह खोला है॥ १२। जब तू किसनई करेगा तो वुह तेरे वश में न होगी तू पृथिवी पर भगोड़ा और बहेतू रहेगा॥ १३। तब क़ाइन ने परमेश्वर से कहा कि मेरा दण्ड मेरे सहाव से अधिक है॥ १४। देख तू ने आज देश में से मुझे खदेर दिया है और मैं तेरे आगे से गुप्त होऊंगा और मैं पृथिवी पर भगोड़ा और बहेतू होऊंगा और ऐसा होगा कि जो कोई मुझे पावेगा मार डालेगा॥ १५। तब

परमेश्वर ने उसे कहा इस लिये जो कोई काइन को मार डालेगा तो
उस्से सात गुन पलटा लिया जायगा और परमेश्वर ने काइन पर एक
चिह्न रक्खा न हो कि कोई उसे पाके मार डाले॥ १६। तब काइन
परमेश्वर के आगे से निकल गया और अदन की पूर्ब और नूद की
भूमि में जा रहा॥ १७। और काइन ने अपनी पत्नी को ग्रहण
किया और वुह गर्भिणी हुई और उस्से हनूक उत्पन्न हुआ तब उसने एक
नगर बनाया और अपने बेटे हनूक का नाम उस पर रक्खा॥ १८।
और हनूक से ईराद उत्पन्न हुआ और ईराद से मह्नयाएल और मह्नया-
एल से मतूसाएल और मतूसाएल से लमक उत्पन्न हुआ॥ १९। और
लमक ने दो पत्नियां किईं पहिली का नाम अदः और दूसरी का नाम
ज़िल्लः था॥ २०। और अदः से याबल उत्पन्न हुआ जो तंबूओं के
निवासियों और ढोर के चरवाहों का पिता था॥ २१। और उस के
भाई का नाम यूबल था वुह बीन और अरगन के सारे बजनियों का
पिता था॥ २२। और ज़िल्लः से तूबलकाइन उत्पन्न हुआ जो ठठेरों
और लोहारों का शिक्षक था और तूबलकाइन की बहिन नअमः थी॥
२३। और लमक ने अपनी पत्नी अदः और ज़िल्लः से कहा कि हे पत्नियों
मेरा शब्द सुनो और मेरे बचन पर कान धरो क्योंकि मैं ने एक पुरुष को
अपने घाव के लिये और एक तरुण को अपने दुःख के लिये मार डाला॥
२४। यदि काइन सात गुन प्रतिफल लेवे तो लमक सतहत्तर गुन॥

२५। और आदम ने अपनी पत्नी को फिर ग्रहण किया और वुह बेटा
जनी उस का नाम सेत रक्खा क्योंकि ईश्वर ने हाबील की संती जिस को
काइन ने मार डाला मेरे लिये दूसरा बंश ठहराया॥ २६। और सेत
को भी एक बेटा उत्पन्न हुआ और उस ने उस का नाम अनूस रक्खा उस
समय से लोग परमेश्वर का नाम लेने लगे॥

५ पांचवां पर्ब्ब।

आदम की बंशावली का पत्र यह है जिस दिन में ईश्वर ने मनुष्य
को उत्पन्न किया उस ने उसे ईश्वर के स्वरूप में बनाया॥ २।
उस ने उन्हें नर और नारी बनाया और जिस दिन वे सिरजे गये उस ने

उन्हें आशीष दिया और उन का नाम मनुष्य रक्खा॥ ३। और एक सौ तीस बरस की बय में आदम से उसी के स्वरूप और रूप में एक बेटा उत्पन्न हुआ और उस का नाम सेत रक्खा॥ ४। और सेत की उत्पत्ति के पीछे आदम की बय आठ सौ बरस की हुई और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ ५। और आदम की सारी बय नव सौ तीस बरस की हुई और वुह मर गया॥ ६। और सेत जब एक सौ पांच बरस का हुआ तब उस्से अनूस उत्पन्न हुआ॥ ७। और अनूस की उत्पत्ति के पीछे सेत आठ सौ सात बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ ८। और सेत की सारी बय नव सौ बारह बरस की हुई और वुह मर गया॥ ९। और अनूस जब नब्बे बरस का हुआ तब उस्से क़ीनान उत्पन्न हुआ॥ १०॥ और क़ीनान की उत्पत्ति के पीछे अनूस आठ सौ पंद्रह बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ ११। और अनूस की सारी बय नव सौ पांच बरस की हुई और वुह मर गया॥ १२। और क़ीनान सत्तर बरस का हुआ और उस्से महललिएल उत्पन्न हुआ॥ १३। और महललिएल की उत्पत्ति के पीछे क़ीनान आठ सौ चालीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ १४। और क़ीनान की सारी बय नव सौ दस बरस की हुई और वुह मर गया॥ १५। और महललिएल जब पैंसठ बरस का हुआ तब उस्से यिरद उत्पन्न हुआ॥ १६। और महललिएल यिरद की उत्पत्ति के पीछे आठ सौ तीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ १७। और महललिएल की सारी बय आठ सौ पंचानवे बरस की हुई और वुह मर गया॥ १८। जब यिरद एक सौ बासठ बरस का हुआ तब उस्से हनूक उत्पन्न हुआ॥ १९। और हनूक की उत्पत्ति के पीछे यिरद आठ सौ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २०। और यिरद की सारी बय नव सौ बासठ बरस की हुई और वुह मर गया॥ २१। जब हनूक पैंसठ बरस का हुआ तो उस्से मतूसिलह उत्पन्न हुआ॥ २२। और हनूक मतूसिलह की उत्पत्ति के पीछे तीन सौ बरस लों ईश्वर के साथ साथ चला और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २३। और हनूक की सारी बय तीन सौ पैंसठ बरस की हुई॥ २४। और हनूक ईश्वर के साथ साथ चलता था और वुह न मिला

क्योंकि ईश्वर ने उसे लेलिया॥ २५। और जब मतूसिलह एक सौ सतासी बरस का हुआ तब उस्से लमक उत्पन्न हुआ॥ २६। और लमक की उत्पत्ति के पीछे मतूसिलह सात सौ बयासी बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २७। और मतूसिलह की सारी बय नव सौ उनहत्तर बरस की हुई और वुह मर गया॥ २८। और लमक जब एक सौ बयासी बरस का हुआ तब उस का एक बेटा उत्पन्न हुआ॥ २९। और उस ने उस का नाम नूह रक्खा और कहा कि यह हमारे हाथों के परिश्रम और कार्य के बिषय में जो पृथिवी के कारण से हैं जिस पर परमेश्वर ने स्राप दिया है हमें शांत देगा॥ ३०। और नूह की उत्पत्ति के पीछे लमक पांच सौ पंचानवे बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ ३१। और लमक की सारी बय सात सौ सतहत्तर बरस की हुई और वुह मर गया॥ ३२। और नूह जब पांच सौ बरस का हुआ तब नूह से सिम और हाम और याफत उत्पन्न हुए।

६ छठवां पर्ब्ब।

और यों हुआ कि जब मनुष्य पृथिवी पर बढ़ने लगे और उन से बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २। तो ईश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा कि वे सुंदरी हैं और उन में से जिन्हें उन्हों ने चाहा उन्हें ब्याहा॥ ३। और परमेश्वर ने कहा कि मेरा आत्मा मनुष्य में उन के अपराध के कारण सदा लों न्याय न करेगा वुह मांस है और उस के दिन एक सौ बीस बरस के होंगे॥ ४। और उन दिनों में पृथिवी पर दानव थे और उस के पीछे जब ईश्वर के पुत्र मनुष्यों की पुत्रियों से मिले तो उन से बालक उत्पन्न हुए जो बलवान हुए जो आगे से नामी थे॥ ५। और ईश्वर ने देखा कि मनुष्य की दुष्टता पृथिवी पर बहुत हुई और उन के मन की चिंता और भावना प्रतिदिन केवल बुरी होती हैं॥ ६। तब मनुष्य को पृथिवी पर उत्पन्न करने से परमेश्वर पछताया और उसे अति शोक हुआ॥ ७। तब परमेश्वर ने कहा कि मनुष्य को जिसे मैं ने उत्पन्न किया मनुष्य से लेके पशु लों और रेंगवैयों को और आकाश के पक्षियों को पृथिवी पर से नष्ट करूंगा क्योंकि उन्हें बनाने से मैं पछताता हूं॥

८। पर नूह ने परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह पाया॥ ९। नूह की बंशावली यह है कि नूह अपने समय में धर्म्मी और सिद्ध पुरुष था और ईश्वर के साथ साथ चलता था॥ १०। और नूह से तीन बेटे सिम और हाम और याफ़त उत्पन्न हुए॥ ११। और पृथिवी ईश्वर के आगे बिगड़ गई थी और पृथिवी अंधेर से भरपूर हुई॥ १२। और ईश्वर ने पृथिवी पर दृष्टि किई और क्या देखता है कि वुह बिगड़ गई है क्योंकि सारे शरीर ने पृथिवी पर अपनी चाल को बिगाड़ दिया था॥ १३। और ईश्वर ने नूह से कहा कि सारे शरीर का अंत मेरे आगे आ पहुंचा है क्योंकि उन से पृथिवी अंधेर से भर गई है और देख मैं उन्हें पृथिवी समेत नष्ट करूंगा॥ १४। तू गोफर लकड़ी की अपने लिये एक नाव बना और उस नाव में कोठरियां और उस के बाहर भीतर राल लगा॥ १५। और उसे इस डौल की बना उस नाव की लंबाई तीन सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की होवे॥ १६। उस नाव में एक खिड़की बना और ऊपर ऊपर उसे हाथ भर में समाप्त कर और उस के अलंग में द्वार बना और उस में नीचे की और दूसरी और तीसरी अटारी बना॥ १७। और देख कि सारे शरीर को जिन में जीवन का श्वास है आकाश के तले से नाश करने को मैं अर्थात् मैं ही बाढ़ के पानी पृथिवी पर लाता हूं और पृथिवी पर हर एक वस्तु नष्ट हो जायगी॥ १८। परन्तु मैं तुझ से अपनी बाचा स्थिर करूंगा तू नाव में जाना तू और तेरे बेटे और तेरी पत्नी और तेरे बेटों की पत्नियां तेरे साथ॥ १९। और सारे शरीरों में से जीवता जंतु दो दो अपने साथ नाव में लेना जिसतें वे तेरे साथ जीते रहें वे नर और नारी होवें॥ २०। पंछी में से उस के भांति भांति के और ढोर में से उस के भांति भांति के और पृथिवी के हर एक रेंगवैये में से भांति भांति के हर एक में से दो दो तुझ पास आवें जिसतें जीते रहें॥ २१। और तू अपने लिये खाने को सब सामग्री अपने पास एकट्ठा कर वुह तुम्हारे और उन के लिये भोजन होगा सो ईश्वर की सारी आज्ञा के समान नूह ने किया।

७ सातवां पर्ब्ब ।

और परमेश्वर ने नूह से कहा कि तू अपने सारे घराने समेत नाव में
प्रवेश कर क्योंकि इस पीढ़ी में मैं ने अपने आगे तुझे धर्मी
देखा है॥ २। हर एक पवित्र पशु में से सात सात नर और उस की जोड़ी
और पशु में से जो पवित्र नहीं दो दो नर और उस की जोड़ी अपने साथ
लेना॥ ३। और आकाश के पक्षियों से भी सात सात नर और उस की
जोड़ी जिसतें सारी पृथिवी पर बंश जीता रक्खे॥ ४। क्योंकि मैं सात
दिन के पीछे पृथिवी पर चालीस रात दिन मेंह बरसाऊंगा और हर एक
जीवते जंतु को जिसे मैं ने बनाया है पृथिवी पर से मिटा देऊंगा॥ ५।
और नूह ने परमेश्वर की सारी आज्ञा के समान किया॥ ६। और जब
पानियों का बाढ़ पृथिवी पर हुआ नूह छः सौ बरस का था॥

७। तब नूह और उस के बेटे और उस की पत्नी और उस के बेटों की
पत्नियां पानियों के बाढ़ के कारण से उस के संग नाव पर चढ़ीं॥ ८।
पवित्र पशुन से और उन में से जो पवित्र नहीं हैं और पंछियों से और
पृथिवी के हर एक रेंगवैयों में से॥ ९। दो दो नर और उस की जोड़ी जैसा
ईश्वर ने नूह को आज्ञा किई थी नाव में गए॥ १०। और जब सात दिन
बीत गये तो यूं हुआ कि बाढ़ के पानी पृथिवी पर हुए॥ ११। और
नूह की बय के छः सौ बरस के दूसरे मास की सत्तरहवीं तिथि में उसी दिन
महा गहिरापे के सारे सोते फूट निकले और स्वर्ग के द्वार खुल गये॥
१२। और पृथिवी पर चालीस रात दिन मेंह बरसा॥ १३। उसी
दिन नूह और नूह के बेटे सिम और हाम और याफत और नूह की
पत्नी और उस के बेटों की तीनों पत्नियां उस के साथ नाव में गईं॥ १४।
वे और हर एक पशु अपनी अपनी भांति के समान और सारे ढोर और
भूमि पर के हर एक रेंगवैये जंतु अपनी अपनी भांति के समान और हर
एक पंछी अपनी अपनी भांति के समान हर एक भांति की हर एक
चिड़ियां॥ १५। और वे नूह के पास सारे शरीरों में से दो दो जिन
में जीवन का श्वास था नाव में गये॥ १६। और जिन्हों ने प्रवेश किया
सो सारे शरीरों में से जोड़ा जोड़ा थे जैसा कि ईश्वर ने उसे आज्ञा

किई थी और परमेश्वर ने उस के पीछे बंद किया॥ १७। और बाढ़ का पानी चालीस दिन ताईं पृथिवी पर हुआ और पानी बढ़ गया और नाव को उभार लिया और वुह भूमि पर से ऊपर उठ गई॥ १८। और जब पानी बढ़े और पृथिवी पर बहुताई से बढ़ गए तब नौका पानी के ऊपर उतराने लगी॥ १९। और जब कि पानी पृथिवी पर अत्यंत बढ़ गये तो सारे ऊंचे पहाड़ जो सारे आकाश के नीचे थे ढंप गये॥ २०। और ढंपे हुए पहाड़ों पर पानी पंद्रह हाथ बढ़ गये॥ २१। और सारे शरीर जो पृथिवी पर चलते थे पंछी और ढोर और पशु और भूमि पर के हर एक रेंगवैये जंतु और हर एक मनुष्य मर गये॥ २२। और सब जिन के नथुनों में जीवन का श्वास था और सब जो सूखी पर थे मर गये॥ २३। और हर एक जीवता जंतु जो पृथिवी पर था मनुष्य से लेके ढोर और कीड़े मकोड़े और आकाश के पंछियों लों नष्ट हुए केवल नूह और जो उस के साथ नौका में थे बच रहे॥ २४। और पानी डेढ़ सौ दिन लों पृथिवी पर बढ़ते गये।

८ आठवां पर्ब्ब।

और ईश्वर ने नूह को और हर एक जीवते जंतु को और सारे ढोर को जो उस के संग नाव में थे स्मरण किया और ईश्वर ने पृथिवी पर एक पवन बहाया और जल ठहर गये॥ २। और गहिराव के सोते भी और आकाश के झरोखे बंद हो गये और आकाश से मेंह थम गया॥ ३। और जल पृथिवी पर से घटे चले जाते थे और डेढ़ सौ दिनों के बीते पर जल घट गये॥ ४। और सातवें मास की सत्तरह तिथि में नौका अरारात के पहाड़ों पर टिक गई॥ ५। और जल दसवें मास लों घटते गये और दसवें मास के पहिले दिन पहाड़ों की चोटियां दिखाई दिईं॥ ६। और चालीस दिन के पीछे यूं हुआ की नूह ने अपने बनाये हुए नाव के झरोखे को खोला॥ ७। और उस ने एक काग को उड़ा दिया और जब लों पृथिवी पर के जल सूख न गये वुह आया जाया करता था॥ ८। फेर उस ने अपने पास से एक पंडुकी को छोड़ दिया जिसतें जाने कि पानी भूमि पर से घट गये अथवा नहीं॥

९। परन्तु उस पंडुकी ने अपना चंगुल टिकने को ठिकाना न पाया और
वुह उस के पास नौका पर फिर आई क्योंकि जल सारी पृथिवी पर था
तब उस ने अपना हाथ बढ़ाके उसे लेलिया और अपने पास नाव में
लेलिया॥ १०। फिर वुह और सात दिन ठहर गया और फिर उस ने
उस पंडुकी को नाव से उड़ा दिया॥ ११। और वुह पंडुकी सांझ को
उस पास फिर आई और क्या देखता है कि जलपाई की एक पत्ती उस
के मुंह में है तब नूह ने जाना कि अब जल पृथिवी पर से घट गया॥
१२। और वुह और भी सात दिन ठहरा उस के पीछे उस ने उस पंडुकी
को छोड़ दिया वुह उस के पास फिर न आई॥ १३। और छः सौ एक
बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में यों हुआ कि जल पृथिवी पर से
सूख गया और नूह ने नाव की छत उठा दिई और क्या देखता है कि
पृथिवी ऊपर से सूखी है॥ १४। और दूसरे मास की सत्ताईसवीं तिथि
में पृथिवी सूखी थी॥ १५। तब ईश्वर नूह को यह कहके बोला॥
१६। कि अब तू नौका से निकल आ और तेरी पत्नी और तेरे बेटे और
तेरे बेटों की पत्नियां तेरे संग नाव पर से उतर जायें॥ १७। हर
एक जीवते जंतु सारे शरीर में से क्या पंछी क्या ढोर और क्या कीड़े
मकोड़े जो भूमि पर रेंगते चलते हैं सब को अपने संग ले निकल जिसतें
उन के बंश पृथिवी पर बहुत बढ़ें और फलवंत हों और पृथिवी पर
फैलें॥ १८। तब नूह निकला और उस के बेटे और उस की पत्नी
और उस के बेटों की पत्नियां उस के संग॥ १९। हर एक पशु
हर एक रेंगवैये जंतु और हर एक पंछी जो कुछ कि पृथिवी पर रेंगते हैं
सब अपने अपने भांति के समान नाव से निकल गये॥

२०। और नूह ने परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई और सारे
पवित्र पशु और हर एक पवित्र पंछियों में से लिये और होम की भेंट
उस बेदी पर चढ़ाई॥ २१। और परमेश्वर ने सुगंध सूंघा और
परमेश्वर ने अपने मन में कहा कि मनुष्य के लिये मैं पृथिवी को फिर
कभी स्राप न देऊंगा इस कारण कि मनुष्य के मन की भावना उस की
लड़काई से बुरी है और जिस रीति से मैं ने सारे जीवधारियों को मारा
फिर कभी न मारूंगा॥ २२। जब लों पृथिवी है बोना और काटना

और ठंड और तपन और ग्रीष्म और शीत और दिन और रात थम न जायंगे।

९ नवां पर्ब्ब।

और ईश्वर ने नूह को और उस के बेटों को आशीष दिया और उन्हें कहा कि फलो और बढ़ो और पृथिवी को भरो॥
२। और तुम्हारा डर और भय पृथिवी के हर एक पशु पर और आकाश के हर एक पंछियों पर उन सभों पर जो पृथिवी पर चलते हैं और समुद्र की सारी मछलियों पर पड़ेगा वे तुम्हारे हाथ में सौंपे गये॥
३। हर एक जीता चलता जंतु तुम्हारे भोजन के लिये होगा मैं ने हरी तरकारी के समान सारी वस्तु तुम्हें दिई॥ ४। केवल मांस उस के जीव अर्थात उस के लोहू समेत मत खाना॥ ५। और केवल तुम्हारे लोहू का तुम्हारे शरीरों के लिये मैं पलटा लेऊंगा हर एक पशु से और मनुष्य के हाथ से मैं पलटा लेऊंगा हर एक मनुष्य के भाई से मनुष्य के प्राण का मैं पलटा लेऊंगा॥ ६। जो कोई मनुष्य का लोहू बहावेगा मनुष्य से उस का लोहू बहाया जायगा क्योंकि ईश्वर के रूप में मनुष्य बनाया गया है॥ ७। और तुम फलो और बढ़ो और पृथिवी पर बहुताई से जन्मो और उस में बढ़ो॥ ८। और ईश्वर ने नूह को और उस के साथ उस के बेटों को कहा॥ ९। कि देखो मैं अपना नियम स्थिर करता हूं तुम से और तुम्हारे बंश से तुम्हारे पीछे॥ १०। और हर एक जीवते जंतु से जो तुम्हारे संग है क्या पंछी और क्या ढोर और पृथिवी के सारे चौपायों से और सभों से जो नाव से बाहर जाते हैं पृथिवी के हर एक पशु लों॥ ११। और मैं अपना नियम तुम से स्थिर करूंगा फिर सारे शरीर बाढ़ के पानियों से नष्ट न किये जायंगे और फिर पृथिवी को नष्ट करने के लिये जलमय न होगा॥ १२। और ईश्वर ने कहा कि यह उस नियम का चिन्ह है जो मैं अपने और तुम्हारे और हर एक जीवते जंतु के मध्य में जो तुम्हारे संग है परंपरा की पीढ़ी लों बांधता हूं॥
१३। मैं अपने धनुष को मेघ पर रखता हूं और वुह मेरे और पृथिवी के मध्य में नियम का चिन्ह होगा॥ १४। और जब मैं मेघ को पृथिवी के

ऊपर फैलाऊंगा तो धनुष मेघ में दिखाई देगा॥ १५। और मैं अपने
नियम को जो मेरे और तुम्हारे और सारे शरीर के हर एक जीवधारी
के मध्य में है स्मरण करूंगा और फिर सारे शरीर को नष्ट करने को जल
मय न होगा॥ १६। और धनुष मेघ में होगा और मैं उसे देखूंगा
जिसतें मैं उस सनातन के नियम को जो ईश्वर के और पृथिवी के सारे
शरीर के हर एक जीवधारी के मध्य में है स्मरण करूं॥ १७। और
ईश्वर ने नूह से कहा कि जो नियम मैं ने अपने और पृथिवी पर के सारे
शरीरों से स्थिर किया है उस का यह चिह्न है॥ १८। और नूह के
बेटे जो नौका से उतरे सिम और हाम और याफत थे और हाम कन-
आन का पिता था॥ १९। नूह के यही तीन बेटे थे और उन्हीं से
सारी पृथिवी बस गई॥ २०। फिर नूह खेतीबारी करने लगा और
उस ने एक दाख की वाटिका लगाई॥ २१। और उस ने उस का
रस पीया और उसे अमल हुआ और अपने तंबू में नग्न रहा॥ २२।
और कनआन के पिता हाम ने अपने पिता की नंगापन देखी और बाहर
अपने भाइयों को जनाया॥ २३। तब सिम और याफ़त ने एक ओढ़ना
लिया और अपने दोनों कंधों पर धरा और पीठ के बल जाके अपने पिता
की नंगापन ढांपी सो उन के मुंह पीछे थे और उन्हों ने अपने पिता की
नंगापन न देखी॥ २४। जब नूह अपने अमल से जागा तो जो उस के
छोटे बेटे ने उस से किया था उसे जान पड़ा॥ २५। और उस ने कहा
कि कनआन स्रापित होगा वुह अपने भाइयों के दासों का दास होगा॥
२६। और उस ने कहा कि सिम का परमेश्वर ईश्वर धन्य होवे और
कनआन उस का दास होगा॥ ईश्वर याफ़त को फैलावेगा और वुह
सिम के तंबुओं में वास करेगा और कनआन उस का दास होगा॥ २८।
और जलमय के पीछे नूह साढ़े तीन सौ बरस जीआ॥ २९। और नूह
की सारी बय नव सौ पचास बरस की हुई और वुह मर गया।

१० दसवां पर्ब्ब।

अब नूह के बेटों की बंशावली यही है सिम और हाम और याफत
और जलमय के पीछे उन से बेटे उत्पन्न हुए॥ २॥ याफ़त के

बेटे जुम्र और माजूज और मादी और यूनान और तबल और मसक
और तीरास॥ ३। और जुम्र के बेटे अकनाज़ और रिफ़ास और
तजरमः। ४। और यूनान के बेटे इलीसः और तरशीश और कित्ती
और दूदानी॥ ५। इन्हीं से अन्यदेशियों के टापू हर एक अपनी अपनी
भाषा के और अपने अपने परिवार के समान अपनी अपनी जाति में
बंट गये॥

६। और हाम के बेटे कूश और मिस्र और फ़ूत और कनआन
७। और कूश के बेटे सबा और हवीलः और सबतः और रग़मः
और सबतिका और रग़मः के बेटे सिबा और ददान॥ ८। और कूश
से निमरूद उत्पन्न हुआ वह पृथिवी पर एक महाबीर होने लगा॥
९। वह ईश्वर के आगे बलवान ब्याधा हुआ इसी लिये कहा जाता
है जैसा कि परमेश्वर के आगे निमरूद बलवंत ब्याधा॥ १०। और
उस के राज्य का आरंभ बाबुल और अरक और अक्काद और कलनः
सिनआर देश में हुआ॥ ११। और उसी देश में से असूर निकला और
नीनवः और रिहाबात और कलः के नगर बनाये॥ १२। और नीनवः
और कलः के मध्य में रसन बनाया जो बड़ा नगर है॥ १३। और
मिस्र से लोदीम और अनामीम और लिहाबी और नफ़तूह उत्पन्न हुए॥
१४। और फतरूस और कसलूही जिन से फिलिस्ती और कफ़तूर निकले॥
१५। और कनआन से उस का पहिलौठा सैदा और हित्त उत्पन्न हुए॥
१६। और यबूस और अमूरी और जिरजाश॥ १७। और हवी और
अरकी और सीनी॥ १८। और अरवाद और ज़मारी और हमासी
उस के पीछे कनआन के घराने फैल गये॥ १९। और कनआन के
सिवाने सैदा से जिरार के मार्ग में उज़्ज़ः लों सदूम और अमूरः और
अदमः और ज़िबियान और लसअ लों हुए॥ २०। हाम के बेटे अपने
घरानों और अपनी भाषाओं के समान अपने देशों और अपनी जाति
गणों में ये हैं॥ २१। और सिम से भी बालक उत्पन्न हुए वह सारे इब्र
के वंश का पिता था और याफ़त उस का बड़ा भाई था॥ २२। और सिम
के वंश ऐलाम और असूर और अरफ़कसद और लूद और अराम थे॥
२३। और अराम के वंश ऊज़ और हूल और जतर और मश थे॥

२४। और अरफ़कसद से सिलह उत्पन्न हुआ और सिलह से इब्र॥ २५।
और इब्र से दो बेटे उत्पन्न हुए एक का नाम फ़लज था क्योंकि उस के
दिनों में पृथिवी बांटी गई और उस के भाई का नाम युकतान था॥
२६। और युकतान से अलमूदाद और सलफ और हसरि मैात और
इरख॥ २७। और हदूराम और ऊज़ाल और दिकलह॥ २८। और
ऊबल और अबीमायल और सिबा॥ २९। और ओफ़ीर और हवील:
और यूबाब उत्पन्न हुए ये सब युकतान के बेटे थे॥ ३०। और उन के
निवास मेसा के मार्ग से जो पूरब के पहाड़ सिफ़ार लों था॥ ३१॥
सिम के बेटे अपने घरानों और अपनी भाषाओं के समान अपने अपने
देशों और अपने अपने जातिगणों में ये थे॥ ३२। नूह के बेटों के
घराने उन की पीढ़ी और उन के जातिगणों के समान ये हैं और
जलमय के पीछे पृथिवी में जातिगण इन्हीं से बांटे गये॥

११ गयारहवां पर्ब्ब।

और सारी पृथिवी पर एकही बोली और एकही भाषा थी॥ २।
और ज्यों उन्हों ने पूरब से यात्रा किई तो ऐसा हुआ कि उन्हों ने
सिनआर देश में एक चौगान पाया और वहां ठहरे॥ ३। तब उन्हों ने
आपुस में कहा कि चलो हम ईंटें बनावें और आग में पकावें सो उन के
लिये ईंट पत्थर की संती और गारा की संती शिलाजतु था॥ ४। फिर
उन्हों ने कहा कि आओ हम एक नगर और एक गुम्मट जिसकी चोटी स्वर्ग
लों पहुंचे अपने लिये बनावें और अपना नाम करें न हो कि हम सारी
पृथिवी पर छिन्न भिन्न हो जायें॥ ५। तब परमेश्वर उस नगर और
उस गुम्मट को जिसे मनुष्य के संतान बनाते थे देखने को उतरा॥ ६।
तब परमेश्वर ने कहा कि देखो लोग एक ही हैं और उन सब की एक
ही बोली है अब वे ऐसा ऐसा कुछ करने लगे सो वे जिस पर मन
लगावेंगे उस्से अलग न किये जावेंगे॥ ७। आओ हम उतरें और
वहां उन की भाषा को गड़बड़ावें जिसतें एक दूसरे की बोली न समुझे॥
८। तब परमेश्वर ने उन्हें वहां से सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया
और वे उस नगर के बनाने से अलग रहे॥ ९। इस लिये उस का नाम

बाबुल कहावता है क्योंकि परमेश्वर ने वहां सारे जगत की भाषा को गड़बड़ किया और परमेश्वर ने वहां से उन को सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया॥

१०। सिम की बंशावली यह है कि सिम सौ बरस का होके जलमय के दो बरस पीछे उस्से अरफ़कसद उत्पन्न हुआ॥ ११। और अरफ़कसद की उत्पत्ति के पीछे सिम पांच सौ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ १२। और जब अरफ़कसद पैंतीस बरस का हुआ उस्से सिलह उत्पन्न हुआ॥ १३। और सिलह की उत्पत्ति के पीछे अरफ़कसद चार सौ तीन बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ १४। सिलह जब तीस बरस का हुआ उस्से इब्र उत्पन्न हुआ। १५। और सिलह इब्र की उत्पत्ति के पीछे चार सौ तीन बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ १६। और इब्र से चौंतीस बरस के बय में फ़लज उत्पन्न हुआ॥ १७। और फ़लज की उत्पत्ति के पीछे इब्र चार सौ तीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ १८। तीस बरस की बय में फ़लज से रऊ उत्पन्न हुआ॥ १९। और रऊ की उत्पत्ति के पीछे फ़लज दो सौ नव बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २०। बत्तीस बरस के बय में रऊ से सरूज उत्पन्न हुआ॥ २१। और सरूज की उत्पत्ति के पीछे रऊ दो सौ सात बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २२। सरूज जब तीस बरस का हुआ उस्से नहूर उत्पन्न हुआ॥ २३। और नहूर की उत्पत्ति के पीछे सरूज दो सौ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २४। नहूर जब उंतीस बरस का हुआ उस्से तारह उत्पन्न हुआ॥ २५। और तारह की उत्पत्ति के पीछे नहूर एक सौ उंतीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २६। तारह जब सत्तर बरस का हुआ उस्से अबिराम और नहूर और हारन उत्पन्न हुए॥ २७। तारह की बंशावली यह है कि तारह से अबिराम और नहूर और हारन उत्पन्न हुए और हारन से लूत उत्पन्न हुआ॥ २८। और हारन अपने पिता तारह के आगे अपनी जन्म भूमि अर्थात् कलदानियों के ऊर में मर गया॥ २९। और अबिराम और नहूर ने पत्नियां किईं अबिराम की

पत्नी का नाम सरी था और नहूर की पत्नी का नाम मिलक: जो हारन
की बेटी थी वही मिलक: और इसकाह का पिता था॥ ३०। परन्तु
सरी बांझ थी उस का कोई संतान न था॥ ३१। और तारह ने अप
ने बेटे अबिराम को और अपने पोते हारन के बेटे लूत को और अपनी
बहू अबिराम की पत्नी सरी को लिया और उन्हें अपने साथ कलदानियों
के ऊर से कनआन देश में लेचला और वे हारन में आये और वहां
रहे॥ ३२। और तारह दो सौ पांच बरस का होके हारन में
मर गया॥

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

अब परमेश्वर ने अबिराम से कहा था कि तू अपने देश और अपने
कुनबे से और अपने पिता के घर से उस देश को जा जो मैं
तुझे दिखाऊंगा॥ २। और मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाऊंगा और
तुझे आशीष देऊंगा और तेरा नाम बड़ा करूंगा और तू एक
आशीर्बाद होगा॥ ३। और जो तुझे आशीष देंगे मैं उन्हें आशीष
देऊंगा और जो तुझे धिक्कारेगा मैं उसे धिक्कारूंगा और पृथिवी
के सारे घराने तुझसे आशीष पावेंगे॥ ४। सो परमेश्वर के कहने
के समान अबिराम चला गया और लूत भी उस के संग गया और
जब अबिराम हारन से निकला तब वुह पचहत्तर बरस का था॥
५। फिर अबिराम ने अपनी पत्नी सरी को और अपने भतीजे लूत
को और उन की सारी संपत्ति को जो उन्हों ने प्राप्ति किई थी और
उन के सारे प्राणियों को जो हारन में मिले थे साथ लिया और कनआन
देश को जाने के लिये चल निकले सो वे कनआन देश में आये॥ ६।
और अबिराम उस देश में होके सिकम के स्थान लों चला गया मोरि: के
बलूत लों तब कनआनी उस देश में थे॥ ७। फिर परमेश्वर ने अबिराम
को दर्शन देके कहा कि यह देश मैं तेरे बंश को देऊंगा तब उस ने परमेश्वर
के लिये जिस ने उसे दर्शन दिया था वहां एक बेदी बनाई॥ ८। फिर
वुह वहां से बैतएल की पूरब एक पहाड़ की ओर गया और अपना तंबू
बैतएल की पच्छिम ओर खड़ा किया और अई पूरब ओर था और वहां

उस ने परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई और परमेश्वर का नाम लिया॥
९। और अबिराम ने जाते जाते दक्खिन की ओर यात्रा किई॥ १०
और उस देश में अकाल पड़ा और अबिराम बास करने के लिये मिस्र
को उतर गया क्योंकि उस देश में बड़ा अकाल था॥ ११। और
यों हुआ कि जब वुह मिस्र के निकट पहुंचा उस ने अपनी पत्नी सरी
से कहा कि देख मैं जानता हूं कि तू देखने में सुन्दर स्त्री है॥ १२।
इस लिये यों होगा कि जब मिसरी तुझे देखें वे कहेंगे कि यह
उस की पत्नी है और मुझे मार डालेंगे परन्तु तुझे जीती रक्खेंगे॥
१३। तू कहियो कि मैं उस की बहिन हूं जिसतें तेरे कारण मेरा
भला होय और मेरा प्राण तेरे हेतु से जीता रहे॥ १४। और जब
अबिराम मिस्र में जा पहुंचा तब मिस्रियों ने उस स्त्री को देखा कि अत्यंत
सुन्दरी है॥ १५। और फिरऊन के अध्यक्षों ने भी उसे देखा और
फिरऊन के आगे उस का सराहना किया सो उस स्त्री को फिरऊन
के घर में ले गये॥ १६। और उस ने उस के कारण अबिराम का
उपकार किया और भेड़ बकरी और बैल और गदहे और दास
और दासी और गधियां और ऊंट उस ने पाये॥ १७। तब
परमेश्वर ने फिरऊन पर और उस के घराने पर अबिराम की पत्नी
सरी के कारण बड़ी बड़ी मरियां डालीं॥ १८। तब फिरऊन ने
अबिराम को बुला के कहा कि तू ने मुझ से यह क्या किया तू ने मुझे
क्यों न जताया कि वुह मेरी पत्नी है॥ १९। क्यों कहा कि वुह
मेरी बहिन है यहांलों कि मैं ने उसे अपनी पत्नी कर लिया होता
देख यह तेरी पत्नी है तू उसे ले और चला जा॥ २०। तब फिरऊन
ने अपने लोगों को उस के बिषय में आज्ञा किई और उन्हों ने उसे
और उस की पत्नी को उस सब समेत जो उस का था जाने दिया।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

और अबिराम मिस्र से अपनी पत्नी और सारी सामग्री समेत और
लूत को अपने संग लिये हुये दक्खिन को चला॥ २। और
अबिराम ढोर और सोना चांदी में बड़ा धनी था॥ ३। और वुह

यात्रा करते दक्खिन से बैतएल लों उसी स्थान को आया जहां आरंभ में उस का तंबू था बैतएल और अई के मध्य में॥ ४। उस बेदी के स्थान में जिसे उस ने पहिले वहां बनाया था और वहां अबिराम ने परमेश्वर का नाम लिया॥ ५। और अबिराम के संगी लूत के भी झुंड और गाय बैल और तंबू थे॥ ६। और साथ रहने में उस देश में उन की समाई न हुई क्योंकि उन की सामग्री बहुत थी इस लिये वे एकट्ठे निवास न कर सके॥ ७। और अबिराम के ढोर के चरवाहों में और लूत के ढोर के चरवाहों में झगड़ा हुआ तब कनआनी और फरजी उस भूमि में रहते थे॥ ८। तब अबिराम ने लूत से कहा कि मेरे और तेरे बीच और मेरे चरवाहों में और तेरे चरवाहों में झगड़ा न होने पावे क्योंकि हम भाई हैं॥ ९। क्या सारा देश तेरे आगे नहीं मुझ से अलग हो जो तू बाईं ओर जाय तो मैं दहिनी ओर जाऊंगा अथवा जो तू दहिनी ओर जाय तो मैं बाईं ओर जाऊंगा॥ १०। तब लूत ने अपनी आंख उठाके अर्द्दन के सारे चौगान को देखा कि ईश्वर के सदूम और अमूरः को नष्ट करने से आगे वुह सर्वत्र अच्छी रीति से सींचा हुआ था अर्थात् परमेश्वर की बारी के समान सुग्र के मार्ग के मिस्र की नाईं था॥ ११। तब लूत ने अर्द्दन का सारा चौगान चुना और पूरब की ओर चला और वे एक दूसरे से अलग हुए॥ १२। अबिराम कनआन देश में रहा और लूत ने चौगान के नगरों में बास किया और सदूम की ओर तंबू खड़ा किया॥ १३। पर सदूम के लोग परमेश्वर के आगे अत्यंत दुष्ट और पापी थे॥ १४। तब लूत के अलग होने से पीछे परमेश्वर ने अबिराम से कहा कि अब अपनी आंखें उठा और उस स्थान से जहां तू है उत्तर और दक्खिन और पूरब और पच्छिम की ओर देख॥ १५। क्योंकि मैं यह सारा देश जिसे तू देखता है तुझे और तेरे बंश को सदा के लिये देऊंगा॥ १६ और मैं तेरे बंश को पृथिवी की धूल के तुल्य करूंगा यहां लों कि यदि कोई पृथिवी की धूल को गिन सके तो तेरा बंश भी गिना जायगा॥ १७। उठके देश की लंबाई और चौड़ाई में होके फिर क्योंकि मैं उसे तुझे देऊंगा॥ १८। तब अबिराम ने तंबू उठाया और ममरे के

बलूतों में जो हबरून में है आ रहा और वहां परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

और सिनआर के राजा अमराफिल के और इल्लासर के राजा अरयूक के और ऐलाम के राजा किदरलाउमर के और जाति गणों के राजा तिदआल के दिनों में यों हुआ॥ २। उन्हों ने सदूम के राजा बरअ से और अमूरः के राजा बिरशअ से और अदमः के राजा सिन्निअब से और जिबीआन के राजा शिमिबर से और बालिग के राजा से जो सुग़ है संग्राम किया॥ ३। ये सब सिद्दीम की तराई में जो खारी समुद्र है एकट्ठे हुए॥ ४। उन्हों ने बारह बरस लों किदरलाउमर की सेवा किई और तेरहवें बरस उस्से फिर गये॥ ५। और चौदहवें बरस में किदरलाउमर और उस के साथी राजा आये और इसतारात करनैन में रिफाइम को और हाम में ज़ज़ीयों को और सवी करयातैन में ऐमियों को॥ ६। और उन के सईर पर्बत में हूरियों को फारान के चौगान लों जो बन के पास है मारा॥ ७। और फिरे और इनमिशपाट को जो कादिस है फिरे और अमालीक़ के सारे देश को और अमूरी को भी जो हस्सूनतमर में रहते थे मार लिया॥ ८। और सिद्दीम का राजा और अमूरः का राजा और अदमः का राजा और जिबिआन का राजा और बालिग का राजा जो सुग़ है निकला॥ ९। ऐलाम के राजा किदरलाउमर के संग और जातिगणों के राजा तिदआल के संग और शिनआर के राजा अमराफ़िल और इल्लासर के राजा अरियूक ने चार राजा पांच के संग युद्ध के लिये॥ १०। और सिद्दीम की तराई में चहले के गढ़हे थे और सिद्दीम और मूअरः के राजा भागे और वहां गिरे और बचे हुए लोग भाग के पहाड़ पर गये॥ ११। उन्हों ने सिद्दीम और अमूरः की सारी संपत्ति और उन के सारे भोजन लूट लिए और अपने मार्ग पकड़े॥ १२। और अबिराम के भतीजे लूत को जो सदूम में रहता था और उस की संपत्ति को लेके चले गये॥ १३। तब किसी ने बचके इबरानी अबिराम को संदेश दिया

क्योंकि वुह इसकाल और अनेर का भाई अमूरी ममरे के बलूतों के नीचे
रहता था और वे अबिराम के सहायक थे॥ १४। और अबिराम ने
अपने भाई के ले जाने की बात सुन के अपने घर के तीन सौ अठारह
दासों को लिया और दान लों उन का पीछा किया॥ १५। और उस ने
और उस के सेवकों ने आप को रात को बिभाग किया और उन्हें मारा
और ख़ूबः लों जो दमिश्क की बाईं ओर है उन्हें रगेदे चले गये॥
१६। और वुह सारी संपत्ति को और अपने भाई लूत को भी और उस
की संपत्ति को और स्त्रियों को भी और लोगों को फेर लाया॥

१७। और किदरलाउमर को और उस के संगी राजाओं को मारके
फिर आने के पीछे सदूम का राजा उस्से भेंट करने को सवी की तराई
लों जो राजा की तराई है निकला॥ १८। और सालिम का राजा
मलिकिसिदक़ रोटी और दाख रस लाया और वुह अति महान
ईश्वर का याजक था॥ १९। और उस ने उसे आशीष दिया
और बोला कि आकाश और पृथिवी के प्रभू अति महान ईश्वर का
अबिराम धन्य होवे॥ २०। और अति महान ईश्वर को धन्य जिस ने
तेरे बैरियों को तेरे हाथ में सौंप दिया और उस ने सब का दसवां भाग
उसे दिया॥ २१। और सदूम के राजा ने अबिराम से कहा कि प्राणियों
को मुझे दीजिये और संपत्ति आप रखिये॥ २२। तब अबिराम ने
सदूम के राजा से कहा कि मैं ने अपना हाथ अति महान ईश्वर परमेश्वर
के आगे जो स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु है उठाया है॥ २३। कि
मैं एक तागे से लेके जूते के बंद लों आप का कुछ न लेऊंगा सो मत
कहियो कि मैं ने अबिराम को धनमान किया॥ २४। परन्तु केवल
वुह जो तरुणों ने खाया और उन मनुष्यों के भाग जो मेरे संग अर्थात्
अनेर और इसकाल और ममरेः के वे अपने भाग लेवें।

१५ पंद्रहवां पर्ब्ब ।

इन बातों के पीछे परमेश्वर का वचन यह कहते हुए दर्शन में
अबिराम पर पहुंचा कि हे अबिराम मत डर मैं तेरी ढाल और
तेरा बड़ा प्रतिफल हूं॥ २। तब अबिराम ने कहा कि हे प्रभु ईश्वर तू

मुझे क्या देगा मैं तो निर्बंश जाता हूं और मेरे घर का भंडारी दमिश्की
इलिअज़र है॥ ३। फिर अबिराम ने कहा कि देख तू ने मुझे कोई
बंश न दिया और देख जो मेरे घर में उत्पन्न हुआ वही मेरा अधिकारी
है॥ ४। और देखो परमेश्वर का वचन उसे यूं कहते हुए पहुंचा कि यह
तेरा अधिकारी न होगा परन्तु जो तुझी से उत्पन्न होगा सो तेरा
अधिकारी होगा॥ ५। फिर उस ने उसे बाहर ले जाके कहा अब स्वर्ग
की ओर देख और जो तारों को तू गिन सके तो उन्हें गिन फिर उस ने
उसे कहा कि तेरा बंश ऐसा ही होगा॥ ६। तब वुह परमेश्वर पर
बिश्वास लाया और यह उस के लिये धर्म्म गिना गया॥ ७। फिर
उस ने उसे कहा कि मैं परमेश्वर हूं जो तुझे यह भूमि अधिकार में देने
को कलदानियों के ऊर से निकाल लाया॥ ८। तब उस ने कहा कि
हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं क्योंकर जानों कि मैं उस का अधिकारी
होऊंगा॥ ९। तब उस ने उसे कहा कि तू तीन बरसी एक कलोर और
तीन बरसी एक बकरी और तीन बरसी एक मेढ़ा और एक पंडुक और
कपोत का एक बच्चा मेरे लिये ले॥ १०। सो उस ने ये सब अपने लिये
लिया और उन्हें मध्य से दो दो भाग किये और हर एक भाग को उस के
दूसरे भाग के साम्ने धरा परन्तु पंछियों का भाग न किया॥ ११। और
जब हिंसक पंछी उन लोथों पर उतरे अबिराम ने उन्हें हांक दिया॥ १२।
और सूर्य अस्त होते हुए अबिराम पर भारी नींद पड़ी और क्या देखता
है कि बड़ा भयंकर अंधकार उस पर पड़ा॥ १३। तब उस ने अबिराम
को कहा निश्चय जान कि तेरे बंश औरों के देश में परदेशी होंगे और
उन की सेवा करेंगे और वे उन्हें चार सौ बरस लों सतावेंगे॥ १४।
परन्तु जिन की वे सेवा करेंगे मैं उस जाति का भी बिचार करूंगा और
वे पीछे बड़ी संपत्ति लेके निकलेंगे॥ १५। और तू अपने पितरों में
कुशल से जायगा और बहुत पुरनिया होके गाड़ा जायगा॥ १६।
परन्तु चौथी पीढ़ी में वे इधर फिर आवेंगे क्योंकि अमूरियों का अधर्म
अब लों भरपूर नहीं हुआ॥ १७। और जब सूर्य अस्त हुआ तो यों
हुआ कि अंधियारा हुआ कि देखो एक धूआं उठता भट्ठा और एक
आग का दीपक उन टुकड़ों के मध्य में से होके चला गया॥ १८।

उसी दिन परमेश्वर ने अबिराम से नियम करके कहा कि मैं ने मिस्र
की नदी से फुरात की बड़ी नदी लों यह देश तेरे बंश को दिया है॥
१९। अर्थात् कैनी और क़नज़ी और क़दमूनी॥ २०। और हित्ती
और फ़रिज़्ज़ी और रिफाइमी॥ २१। और अमूरी और कनआनी
और जिर्जाशी और यबूसी का देश।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

अब अबिराम की पत्नी सरी कोई लड़का उस के लिये न जनी और
उस की एक मिसरी लैांड़ी थी जिस का नाम हाजिरः था॥ २।
तब सरी ने अबिराम से कहा कि देख परमेश्वर ने मुझे जन्ने से रोका है
मैं तेरी बिनती करती हूं कि अब मेरी लैांड़ी पास जाइये क्या जाने
मेरा घर उस्से बस जाय और अबिराम ने सरी की बात मानी॥ ३।
सो अबिराम के कनआन देश में दस बरस निवास करने के पीछे उस की
पत्नी सरी ने अपनी लैांड़ी मिसरी हाजिरः को लिया और अपने पति
अबिराम को उस की पत्नी होने को दिया॥ ४। और उस ने हाजिरः
को ग्रहण किया और वुह गर्भिणी हुई और जब उस ने आप को गर्भिणी
देखा तो उस की स्वामिनी उस की दृष्टि में निंदित हुई॥ ५। तब
सरी ने अबिराम से कहा कि मेरा दोष आप पर मैं ने अपनी लैांड़ी
आप को दिई और जब उस ने अपने को गर्भिणी देखा तो मैं उस की
दृष्टि में निंदित हुई मेरे और आप के बीच परमेश्वर न्याय करे॥ ६।
तब अबिराम ने सरी से कहा कि देख तेरी लैांड़ी तेरे हाथ में है जो
तुझे अच्छा लगे सो उस्से कर और जब सरी ने उस से कठिनता किई वुह
उस के आगे से भाग गई॥ ७। और परमेश्वर के दूत ने एक पानी के
सोते के पास बन में उस सोते के पास जो सूर के मार्ग में है उसे पाया॥
८। और उसे कहा कि हे सरी की लैांड़ी हाजिरः तू कहां से आई है
और किधर जायगी वुह बोली कि मैं अपनी स्वामिनी सरी के आगे से
भागती हूं॥ ९। और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि अपनी स्वामिनी
के पास फिर जा और उस के बश में रह॥ १०। फिर परमेश्वर के
दूत ने उसे कहा कि मैं तेरा बंश अत्यंत बढ़ाऊंगा ऐसा कि वुह बहुताई

के मारे गिना न जायगा॥ ११। और परमेश्वरके दूत ने उसे कहा कि देख तू गर्भिणी है और एक बेटा जनेगी और उस का नाम इसमअएल रखना क्योंकि परमेश्वर ने तेरा दुख सुना॥ १२। और वुह एक बन मनुष्य होगा उस का हाथ हर एक मनुष्य के बिरुद्ध और हर एक का हाथ उस के बिरुद्ध होगा और वुह अपने सारे भाइयों के साम्ने निवास करेगा॥ १३। तब उस ने उस परमेश्वर का नाम जिस ने उस्से बातें किईं यूं लिया कि हे ईश्वर तू मुझे देखता है क्योंकि उस ने कहा कि मैं ने अपने दर्शी का पीछा यहां भी देखा है॥ १४। इस लिये उस कूएं का नाम बीअरलिहैराई रक्खा देखो वुह कादिस और बिरद के मध्य में है॥ १५। सो हाजिरः अबिराम के लिये एक बेटा जनी और अबिराम ने अपने बेटे का नाम जिसे हाजिरः जनी इसमअएल रक्खा॥ १६। और जब हाजिरः से अबिराम के लिये इसमअएल उत्पन्न हुआ तब अबिराम छियासी बरस का था।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब।

और जब अबिराम निन्नावे बरस का हुआ तब परमेश्वर ने अबिराम को दर्शन दिया और कहा कि मैं सर्व सामर्थी ईश्वर हूं तू मेरे आगे चल और सिद्ध हो॥ २। और मैं अपने और तेरे मध्य में अपना नियम बांधूंगा और मैं तुझे अत्यंत बढ़ाऊंगा॥ ३। तब अबिराम औंधा गिरा और ईश्वर ने उस्से बातें करके कहा॥ ४। कि मैं जो हूं मेरा नियम तेरे संग है और तू बहुत सी जातिगणों का पिता होगा॥ ५। और तेरा नाम फिर अबिराम न होगा परन्तु तेरा नाम अबिरहाम होगा क्योंकि मैं ने तुझे बहुत सी जातिगणों का पिता बनाया है॥ ६। और मैं तुझे अत्यंत फलमान करूंगा और तुझ्से जातिगण बनाऊंगा और राजा तुझ्से निकलेंगे॥ ७। और मैं अपना नियम अपने और तेरे मध्य में और तेरे पीछे तेरे वंश के उन की पीढ़ियों में सदा के लिये एक नियम जो उन के साथ सदा लों रहे ठहराऊंगा कि मैं तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का ईश्वर हूंगा॥ ८। और मैं तुझे और तेरे पीछे सर्वदा अधिकार के लिये तेरे वंश को तेरे टिकाव का देश देऊंगा अर्थात्

कनआन का सारा देश और मैं उन का ईश्वर हूंगा॥ ९। फिर ईश्वर ने
अबिरहाम से कहा कि तू और तेरे पीछे तेरा बंश उन की पीढ़ियों में मेरे
नियम को मानें॥ १०। सो मेरा नियम जो मुझ में और तुम से और तेरे पीछे
तेरे बंश से है उसे मानियो यह है कि तुम में से हर एक बालक का ख़तनः
किया जाय॥ ११। और तुम अपने शरीर की खलड़ी काटो और वुह
मेरे और तुम्हारे मध्य में नियम का चिह्न होगा॥ १२। और तुम्हारी
पीढ़ियों में हर एक आठ दिन के बालक का ख़तनः किया जाय जो घर
में उत्पन्न होय अथवा जो किसी परदेशी से जो तेरे बंश का न हो दाम
से मोल लिया जाय॥ १३। जो तेरे घर में उत्पन्न हुआ हो और जो
तेरे दाम से मोल लिया गया हो अवश्य उस का ख़तनः किया जाय और
मेरा नियम तुम्हारे मांस में सर्वदा नियम के लिये होगा॥ १४। और
जो अख़तनः बालक जिस की खलड़ी का ख़तनः न हुआ हो सो प्राणी
अपने लोग से कट जाय कि उस ने मेरा नियम तोड़ा है॥ १५। फिर
ईश्वर ने अबिरहाम से कहा तेरी पत्नी सरी जो है तू उसे सरी न कह
परन्तु उस का नाम सरः रख॥ १६। और मैं उसे आशीष देऊंगा और
तुझे एक बेटा उस्से भी देऊंगा निश्चय मैं उसे आशीष देऊंगा और वुह
जातिगण होगी और राजा लोग उस्से होंगे॥ १७। तब अबिरहाम
औंधे मुंह गिरा और हंसा और अपने मन में कहा क्या सौ बरस के बृद्ध
से लड़का उत्पन्न होगा और क्या सरः जो नब्बे बरस की है जनेगी॥
१८। फिर अबिरहाम ने ईश्वर से कहा कि हाय कि इसमअएल तेरे आगे
जीता रहे॥ १९। तब ईश्वर ने कहा कि तेरी पत्नी सरः तेरे लिये निश्चय
एक बेटा जनेगी और तू उस का नाम इज़हाक रखना और मैं सर्वदा
नियम के लिये अपना नियम उस्से और उस के पीछे उस के बंश से स्थिर
करूंगा॥ २०। और इसमअएल जो है मैं ने उस के बिषय में तेरी सुनी
है देख अब मैं ने उसे आशीष दिया और उसे फलमान करूंगा और
उसे अत्यंत बढ़ाऊंगा उस्से बारह अध्यक्ष उत्पन्न होंगे और उसे बड़ी
मंडली बनाऊंगा॥ २१। परन्तु इज़हाक के साथ जिसे सरः तेरे लिये
दूसरे बरस इसी ठहराये हुए समय में जनेगी मैं अपना नियम स्थिर
करूंगा॥ २२। तब उस्से बात करने से रह गया और अबिरहाम के

पास से ईश्वर ऊपर जाता रहा॥ २३। तब अबिरहाम ने अपने बेटे इसमअऐल को और सब जो उस के घर में उत्पन्न हुए थे और सब जो उस के दाम से मोल लिये गये थे अर्थात् अबिरहाम के घराने के हर एक पुरुष को लेके उसी दिन उन की खलड़ी का ख़तनः किया जैसा कि ईश्वर ने उसे कहा था॥ २४। और जब उस की खलड़ी का ख़तनः हुआ तब अबिरहाम निन्नाबे बरस का था॥ २५। और जब उस के बेटे इसमअऐल की खलड़ी का खतनः हुआ तब वुह तेरह बरस का था॥ २६। उसी दिन अबिरहाम और उस के बेटे इसमअऐल का ख़तनः किया गया॥ २७। और उस के घराने के सारे पुरुषों का जो घर में उत्पन्न हुए और जो परदेशियों से मोल लिये गये उस के साथ ख़तनः किये गये।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर उसे ममरे के बलूतों में दिखाई दिया और वुह दिन को घाम के समय में अपने तंबू के द्वार पर बैठा था॥ २। और उस ने अपनी आंखें उठाईं तो क्या देखता है कि तीन मनुष्य उस के पास खड़े हैं उन्हें देखके वुह तंबू के द्वार पर से उन की भेंट को दौड़ा॥ ३। और भूमि लों दंडवत किई और कहा हे मेरे खामी यदि मैं ने अब आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मैं आप की बिनती करता हूं कि अपने दास के पास से चले न जाइये॥ ४। इच्छा होय तो थोड़ा जल लाया जाय और अपने चरण धोइये और पेड़ तले बिश्राम कीजिये॥ ५। और मैं एक कौर रोटी लाऊं और आप तृप्त हूजिये उस के पीछे आगे बढ़िये क्योंकि आप इसी लिये अपने दास के पास आये हैं तब वे बोले कि जैसा तू ने कहा तैसा कर॥ ६। सो अबिरहाम तंबू में सरः पास उतावली से गया और उसे कहा कि फुरती कर और तीन नपुआ चोखा पिसान लेके गूंध और उस के फुलके पका॥ ७। फिर अबिरहाम झुंड की ओर दौड़ा गया और एक अच्छा कोमल बछड़ा लेके दास को दिया उस ने भी उसे सिद्ध करने में चटक किया॥ ८। तब उस ने मखन और दूध और वुह बछड़ा जो पकाया था लिया और उन के आगे धरा और आप उन के पास पेड़ तले खड़ा रहा और उन्हों ने खाया॥ ९। तब उन्हों ने उस्से पूछा कि तेरी

पत्नी सर: कहां है वुह बोला कि देखिये तंबू में है॥ १०। और उस ने
कहा कि जीवन के समय के समान निश्चय मैं तुझ पास फिर आऊंगा
और देख तेरी पत्नी सर: एक बेटा जनेगी और सर: उस के पीछे तंबू
के द्वार पर सुनती थी॥ ११। और अबिरहाम और सर: बूढ़े और
पुरनिये थे और सर: से स्त्री का व्यवहार जाता रहा॥ १२। तब सर:
हंसके अपने मन में बोली कि क्या अब मुझे बुढ़ापे में और मेरा स्वामी
भी पुरनिया है फिर आनंद होगा॥ १३। तब परमेश्वर ने अबिरहाम
से कहा कि सर: क्यों यह कहिके मुसकुराई कि मैं जो बुढ़िया हूं सच
मुच बालक जनूंगी॥ १४। क्या परमेश्वर के लिये कोई बात असाध्य
है जीवन के समय के समान मैं ठहराये हुए समय में तुझ पास फिर
आऊंगा और सर: को बेटा होगा॥ १५। तब सर: यह कहके मुकर
गई कि मैं तो नहीं हंसी क्योंकि वुह डर गई थी तब उस ने कहा नहीं
परन्तु तू हंसी है॥ १६। तब वे मनुष्य वहां से उठ के सदूम की ओर
देखने लगे और अबिरहाम उन्हें बिदा करने को उन के साथ साथ
चला॥ १७। फिर परमेश्वर ने कहा कि जो मैं करता हूं सो क्या
अबिरहाम से छिपाऊं॥ १८। अबिरहाम तो निश्चय एक बड़ा और
बलवान जाति होगा और पृथिवी के सारे जातिगण उस में आशीष
पावेंगे॥ १९। क्योंकि मैं उसे जानता हूं कि वुह अपने पीछे अपने
बालकों और अपने घराने को आज्ञा करेगा और वे न्याय और बिचार
करने को परमेश्वर का मार्ग पालन करेंगे जिसतें जो कुछ परमेश्वर ने
अबिरहाम के विषय में कहा है सो उस पर पहुंचावे॥ २०। फिर परमेश्वर
ने कहा इस कारण कि सदूम और अमूर: का चिल्लाना बड़ा है और इस
कारण कि उन के पाप अत्यंत गरू हुए॥ २१। मैं अब उतरके देखूंगा जो
उस के चिल्लाने के समान जो मुझलों पहुंची है उन्हों ने किया है और यदि
नहीं तो मैं जानूंगा॥ २२। तब उन मनुष्यों ने वहां से अपने मुंह फेरे
और सदूम की ओर गये परन्तु अबिरहाम तद भी परमेश्वर के आगे खड़ा
रहा॥ २३। और अबिरहाम ने पास जाके कहा कि क्या तू दुष्ट के संग
धर्मी को भी नष्ट करेगा॥ २४। यदि नगर में पचास धर्मी होयं क्या
तद भी नष्ट करेगा और उस के पचास धर्मियों के लिये उस स्थान को न

छोड़ेगा॥ २५। दुष्ट के संग धर्मी को मारना ऐसी बात तुझ से परे होय और कि धर्मी को दुष्ट के समान करना तुझ से दूर होय क्या सारी पृथिवी का न्यायी यथार्थ न करेगा॥ २६। तब परमेश्वर ने कहा यदि मैं सदूम नगर में पचास धर्मी पाऊं तो मैं उन के लिये सारे स्थान को छोड़ देऊंगा॥ २७। फिर अबिरहाम ने उत्तर देके कहा कि देख मैं ने परमेश्वर के आगे बोलने में ढिठाई किई यद्यपि मैं धूल और राख हूं॥ २८। यदि पचास धर्मियों से पांच घट होवें तो क्या पांच के लिये सारे नगर को नाश करेगा तब उस ने कहा यदि मैं उस में पैंतालीस पाऊं तो उसे नाश न करूंगा॥ २९। फिर उस ने उसे कहा यदि चालीस वहां पाये जावें तब उस ने कहा मैं चालीस के कारण ऐसा न करूंगा॥ ३०। फिर उस ने कहा हाय कि परमेश्वर क्रुद्ध न होवे तो मैं कहूं यदि वहां तीस होवें तब उस ने कहा यदि मैं वहां तीस पाऊं तो ऐसा न करूंगा॥ ३१। फिर उस ने कहा कि देख मैं ने प्रभु के आगे बोलने में ढिठाई किई यदि बीस ही वहां पाये जायें तब उस ने कहा मैं बीस के कारण उसे नाश न करूंगा॥ ३२। फिर उस ने कहा हाय कि परमेश्वर क्रुद्ध न होवे तो मैं अब की बार फिर कहूं यदि वहां दस ही पाये जावें तब उस ने कहा मैं दस के कारण उसे नाश न करूंगा॥ ३३। तब परमेश्वर अबिरहाम से बात चीत समाप्त करके चला गया और अबिरहाम अपने स्थान को फिरा।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब॥

फिर सांझ को दो दूत सदूम में आये और लूत सदूम के फाटक पर बैठा था उन्हें देखकर लूत उन से भेंट करने को गया और भूमि लों दंडवत किई॥ २। और कहा कि हे स्वामियो अपने दास के घर की ओर चलिये और रात भर ठहरिये और चरण धोइये और तड़के उठके अपने मार्ग लीजिये तब उन्हों ने कहा कि नहीं परन्तु हम रात भर सड़क में रहेंगे॥ ३। पर जब उस ने उन्हें बहुत दबाया तब वे उस की ओर फिरे और उस के घर में आये तब उस ने उन के लिये जेवनार किया और अखमीरी रोटी उन के लिये पकाई और उन्हों ने खाई॥

४। उन के लेटने से आगे सदूम के नगर के मनुष्यों ने क्या तरुण क्या बूढ़े सब लोगों ने चारों ओर से आके उस घर को घेरा॥ ५। और लूत को पुकारके कहा कि जो पुरुष तेरे यहां आज रात आये हैं सो कहां हैं हमारे पास उन्हें बाहर ला जिसतें हम उन से संगम करें॥ ६। और लूत द्वार से उन पास बाहर गया और अपने पीछे द्वार बंद किया॥ ७। और कहा कि हे भाइयो ऐसी दुष्टता न करना॥ ८। देखो मेरी दो बेटियां हैं जो पुरुष से अज्ञान हैं कहो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर लाऊं और जो तुम्हारी दृष्टि में भला लगे सो उन से करो केवल उन मनुष्यों से कुछ न करो क्योंकि वे इस लिये मेरी छत की छाया तले आये हैं॥ ९। उन्हों ने कहा कि हट जा और कहा कि यह एक जन हम्में टिकने को आया सो अब न्यायी होने चाहता है अब हम तेरे साथ उन से अधिक बुराई करेंगे तब वे उस पुरुष पर अर्थात् लूत पर ऊस्सर करके आये और द्वार तोड़ने को झपटे॥ १०। परन्तु उन पुरुषों ने अपने हाथ बढ़ाके लूत को घर में खींच लिया और द्वार बंद किया॥ ११। और क्या छोटे क्या बड़े सारे मनुष्यों को जो घर के द्वार पर थे अंधापन से मारा यहां लों कि वे द्वार ढूंढते ढूंढते थक गये॥ १२। तब उन पुरुषों ने लूत से कहा कि तेरा कोई और यहां है जवांई अथवा तेरे बेटे अथवा तेरी बेटियां जो कोई इस नगर में तेरा है उन्हें लेकर इस स्थान से निकल जा॥ १३। क्योंकि हम इस स्थान को नाश करेंगे इस लिये कि इन का चिल्लाना परमेश्वर के आगे बड़ा है और परमेश्वर ने हमें इसे नाश करने को भेजा है॥ १४। तब लूत निकला और अपने जवांइयों से जिन्हों से उस की बेटियां व्याही थीं बोला और कहा कि उठो इस स्थान से निकलो क्योंकि परमेश्वर इस नगर को नष्ट करता है परन्तु वुह अपने जवांइयों के आगे जैसा कोई ठठोल दिखाई दिया॥ १५। और जब बिहान ऊआ दूतों ने लूत को शीघ्र करवाके कहा कि उठ अपनी पत्नी और अपनी दो बेटियां जो यहां हैं ले जा न हो कि तू इस नगर के दंड में भस्म हो जाय॥ १६। और जब लों वुह विलंब करता था उन पुरुषों ने उस का और उस की पत्नी का और उस की दोनों बेटियों का हाथ पकड़ा क्योंकि परमेश्वर

की कृपा उस पर थी और उसे निकालकर नगर के बाहर डाल दिया ॥
१७ । और उन्हें बाहर निकालके यों कहा कि अपने प्राण के लिये भाग
और पीछे मत देखना और सारे चौगान में न ठहरना पहाड़ पर भाग
जा न होवे कि तू भस्म होवे ॥ १८ । तब लूत ने उन्हें कहा कि हे मेरे प्रभु
ऐसा नहीं ॥ १९ । देखिये अब आप के दास ने आप की दृष्टि में अनुग्रह
पाया है और तू ने अपनी दया बढ़ाई है जो तू ने मेरे प्राण बचाने में
दिखाई है मैं अब पहाड़ पर नहीं जा सक्ता न होवे कि कोई विपत मुझ
पर पड़े और मैं मर जाऊं ॥ २० । अब देखिये कि यह नगर भागने को
समीप है और वुह छोटा है मुझे उधर जाने दीजिये वुह क्या छोटा नहीं
सो मेरा प्राण बच जायगा ॥ २१ । और उस ने उसे कहा कि देख इस
बात के विषय में भी मैं ने तेरे मुंह को ग्रहण किया है कि मैं इस नगर
को जिस की तू ने कही उलट न देऊंगा ॥ २२ । शीघ्र कर और उधर
भाग क्योंकि जबलों तू वहां न पहुंचे मैं कुछ कर नहीं सक्ता इस लिये
उस नगर का नाम सुग़ रक्खा ॥ २३ । सूर्य पृथिवी पर उदय हुआ था
जब लूत सुग़ में पहुंचा ॥ २४ । तब परमेश्वर ने सदूम और अ़मूरः पर
गंधक और आग परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से बरसाया ॥ २५ । और
उन नगरों को और नगरों के सारे निवासियों को और सारे चौगान को
और जो कुछ भूमि पर उगता था उलट दिया ॥ २६ । परन्तु उस की
पत्नी ने उस के पीछे से फिरके देखा और वुह लोन का खंभा बन गई ॥
२७ । और अबिरहाम उठके बिहान को तड़के उस स्थान में जहां
वुह परमेश्वर के आगे खड़ा था आ पहुंचा ॥ २८ । और उस ने सदूम
और अ़मूरः और चौगान की सारी भूमि की ओर दृष्टि किई तो क्या
देखता है कि उस भूमि से भट्ठी का सा धूआं उठ रहा है ॥ २९ । और
यों हुआ कि जब ईश्वर ने चौगान के नगरों को नष्ट किया तब ईश्वर ने
अबिरहाम को स्मरण किया और उन नगरों को जहां लूत रहता था
नष्ट करते हुए लूत को उस बिपत्ति से छुड़ाया ॥ ३० । और लूत
अपनी बेटियों समेत सुग़ से पहाड़ पर जा रहा क्योंकि वुह सुग़ में रहने
को डरा तब वुह और उस की दो बेटियां एक कंदला में जा रहे ॥
३१ । और पहिलौंठी ने छुटकी से कहा कि हमारा पिता वृद्ध है और

पृथिवी पर कोई पुरुष नहीं रहा जो जगत की रीति के समान हमें
ग्रहण करे॥ ३२। सो आओ हम अपने पिता को दाख रस पिलावें
और हम उस के साथ शयन करें कि हम अपने पिता से बंश जुगावें॥
३३। तब उन्हों ने उस रात अपने पिता को दाख रस पिलाया और
पहिलौंठी भीतर गई और अपने पिता के साथ शयन किया उस ने उस के
शयन करते और उठते सुरत न किई॥ ३४। और जब दूसरा दिन
हुआ पहिलौंठी ने छुटकी से कहा कि देख मैं ने कल रात अपने पिता
के साथ शयन किया हम उसे आज रात भी दाख रस पिलावें और
तू जाके उस के साथ शयन कर जिसतें हम अपने पिता का बंश जुगावें॥
३५। तब उन्हों ने अपने पिता को उस रात भी दाख रस पिलाया
और छुटकी ने उठके उस के साथ शयन किया उस ने उस के भी न शयन
करते न उठते हुए सुरत किई॥ ३६। इस रीति से लूत की दोनों
बेटियां अपने पिता से गर्भिणी हुईं॥ ३७। और पहिलौंठी एक बेटा
जनी और उस का नाम मोअब रक्खा वही आज लों मोअबियों का
पिता है॥ ३८। और छुटकी भी एक बेटा जनी और उस का नाम
बिनअमी रक्खा और वही आज लों अमून के बंश का पिता है॥

२० बीसवां पर्ब्ब॥

फिर अबिरहाम ने वहां से दक्खिन के देश को यात्रा किई और कादिस
और सूर के बीच ठहरा और जिरार में टिका॥ २। और अबिरहाम
अपनी पत्नी सरः के विषय में बोला कि यह मेरी बहिन है सो जिरार
के राजा अबिमलिक ने भेजके सरः को लेलिया॥ ३। परन्तु रात को
ईश्वर ने अबिमलिक पास स्वप्न में आके कहा कि देख तू इस स्त्री के
कारण जिसे तू ने लिया है मर चुका क्योंकि वुह पति से ब्याही है॥ ४।
परन्तु अबिमलिक उस पास न आया था तब उस ने कहा कि हे परमेश्वर
क्या तू धर्मी जाति को भी मार डालेगा॥ ५। क्या उस ने मुझे नहीं
कहा कि वुह मेरी बहिन है और वुह आपही बोली कि वुह मेरा भाई
है मैं ने अपने मन की सच्चाई और हाथ की निर्दोषता से ऐसा किया है॥
६। तब ईश्वर ने उसे स्वप्न में कहा कि मैं भी जानता हूं कि तू ने अपने

मन की सच्चाई से ऐसा किया है क्योंकि मैं ने भी तुझे मेरे बिरुद्व पाप करने से रोका इस लिये मैं ने तुझे उसे छूने न दिया॥ ७। सो अब उस पुरुष को उस की पत्नी फेर दे क्योंकि वुह भविष्यद्वक्ता है और वुह तेरे लिये प्रार्थना करेगा और तू जीता रहेगा परन्तु यदि तू उसे फेर न देगा तो यह जान कि तू और तेरे सारे जन निश्चय मरेंगे॥ ८। तब अबिमलिक ने बिहान को तड़के उठकर अपने सारे सेवकों को बुलाया और ये सारी बातें उन्हें सुनाईं तब वे बज्जत डर गये॥ ९। तब अबिमलिक ने अबिरहाम को बुलाया और उसे कहा कि तू ने हम से क्या किया है और मैं ने तेरा क्या अपराध किया कि तू मुझ पर और मेरे राज्य पर एक बड़ा पाप लाया है तू ने मुझ से अनुचित काम किये॥ १०। फिर अबिमलिक ने अबिरहाम से कहा कि तू ने क्या देखा जो तू ने यह काम किया है॥ ११। अबिरहाम बोला इस कारण कि मैं ने समझा कि निश्चय ईश्वर का भय इस स्थान में नहीं है और मेरी पत्नी के लिये वे मुझे मार डालेंगे॥ १२। और तथापि वुह मेरी बहिन निश्चय है वुह मेरे पिता की पुत्री है परन्तु मेरी माता की पुत्री नहीं सो मेरी पत्नी ज़ई॥ १३। और जब ईश्वर ने मेरे पिता के घर से मुझे भ्रमाया तो यूं ज़आ कि मैं ने उसे कहा कि मुझ पर तू यही अनुग्रह कर कि जहां कहीं जिधर हम जायें मेरे बिषय में कह कि वुह मेरा भाई है॥ १४। तब अबिमलिक ने भेड़ बकरी गाय बैल और दास दासियां लेकर अबिरहाम को दिया और उस की पत्नी सरः को भी उसे फेर दिया॥ १५। फिर अबिमलिक ने कहा कि देख मेरा देश तेरे आगे है जहां तेरा मन भावे तहां रह॥ १६। और उस ने सरः से कहा कि देख मैं ने तेरे भाई को सहस्र टुकड़ा चांदी दिई है देख तेरे सारे संगियों के लिये और सभों के लिये वुह तेरी आंखों की ओट होगी सो वुह यों दपटी गई॥ १७। तब अबिरहाम ने ईश्वर की प्रार्थना किई और ईश्वर ने अबिमलिक और उस की पत्नी और उस की दासियों को चंगा किया और वे जन्ने लगीं॥ १८। क्योंकि परमेश्वर ने अबिरहाम की पत्नी सरः के लिये अबिमलिक की सारी कोखों को बंद कर दिया था।

२१ इक्कीसवां पर्ब्ब ।

और अपने कहने के समान परमेश्वर ने सरः से भेंट किया और अपने
वचन के समानपरमेश्वर ने सरः के विषय में किया॥ २। क्योंकि
सरः गर्भिणी हुई और अबिरहाम के लिये उस के बुढ़ापे में ठीक उसी
समय में जो ईश्वर ने उसे कहा था एक बेटा जनी॥ ३। और
अबिरहाम ने अपने बेटे का नाम जिसे सरः उस के लिये जनी थी इज़्हाक
रक्खा॥ ४। और ईश्वर की आज्ञा के समान अबिरहाम ने आठवें
दिन अपने बेटे इज़्हाक् का ख़तनः किया॥ ५। जब उस का बेटा
इज़्हाक् उस्से उत्पन्न हुआ तब अबिरहाम सौ बरस का वृद्ध था॥ ६।
तब सरः बोली की ईश्वर ने मुझे हंसाया सारे सुनवैये मेरे लिये हंसेंगे॥
७। फिर वुह बोली कि कौन अबिरहाम से कहता कि सरः बालक को
दूध पिलावेगी क्योंकि उस के बुढ़ापे में मैं उस के लिये बेटा जनी॥
८। और वुह लड़का बढ़ा और उस का दूध छुड़ाया गया और इज़्हाक्
के दूध छुड़ाने के दिन अबिरहाम ने बड़ा जेवनार किया॥

९। और सरः ने मिस्री हाजिरः के बेटे को जिसे वुह अबिरहाम के
लिये जनी थी चिढ़ाते देखा॥ १०। उस ने अबिरहाम से कहा कि
आप इस लौंडी को और उस के बेटे को निकाल दीजिये क्योंकि यह
लौंडी का बेटा मेरे बेटे इज़्हाक के साथ अधिकारी न होगा॥
११। और अपने बेटे के लिये यह बात अबिरहाम को बड़ी कड़वी
लगी॥ १२। तब ईश्वर ने अबिरहाम से कहा कि लड़के के और तेरी
लौंडी के विषय में तुझे कड़वी न लगे सब जो सरः ने तुझे कहा मान ले
क्योंकि तेरा बंश इज़्हाक से गिना जायगा॥ १३। और मैं उस लौंडी
के बेटे से भी एक ज़ाति उत्पन्न करूंगा क्योंकि वुह तेरा बंश है॥
१४। तब अबिरहाम ने बड़े तड़के उठके रोटी और एक कुप्पे में पानी
लिया और हाजिरः के कंधे पर धर दिया और लड़के को भी उसे सौंप
के उसे बिदा किया वुह चल निकली और बिअरसबः के बन में भ्रमती
फिरी॥ १५। और जब कुप्पे का पानी चुक गया तब उस ने उस लड़के
को एक झाड़ी के तले डाल दिया॥ १६। और आप उस के सम्मुख

एक तीर के टप्पे पर दूर जा बैठी क्योंकि वुह बोली कि मैं इस बालक
की मृत्यु को न देखूं और वुह उस के सन्मुख बैठ के चिल्ला चिल्ला रोई॥
१७। तब ईश्वर ने उस बालक का शब्द सुना और ईश्वर के दूत ने स्वर्ग
में से हाजिरः को पुकारा और उसे कहा कि हे हाजिरः तुझे क्या हुआ
मत डर क्योंकि जहां वुह बालक है तहां ईश्वर ने उस के शब्द को सुना
है॥ १८। उठ और उस लड़के को उठा और उसे अपने हाथ से धर
ले कि मैं उस्से एक बड़ी जाति बनाऊंगा॥ १९। और ईश्वर ने उस की
आंखें खोलीं तब उस ने पानी का एक कूआं देखा और उस ने जाके उस
कुप्पे को पानी से भरा और उस लड़के को पिलाया॥ २०। और ईश्वर
उस लड़के के साथ था और वुह बढ़ा और बन में रहा किया और
धनुषधारी हुआ॥ २१। फिर उस ने फ़ारान के बन में जाके निवास
किया और उस की माता ने मिस्र देश से उस के लिये एक पत्नी लिई॥
२२। और उस समय में यों हुआ कि अबिमलिक् और उस की सेना के
प्रधान फीकुल्ल ने अबिरहाम को कहा कि सब कार्यों में जो तू करता है
ईश्वर तेरे संग है॥ २३। और अब मुझ्से ईश्वर की किरिया खा
कि मैं तुझ्से और तेरे बेटों और तेरे पोतों से छल न करूंगा उस अनुग्रह
के समान जो मैं ने तुझ पर किया है मुझ्से और उस भूमि से जहां तू टिका
है करे॥ २४। तब अबिरहाम बोला कि मैं किरिया खाऊंगा॥
२५। और अबिरहाम ने पानी के एक कूएं के लिये जिसे अबिमलिक् के
सेवकों ने बरबस्ती से लेलिया था अबिमलिक को दपटा॥ २६। तब
अबिमलिक ने कहा कि मैं नहीं जानता किस ने यह काम किया है और
आप ने भी तो मुझ्से न कहा और मैं ने भी तो आजही सुना॥ २७।
फिर अबिरहाम ने भेड़ और गाय बैल लेके अबिमलिक् को दिये और
उन दोनों ने आपुस में नियम बांधा॥ २८। तब अबिरहाम ने झुंड में
से सात मेम्ने अलग रक्खे॥ २९। और अबिमलिक ने अबिरहाम से
कहा कि आप ने भेड़ के सात मेम्ने क्यों अलग रक्खे हैं॥ ३०। उस ने
कहा इस कारण कि तू उन भेड़ के सात मेम्नों को मेरे हाथ से ले कि वे
मेरी साक्षी होवें कि मैं ने यह कूआं खोदा है॥ ३१। इस कारण उस ने
उस स्थान का नाम बीअरसबअ् रक्खा क्योंकि उन दोनों ने वहां आपुस

में किरिया खाई॥ ३२। सो उन्हों ने बीअरसबअ में नियम बांधा
तब अबिमलिक और उस का प्रधान सेनापति फीकुल्ल उठे और
फिलिस्तीयों के देश में फिर गये॥ ३३। तब उस ने बीअरसबअ में कुंज
लगाया और वहां सनातन के ईश्वर परमेश्वर का नाम लिया॥ ३४।
और अबिरहाम फिलिस्ती के देश में बहुत दिन लों टिका॥

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

इन बातों के पीछे यूं हुआ कि ईश्वर ने अबिरहाम की परीक्षा किई
और उसे कहा हे अबिरहाम वुह बोला कि देख इहांहूं॥ २। फिर
उस ने कहा कि तू अपने बेटे को अपने एकलौते इज़हाक को जिसे तू
प्यार करता है ले और मोरिः के देश में जा और वहां पहाडों में से एक
पहाड़ पर जो मैं तुझे बताऊंगा उसे होम की भेंट के लिये चढ़ा॥ ३।
तब अबिरहाम ने तड़के उठकर अपने गदहे पर काठी बांधी और अपने
तरुणों में से दो को और अपने बेटे इज़हाक को साथ लिया और होम
की भेंट के लिये लकड़ियां चीरीं और उठके जहां ईश्वर ने उसे आज्ञा
किई थी तहां चला गया॥ ४। तीसरे दिन अबिरहाम ने अपनी आंखें
ऊपर किईं तो उस स्थान को दूर से देखा॥ ५। तब अबिरहाम ने
अपने तरुणों से कहा कि गदहे के साथ यहीं ठहरो और मैं इस लड़के
के साथ वहां लों जाता हूं और सेवा करके फिर तुम्हारे पास आवेंगे॥
६। तब अबिरहाम ने होम की भेंट की लकड़ियां लेकर अपने बेटे
इज़हाक पर लादीं और आग और छूरी अपने हाथ में लिई और
दोनो साथ साथ गये॥ ७। और इज़हाक अपने पिता अबिरहाम से
बोला कि हे पिता वुह बोला हे बेटे मैं यहीं हूं उस ने कहा कि देखिये
आग और लकड़ियां तो हैं पर होम की भेंट के लिये भेड़ कहां है॥
८। और अबिरहाम बोला कि हे बेटे ईश्वर होम की भेंट के लिये भेड़
आपही सिद्ध करेगा सो वे दोनों साथ साथ चले गये॥ ९। और उस
स्थान में जहां ईश्वर ने कहा था आये तब अबिरहाम ने वहां एक बेदी
बनाई और उन लकड़ियों को वहां चुना और अपने बेटे इज़हाक को
बांधके उस बेदी में लकड़ियों पर धरा॥ १०। और अबिरहाम ने

छूरी लेके अपने बेटे के घात करने के लिये अपना हाथ बढ़ाया॥
११। तब परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग पर से उसे पुकारा कि अबिरहाम
अबिरहाम वुह बोला यहीं हूं॥ १२। तब उस ने कहा कि अपना हाथ
लड़के पर मत बढ़ा और उसे कुछ मत कर क्योंकि अब मैं जानता हूं कि
तू ईश्वर से डरता है क्योंकि तू ने अपने बेटे अपने एकलौते के मुझे न
रख छोड़ा॥ १३। तब अबिरहाम ने अपनी आंखें ऊपर करके देखा
और क्या देखता है कि अपने पीछे एक मेंढ़ा झाड़ी में सींगों से अटका
हुआ है तब अबिरहाम ने जाके उस मेंढ़ के लिया और होम की भेंट के
लिये अपने बेटे की संती चढ़ाया॥ १४। और अबिरहाम ने उस स्थान
का यह नाम रक्खा कि परमेश्वर देखेगा जैसा कि आज लों कहा जाता है
कि पहाड़ पर परमेश्वर देखा जायगा॥

१५। फिर परमेश्वर के दूत ने दोहराके स्वर्ग में से अबिरहाम के
पुकारा॥ १६। और कहा कि परमेश्वर कहता है कि मैं ने अपनी हीं
किरिया खाई है इस कारण कि तू ने यह कार्य किया और अपने बेटे
अपने एकलौते के न रख छोड़ा॥ १७। मैं तुझे आशीष पर आशीष
देऊंगा और आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू के समान तेरे
बंश के बढ़ाऊंगा और तेरे बंश अपने बैरी के फाटक के अधिकारी
होंगे॥ १८। और तेरे बंश में पृथिवी के सारे जातिगण आशीष पावेंगे
इस कारण कि तू ने मेरा शब्द माना है॥ १९। और अबिरहाम अपने
तरुणों के पास फिर आया और वे उठके एकट्ठे बीअरसबअ के गये और
अबिरहाम बीअरसबअ में रहा॥ २०। और इन बातों के पीछे ऐसा
हुआ कि अबिरहाम के संदेश पहुंचा कि मिलकः भी तेरे भाई नहूर से
बालक जनी॥ २१। ऊज़ उस का पहिलौंठा और उस का भाई बूज़
और क़मूएल अराम का पिता॥ २२। और कसद और हज़ू और
फिल्दास और इद्लाफ और बतूएल॥ २३। और बतूएल से रिबकः
उत्पन्न हुई मिलकः अबिरहाम के भाई नहूर से ये आठ उत्पन्न हुए॥
२४। और उस की सुरैतिन से जिस का नाम रूमह था उस्से तिबख़ और
जहम और ताहाश और मअकः उत्पन्न हुए॥

२३ तेईसवां पर्ब्ब ॥

और सरः की बय एक सो सताईस बरस की ऊई सरः के जीवन के बरस इतने थे ॥ २। और सरः करयत अरबअ में जो कनआन देश में हबरून है मर गई तब अबिरहाम सरः के लिये बिलाप करने और रोने को आया ॥ ३। फिर अबिरहाम अपने मृतक से उठ खड़ा ऊआ और हित्त के बेटों से यह कहिके बोला ॥ ४। कि मैं परदेशी और तुम में टिकवैया हूं तुम अपने यहां मुझे एक समाधि का स्थान अधिकार में दो जिसतें मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि से अलग गाड़ूं ॥ ५। हित्त के संतान ने अबिरहाम को उत्तर देके कहा ॥ ६। कि हे स्वामी हमारी सुनिये आप हम्में ईश्वर के अध्यक्ष हैं से आप हमारे समाधिन में से चुनके एक में अपने मृतक को गाड़िये हम्में कोई अपनी समाधि आप से न रख छोड़ेगा जिसतें आप अपने मृतक को गाड़ें ॥ ७। तब अबिरहाम खड़ा ऊआ और उस देश के लोग अर्थात् हित्त के संतान को प्रणाम किया ॥ ८। और उन से बात चीत करके कहा कि यदि तुम्हारा मन होवे कि मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि से अलग गाड़ूं तो मेरी सुनो और मेरे लिये सुहर के बेटे इफरून से बिनती करो ॥ ९। जिसतें वुह मकफीलः की कंदला मुझे देवे जो उस के खेत के सिवाने पर है उस का पूरा मोल लेके मेरे बश में करदे जिसतें मैं तुम्हों में एक समाधि का अधिकार रक्खों ॥ १०। और इफरून हित्त के संतानों में बास करता था और इफरून हत्ती ने हित्त के संतानों के और सबके सुन्ने में जो नगर के फाटक में गये थे अबिरहाम को उत्तर में कहा ॥ ११। नहीं मेरे प्रभु मेरी सुनिये मैं यह खेत आप को देता हूं और वुह कंदला जो उस में है आप को देता हूं मैं अपने लोगों के बेटों के आगे आप को देता हूं अपना मृतक गाड़िये ॥ १२। तब अबिरहाम ने उस देश के लोगों को प्रणाम किया ॥ १३। फिर उस देश के लोगों के सुन्ने में वुह इफरून से यों कहिके बोला कि यदि तू देगा तो मेरी सुन ले मैं तुझे उस खेत के लिये रोकड़ देऊंगा मुझसे ले और मैं अपने मृतक को वहां गाड़ूंगा ॥ १४। इफरून ने अबिरहाम

को उत्तर देके कहा॥ १५। मेरे प्रभु मेरी सुनिये उस भूमि का मोल
चार सौ शेकल चांदी है यह मेरे और आप के आगे क्या वस्तु है सो
आप अपने मृतक को गाड़िये॥ १६। और अबिरहाम ने इफरून की
मान लिई और उस चांदी को इफरून के लिये तौल दिया जो उस ने
हित्त के बेटों के सुन्ने में कही थी अर्थात् चार सौ शेकल चांदी जिन की
चलन बैपारियों में थी॥ १७। सो इफरून का खेत जो मकफीलः
में ममरी के आगे था वुह खेत और कंदला जो उसमें थी और उस
खेत में के सारे पेड़ जो चारों ओर उस के सिवाने में थे॥ १८।
हित्त के संतानों के आगे और सभों के आगे जो नगर के फाटक में
से भीतर जाते थे अबिरहाम के अधिकार के लिये दृढ़ किये गये॥
१९। इस के पीछे अबिरहाम ने अपनी पत्नी सरः को मकफीलः के खेत
की कंदला में जो ममरी के आगे है गाड़ा वही हबरून कनआन देश
में है॥ २०। और वुह खेत और उस में की कंदला हित्त के संतानों
से अबिरहाम के हाथ में समाधि स्थान के लिये दृढ़ किये गये॥

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

और अबिरहाम वृद्ध और दिनी हुआ और परमेश्वर ने सब बातों में
अबिरहाम को बर दिया था॥ २। और अबिरहाम ने अपने घर
के पुराने सेवक को जो उस की सारी संपत्ति का प्रधान था कहा कि अपना
हाथ मेरी जांघ तले रख॥ ३। और मैं तुझ से परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर
और पृथिवी के ईश्वर की किरिया लेऊंगा कि तू कनआनियों की
लड़कियों में से जिन में मैं रहता हूं मेरे बेटे के लिये पत्नी न लेना॥
४। परन्तु तू मेरे देश और मेरे कुटुम्ब में जाइयो और मेरे बेटे इज़हाक
के लिये पत्नी लीजियो॥ ५। परन्तु उस सेवक ने उसे कहा कि क्या जाने
वुह स्त्री इस देश में मेरे संग आने को न चाहे तो क्या अवश्य मैं आप के
बेटे को उस देश में जहां से आप आये हैं फिर लेजाऊं॥ ६। अबिरहाम
ने उसे कहा चौकस रह तू मेरे बेटे को उधर फिर मत ले जाना॥
७। परमेश्वर स्वर्ग का ईश्वर जो मेरे पिता के घर से और मेरे जन्म भूमि
से मुझे निकाल लाया और जिस ने मुझे कहा और मुझ से किरिया

खाके बोला कि मैं तेरे बंश को यह देश देऊंगा वही तेरे आगे अपना दूत
भेजेगा और वहीं से तू मेरे बेटे के लिये पत्नी लेना॥ ८। और यदि वुह
स्त्री तेरे साथ आने को न चाहे तो तू मेरी इस किरिया से छूट जायगा
केवल मेरे बेटे को उधर फिर मत ले जा॥ ९। उस सेवक ने अपना हाथ
अपने स्वामी अबिरहाम की जांघ तले रक्खा और उस बात के बिषय में
उस के आगे किरिया खाई॥ १०। और उस सेवक ने अपने स्वामी के
ऊंटों में से दस ऊंट लिये और चल निकला क्योंकि उस के स्वामी की सारी
संपत्ति उस के हाथ में थी सो वुह उठा और अरामनहरी में नहूर के
नगर को गया॥ ११। और उस ने अपने ऊंटों को नगर के बाहर
पानी के कूएं के पास सांझ के समय में जब कि स्त्रियां पानी भरने को
बाहर जाती हैं बैठाया॥ १२। और कहा कि हे परमेश्वर मेरे स्वामी
अबिरहाम के ईश्वर मैं आप की बिनती करता हूं आज मेरा कार्य सिद्ध
कीजिये और मेरे स्वामी अबिरहाम पर दया कीजिये॥ १३। देख मैं
पानी के कूएं पर खड़ा हूं और नगर के पुरुषों की बेटियां पानी भरने
आती हैं॥ १४। ऐसा होवे कि वुह कन्या जिसे मैं कहूं कि अपना
घड़ा उतार जिस्तें मैं पीऊं और वुह कहे कि पी और मैं तेरे ऊंटों
को भी पिलाऊंगी वही हो जिसे तू ने अपने दास इज़हाक के लिये
ठहराया है और इसी से मैं जानूंगा कि तू ने मेरे स्वामी पर दया
किई है॥ १५। इतनी बात समाप्त न करते ही ऐसा हुआ कि देखो
रिबकः जो अबिरहाम के भाई नहूर की पत्नी मिलकः के बेटे बतूएल
से उत्पन्न हुई थी अपना घड़ा अपने कांधे पर धरे हुए बाहर निकली॥
१६। और वुह कन्या रूपवती और कुमारी थी जिस्से पुरुष अज्ञान था
उस कूएं पर गई और अपना घड़ा भरके ऊपर आई॥ १७। वुह
सेवक उस की भेंट को दौड़ा और बोला मैं तेरी बिनती करता हूं अपने
घड़े से थोड़ा पानी पिला॥ १८। वुह बोली कि पीजिये मेरे प्रभु
और उस ने फुरती करके घड़ा हाथ पर उतारके उसे पिलाया॥
१९। जब उसे पिला चुकी तो बोली मैं तेरे ऊंटों के लिये भी जबलों
वे जल से तृप्त हों खींचती जाऊंगी॥ २०। और उस ने फुरती करके
अपना घड़ा कठरे में उंडेला और फिर कूएं पर भरने को दौड़ी और

उस के सब ऊंटों के लिये खींचा॥ २१। और वुह पुरुष आश्चर्य करके देख रहा कि परमेश्वर ने मेरी यात्रा सफल किई है कि नहीं॥ २२। और यों हुआ कि जब ऊंट पी चुके तो उस पुरुष ने आधे शैकल भर सोने की एक नथ और दस भर सोने के दो खड़वे उस के हाथों के लिये निकाले॥ २३। और कहा कि तू किसकी बेटी है मुझे बता तेरे पिता के घर में हमारे लिये रात भर टिकने का स्थान है॥ २४। और उस ने उसे कहा कि मैं मिलकः के बेटे बतूएल की कन्या हूं जिसे वुह नहूर के लिये जनी॥ २५। और उस ने उसे कहा कि हमारे यहां घास चारा भी बहुत है और रात भर टिकने का स्थान॥ २६। तब उस पुरुष ने अपना सिर झुकाया और परमेश्वर की दंडवत किई॥ २७। और कहा कि परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम का ईश्वर धन्य है जिस ने मेरे स्वामी को अपनी दया और अपनी सच्चाई बिना न छोड़ा मार्ग में परमेश्वर ने मेरे स्वामी के भाइयों के घर की ओर मेरी अगुआई किई॥ २८। तब वुह लड़की दौड़ी और अपनी माता के घर में ये बातें कहीं॥ २९। और लाबन नाम रिबकः का एक भाई था जो बाहर कूएं पर उस मनुष्य कने दौड़ा॥ ३०। और यों हुआ कि जब उस ने वुह नथ और खड़वे अपनी बहिन के हाथों में देखे और जब उस ने अपनी बहिन रिबकः से ये बातें कहते सुनी कि इस मनुष्य ने मुझे यों कहा वुह उस पुरुष पास आया और क्या देखता है कि वुह ऊंटों के पास कूएं पर खड़ा है॥ ३१। और कहा कि हे ईश्वर के आशीषित तू भीतर आ तू किस लिये बाहर खड़ा है क्योंकि मैं ने तेरे और तेरे ऊंटों के लिये घर सिद्ध किया है॥ ३२। और वुह पुरुष घर में आया और उस ने अपने ऊंटों के पलान खोले और ऊंटों के लिये घास चारा और उस के और लोगों के जो उस के साथ थे चरण धोने को जल दिया॥ ३३। और भोजन उस के आगे रक्खा गया पर वुह बोला कि जब लों मैं अपना संदेश न पहुंचाऊं मैं न खाऊंगा वुह बोला कहिये॥ ३४। तब उस ने कहा कि मैं अबिरहाम का सेवक हूं॥ ३५। और परमेश्वर ने मेरे स्वामी को बहुत सा बर दिया है और वुह महान हुआ है और उस ने उसे झुंड और ढोर और सोना चांदी और

दास और दासियां और ऊंट और गधे दिये हैं॥ ३६। और मेरे
स्वामी की पत्नी सरः बुढ़ापे में उस के लिये बेटा जनी और उस ने अपना
सब कुछ उसे दिया है॥ ३७। और मेरे स्वामी ने यह कहके मुझ से
किरिया लिई कि तू कनआनियों की बेटियों में से जिन के देश में मैं
रहता हूं मेरे बेटे के लिये पत्नी मत लीजियो॥ ३८। परन्तु मेरे
पिता के घराने और मेरे कुटुंब में जाइयो और मेरे बेटे के लिये पत्नी
लाइयो॥ ३९। और मैं ने अपने स्वामी से कहा क्या जाने वुह स्त्री
मेरे साथ न आवे॥ ४०। उस ने मुझे कहा कि परमेश्वर जिस के आगे
मैं चलता हूं अपना दूत तेरे संग भेजेगा और तेरी यात्रा सफल करेगा
तू मेरे कुटुम्ब और मेरे पिता के घराने से मेरे बेटे के लिये पत्नी लीजियो॥
४१। और जब तू मेरे कुटुंब में आवे तब तू मेरी किरिया से बाहर
होगा और यदि वे तुझे न देवें तो तू मेरी किरिया से बाहर हो जायगा॥
४२। सो मैं आज के दिन कूएं पर आया और कहा कि हे परमेश्वर
मेरे स्वामी अबिरहाम के ईश्वर यदि तू अब मेरी यात्रा सफल करे॥
४३। देख मैं जल के कूएं पर खड़ा हूं और यों होगा कि जब कुमारी
जल भरने निकले और मैं उसे कहूं कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि
अपने घड़े से मुझे थोड़ा पानी पिला॥ ४४। और वुह मुझे कहे कि
तू भी पी और मैं तेरे ऊंटों के लिये भी भरूंगी तो वही वुह स्त्री होवे
जिसे परमेश्वर ने मेरे स्वामी के बेटे के लिये ठहराया है॥ ४५।
इतनी बात मेरे मन में समाप्त न होतेही देखो रिबकः अपने कांधे पर
घड़ा लेके बाहर निकली और वुह कूएं पर उतरी और खींचा और
मैं ने उसे कहा कि मुझे पिला॥ ४६। उस ने फुरती करके अपना
घड़ा उतारा और बोली कि पी और मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी सो
मैं ने पीया और उस ने ऊंटों को भी पिलाया॥ ४७। फिर मैं ने उस्से
पूछा और कहा कि तू किसकी बेटी है वुह बोली कि नहूर के बेटे
बतूएल की लड़की जिसे मिलकः उस के लिये जनी और मैं ने नथ
उस की नाक में और खड़वे उस के हाथों में डाले॥ ४८। और
मैं ने अपना सिर झुकाया और परमेश्वर की स्तुति किई और अपने
स्वामी अबिरहाम के ईश्वर परमेश्वर का धन्य माना जिस ने मुझे ठीक

मार्ग में मेरी अगुआई किई कि अपने स्वामी के भाई की बेटी उस के बेटे के लिये लेऊं॥ ४९। सो अब यदि तुम कृपा और सच्चाई से मेरे स्वामी के साथ व्यवहार किया चाहो तो मुझ से कहो और यदि नहीं तो मुझ से कहो कि मैं दहिने अथवा बायें हाथ फिरूं॥ ५०। तब लाबन और बतूएल ने उत्तर दिया और कहा कि यह बात परमेश्वर की ओर से है हम तुझे बुरा अथवा भला नहीं कहि सक्ते॥ ५१। देख रिबकः तेरे आगे है इसे ले और जा और जैसा परमेश्वर ने कहा है अपने स्वामी के बेटे की पत्नी इसे कर दे॥ ५२। और ऐसा हुआ कि जब अबिरहाम के सेवक ने ये बातें सुनीं भूमि लों परमेश्वर के आगे दंडवत किई॥

५३। और सेवक ने चांदी और सोने के बर्तन और पहिरावा निकाला और रिबकः को दिया और उस ने उस के भाई और उस की माता को भी बहुमूल्य वस्तु दिईं॥ ५४। और उस ने और उस के साथी मनुष्यों ने खाया और पीया और रात भर ठहरे और वे बिहान को उठे और उस ने कहा कि मुझे मेरे स्वामी पास भेजिये॥ ५५। और उस के भाई और उस की माता ने कहा कि कन्या को हमारे संग एक दस दिन रहने दीजिये उस के पीछे वुह जायगी॥ ५६। और उस ने उन्हें कहा कि मुझे मत रोको कि परमेश्वर ने मेरी यात्रा सफल किई है मुझे बिदा करो कि मैं अपने स्वामी पास जाऊं॥ ५७। वे बोले हम उस कन्या को बुलाके उसी से पूछते हैं॥ ५८। तब उन्हों ने रिबकः को बुलाया और उसे कहा कि तू इस पुरुष के साथ जायगी और वुह बोली कि जाऊंगी॥ ५९। सो उन्हों ने अपनी बहिन रिबकः और उस की दाई और अबिरहाम के सेवक और उस के लोगों को बिदा किया॥ ६०। और उन्हों ने रिबकः को आशीष दिया और उसे कहा कि तू हमारी बहिन है कड़ोरों की माता हो और तेरा वंश उन के द्वारों का जो उस्से बैर रखते हैं अधिकारी होवे॥ ६१। और रिबकः और उस की सहेलियां उठीं और ऊंटों पर चढ़के उस मनुष्य के पीछे हुईं और उस सेवक ने रिबकः को लिया और अपना मार्ग पकड़ा॥ ६२। और इज़हाक सजीवन देखनेवाले के कूएं पर मार्ग में आ निकला था क्योंकि वुह दक्खिन देश में रहता था॥ ६३। और इज़हाक संध्याकाल को ध्यान करने के

लिये खेत को निकला उस ने अपनी आंखें ऊपर किईं और क्या देखता है
कि ऊंट चले आते हैं॥ ६४। रिबक़ः ने अपनी आंखें उठाईं और जब
उस ने इज़हाक को देखा तो ऊंट पर से उतर पड़ी॥ ६५। और उस ने
सेवक से पूछा कि यह जन जो खेत से हमारी भेंट को चला आता है कौन
है सेवक ने कहा कि मेरा स्वामी है इस लिये उस ने घूंघट लेके अपने तईं
ढांपा॥ ६६। तब सेवक ने सब कुछ जो उस ने किया था इज़हाक से
कहा॥ ६७। और इज़हाक उसे अपनी माता सरः के तंबू में लाया और
रिबक़ः को लिया वह उस की पत्नी ऊई उस ने उसे प्यार किया और
इज़हाक ने अपनी माता के मरने के पीछे शांति पाई॥

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

तब अबिरहाम ने क़तूरः नाम की एक पत्नी लिई॥ २। और उस्से
ज़िमरान और युक़सान और मिदान और मिदयान और इसबाक़
और सूख़ उत्पन्न ऊए॥ ३। और युक़सान से सिबा और ददान उत्पन्न
ऊए और ददान के बेटे असूर और लतूसी और लेमी॥ ४। और
मिदयान के बेटे ऐफः और गिफ्र और हनूक और अबिदाः और
इल्दाआ उत्पन्न ऊए ये सब क़तूरः के लड़के थे॥ ५। और अबिरहाम
ने अपना सब कुछ इज़हाक को दिया॥ ६। परन्तु दासियों के बेटों को
अबिरहाम ने दान दिये और अपने जीते जी उन्हें अपने बेटे इज़हाक पास
से पूरब देश में भेज दिया॥ ७। और अबिरहाम के जीवन के दिन जिन
में वुह जीता रहा एक सौ पचहत्तर बरस थे॥ ८। तब अबिरहाम ने
अच्छे वृद्ध बय में परिपूर्ण और वृद्ध मनुष्य होके प्राण त्यागा और अपने
लोगों में बटोरा गया॥ ९। और उस के बेटे इज़हाक और इसमअएल
ने मकफीलः की कंदला में हित्ती सुग्र के बेटे ईफरून के खेत में जो ममरी
के आगे है उसे गाड़ा॥ १०। यही खेत अबिरहाम ने हित्त के बेटों
से मोल लिया था अबिरहाम और उस की पत्नी सरः वहीं गाड़े गये॥
११। और अबिरहाम के मरने के पीछे यों ऊआ कि ईश्वर ने उस के
बेटे इज़हाक को आशीष दिया और इज़हाक सजीवन देखवैया के कूएं
के पास रहता था॥ १२। और अबिरहाम के बेटे इसमअएल की

वंशावली जिसे सरः की लैांडी मिस्री हाजिरः अबिरहाम के लिये जनी
थी ये हैं॥ १३। उन की वंशावली की रीति के समान इसमअएल के
बेटों के नाम ये हैं इसमअएल का पहिलैांठा नबीत और कीदार और
अदबिएल और मिबसाम॥ १४। और मिसमाअ और दूमः और
मस्सा॥ १५। और हदर और तैमा और इतूर और नफीस और
किदिमः॥ १६। ये इसमअएल के बेटे हैं और उन के नाम उन की
बसतियों और उन की गढ़ियों में ये हैं और ये अपनी जातिगणों के
बारह अध्यक्ष थे॥ १७। और इसमअएल के जीवन के बरस एक सौ सैं
तीस थे कि उस ने अपना प्राण त्यागा और मर गया और अपने लोगों में
बटुर गया॥ १८। और वे हवीलः से सूर लों जो असूर के मार्ग में मिस्र
के आगे है बसते थे उस ने अपने सारे भाइयों के आगे वास किया॥

१९। और अबिरहाम के बेटे इज़हाक की वंशावली यह है कि
अबिरहाम से इज़हाक उत्पन्न हुआ॥ २०। इज़हाक ने चालीस
बरस की वय में रिबक़ः से बिवाह किया वुह फद्दानअराम के सुरियानी
बतूएल की बेटी और सुरियानी लाबन की बहिन थी॥ २१। और
इज़हाक ने अपनी पत्नी के लिये परमेश्वर से बिनती किई क्योंकि वुह
बांझ थी और परमेश्वर ने उस की बिनती मानी और उस की पत्नी
रिबक़ः गर्भिणी हुई॥ २२। और उस के पेट में बालक आपुस में
छेड़ा छेड़ी करने लगे तब उस ने कहा यदि यों तो ऐसा क्यों हों और
वुह परमेश्वर से बूझने को गई॥ २३। परमेश्वर ने उसे कहा कि तेरे
गर्भ में दो जातिगण हैं और तेरी कोख से दो रीति के लोग अलग
होंगे और एक लोग दूसरे लोग से बलवंत होगा और जेष्ठ कनिष्ठ की
सेवा करेगा॥ २४॥ और जब उस के जन्ने के दिन पूरे हुए तो क्या
देखते हैं कि उस के गर्भ जमल थे॥ २५। सो पहिला ऐसा जैसा रोम
का पहिरावा होता है बालों में छिपा हुआ लाल रंग का निकला और
उन्हों ने उस का नाम एसौ रक्खा॥ २६। उस के पीछे उस का भाई
निकला और उस का हाथ एसौ की एड़ी से लगा हुआ था और उस
का नाम यअकूब रक्खा गया जब वुह उन्हें जनी तो इज़हाक की वय
साठ बरस की थी॥ २७। और लड़के बढ़े और एसौ खेत का रहवैया

और चतुर अहेरी था और यअकूब सूधा मनुष्य तंबू में रहा करता
था॥ २८। और इज़हाक एसौ को प्यार करता था क्योंकि वुह उस
के अहेर से खाता था परन्तु रिबक़: यअकूब को चाहती थी॥ २९।
और यअकूब ने लपसी पकाई और एसौ खेत से आया और वुह थक
गया था॥ ३०। और एसौ ने यअकूब से कहा मैं तेरी बिनती करता
हूं कि इस लाल लाल में से मुझे खिला क्योंकि मैं मूर्छित हूं इस
लिये उस का नाम अदूम हुआ॥ ३१। तब यअकूब ने कहा कि
आज अपना जन्म पद मेरे हाथ बेच॥ ३२। तब एसौ ने कहा देख
मैं मरने पर हूं और इस जन्म पद से मुझे क्या लाभ होगा॥ ३३।
तब यअकूब ने कहा कि आज मुझ से किरिया खा उस ने उसे किरिया
खाई और अपना जन्म पद यअकूब के हाथ बेचा॥ ३४। तब यअकूब
ने रोटी और मसूर की दाल की लपसी दिई उस ने खाया और पीया
और उठके चला गया यों एसौ ने अपने जन्म पद की निंदा किई।

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब॥

और उस देश में पहिले अकाल को छोड़ जो अबिरहाम के दिनों
में पड़ा था फिर अकाल पड़ा तब इज़हाक अबिमलिक पास
जो फिलस्तियों का राजा था जिरार को गया॥ २। और परमेश्वर
ने उस पर प्रगट होके कहा मिस्र को मत उतरजा जहां मैं तुझे कहूं
उस देश में निवास कर॥ ३। तू इस देश में टिक और मैं तेरे
साथ होऊंगा और तुझे आशीष देऊंगा क्योंकि मैं तुझे और तेरे
बंश को इन सारे देशों को देऊंगा और मैं उस किरिया को जो मैं
ने तेरे पिता अबिरहाम से खाई है पूरी करूंगा॥ ४। और मैं तेरे
बंश को आकाश के तारों की नाईं बढ़ाऊंगा और ये समस्त देश तेरे
बंश को देऊंगा और पृथिवी के सारे जातिगण तेरे बंश से आशीष
पावेंगे॥ ५। इस लिये कि अबिरहाम ने मेरे शब्द को माना और मेरी
आज्ञाओं और मेरी बातें और मेरी बिधिन और मेरी व्यवस्था को
पालन किया॥ ६। सो इज़हाक जिरार में रहा॥ ७। और वहां
के बासियों ने उसे उस की पत्नी के बिषय में पूछा तब वुह बोला कि

वुह मेरी बहिन है क्योंकि वुह उसे अपनी पत्नी कहते ज़ए डरा न हो
कि वहां के लोग रिबकः के लिये उसे मार डालें क्योंकि वुह देखने में
सुंदरी थी॥ ८। और यें ज़आ कि जब वुह वहां बज़त दिन लों
रहा तो फिलस्तियें के राजा अबिमलिक ने झरोखे से दृष्टि किई
और देखा तो क्या देखता है कि इज़हाक अपनी पत्नी रिबकः से
कलोल करता है॥ ९। तब अबिमलिक ने इज़हाक को बुलाके कहा
देख वुह निश्चय तेरी पत्नी है फिर तू ने क्योंकर कहा कि वुह मेरी
बहिन है इज़हाक ने कहा इस लिये मैं ने कहा न हो कि मैं उस के लिये
मारा जाऊं॥ १०। और अबिमलिक बोला यह क्या है जो तू ने हम
से किया है यदि लोगें में से कोई तेरी पत्नी के साथ अकर्म्म करता तब
तू यह दोष हम पर लाता॥ ११। तब अबिमलिक ने अपने सब
लोगें को यह आज्ञा किई कि जो कोई इस पुरुष को अथवा उस की
पत्नी को छूयेगा निश्चय घात किया जायगा॥ १२। तब इज़हाक ने
उस देश में खेती किई और उस बरस सै। गुना प्राप्त किया और परमेश्वर
ने उसे आशीष दिया॥ १३। और वुह मनुष्य बढ़ गया और उस की
बढ़ती होती चली जाती थी यहां लें कि वुह अत्यंत बड़ा धनी हो गया॥
१४। क्योंकि वुह झुंड और ढोर और बज़त से सेवकें का स्वामी ज़आ
और फिलिस्तियें ने उस्से डाह किया॥ १५। और सारे कूएं जो
उस के पिता के सेवकें ने उस के पिता अबिरहाम के समय में खोदे थे
फिलिस्तियें ने ढांप दिये और उन्हें मट्टी से भर दिये॥ १६। सो अबि-
मलिक ने इज़हाक से कहा कि हमारे पास से जा क्योंकि तू हम से भी
सामर्थी है॥ १७। और इज़हाक वहां से गया और अपना तंबू जिरार
की तराई में खड़ा किया और वहीं रहा॥ १८। और इज़हाक ने उन
जल के कूओं को जो उन्हें ने उस के पिता अबिरहाम के दिनें में खोदे थे
फिर खोदा क्योंकि फिलिस्तियें ने अबिरहाम के मरने के पीछे उन्हें ढांप
दिया था और उस ने उन के वही नाम रक्खे जो उस के पिता ने रक्खे थे॥
१९। और इज़हाक के सेवकें ने तराई में खोदा और वहां एक कूआं जिस
में जल का सोता था पाया॥ २०। और जिरार के अहीरें ने इज़हाक
के अहीरें से यह कहके झगड़ा किया कि यह जल हमारा है और उन के

झगड़ा करने के लिये उस ने उस कूएं का नाम झगड़ रक्खा॥ २१।
और उन्हों ने दूसरा कूआं खोदा और उस के लिये भी झगड़ा और उस ने
उसका नाम विरोध रक्खा॥ २२। और वुह वहां से आगे चला और
दूसरा कूआं खोदा उन्हों ने उस के लिये झगड़ा न किया और उस ने
उस का नाम ठिकाना रक्खा और उस ने कहा कि अब परमेश्वर ने
हमारे लिये ठिकाना किया है और हम इस भूमि में फलवंत होंगे॥
२३। और वुह वहां से बीअरसबअ को गया॥ २४। और परमेश्वर
ने उसी रात उसे दर्शन देके कहा कि मैं तेरे पिता अबिरहाम का
ईश्वर हूं मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं और तुझे आशीष देऊंगा
और अपने दास अबिरहाम के लिये तेरा वंश बढ़ाऊंगा॥ २५।
और उस ने वहां एक बेदी बनाई और परमेश्वर का नाम लिया और
वहां अपना तंबू खड़ा किया और इज़हाक के सेवकों ने वहां एक
कूआं खोदा॥ २६। तब जिरार से अबिमलिक और एक उस के
मित्रों में से अखूजत और उस के सेनापति फीकुल उस पास गये॥
२७। और इज़हाक ने उन्हें कहा कि तुम किस लिये मुझ पास आये हो
यद्यपि तुम मुझ से बैर रखते हो और तुम ने मुझे अपने पास से निकाल
दिया है॥ २८। और वे बोले कि देखते हुए हम ने देखा कि परमेश्वर
निःसन्देह तेरे संग है सो हम ने कहा कि हम और तू आपुस में किरिया
खावें और तेरे साथ बाचा बांधें॥ २९। जैसा हम ने तुझे नहीं छूआ
और तुझ से भलाई छोड़ कुछ नहीं किया और तुझे कुशल से भेजा तू
भी हमें न सता तू अब परमेश्वर का आशीषित है॥ ३०। और उस ने
उन के लिये जेवनार बनाया और उन्हों ने खाया पीया॥ ३१। और
बिहान को तड़के उठे और आपुस में किरिया खाई और इज़हाक ने
उन्हें बिदा किया और वे उस पास से कुशल से गये॥ ३२। और उसी
दिन यों हुआ कि इज़हाक के सेवक आये और अपने खोदे हुए कूएं के
बिषय में कहा और बोले कि हम ने जल पाया॥ ३३। सो उस ने
उस का नाम सबअ रक्खा इस लिये वुह नगर आज लों बीअरसबअ कह-
लाता है॥ ३४। और एसौ जब चालीस बरस का हुआ तब उस ने
हत्तीबीअरी की बेटी यहूदियत को और हत्ती एलून की बेटी बशामत

को पत्नी किया॥ ३५। जो इज़हाक और रिबक़: के लिये मन के कड़वाहट का कारण हुई।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब ।

और यों हुआ कि जब इज़हाक बूढ़ा हुआ और उस की आंखें धुन्धला गईं ऐसा कि वुह देख न सक्ता था तो उस ने अपने जेठे बेटे एसौ को बुलाया और कहा कि हे मेरे बेटे वुह बोला देखो यहीं हूं॥
२। तब उस ने कहा कि देख मैं बूढ़ा हूं और मैं अपने मरने का दिन नहीं जानता॥ ३। सो अब तू अपना हथियार और तरकस और अपना धनुष ले और बन को जा और मेरे लिये मृग मांस अहेर कर॥
४। और मेरी रुचि के समान खादित भोजन पका के मेरे पास ला जिसतें खाऊं और अपने मरने के आगे मन से तुझे आशीष देऊं॥
५। और जब इज़हाक अपने बेटे एसौ से बातें करता था तब रिबक़: ने सुना और जब एसौ मृग मांस अहेरने बन को गया॥ ६। तब रिबक़: ने अपने बेटे यअक़ूब से कहा कि देख मैं ने तेरे भाई एसौ से तेरे पिता को यह कहते सुना॥ ७। कि मेरे लिये मृग मांस मार ला और मेरे लिये खादित भोजन पका जिसतें खाऊं और अपने मरने से पहिले परमेश्वर के आगे तुझे आशीष देऊं॥ ८। सो अब हे मेरे बेटे मेरी आज्ञा के समान मेरी बात को मान॥ ९। अब झुंड में जा और वहां से बकरी के दो मेम्ने मुझ पास ला और मैं तेरे पिता की रुचि के समान उस के लिये खादित भोजन बनाऊंगी॥ १०। और तू अपने पिता के पास ले जाइयो जिसतें वुह खाय और अपने मरने से आगे तुझे आशीष देवे॥ ११। तब यअक़ूब ने अपनी माता रिबक़: से कहा देख मेरा भाई एसौ रोंआर मनुष्य है और मैं चिकना हूं॥ १२। क्या जाने मेरा पिता मझे टटोले और मैं उस पास छली की नाईं ठहरूं और आशीष नहीं परन्तु अपने ऊपर स्राप लाऊं॥ १३। उस की माता ने उसे कहा कि तेरा स्राप मुझ पर होवे हे मेरे बेटे तू केवल मेरी बात मान और मेरे लिये जाके ला॥ १४। सो वुह गया और अपनी माता पास लाया और उस की माता ने उस के पिता की रुचि के समान

स्वादित भोजन बनाया॥ १५। और रिबक: ने घर में से अपने जेठे बेटे एसौ का अच्छा पहिरावा लिया और अपने छोटे बेटे यअकूब को पहिनाया॥ १६। और बकरी के मेम्नों का चमड़ा उस के हाथों और उस के गले की चिकनाई पर लपेटा॥ १७। और अपना बनाया हुआ स्वादित भोजन और रोटी अपने बेटे यअकूब के हाथ दिई॥

१८। और वुह अपने पिता के पास जाके बोला हे मेरे पिता और वुह बोला मैं यहां हूं तू कौन है हे मेरे बेटे॥ १९। तब यअकूब अपने पिता से बोला कि मैं आप का पहिलौंठा एसौ हूं आप के कहने के समान मैं ने किया है उठ बैठिये और मेरे म्टग मांस में से कुछ खाइये जिसतें आप का प्राण मुझे आशीष देवे॥ २०। तब इज़हाक ने अपने बेटे से कहा कि यह क्योंकर है जो तू ने ऐसा बेग पाया हे मेरे बेटे और वुह बोला इस लिये कि परमेश्वर आप का ईश्वर मेरे आगे लाया॥ २१। तब इज़हाक ने यअकूब से कहा कि हे बेटे मेरे पास आ जिसतें मैं तुझे टटोलों कि निश्चय तू मेरा बेटा एसौ है कि नहीं॥ २२। तब यअकूब अपने पिता इज़हाक पास गया और उस ने उसे टटोल के कहा कि शब्द तो यअकूब का शब्द है पर हाथ एसौ के हाथ हैं॥ २३। और उस ने उसे न पहिचाना इस लिये कि उस के हाथ उस के भाई एसौ के हाथों की नाईं रोंआर थे सो उस ने उसे आशीष दिया॥ २४। और कहा कि तू मेरा वही बेटा एसौ ही है वुह बोला कि मैं वही हूं॥ २५। और उस ने कहा कि तू मेरे पास ला कि मैं अपने बेटे के म्टग मांस से कुछ खाऊं जिसतें जी से तुझे आशीष देऊं सो वुह उस पास लाया और उस ने खाया और वुह उस के लिये दाख रस लाया और उस ने पीया॥ २६। फिर उस के पिता इज़हाक ने उसे कहा कि बेटे अब पास आ और मुझे चूम॥ २७। वुह पास आया और उसे चूमा और उस ने उस के पहिरावा की बास पाई और उसे आशीष दिया और कहा कि देख मेरे बेटे का गंध उस खेत के गंध की नाईं है जिस पर परमेश्वर ने आशीष दिया है॥ २८। और ईश्वर तुझे आकाश की ओस और पृथिवी की चिकनाई और बहुत से अन्न और दाख रस देवे॥ २९। लोग तेरी सेवा करें और जातिगण तेरे आगे झुकें तू अपने भाइयों का

प्रभु हो और तेरी मा के बेटे तेरे आगे झुकें जो तुझे स्रापे सो स्रापित
और जो तुझे आशीर्बाद देवे सो आशीषित होवे॥ ३०। और यों
ज़आ कि जेउंहीं इज़हाक़ यअक़ूब को आशीष दे चुका और यअक़ूब के
अपने पिता इज़हाक़ के आगे से बाहर जाते ही उस का भाई एसौ अपनी
अहेर से फिरा॥ ३१। और उस ने भी स्वादित भोजन बनाया और
अपने पिता पास लाया और अपने पिता से कहा मेरे पिता उठिये और
अपने बेटे का मृग मांस खाइये जिसतें आप का प्राण मुझे आशीष
देवे॥ ३२। उस के पिता इज़हाक़ ने उसे पूछा कि तू कौन है वुह
बोला कि मैं आप का बेटा आप का पहिलौंठा एसौ हूं॥ ३३। तब
इज़हाक़ बड़ी कंपकंपी से कांपा और बोला वुह तो कौन था और
कहां है जो मृग मांस अहेर करके मुझ पास लाया और मैं ने सब में से
तेरे आने के आगे खाया है और उसे आशीष दिया है हां वुह आशीषित
होगा॥ ३४। एसौ अपने पिता की ये बातें सुनके बड़त चिल्लाया
और फूट फूटके रोया और अपने पिता से कहा मुझे भी मुझे हे मेरे पिता
आशीष दीजिये॥ ३५। और वुह बोला कि तेरा भाई छल से आया
और तेरा आशीष ले गया॥ ३६। तब उस ने कहा क्या वुह यअक़ूब
ठीक नहीं कहावता क्योंकि उस ने दोहराके मुझे अड़ंगा मारा उस
ने मेरा जन्म पद लेलिया और देखो अब उस ने मेरा आशीष लिया है
और उस ने कहा क्या तू ने मेरे लिये कोई आशीष नहीं रख छोड़ा॥
३७। तब इज़हाक़ ने एसौ को उत्तर देके कहा कि देख मैं ने उसे तेरा प्रभु
किया और उस के सारे भाइयों को उस की सेवकाई में दिया और
अन्न और दाख रस से उस का सहारा किया अब हे मेरे बेटे तेरे लिये
मैं क्या करूं॥ ३८। तब एसौ ने अपने पिता से कहा हे पिता क्या
आप पास एकही आशीष है हे मेरे पिता मुझे भी मुझे आशीष दीजिये
और एसौ चिल्ला चिल्ला रोया॥ ३९। तब उस के पिता इज़हाक़ ने
उत्तर दिया और उसे कहा कि देख भूमि की चिकनाई और ऊपर से
आकाश की ओस में तेरा तंबू होगा॥ ४०। और तू अपने खड्ग से
जीयेगा और अपने भाई की सेवा करेगा और यों होगा कि जब तू
राज्य पावेगा तो उस का जूआ अपने कांधे पर से तोड़ फेंकेगा॥ ४१।

सो उस आशीष के कारण जिसे उस के पिता ने उसे दिया था एसौ ने
यअकूब का बैर रक्खा और एसौ ने अपने मन में कहा कि मेरे पिता
के शोक के दिन आते हैं कि मैं अपने भाई यअकूब को मार डालूंगा॥
४२। और रिबक: को उस के जेठे बेटे एसौ की ये बातें कही गईं तब
उस ने अपने छुटके बेटे यअकूब को बुला भेजा और कहा कि देख
तेरा भाई एसौ तुझे घात करने को तेरे विषय में अपने को शांति देता
है॥ ४३। सो इस लिये हे मेरे बेटे तू अब मेरा कहा मान उठ और
मेरे भाई लाबन पास हरान को भाग जा॥ ४४। और थोड़े दिन
उस के साथ रह जबलों तेरे भाई का कोप जाता रहे॥ ४५। जबलों
तेरे भाई का क्रोध तुझ से न फिरे और जो तू ने उस्से किया है सो
भूल जाय तब मैं तुझे वहां से बुला भेजूंगी किस लिये एकही दिन मैं
तुम दोनों को खोऊं॥ ४६। तब रिबक: ने इज़हाक से कहा कि
मैं हित्त की बेटियों के कारण अपने जीवन से खेदित हूं सो यदि
यअकूब हित्त की बेटियों में से जैसी उस देश की लड़कियां हैं लेवे तो
मेरे जीवन से क्या फल है॥

२८ अठाईसवां पर्ब्ब।

और इज़हाक ने यअकूब को बुलाया और उसे आशीष दिया और
उसे कहा कि तू कनआनी लड़कियों में से पत्नी न लेना॥ २।
उठ और फ़द्दानअराम में अपने नाना बतूएल के घर जा और वहां से
अपने मामू लाबन की लड़कियों में से पत्नी ले॥ ३। और सर्बसामर्थी
ईश्वर तुझे आशीष देवे और तुझे फलमान करे और तुझे बढ़ावे जिसतें
तू लोगों की मंडली होवे॥ ४। और अबिरहाम का आशीष तुझे
और तेरे संग तेरे बंश को देवे जिसतें तू अपनी टिकाव की भूमि में जो
ईश्वर ने अबिरहाम को दिई अधिकार में पावे॥ ५। फिर इज़हाक
ने यअकूब को बिदा किया और वुह फ़द्दानअराम में सूरियानी बतूएल
के बेटे लाबन पास गया जो यअकूब और एसौ की माता रिबक: का भाई
था॥ ६। और एसौ ने जब देखा कि इज़हाक ने यअकूब को आशीष
दिया और उसे फ़द्दानअराम से पत्नी लेने को वहां भेजा और कि उस ने

उसे आशीष देके कहा कि तू कनआन की लड़कियों में से पत्नी न लेना॥
७। और कि यअकूब ने अपने माता पिता की बात मानी और
फद्दानअराम को गया॥ ८। और एसौ ने यह भी देखा कि कनआनी
लड़की मेरे पिता की दृष्टि में बुरी हैं॥ ९। तब एसौ इसमअएल कने
गया और अबिरहाम के बेटे इसमअएल की बेटी महलत को जो नबीत
की बहिन थी अपनी पत्नियों में लिया॥ १०। और यअकूब बीअरसबअ
से निकल के हरान की ओर गया॥ ११। और एक स्थान में टिका
और रात भर रहा क्योंकि सूर्य अस्त हुआ था और उस ने उस स्थान के
पत्थरों को लिया और अपना उसीसा किया और वहां सोने को लेट
गया॥ १२। और वुह स्वप्न में क्या देखता है कि एक सीढ़ी पृथिवी
पर धरी है और उस की टोंक स्वर्ग से लगी थी और क्या देखता है कि
ईश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं॥ १३। और क्या देखता है
की परमेश्वर उस के ऊपर खड़ा है और यों बोला कि मैं परमेश्वर तेरे
पिता अबिरहाम और इज़हाक का ईश्वर हूं मैं यह भूमि जिस पर तू
लेटा है तुझे और तेरे बंश को देऊंगा॥ १४। और तेरे बंश पृथिवी
की धूल की नाईं होंगे और तू पश्चिम पूर्ब उत्तर दक्षिण को फूट निकले
गा और तुझ में और तेरे बंश में पृथिवी के सारे घराने आशीष पावेंगे॥
१५। और देख मैं तेरे साथ हूं और सर्बत्र जहां कहीं तू जायगा तेरी
रखवाली करूंगा और तुझे इस देश में फिर लाऊंगा और जबलों मैं
तुझ से अपना कहा हुआ पूरा न कर लेऊं तुझे न छोड़ूंगा॥ १६। तब
यअकूब अपनी नींद से जागा और कहा कि निश्चय परमेश्वर इस स्थान
में है और मैं न जानता था॥ १७। तब वुह डर गया और बोला कि
यह क्याही भयानक स्थान है ईश्वर के मंदिर को छोड़ यह और कुछ
नहीं है और स्वर्ग का फाटक है॥

१८। और यअकूब बिहान को तड़के उठा और उस पत्थर को जिसे
उस ने अपना उसीसा किया था खंभा खड़ा किया और उस पर तेल ढाला॥
१९। और उस स्थान का नाम बैतएल रक्खा पर उस्से पहिले उस नगर
का नाम लौज़ था॥ २०। और यअकूब ने मनौती मानी और कहा कि
यदि ईश्वर मेरे साथ रहे और मेरे जाने के मार्ग में मेरा रखवाल हो

और मुझे खाने को रोटी और पहिन्ने को कपड़ा देवे॥ २१। ऐसा कि
मैं अपने पिता के घर कुशल से फिर आऊं तब परमेश्वर मेरा ईश्वर
होगा॥ २२। और यह पत्थर जो मैं ने खंभा सा खड़ा किया ईश्वर
का मंदिर होगा और सब में से जो तू मुझे देगा दसवां भाग अवश्य
तुझे देउंगा।

२९ उन्तीसवां पर्ब्ब।

तब यअकूब ने पांव उठाया और पूर्बी पुत्रों के देश में आया॥
२। उस ने दृष्टि किई और खेत में एक कूआं देखा और लो कि कूएं
के लग भेड़ों के तीन झुंड बैठे हुए हैं क्योंकि वे उसी कूएं से झुंडों को
पानी पिलाते थे और कूएं के मुंह पर बड़ा पत्थर धरा था॥ ३। और
वहां सारी झुंड एकट्ठी होती थी और वे उस पत्थर को कूएं के मुंह पर
से ढुलका देते थे और भेड़ों को पानी पिलाके पत्थर को उस के मुंह पर
फिर रखते थे॥ ४। तब यअकूब ने उन से कहा कि मेरे भाइयो तुम
कहां के हो और वे बोले कि हम हरान के हैं॥ ५। फिर उस ने उन से
पूछा कि तुम नहूर के बेटे लाबन को जानते हो और वे बोले जानते हैं॥
६। और उस ने उन्हें कहा कि वुह कुशल से है और वे बोले कि कुशल
से है और देख उस की बेटी राखिल भेड़ों के साथ आती है॥ ७। तब
वुह बोला देखो दिन अब भी बहुत है और ढोरों के एकट्ठे करने का
समय नहीं तुम भेड़ों को पानी पिलाके चराई पर ले जाओ॥ ८। वे
बोले हम नहीं सक्ते जब लों कि सारे झुंड एकट्ठे न होवें और पत्थर को
कूएं के मुंह पर से न ढुलकावें तब हम भेड़ों को पानी पिलाते हैं॥ ९।
वुह उन से यह कहि रहा था कि राखिल अपने पिता की भेड़ों को लेके
आई॥ १०। क्योंकि वुह उन की रखवालनी थी और यों हुआ कि
यअकूब अपने मामू लाबन की बेटी राखिल को और अपने मामू लाबन
की भेड़ों को देखके पास गया और पत्थर को कूएं के मुंह पर से ढुल-
काया और अपने मामू लाबन की भेड़ों को पानी पिलाया॥ ११
और यअकूब ने राखिल को चूमा और चिल्ला के रोया॥ १२॥ और
यअकूब ने राखिल से कहा कि मैं तेरे पिता का कुटुम्ब और रिबक़ः

का बेटा हूं उस ने दौड़के अपने पिता से कहा॥ १३। और यों
हुआ कि लावन अपने भांजे यअ़्कूब का समाचार सुनके उस्से मिलने
को दौड़ा और उसे गले लगाया और उसे अपने घर लाया और
उस ने ये सारी बातें लावन से कहीं॥ १४। तब लावन ने उसे
कहा कि निश्चय तू मेरी हड्डी और मांस है और वुह एक मास भर
उस के यहां रहा॥ १५। तब लावन ने यअ़्कूब से कहा कि मेरा भाई
होने के कारण क्या तू सेंत से मेरी सेवा करेगा सो कह मैं तुझे क्या देऊं॥
१६। और लावन की दो बेटियां थीं जेठी का नाम लियाह और लहुरी
का नाम राख़िल था॥ १७। और लियाह की आंखें चुन्धली थीं परन्तु
राख़िल सुन्दरी और रूपवती थी॥ १८। और यअ़्कूब राख़िल को
प्यार करता था और उस ने कहा कि तेरी लहुरी बेटी राख़िल के लिये
मैं सात बरस तेरी सेवा करूंगा॥ १९। तब लावन बोला कि उसे दूसरे
के देने से तुझी को देना भला है सो तू मेरे साथ रह॥ २०। और
यअ़्कूब ने सात बरस लों राख़िल के लिये सेवा किई और उस प्रीति के
मारे जो वुह उस्से रखता था थोड़े दिन की नाईं समझ पड़े॥ २१।
और यअ़्कूब ने लावन से कहा कि मेरे दिन पूरे हुए मेरी पत्नी मुझे
दीजिये जिसतें मैं उसे ग्रहण करूं॥ २२। तब लावन ने वहां के सारे
मनुष्यों को एकट्ठा करके जेवनार किया॥ २३। और सांझ को यों हुआ
कि वुह अपनी बेटी लियाह को उस पास लाया और उस ने उसे ग्रहण
किया॥ २४। और दासी के लिये लावन ने अपनी दासी ज़ीलफः को
अपनी बेटी लीयाह को दिया॥ २५। और ऐसा हुआ कि बिहान को
क्या देखता है कि लियाह है तब उस ने लावन को कहा कि आप ने यह
मुझ से क्या किया क्या मैं ने आप की सेवा राख़िल के लिये नहीं किई
फिर आप ने किस लिये मुझे छला॥ २६। तब लावन ने कहा कि
हमारे देश का यह व्यवहार नहीं कि लहुरी को जेठी से पहिले ब्याह
देवें॥ २७। उस का अठवारा पूरा कर और तेरी और भी सात बरस
की सेवा के लिये हम इसे भी तुझे देंगे॥ २८। और यअ़्कूब ने ऐसाही
किया और उस का अठवारा पूरा किया तब उस ने अपनी बेटी राख़िल
को भी उसे पत्नी में दिया॥ २९। और लावन ने अपनी दासी बिलहः

को अपनी बेटी राख़िल की दासी होने के लिये दिया॥ ३०। तब
यअ़क़ूब ने राख़ील को भी ग्रहण किया और वुह राख़िल को लियाह से
अधिक प्यार करता था और सात बरस अधिक उसने उस की सेवा किई॥
३१। और जब परमेश्वर ने देखा कि लियाह घिनित ऊई उस ने उस
की कोख खोली और राख़िल बांझ रही॥ ३२। और लियाह
गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और उस ने उस का नाम रूबिन रक्खा
क्योंकि उस ने कहा कि निश्चय परमेश्वर ने मेरे दुःख पर दृष्टि किई है
कि अब मेरा पति मुझे प्यार करेगा॥ ३३। और वुह फिर गर्भिणी
ऊई और बेटा जनी और बोली इस लिये कि परमेश्वर ने मेरा घिनित
होना सुनके मुझे इसे भी दिया सो उस ने उस का नाम समऊ़न रक्खा॥
३४। और फिर वह गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और बोली कि
इस बार मेरा पति मुझ से मिल जायगा क्योंकि मैं उस के लिये तीन बेटे
जनी इस लिये उस का नाम लावी रक्खा गया॥ ३५। और वुह फिर
गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और बोली कि अब मैं परमेश्वर की स्तुति
करूंगी इस लिये उस ने उस का नाम यहूदाह रक्खा और जन्ने से रह
गई॥

३० तीसवां पर्ब्ब।

और जब राख़िल ने देखा कि यअ़क़ूब का वंश मुझ से नहीं होता
तो उस ने अपनी बहिन से डाह किया और यअ़क़ूब को कहा
कि मुझे बालक दे नहीं तो मैं मर जाऊंगी॥ २। तब राख़िल पर
यअ़क़ूब का क्रोध भड़का और उस ने कहा क्या मैं ईश्वर की संती हूं
जिस ने तुझे कोख के फल से अलग रक्खा॥ ३। और वुह बोली कि
मेरी दासी बिलहः को देख और उसे ग्रहण कर और वुह मेरे घुटनों
पर जनेगी जिसतें मैं भी उस्से बन जाऊं॥ ४। और उस ने उसे
अपनी दासी बिलहः को पत्नी के लिये दिया और यअ़क़ूब ने उसे
ग्रहण किया॥ ५। और बिलहः गर्भिणी ऊई और यअ़क़ूब के लिये
बेटा जनी॥ ६। तब राख़िल बोली कि ईश्वर ने मेरा बिचार किया
और मेरा शब्द भी सुना और मुझे एक बेटा दिया इस लिये उस ने

उस का नाम दान रक्खा॥ ७। और राख़िल की दासी बिलहः फिर गर्भिणी हुई और यअ़कूब के लिये दूसरा बेटा जनी॥ ८। और राख़ील बाेली कि मैं ने अपनी बहिन से ईश्वरीय मल्ल युद्ध किया और जीता और उस ने उस का नाम नफ़ताली रक्खा॥ ९। और जब लियाह ने देखा कि मैं जन्ने से रह गई ता उस ने अपनी दासी जिल़फः को लेके यअ़कूब को पत्नी के लिये दिया॥ १०। सो लियाह की दासी जिलफः भी यअ़कूब के लिये एक बेटा जनी॥ ११। तब लियाह बोली कि जथा आती है और उस ने उस का नाम जद रक्खा॥ १२। फिर लियाह की दासी जिल़फः यअ़कूब के लिये एक दूसरा बेटा जनी॥ १३। और लियाह बोली कि मैं आनंदित हूं पुत्रियां मुझे धन्य कहेंगी और उस ने उस का नाम यशर रक्खा॥ १४। और गेहूं के लवने के समय में रूबिन घर से निकला और खेत में दूदाफल पाया और उन्हें अपनी माता लियाह के पास लाया तब राख़िल ने लियाह से कहा कि अपने बेटे का दूदाफल मुझे दे॥ १५। उस ने कहा क्या यह छोटी बात है जो तू ने मेरे पति को ले लिया और मेरे पुत्र के दूदाफल को भी लिया चाहती है राख़िल बोली कि वुह आज रात तेरे बेटे के दूदाफल की संती तेरे साथ रहेगा॥ १६। और जब यअ़कूब सांझ को खेत में से आया लियाह उसे आगे से मिलने को गई और कहा कि आज आप को मुझ पास आना होगा क्योंकि निश्चय मैं ने अपने बेटे का दूदाफल देके आप को भाड़े में लिया है सो वुह उस रात उस के साथ रहा॥ १७। और ईश्वर ने लियाह की सुनी और वुह गर्भिणी हुई और यअ़कूब के लिये पांचवां बेटा जनी॥ १८। और लियाह बोली कि ईश्वर ने मेरी बनी मुझे दिई क्योंकि मैं ने अपने पति को अपनी दासी दिई है और उस ने उस का नाम इशकार रक्खा॥ १९। और लियाह फिर गर्भिणी हुई और यअ़कूब के लिये छठवां बेटा जनी॥ २०। और बोली कि ईश्वर ने मुझे अच्छा दैजा दिया है अब मेरा पति मेरे संग रहेगा क्योंकि मैं उस के लिये छः बेटे जनी और उस ने उस का नाम जबूलून रक्खा॥ २१। और अंत में वुह बेटी जनी और उस का नाम दीनाह रक्खा॥ २२। और ईश्वर ने

राखिल को स्मरण किया और उस की सुनके उस की कोख को खोला॥
२३। वुह गर्भिणी हुई और बेटा जनी और बोली कि ईश्वर ने मेरी
निन्दा दूर किई॥ २४। और उस ने उस का नाम यूसुफ़ रक्खा और
बोली कि परमेश्वर मुझे दूसरा बेटा भी देवेगा॥ २५। और जब
राखिल से यूसुफ़ उत्पन्न हुआ तो यों हुआ कि यअ़कूब ने लाबन से कहा
कि मुझे मेरे स्थान और मेरे देश को बिदा कीजिये॥ २६। मेरी
स्त्रियां और मेरे लड़के जिन के लिये मैं ने आप की सेवा किई है
मुझे दीजिये और बिदा करिये क्योंकि आप जानते हैं कि मैं ने आप
की कैसी सेवा किई है॥ २७। लाबन ने उसे कहा कि जो मैं ने तेरी
दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो रह जा क्योंकि मैं ने देख लिया है कि परमे-
श्वर ने तेरे कारण से मुझे आशीष दिया है॥ २८। और उस ने कहा
कि अब तू अपनी बनी मुझ से ठहरा ले मैं तुझे देऊंगा॥ २९। उस ने
उसे कहा आप जानते हैं कि मैं ने क्योंकर आप की सेवा किई है और
आप के ढोर कैसे मेरे साथ थे॥ ३०। क्योंकि मेरे आने से आगे वे
थोड़े थे और अब झुंड के झुंड हो गये और मेरे आने से परमेश्वर ने
आप को आशीष दिया है अब मैं अपने घर के लिये भी कब ठिकाना
करूंगा॥ ३१। और वुह बोला कि मैं तुझे क्या देऊं और यअ़कूब ने
कहा कि आप मुझे कुछ न दीजिये जो आप मेरे लिये ऐसा करेंगे तो
मैं आप के झुंड को फिर चराऊंगा और रखवाली करूंगा॥ ३२।
मैं आज आप के सारे झुंड में से चल निकलूंगा और भेड़ों में से सारी
फुटफुटियों और चितकबरियों और भूरियों को और बकरियों में से
फुटफुटियो और चितकबरियों को अलग करूंगा और मेरी बनी वैसी
होगी॥ ३३। और कल को मेरा धर्म मेरा उत्तर देगा जब कि मेरी
बनी आप के आगे आवे तो वुह जो बकरियों में चितकबरी और
फुटफुटिया और भेड़ों में भूरी न हो तो वुह मेरे पास चोरी की गिनी
जाय॥ ३४। तब लाबन बोला देख मैं चाहता हूं कि जैसा तू ने
कहा तैसाही होवे॥ ३५। और उस ने उस दिन पट्टेवाले और
फुटफुटिया बकरे और सब चितकबरी और फुटफुटिया बकरियां अर्थात्
हर एक जिस में कुछ उजलाई थी और भेड़ों में से भूरी अलग किई

और उन्हें अपने बेटों के हाथ सौंप दिया॥ ३६। और उस ने अपने
और यअकूब के मध्य में तीन दिन की यात्रा का बीच ठहराया और
यअकूब लाबन के उबरे हुए झुंडों को चराया किया॥ ३७। और
यअकूब ने हरे लुबने लूस और अरमन की हरी छड़ियां ले ले उन्हें
गंडेवाल किया ऐसा कि छड़ियों की उजलाई प्रगट हुई॥ ३८। और
जब झुंड पानी पीने को आती थीं तब वुह उन छड़ियों को जिन
पर गंडे बनाये थे झुंडों के आगे कठरों और नालियों में धरता
था कि जब वे सब पीने आवें तो गर्भिणी होवें॥ ३९। और
छड़ियों के आगे झुंड गर्भिणी हुईं और वे गंडेवाले और फुटफुटियां
और चितकबरे बच्चे जनीं॥ ४०। और यअकूब ने मेम्नों को अलग
किया और झुंड के मुंह को चितकबरों के और भूरों के और जो
लाबन की झुंड में थे किया और उस ने अपने झुंड को अलग किया
और लाबन के झुंड में न मिलाया॥ ४१। और यों हुआ कि जब
पुष्ट ढोर गर्भिणी होती थी तो यअकूब छड़ियों को नालियों में उन के
आगे रखता था कि वे उन छड़ियों के आगे गर्भिणी होवें॥ ४२। पर
जब दुर्बल ढोर आते थे वुह उन्हें वहां न रखता था सो दुर्बल दुर्बल
लाबन की और मोटी मोटी यअकूब की हुईं और उस पुरुष की अत्यंत
बढ़ती हुई और वुह बहुत पशु और दास और दासियों और ऊंटों
और गदहों का स्वामी हुआ।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब॥

और उस ने लाबन के बेटों को ये बातें कहते सुना कि यअकूब
ने हमारे पिता का सब कुछ ले लिया और हमारे पिता की
संपत्ति से यह सब विभव प्राप्त किया॥ २। और यअकूब ने लाबन
का रूप देखा और क्या देखता है कि कल परसों की नाईं वुह मेरी
ओर नहीं है॥ ३। और परमेश्वर ने यअकूब से कहा कि तू अपने
पितरों और अपने कुटुम्बों के देश को फिर जा और मैं तेरे संग
होऊंगा॥ ४। तब यअकूब ने राखिल और लियाह को अपनी झुंड
पास खेत में बुला भेजा॥ ५। और उन्हें कहा कि मैं देखता हूं कि

तुम्हारे पिता का रूप आगे की नाईं मेरी ओर नहीं है परन्तु
मेरे पिता का ईश्वर मुझ पर प्रगट हुआ॥ ६। और तुम जानती
हो कि मैं ने अपने सारे बल से तुम्हारे पिता की सेवा किई है॥ ७।
और तुम्हारे पिता ने मुझे छला है और दस बार मेरी बनी बदल दिई
पर ईश्वर ने मुझे दुख देने को उसे न छोड़ा॥ ८। यदि वुह यों बोला
कि फुटफुटियां तेरी बनी होंगी तो सारे ढोर फुटफुयिां जने और यदि
उस ने यों कहा कि पट्टेवाली तेरी बनी में होंगी तो ढोर पट्टेवाले
जने॥ ९। यों ईश्वर ने तुम्हारे पिता के ढोर लिये और मुझे दिये॥
१०। और यों हुआ कि जब ढोर गर्भिणी हुए तो मैं ने स्वप्न में अपनी
आंख उठाके देखा और क्या देखता हूं कि मेढ़े जो ढोर पर चढ़ते हैं
सो पट्टेवाले और फुटफुटिये और चितकबरे थे॥ ११। और ईश्वर के
दूत ने स्वप्न में मुझे कहा कि हे यअ्क़ूब मैं बोला कि यहीं हूं॥ १२।
तब उस ने कहा कि अब अपनी आंखे उठा और देख कि सारे मेंढे जो
भेड़ों पर चढ़ते हैं पट्टेवाले और फुटफुटिये और चितकबरे हैं क्योंकि जो
कुछ लाबन ने तुझ से किया मैं ने देखा है॥ १३। बैतएल का ईश्वर
जहां तू ने खंभे पर तेल डाला और जहां तू ने मेरे लिये मनौती मानी
मैं हूं अब उठ इस देश से निकल जा और अपने कुटुम्ब के देश को फिर
जा॥ १४। तब राख़िल और लियाह ने उत्तर देके उसे कहा क्या
अब लों हमारे पिता के घर में हमारा कुछ भाग अथवा अधिकार है॥
१५। क्या हम उस के लेखे पराये नहीं गिने जाते हैं क्योंकि उस ने तो
हमें बेच डाला है और हमारी रोकड़ भी खा बैठा है॥ १६। परन्तु
ईश्वर ने जो धन कि हमारे पिता से लिया और हमें दिया वही हमारा
और हमारे बालकों का है सो अब जो कुछ कि ईश्वर ने आप से कहा
है सो करिये॥ १७। तब यअ्क़ूब ने उठके अपने बेटों और पत्नियों
को ऊंटों पर बैठाया॥ १८। और अपने सब चौपाए और सामग्री
जो उस ने पाई थी अपनी कमाई के चौपाए जो उस ने फद्दानअराम में
पाए थे ले निकला जिसतें कनआन देश में अपने पिता इज़हाक़ पास
जावे॥ १९। और लाबन अपने भेड़ों का रोम कतरने को गया और
राख़िल ने अपने पिता की कई एक मूर्त्ति चुरा लिई॥ २०। और

यअकूब अरामी लाबन से अचानक चुराके भागा यहां लें कि वुह उस्से
न कहिके भागा॥ २१। सो वुह अपना सब कुछ लेके भागा और उठके
नदी पार उतर गया और अपना मुंह जिलिअद पहाड़ की ओर किया॥
२२। और यअकूब के भागने का संदेश लाबन को तीसरे दिन पहुंचा॥
२३। सो वुह अपने भाइयों को लेके सात दिन के मार्ग लों उस के पीछे
गया और जिलिअद पहाड़ पर उसे जा लिया॥ २४। परन्तु ईश्वर
अरामी लाबन कने स्वप्न में रात को आया और उसे कहा कि चैाकस रह
तू यअकूब को भला बुरा मत कहना॥ २५। तब लाबन ने यअकूब
को जा लिया और यअकूब ने अपना डेरा पहाड़ पर किया था और
लाबन ने अपने भाइयों के साथ जिलिअद पहाड़ पर डेरा खड़ा
किया॥ २६। तब लाबन ने यअकूब से कहा कि तू ने क्या किया जो तू
एका एक मुझ से चुरा निकला और मेरी पुत्रियों को खड्ग में की बंधुआई
की नाईं ले चला॥ २७। तू किस लिये चुपके से भागा और चोरी से
मुझ से निकल आया और मुझे नहीं कहा जिसतें मैं तुझे आनंद मंगल
से भेरी और ढोल के साथ बिदा करता॥ २८। और तू ने मुझे अपने
बेटों और अपनी बेटियों को चूमने न दिया अब तू ने मूर्खता से यह
किया है॥ २९। तुझे दुःख देने को मेरे बश में है परन्तु तेरे पिता के
ईश्वर ने कल रात मुझे यों कहा कि चैाकस रह तू यअकूब को भला
बुरा मत कहना॥ ३०। और अब तुझे तो जाना है क्योंकि तू अपने
पिता के घर का निपट अभिलाषी है पर तू ने किस लिये मेरे देवों को
चुराया है॥ ३१। और यअकूब ने उत्तर दिया और लाबन से कहा
कि डरके मैं ने कहा क्या जाने आप अपनी पुत्रियां बरबस मुझ से
छीन लेंगे॥ ३२। जिस किसी के पास आप अपने देवों को पावें उसे
जीता मत छोड़िये और हमारे भाइयों के आगे देख लीजिये कि आप का
मेरे पास क्या क्या है और अपना लीजिये क्योंकि यअकूब न जानता था
कि राखिल ने उन्हें चुराया था॥ ३३। और लाबन यअकूब के तंबू में
गया और लियाह के तंबू में और दोनो दासियों के तंबू में परन्तु न
पाया तब वुह लियाह के तंबू से बाहर जाके राखिल के तंबू में गया॥
३४। और राखिल मूर्त्तिन को लेकर ऊंट की सामग्री में रखके उन

पर बैठी थी और लाबन ने सारे तंबू को देख लिया और न पाया॥
३५। तब उसने अपने पिता से कहा कि मेरे प्रभु इस्से उदास न होवें
कि मैं आप के आगे उठ नहीं सक्ती क्योंकि मुझ पर स्त्रियों की रीति
है सो उस ने ढूंढ़ा पर मूर्त्तिन को न पाया॥ ३६। और यअक़ूब क्रुद्ध
हुआ और लाबन से बिबाद करके उत्तर दिया और लाबन को कहा कि
मेरा क्या पाप और क्या अपराध है कि आप इस रीति से मेरे पीछे
झपटे॥ ३७। आप ने जो मेरी सारी सामग्री ढूंढ़ी आप ने अपने घर
की सामग्री से क्या पाई मेरे भाइयों और अपने भाइयों के आगे रखिये
जिसतें वे हम दोनों के मध्य में बिचार करें॥ ३८। यह बीस बरस जो
मैं आप के साथ था आप की भेड़ों और बकरियों का गर्भ न गिरा
और मैं ने आप की झुंड के मेंढे नहीं खाये॥ ३९। वुह जो
फाड़ा गया मैं आप पास न लाया उस की घटी मैं ने उठाई वुह जो
दिन को अथवा रात को चोरी गया आप ने मुझ से लिया॥ ४०। मेरी
यह दशा थी कि दिन को घाम से भस्म हुआ और रात को पाला से
और मेरी आंखों से मेरी नींद जाती रही॥ ४१। यों मुझे आप के घर
में बीस बरस बीते मैं ने चौदह बरस आप की दोनों बेटियों के लिये
और छः बरस आप के पशु के लिये आप की सेवा किई और आप ने दस
बार मेरी बनी बदल डाली॥ ४२। यदि मेरे पिता का ईश्वर और
अबिरहाम का ईश्वर और इज़हाक का भय मेरे साथ न होता तो आप
निश्चय मुझे अब छूंछे हाथ निकाल देते ईश्वर ने मेरी बिपत्ति और मेरे
हाथों के परिश्रम को देखा है और कल रात आप को डांटा॥ ४३।
लाबन ने उत्तर दिया और यअक़ूब से कहा कि ये बेटियां मेरी बेटियां
और ये बालक मेरे बालक और ये चौपाए मेरे चौपाए और सब जो तू
देखता है मेरे हैं और आज के दिन अपनी इन बेटियों अथवा इन के
लड़कों से जो वे जनी हैं क्या कर सक्ता हूं॥ ४४। सो अब आ मैं और
तू आपुस में एक वाचा बांधें और वही मेरे और तेरे मध्य में साक्षी
रहे॥ ४५। तब यअक़ूब ने एक पत्थर लेके खंभा सा खड़ा किया॥
४६। और यअक़ूब ने अपने भाइयों से कहा कि पत्थर एकट्ठा करो उन्हों
ने पत्थर एकट्ठा करके एक ढेर किया और उन्हों ने उसी ढेर पर खाया॥

४७। और लाबन ने उस का नाम साक्षी का ढेर रक्खा परन्तु यअ्क़ूब ने उस का नाम जिलिअ़द रक्खा॥ ४८। और लाबन बोला कि यह ढेर आज के दिन मुझ में और तुझ में साक्षी है इस लिये उस का नाम जिलिअ़द॥ ४९। और चौकस का गुम्मट हुआ क्योंकि उस ने कहा कि जब हम आपुस से अलग होवें तो परमेश्वर मेरे तेरे मध्य में चौकसी करे॥ ५०। जो तू मेरी बेटियों को दुख देवे अथवा उन से अधिक स्त्रियां करे देख हमारे साथ कोई दूसरा नहीं ईश्वर मेरे और तेरे मध्य में साक्षी है॥ ५१। और लाबन ने यअ्क़ूब से कहा देख यह ढेर और खंभा जो मैं ने अपने और आपके मध्य में रक्खा है॥ ५२। यही ढेर और खंभा साक्षी है कि मैं इस ढेर से पार तुझे और तू इस ढेर और इस खंभे से पार मुझे दुख देने को न आवेगा॥ ५३। अबिरहाम का ईश्वर और नहूर का ईश्वर और उन के पिता का ईश्वर हमारे मध्य में बिचार करे और यअ्क़ूब ने अपने पिता इज़्हाक के भय की किरिया खाई॥ ५४। तब यअ्क़ूब ने उस पहाड़ पर बलि चढ़ाया और अपने भाईयों को रोटी खाने को बुलाया और उन्हों ने रोटी खाई और सारी रात पहाड़ पर रहे॥ ५५। और भोर को तड़के लाबन उठा और अपने बेटों और बेटियों को चूमा और उन्हें आशीष दिया और लाबन बिदा हुआ और अपने स्थान को फिरा॥

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब ।

और यअ्क़ूब अपने मार्ग चला गया और ईश्वर के दूत उसे आ मिले॥ २। और यअ्क़ूब ने उन्हें देख के कहा कि यह ईश्वर की सेना है और उस ने उस स्थान का नाम दो सेना रक्खा॥ ३। और यअ्क़ूब ने अपने आगे अदूम के देश और शऔर की भूमि में अपने भाई एसौ पास दूतों को भेजा॥ ४। और उस ने यह कहिके उन्हें आज्ञा किई कि मेरे प्रभु एसौ को यों कहियो कि आप का दास यअ्क़ूब यों कहता है कि मैं लाबन कने टिका और अब लों वहीं रहा॥ ५। और मेरे बैल और गदहे और झुंड और दास और दासियां हैं और मैं ने अपने प्रभु को कहला भेजा है जिसतें मैं आप की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं॥ ६। और दूतों ने

यअकूब पास फिर आके कहा कि हम आप के भाई एसा पास गये और
वुह और उस के साथ चार सा मनुष्य आप की भेंट को भी आते हैं॥
७। तब यअकूब निपट डर गया और व्याकुल हुआ और उस ने अपने
साथ के लोगों और झुंडों और ढोरों और ऊंटों के दो जथा किये॥
८। और कहा कि यदि एसा एक जथा पर आवे और उसे मारे तो
दूसरा जथा जो बच रहा है भागेगा॥ ९। फिर यअकूब ने कहा कि हे
मेरे पिता अबिरहाम के ईश्वर और मेरे पिता इज़हाक के ईश्वर वुह
परमेश्वर जिस ने मुझे कहा कि अपने देश और अपने कुनबे में फिर जा
और मैं तेरा भला करूंगा॥ १०। मैं तो उन सब दया और उन सब
सत्यता से जो तू ने अपने दास के संग किई तुच्छ हूं क्योंकि मैं अपने डंडे
से इस यरदन पार गया और अब मैं दो जथा बना हूं॥ ११। मैं तेरी
बिनती करता हूं मुझे मेरे भाई के हाथ अर्थात् एसा के हाथ से बचा
ले क्योंकि मैं उस्से डरता हूं न होवे कि वुह आके मुझे और लड़कों को
माता समेत मार लेवे॥ १२। और तू ने कहा कि मैं निश्चय तुझ से
भलाई करूंगा और तेरे वंश को समुद्र के बालू की नाईं बनाऊंगा जो
बहुताई के मारे गिना नहीं जायगा॥ १३। और वुह उस रात वहीं
टिका और जो उस के हाथ लगा अपने भाई एसा के भेंट के लिये लिया॥
१४। दो सा बकरियां और बीस बकरे दो सा भेड़ें और बीस मेंढ़े॥
१५। और तीस दूधवाली ऊंटिनियां उन के बच्चे समेत चालीस गाय
और दस बैल बीस गदहियां और दस बच्चे॥ १६। और उस ने उन्हें
अपने सेवकों के हाथ हर जथा को अलग अलग सांपा और अपने सेवकों
को कहा कि मेरे आगे पार उतरो और जथा को जथा से अलग रक्खो॥
१७। और पहिले को उस ने कहा कि जब मेरा भाई एसा तुझे मिले
और पूछे कि तू किस का है और किधर जाता है और ये जो तेरे आगे
हैं किस के हैं॥ १८। तो कहियो कि आप के सेवक यअकूब के हैं यह
अपने प्रभु एसा के लिये भेंट है और देखिये वुह आप भी हमारे पीछे है॥
१९। और वैसा उस ने दूसरे और तीसरे को और उन सब को जो
जथा के पीछे जाते थे यह कहिके आज्ञा किई कि जब तुम एसा को
पाओ तो इस रीति से कहियो॥ २०। और अधिक यह कहियो कि

देखिये आप का सेवक यअ्क़ूब हमारे पीछे आता है क्योंकि उस ने कहा
है कि मैं उस भेंट से जो मुझ से आगे जाती है उस्से मिलाप कर लेऊंगा
तब उस का मुंह देखूंगा क्या जाने वुह मुझे ग्रहण करे॥ २१। सो वुह
भेंट उस के आगे आगे पार गई और वुह आप उस रात जथा में टिका॥
२२। और उसी रात उठा और अपनी दो पत्नियों और दो सहेलियों
और ग्यारह बेटों को लेके थाह यबूक से पार उतरा॥ २३। और उस
ने उन्हें लेके नाली पार करवाया और अपना सब कुछ पार भेजा॥
२४। और यअ्क़ूब अकेला रह गया और वहां पौ फटेलों एक जन उस्से
मल्ल युद्ध करता रहा॥ २५। और जब उस ने देखा कि वुह उस पर
प्रबल न ज़ुआ तो उस की जांघ को भीतर से छूआ तब यअ्क़ूब के जांघ
की नस उस के संग मल्ल युद्ध करने में चढ़ गई॥ २६। तब वुह बोला कि
मुझे जाने दे क्योंकि पौ फटती है वुह बोला कि मैं तुझे जाने न देऊंगा
जब लों तू मुझे आशीष न देवे॥ २७। तब उस ने उसे कहा कि तेरा
नाम क्या वुह बोला कि यअ्क़ूब॥ २८। तब उस ने कहा कि तेरा
नाम आगे को यअ्क़ूब न होगा परन्तु इसराएल क्योंकि तू ने ईश्वर के
और मनुष्य के आगे राजा की नाईं मल्ल युद्ध किया और जीता॥
२९। तब यअ्क़ूब ने यह कहिके उस्से पूछा कि अपना नाम बताइये
वुह बोला कि तू मेरा नाम क्यों पूछता है और उस ने उसे वहां आशीष
दिया॥ ३०। और यअ्क़ूब ने उस स्थान का नाम फ़नुएल रक्खा
क्योंकि मैं ने ईश्वर को प्रत्यक्ष देखा और मेरा प्राण बचा है॥ ३१।
और जब वुह फ़नुएल से पार चला तो सूर्य्य की ज्योति उस पर पड़ी और
वुह अपनी जांघ से लंगड़ाता था॥ ३२। इस लिये इसराएल के वंश
उस जांघ की नस को जो चढ़ गई थी आजलों नहीं खाते क्योंकि उस ने
यअ्क़ूब के जांघ की नस को जो चढ़ गई थी छूआ था॥

३३ तेंतीसवां पर्ब्ब ।

और यअ्क़ूब ने आंखें ऊपर उठाईं और क्या देखता है कि एसौ
और उस के साथ चार सौ मनुष्य आते हैं तब उस ने लियाह को
और राख़िल को और दो सहेलियों को लड़के बाले बांट दिये॥ २।

और उस ने सहेलियों और उन के लड़कों को सब से आगे रक्खा और
लियाह और उस के लड़कों को पीछे और राख़िल और यूसुफ़ को सब
के पीछे॥ ३। और वुह आप उन के आगे पार उतरा और अपने
भाई पास पहुंचते पहुंचते सात बार भूमि लों दंडवत किई॥ ४। और
एसौ उसे मिलने को दौड़ा और उसे गले लगाया और उस के गले से
लिपटा और उसे चूमा और वे रोये॥ ५। फिर उस ने आंखें उठाईं
और स्त्रियों को और लड़कों को देखा और कहा कि ये तेरे साथ कौन
हैं और वह बोला संतान जो ईश्वर ने अपनी कृपा से आप के सेवक
को दिये॥ ६। तब सहेलियां और उन के लड़के पास आये और
दंडवत किई॥ ७। फिर लियाह ने भी अपने लड़के समेत पास आके
दंडवत किई अंत को यूसुफ़ और राख़िल पास आये और दंडवत किई॥
८। और उस ने कहा कि इस जथा से जो मुझ को मिली तुझे क्या
और वुह बोला कि अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं॥ ९। तब एसौ
बोला कि हे भाई मुझ पास बहुत हैं तेरे तेरे ही लिये होवें॥ १०।
तब यअ़क़ूब बोला कि मैं आप की बिनती करता हूं यदि मैं ने आप की
दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मेरी भेंट मेरे हाथ से ग्रहण कीजिये क्योंकि
मैं ने जो आप का मुंह देखा है जानों मैं ने ईश्वर का मुंह देखा और
आप मुझ से प्रसन्न हुए॥ ११। मेरे आशीष को जो आप के
आगे लाया गया है ग्रहण कीजिये कि ईश्वर ने मुझ पर अनुग्रह
किया है और इस लिये कि मुझ पास सब कुछ है सो वुह यहां लों
गिड़गिड़ाया कि उस ने ले लिया॥ १२। और कहा कि आओ
कूच करें और चलें और मैं तेरे आगे आगे चलूंगा॥ १३। तब उस ने
उसे कहा कि मेरे प्रभु जानते हैं कि बालक कोमल हैं और झुंड और
ढोर दूध पिलानेवालियां मेरे साथ हैं और जो वे दिन भर हांके जायें
तो सारे झुंड मर जायंगे॥ १४। सो मेरे प्रभु अपने सेवक से पहिले
पार जाइये और मैं धीरे धीरे जैसा कि ढोर आगे चलेंगे और बालक
सह सकेंगे चलूंगा यहां लों कि शईर को अपने प्रभु पास आ पहुंचों॥
१५। तब एसौ बोला अपने संग के कई एक तेरे साथ छोड़ जाऊं वुह
बोला कि किस लिये मैं अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं॥ १६।

तब एसो उसी दिन शईर के मार्ग लौट गया॥ १७। और यअकूब चलते चलते सुक्कात को आया और अपने लिये एक घर बनाया और अपने ढोर के लिये पतछप्पर बनाये इसी लिये उस स्थान का नाम सुक्कात हुआ॥ १८। और यअकूब फद्दानअराम से बाहर होके कनआन देश के सालिम के नगर सिकम में आया और नगर के बाहर अपना तंबू खड़ा किया॥ १९। और जिस पर उस का तंबू खड़ा था उस ने उस खेत को हमूर के पिता सिकम के सन्तान से सौ टुकड़े रोकड़ पर मोल लिया॥ २०। और उस ने वहां एक बेदी बनाई और उस का नाम ईश्वर इसराएल का ईश्वर रक्खा।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब।

और लियाह की बेटी दीनः जिसे वह यअकूब के लिये जनी थी उस देश की लड़कियों के देखने को बाहर गई॥ २। और जब उस देश के अध्यक्ष हवी हमूर के बेटे सिकम ने उसे देखा तो उसे ले गया और उस्से मिल बैठा और उसे तुच्छ किया॥ ३। और उस का मन यअकूब की बेटी दीनः से अटका और उस ने उस लड़की को प्यार किया और उस के मन की कही॥ ४। और सिकम ने अपने पिता हमूर से कहा कि इस लड़की को मुझे पत्नी में दिलाइये॥ ५। और यअकूब ने सुना कि उस ने मेरी बेटी दीनः को अशुद्ध किया उस समय में उस के बेटे उस के ढोर के साथ खेत में थे और उन के आने लों यअकूब चुप रहा॥ ६। और सिकम का पिता हमूर बातचीत करने को यअकूब पास आया॥ ७। और सुनते ही यअकूब के बेटे खेत से आ पहुंचे और वे उदास होके बड़े कोपित हुए क्योंकि उस ने इसराएल में अपमान किया कि यअकूब की बेटी के साथ अनुचित रीति से मिल बैठा॥ ८। और हमूर ने उन के साथ यों बातचीत किई कि मेरे बेटे सिकम का मन तुम्हारी बेटी से लालसित है सो उसे उस को पत्नी में दीजिये॥ ९। और हमारे साथ समधियाना कीजिये अपनी बेटियां हमें दीजिये और हमारी बेटियां आप लीजिये॥ १०। और तुम हमारे साथ बास करोगे और यह भूमि तुम्हारे आगे होगी

उस में रहा और ब्यापार करो और इस में अधिकार प्राप्त करो॥ ११।
और सिकम ने उस के पिता और भाइयों से कहा कि तुम्हारी दृष्टि में
मैं अनुग्रह पाऊं और जो कुछ तुम लोग मुझे कहोगे मैं देऊंगा॥ १२।
जितना दैजा और भेंट चाहो मैं तुम्हारे कहने के समान देऊंगा पर
लड़की को मुझे पत्नी में देओ॥ १३। तब यअकूब के बेटों ने सिकम
और उस के पिता हमूर को छल से उत्तर दिया क्योंकि उस ने उन की
बहिन दीनः को अशुद्ध किया था॥ १४। और कहा कि हम यह नहीं
कर सक्ते कि एक अखतनः को अपनी बहिन देवें क्योंकि इस्से हमारी
निन्दा होगी॥ १५। केवल इस में हम तुम्हारी बात मानेंगे कि तुम में
हर पुरुष हमसरीखा खतनः करावे॥ १६। तब हम अपनी बेटियां तुम्हें
देंगे और तुम्हारी बेटियां लेंगे और हम तुम में निवास करेंगे और हम
सब एक लोग होंगे॥ १७। परन्तु जो खतनः कराने में तुम लोग
हमारी न सुनोगे तो हम अपनी लड़की ले लेंगे और चले जायेंगे॥ १८।
और उन की बातें सिकम और उस के पिता हमूर को प्रसन्न हुईं॥ १९।
और उस तरुण ने उस बात में अबेर न किया क्योंकि वुह यअकूब की
बेटी से प्रसन्न था और वुह अपने पिता के सारे घराने से अधिक कुलीन
था॥ २०। और हमूर और उसका बेटा सिकम अपने नगर के फाटक
पर आये और उन्हों ने अपने नगर के लोगों से यों बातचीत किई॥
२१। कि इन मनुष्यों से हम से मेल है सो उन्हें इस देश में रहने देओ
और इस में ब्यापार करें क्योंकि देखो यह देश उन के लिये बड़ा है सो
आओ हम उनकी बेटियों को पत्नियों के लिये लेवें और अपनी बेटियां
उन्हें देवें॥ २२। परन्तु हमारे साथ रहने को और एक लोग होने को
केवल इसी बात से मानेंगे कि खतनः जैसा उन का किया गया है हम में
हर पुरुष खतनः करावे॥ २३। क्या उन के ढोर और उन की संपत्ति
और उन का हर एक चौपाया हमारा न होगा केवल हम उन की उस बात
को मान लेवें और वे हम में निवास करेंगे॥ २४। और सभों ने जो
नगर के फाटक से आते जाते थे हमूर और उस के बेटे सिकम की बात
को माना और उस के नगर के फाटक से सब जो बाहर जाते थे उन में
से हर पुरुष ने खतनः करवाया॥ २५। और तीसरे दिन जब लों वे

घाव में पड़े थे यों ज़आ कि यअ़क़ूब के बेटों में से दीनः के दो भाई समऊन और लावी हर एक ने अपनी अपनी तलवार लिई और साहस से नगर पर आ पड़े और सारे पुरुषों को मार डाला॥ २६। और उन्हों ने हमूर और उस के बेटे सिकम को तलवार की धार से मार डाला और सिकम के घर से दीनः को लेके निकल गये॥ २७। और यअ़क़ूब के बेटे जूझे ज़ए पर आये और नगर को लूट लिया क्योंकि उन्हों ने उन की बहिन को अशुद्ध किया था॥ २८। उन्हों ने उन की भेड़ और उन की गाय बैल और उन के गदहे और जो कुछ कि नगर में और खेत में था लूट लिया॥ २९। और उन के सब धन और उन के सारे बालक और उन की पत्नियां बन्धुआई में लाये और घर में का सब कुछ लूट लिया॥ ३०। और यअ़क़ूब ने समऊन और लावी से कहा कि तुम ने मुझे दुख दिया कि इस भूमि के बासियों में कनआ़नियों और फरिज़्ज़ीयों के मध्य में मुझे घिनौना कर दिया और मैं गिनती में थोड़ा हूं और वे मेरे सन्मुख एकट्ठे होंगे और मुझे मार डालेंगे और मैं और मेरा घराना नष्ट होवेगा॥ ३१। तब वे बोले क्या उसे उचित था कि हमारी बहिन के साथ बेश्या की नाईं व्यवहार करे।

३५ पैंतीसवां पर्व्व।

और ईश्वर ने यअ़क़ूब से कहा कि उठ बैतएल को जा और वहीं रह और उस ईश्वर के लिये जिसने तुझे दर्शन दिया था जब तू अपने भाई एसौ के आगे से भागा था एक बेदी बना॥ २। तब यअ़क़ूब ने अपने घराने से और अपने सब संगियों से कहा कि उपरी देवों को जो तुम में हैं दूर करो और शुद्ध होओ और अपने कपड़े बदलो॥ ३। और आओ हम उठें और बैतएल को जायें और मैं वहां उस ईश्वर के लिये बेदी बनाऊंगा जिस ने मेरी सकेती के दिन मुझे उत्तर दिया और जिस मार्ग में मैं चला वुह मेरे साथ साथ था॥ ४। और उन्हों ने सारे उपरी देवों को जो उन के हाथों में थे और कुंडल जो उन के कानों में थे यअ़क़ूब को दिये और यअ़क़ूब ने उन्हें बलूत पेड़ तले सिकम के लग गाड़ दिया॥ ५। और उन्हों ने कूच किया

और उन के आस पास के नगरों पर ईश्वर की डर पड़ी और उन्हों ने
यअ़्क़ूब के बेटों का पीछा न किया॥ ६। सो यअ़्क़ूब और जितने लोग
उस के साथ थे कनआ़न की भूमि में लौज़ को जो बैतएल है आये॥ ७
और उस ने वहां एक बेदी बनाई और इस लिये कि जब वुह अपने भाई
के पास से भागा तो वहां उसे ईश्वर दिखाई दिया उस ने उस का नाम
बैतएल का ईश्वर रक्खा॥ ८। और रिबक़ः की दाई दबूरः मर गई और
बैतएल के लग बलूत पेड़ तले गाड़ी गई और उस का नाम रोने का बलूत
रक्खा॥ ९। और जब कि यअ़्क़ूब फद्दानअराम से निकला ईश्वर ने
उसे फेर दर्शन दिया और उसे आशीष दिया॥ १०। और ईश्वर ने
उसे कहा कि तेरा नाम यअ़्क़ूब है तेरा नाम आगे को यअ़्क़ूब न होगा
परन्तु तेरा नाम इसराएल होगा सो उस ने उस का नाम इसराएल
रक्खा॥ ११। फिर ईश्वर ने उसे कहा कि मैं ईश्वर सर्वसामर्थी हूं
तू फलमान हो और बढ़ तुझ से एक जाति और जातिन की जाति
और तेरी कटि से राजा निकलेंगे॥ १२। और यह भूमि जो मैं ने
अबिरहाम और इज़हाक़ को दिई है तुझे और तेरे पीछे तेरे बंश को
देऊंगा॥ १३॥ और ईश्वर उस स्थान से जहां उस ने उस्से बातें किई
थीं उस पास से उठ गया॥ १४। और यअ़्क़ूब ने उस स्थान में जहां
उस ने उस्से बातें किईं पत्थर का एक खंभा खड़ा किया और उस पर
पीने की भेंट चढ़ाई और उस पर तेल डाला॥ १५। और यअ़्क़ूब ने
उस स्थान का नाम जहां ईश्वर उस्से बोला था बैतएल रक्खा॥ १६।
और उन्हों ने बैतएल से कूच किया और वहां से इफ़रातः बज़ुत दूर न
था और राख़िल को पीर लगी और उस पर बड़ी पीड़ा ज़ुई॥ १७।
और उस पीड़ा की दशा में जनाई दाई ने उसे कहा कि मत डर अब
की भी तेरे बेटा होगा॥ १८। और यों ज़ुआ कि जब उस का प्राण जाने
पर था क्योंकि वुह मर ही गई तो उस ने उस का नाम अपने उदास का पुत्र
रक्खा पर उस के पिता ने उस का नाम बिनयमीन रक्खा॥ १९। सो
राख़िल मर गई और इफ़रातः के मार्ग में जो बैतलहम है गाड़ी गई॥
२०। और यअ़्क़ूब ने उस के समाधि पर एक खंभा खड़ा किया वही
खंभा राख़िल के समाधि का खंभा आज लों है॥ २१। फिर इसराएल

ने कूंच किया और अपना तंबू अद्र के गुम्मट के उस पार खड़ा किया॥
२२। और जब इसराएल उस देश में जा रहा तो यों हुआ कि रूबिन
गया और अपने पिता की सुरैतिन के संग अकर्म्म किया और इसराएल
ने सुना अब यअक़ूब के बारह बेटे थे॥ २३। लीयाह के बेटे रूबिन
यअक़ूब का पहिलौंठा और समऊन और लावी और यहूदाह और
इशकार और ज़बूलून॥ २४। और राख़िल के बेटे यूसुफ़ और बिनय-
मीन॥ २५। और राख़िल की सहेली बिलहः के बेटे दान और
नफ़ताली॥ २६। और लियाह की सहेली ज़िलफ़ः के बेटे जद और
यसर यअक़ूब के बेटे जो फद्दानअराम में उत्पन्न हुए थे हैं॥ २७।
और यअक़ूब अरबः के नगर में जो हबरून है ममरी के बीच अपने पिता
इज़हाक़ पास जहां अबिरहाम और इज़हाक़ ने निवास किया था
आया॥ २८। और इज़हाक़ एक सौ अस्सी बरस का हुआ॥ २९।
और इज़हाक़ ने प्राण त्यागा और बूढ़ा और दिनी होके अपने लोगों में
जा मिला और उस के बेटे एसौ और यअक़ूब ने उसे गाड़ा।

३६ छतीसवां पर्ब्ब ।

एसौ की जो अदूम है बंशावली यह है। २। एसौ ने कनआन की
लड़कियों में से ऐलून हत्ती की बेटी आदः को और अहलिबामः
को जो अनाह की बेटी हवी सबऊन की बेटी थी। ३। और इस-
मअएल की बेटी नबायोत की बहिन बशामत को ब्याह लाया। ४।
और एसौ के लिये आदः इलीफ़ज़ को जनी और बशामत से रऊएल
उत्पन्न हुआ॥ ५। और अहलिबामः से यऊश और यअलाम और
क़ूरह उत्पन्न हुए ये एसौ के बेटे हैं जो उस के लिये कनआन की भूमि
में उत्पन्न हुए॥ ६। और एसौ अपनी पत्नियों और बेटों और बेटियों
और अपने घर के हर एक प्राणी और अपने ढोर को और अपने सारे
पशु को और अपनी सारी संपत्ति को जो उस ने कनआन देश में प्राप्त
किई थी लेके अपने भाई यअक़ूब पास से देश को निकल गया। ७।
क्योंकि उन का धन ऐसा बढ़ गया था कि वे एकट्ठे न रह सक्ते थे और
उन के पशु के कारण से उन के परदेश की भूमि उन का भार न उठा

सती थी॥ ८। और एसौ जो अदूम है शईर पहाड़ पर जा रहा॥
९। सो एसौ की बंशावली जो शईर पहाड़ के मनुष्यों का पिता है
यह है॥ १०। एसौ के बेटों के नाम यह हैं एसौ की पत्नी आदः का
बेटा इलीफ़ज़ एसौ की पत्नी बशामत का बेटा रऊएल॥ ११।
इलीफ़ज़ के बेटे तैमन और ओमर और सफ़ू और जअताम और क़नज़॥
१२। और एसौ के बेटे इलीफ़ज़ की सहेली तिमनअ थी सो वुह
इलीफ़ज़ के लिये अमालीक़ को जनी सो एसौ की पत्नी आदः के बेटे
ये थे॥ १३। और रऊएल के बेटे ये हैं नहत और ज़ारिह और सम्माह
और मिज्ज़ः जो एसौ की पत्नी बशामत के बेटे थे॥ १४। और एसौ
की पत्नी सबऊन की बेटी अनाह की बेटी अहलिबामः के बेटे ये थे और
वुह एसौ के लिये यऊस और यअलाम और क़ूरह जनी॥ १५। एसौ
के बेटों में जो अध्यक्ष ऊए ये हैं एसौ के पहिलौंठे इलीफ़ज़ के बेटे
अध्यक्ष तैमन अध्यक्ष ओमर अध्यक्ष सफ़ू अध्यक्ष क़नज़॥ १६। अध्यक्ष
क़ूरह अध्यक्ष जअताम अध्यक्ष अमालीक़ ये वे अध्यक्ष हैं जो इलीफ़ज़
से अदूम की भूमि में उत्पन्न ऊए और आदः के बेटे थे॥ १७। और
एसौ के बेटे रऊएल के बेटे ये हैं अध्यक्ष नहत अध्यक्ष ज़ारिह अध्यक्ष
शम्माह अध्यक्ष मिज्ज़ः ये वे अध्यक्ष हैं जो रऊएल से अदूम देश में उत्पन्न
ऊए और एसौ की पत्नी बशामत के बेटे थे॥ १८। और एसौ की पत्नी
अहलिबामः के ये बेटे हैं अध्यक्ष यऊस अध्यक्ष यअलाम अध्यक्ष क़ूरह ये
वे अध्यक्ष हैं जो एसौ की पत्नी अनाह की बेटी अहलिबामः से थे॥ १९।
सो एसौ के जो अदूम है ये बेटे हैं ये उन के अध्यक्ष हैं॥ २०। शईर
के बेटे हूरी जो इस भूमि के बासी थे ये हैं लौतान और सोबल और
सबऊन और अनाह॥ २१। और दैसून और असर और दैसान ये
सब हूरियों के अध्यक्ष हैं और अदूम की भूमि में शईर के बेटे हैं॥ २२।
और लौतान के सन्तान हूरी और हैमान और लौतान की बहिन का
नाम तिमनअ था॥ २३। और सोबल के सन्तान ये हैं अलवान
और मनहत और ऐबाल और सफ़ू और औनाम॥ २४। और
सबऊन के सन्तान ये हैं ऐयाह और अनाह यह वुह अनाह है जिस ने
बन में जब वुह अपने पिता सबऊन के गदहों को चराता था खच्चर पाये॥

२५। और अनाह के सन्तान ये हैं दैसून और अहलिबाम: अनाह की बेटी॥
२६। और दैसून के सन्तान हमदान और इशबान और यथरान और
करान॥ २७। असर के सन्तान ये हैं बिलहान जुअवान और
अकन॥ २८। दैसून के सन्तान ऊज़ और अरान॥ २९। वे अध्यक्ष
जो हूरियों में के थे ये हैं अध्यक्ष लौतान अध्यक्ष सोबल अध्यक्ष सबऊन
अध्यक्ष अनाह॥ ३०। अध्यक्ष दैसून अध्यक्ष असर अध्यक्ष दैसान ये
उन हूरियों के अध्यक्ष हैं जो शओर की भूमि में थे॥ ३१। और राजा
जो अदूम पर राज्य करता था उस्से पहिले कि इसराएल के बंश का कोई
राजा हुआ ये हैं॥ ३२। बओर का बेटा बालिग जो अदूम में राज्य
करता था और उस के नगर का नाम दिनहब: था॥ ३३। और बालिग
मर गया और शारिक़ के बेटे यूबाब ने जो बुसर: था उस की संती राज्य
किया॥ ३४। और यूबाब मर गया और हूशाम ने जो तमन्नी की भूमि का
था उस की संती राज्य किया॥ ३५। और हूशाम मर गया और बिदद
का बेटा हदद जिस ने मोअब के चैागान में मिदयानियों को मार डाला
उस की संती राज्य किया और उस के नगर का नाम गवीत था॥ ३६।
और हदद मर गया और मसरीक: के समल: ने उस की संती राज्य किया॥
३७। और समल: मर गया और नदी के लग के रहबात के साऊल ने
उस की संती राज्य किया॥ ३८। और साऊल मर गया और अकबूर के
बेटे बअलहनान ने उस की संती राज्य किया॥ ३९। और अकबूर का
बेटा बअलहनान मर गया और हदर ने उस की संती राज्य किया उस के
नगर का नाम फ़ागू था और उस की पत्नी का नाम मुहैतबिएल था जो
मतरिद की बेटी मेज़हब की बेटी थी॥ ४०। सो उन के घरानों और
उन के स्थानों और उन के नाम के समान एसा के अध्यक्षों के ये नाम हैं
अध्यक्ष तिमन: अध्यक्ष अलियाह अध्यक्ष यतीत॥ ४१। अध्यक्ष अहलि-
बाम: अध्यक्ष इलाह अध्यक्ष फ़ैनून॥ ४२। अध्यक्ष क़नज अध्यक्ष तीमान
अध्यक्ष मिबसार॥ ४३। अध्यक्ष मजदिएल अध्यक्ष ईराम ये अपने अपने
स्थान में अपने अपने निवास के समान अदूम के अध्यक्ष थे जो अदूमियों
का पिता एसा है॥

३७ सैंतीसवां पर्ब्ब ।

ओर यअ़्क़ूब ने कनआ़न देश में अपने पिता के टिकने की भूमि में
बास किया॥ २। यअ़्क़ूब की वंशावली यह है यूसुफ़ सत्रह बरस
का होके अपने भाइयों के साथ झुंड चराता था और वुह तरुण अपने
पिता की पत्नी बिलह: और ज़िलफ: के बेटों के संग था और यूसुफ़ ने
उन के पिता के पास उन के बुरे कामों का संदेश पहुंचाया॥ ३। अब
इसराएल यूसुफ़ को अपने सारे लड़कों से अधिक प्यार करता था इस
लिये कि वुह उस के बुढ़ापे का बेटा था और उस ने उस के लिये रंग रंग
का पहिरावा बनाया॥ ४। और जब उस के भाइयों ने देखा कि
हमारा पिता हमारे सब भाइयों से उसे अधिक प्यार करता है तो उन्हों
ने उस्से बैर किया और उस्से कुशल से न कह सक्ते थे॥ ५। और यूसुफ
ने एक स्वप्न देखा और अपने भाइयों से कहा और उन्हों ने उस्से अधिक
बैर रक्खा॥ ६। और उस ने उन्हें यूं कहा कि जो स्वप्न मैं ने देखा है सो
सुनिये॥ ७। क्योंकि देखिये कि हम खेत में गट्ठियां बांधते थे और क्या
देखता हूं कि मेरी गट्ठी उठी और सीधी खड़ी हुई और क्या देखता हूं
कि तुम्हारी गट्ठियां आस पास खड़ी हुईं और मेरी गट्ठी को दंडवत
किई॥ ८। तब उस के भाइयों ने उसे कहा क्या तू सच मुच हम पर
राज्य करेगा अथवा तू हम पर प्रभुता करेगा और उन्हों ने उस के स्वप्न
और उस की बातों के कारण उस्से अधिक बैर किया॥ ९। फिर
उस ने दूसरा स्वप्न देखा और उसे अपने भाइयों से कहा कि देखो
मैं ने एक और स्वप्न देखा और क्या देखता हूं कि सूर्य्य और चन्द्रमा
और ग्यारह तारों ने मुझे दंडवत किई॥ १०। और उस ने यह
अपने पिता और भाइयों से कहा पर उस के पिता ने उसे डपटा और
कहा कि यह क्या स्वप्न है जो तू ने देखा है क्या मैं और तेरी माता
और तेरे भाई सच मुच तेरे आगे भूमि पर झुकके तुझे दंडवत
करेंगे॥ ११। और उस के भाइयों ने डाह किया परन्तु उस के
पिता ने उस बात को सोच रक्खा॥ १२। फिर उस के भाई अपने पिता
की झुंड चराने सिकम को गये॥ १३। तब इसराएल ने यूसुफ़

से कहा क्या तेरे भाई सिकम में नहीं चराते आ मैं तुझे उन के पास भेजूं और उस ने उसे कहा कि मैं यहीं हूं॥ १४। फिर उस ने उसे कहा कि जा अपने भाइयों और झुंडों की कुशलता देख और मुझ पास संदेश ला सो उस ने उसे हबरून की तराई से भेजा और वुह सिकम में आया॥ १५। तब किसी जन ने उसे पाया और उसे खेत में भ्रमते देखा तब उस पुरुष ने उस्से पूछा कि तू क्या ढूंढ़ता है॥ १६। वुह बोला मैं अपने भाइयों को ढूंढ़ता हूं मुझे बताइये कि वे कहां चराते हैं॥ १७। और वुह पुरुष बोला वे यहां से चले गये क्योंकि मैं ने उन्हें यह कहते सुना कि आओ दूतैन को जावें तब यूसुफ़ अपने भाइयों के पीछे चला और उन्हें दूतैन में पाया॥ १८। और ज्योंहीं उन्हों ने उसे दूर से देखा तो अपने पास आने से पहिले उस के मार डालने को जुगत किई॥ १९। और वे आपुस में बोले देखो वुह स्वप्नदर्शी आता है॥ २०। सो आओ अब हम उसे मार डालें और किसी कूएं में डाल देवें और कहें कि कोई बन्य पशु ने उसे भक्ष किया और देखेंगे कि उस के स्वप्नों का क्या होगा॥ २१। तब रूबिन ने सुनके उसे उन के हाथों से छुड़ाया और बोला कि हम उसे मार न डालें॥ २२। और रूबिन ने उन्हें कहा कि लोहू मत बहाओ परन्तु उसे बन के इस कूएं में डाल देओ और उस पर हाथ न डालो जिसतें वुह उसे उन के हाथों से छुड़ाके उस के पिता पास फिर पहुंचावे॥ २३। और यों हुआ कि जब यूसुफ़ अपने भाइयों पास आया तो उन्हों ने उस का बहुरंगी वस्त्र उस्से उतार लिया॥ २४। और उन्हों ने उसे लेके कूएं में डाल दिया और वुह कूआं अंधा था उस में कुछ पानी न था॥ २५। तब वे रोटी खाने बैठे और अपनी आंख उठाई और क्या देखते हैं कि इसमअएलियों का एक जथा जिलिअद से सुगंध द्रव्य और बलसाम और मुर ऊंटों पर लादे हुए मिस्र को उतर जाते हैं॥ २६। और यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा कि अपने भाई को मारके उस का लोहू छिपाने से क्या लाभ होगा॥ २७। आओ उसे इसमअएलियों के हाथ बेचें और उस पर अपने हाथ न डालें क्योंकि वुह हमारा भाई और हमारा मांस है और उस के भाइयों ने मान लिया॥ २८। उस समय मिदयानी

ब्यापारी उधर से जाते थे सो उन्हों ने यूसुफ़ को कूएं से बाहर निकाल के इसमएलियों के हाथ बीस टुकड़े चांदी पर बेंचा और वे यूसुफ़ को मिस्र में लाये॥ २९। तब रूबिन कूएं पर फिर आया और यूसुफ़ को कूएं में न देखके उस ने अपने कपड़े फाड़े॥ ३०। और अपने भाइयों के पास फिर आया और कहा कि लड़का तो नहीं अब मैं कहां जाऊं॥ ३१। फिर उन्हों ने यूसुफ़ का पहिरावा लिया और एक बकरी का मेम्ना मारा और उसे उस के लोहू में चुभोड़ा॥ ३२। और उन्हों ने उस बहुरंगी बस्त्र को भेजा और अपने पिता के पास पहुंचाया और कहा कि हम ने इसे पाया आप इसे पहिचानिये कि यह आप के बेटे का पहिरावा है कि नहीं॥ ३३। और उस ने उसे पहिचाना और कहा कि यह तो मेरे बेटे का पहिरावा है किसी बन पशु ने उसे फाड़ा है यूसुफ़ निःसन्देह फाड़ा गया॥ ३४। तब यअ़कूब ने अपने कपड़े फाड़े और टाट बस्त्र अपनी कटि पर डाला और बहुत दिन लों अपने बेटे के लिये शोक किया॥ ३५। और उस के सारे बेटे बेटियां उसे शांति देने उठीं पर उस ने शांति ग्रहण न किई पर बोला कि मैं अपने बेटे के पास रोता हुआ समाधि में उतरूंगा सो उस का पिता उस के लिये रोया किया॥ ३६। और मिदयानियों ने उसे मिस्र में फ़िरऊ़न के एक प्रधान सेना पति फ़ूतिफ़र के हाथ बेंचा

३८ अठतीसवां पर्ब्ब।

और उस समय में यों हुआ कि यहूदाह अपने भाइयों से अलग होकर हीरः नाम एक अदूलामी के पास गया॥ २। और यहूदाह ने वहां एक कनआनी की लड़की को देखा जिस का नाम सूआ था उस ने उसे लिया और उस के साथ संगम किया॥ ३। वुह गर्भिणी हुई और एक बेटा जनी और उस ने उस का नाम एर रक्खा॥ ४। और वुह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस ने उस का नाम ओनान रक्खा॥ ५। और वुह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस का नाम सेलः रक्खा और जब वुह उसे जनी तो वुह कज़ीब में था॥ ६। और यहूदाह अपने पहिलौंठे एर के लिये एक स्त्री ब्याह लाया जिस का नाम तमर

था॥ ७। और यहूदाह का पहिलौंठा एर परमेश्वर की दृष्टि में दुष्ट था सो परमेश्वर ने उसे मार डाला॥ ८। तब यहूदाह ने ओनान को कहा कि अपने भाई की पत्नी पास जा और उस्से ब्याह कर और अपने भाई के लिये बंश चला॥ ९। और ओनान ने जाना कि यह बंश मेरा न होगा और यों हुआ कि जब वुह अपने भाई की पत्नी पास गया तो बीर्य को भूमि पर गिरा दिया न होवे कि उस का भाई उस्से बंश पावे॥ १०। और उस का वुह कार्य परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था इस लिये उस ने उसे भी मार डाला॥ ११। तब यहूदाह ने अपनी पतोहू तमर को कहा कि अपने पिता के घर में रांड बैठी रह जब लों कि मेरा बेटा सेलः बढ़ जाय क्योंकि उस ने कहा न होवे कि वुह भी अपने भाइयों की नाईं मर जाय सो तमर अपने पिता के घर जा रही॥ १२। और बहुत दिन बीते सूअः की बेटी यहूदाह की पत्नी मर गई और यहूदाह उस के शोक को भूला तब वुह और उस का मित्र अदूलामी हीरः अपनी भेड़ों के रोम कतरने तिमनास को गया॥ १३। और तमर से यह कहा गया कि देख तेरा ससुर अपनी भेड़ों के रोम कतरने तिमनास को जाता है॥ १४। तब उस ने अपने रंडसाले के कपड़ों को उतार फेंका और घूंघट ओढ़ा और अपने को लपेटा और तिमनास के मार्ग में एक खुले हुए स्थान में बैठ गई क्योंकि उस ने देखा था कि सेलः सयाना हुआ और मुझे उस की पत्नी न कर दिया॥ १५। जब यहूदाह ने उसे देखा तो समझा कि कोई बेश्या है क्योंकि वुह अपना मुंह छिपाये हुए थी॥ १६। और मार्ग से उस की ओर फिरा और उसे कहा कि मुझे अपने पास आने दे और न जाना कि वुह मेरी पतोहू है वुह बोली कि मेरे पास आने में तू मुझे क्या देगा॥ १७। वुह बोला मैं झुंड में से एक मेम्ना भेजूंगा उस ने कहा कि तू उसे भेजने लों मुझे कुछ बंधक दे॥ १८। वुह बोला मैं तुझे क्या बंधक देऊं वुह बोली अपनी छाप और अपने बिजायठ और लाठी जो तेरे हाथ में है उस ने दिया और उस के पास गया और वुह उस्से गर्भिणी हुई॥ १९। फिर वुह उठी और चली गई और घूंघट उतार रक्खा और रंडसाले का बस्त्र पहिन लिया॥ २०। और यहूदाह ने अपने मित्र अदूलामी के हाथ मेम्ना भेजा कि उस स्त्री के

हाथ से अपना बंधक फेर लेवे परन्तु उस ने उसे न पाया॥ २१। तब उस ने वहां के लोगों से पूछा कि जो बेश्या मार्ग में बैठी थी सो कहां है वे बोले कि यहां बेश्या न थी॥ २२। तब वुह यहूदाह के पास फिर आया और कहा कि मैं उसे नहीं पा सक्ता और वहां के लोगों ने भी कहा कि बेश्या वहां न थी॥ २३। यहूदाह बोला कि उसे लेने दे न हो कि हम निन्दित होवें देख मैं ने यह मेम्ना भेजा और तू ने उसे न पाया॥ २४। और तीन मास के पीछे यूं हुआ कि यहूदाह से कहा गया कि तेरी पतोह तमर ने बेश्याई किई और देख कि उसे छिनाले का गर्भ भी है यहूदाह बोला कि उसे बाहर लाओ और जला देओ॥ २५। जब वुह निकाली गई तो उस ने अपने ससुर को कहला भेजा कि मुझे उस जन का पेट है जिस की ये वस्तें हैं और कहा कि देखिये यह छाप और बिजायठ और लाठी किस की है॥ २६। तब यहूदाह ने मान लिया और कहा कि वुह मुझ से अधिक धर्म्मी है इस लिये कि मैं ने उसे अपने बेटे सेलः को न दिया पर वुह आगे को उस्से अज्ञान रहा॥ २७। और उस के जन्ने के समय में यूं हुआ कि उस की कोख में जमल थे॥ २८। और जब वुह पीड़ में हुई तो एक का हाथ निकला और जनाई दाई ने उस के हाथों में नारा बांध के कहा कि यह पहिले निकला॥ २९। और यूं हुआ कि उस ने अपना हाथ फिर खींच लिया और क्या देखता है कि वहीं उस का भाई निकल पड़ा तब वुह बोली कि तू ने यह दरार क्यों किया इस लिये उस का नाम फारिस हुआ॥ ३०। उस के पीछे उस का भाई जिस के हाथ में नारा बंधा था निकला और उस का नाम ज़ारिह् रक्खा।

३९ उन्तालीसवां पर्ब्ब।

और यूसुफ़ को मिस्र में लाये और फ़ूतीफ़र मिस्री ने जो फ़िरऊन का एक प्रधान और राजा का सेनापति था उस को इसमअ़एलियों के हाथ से जो उसे वहां लाये थे मोल लिया॥ २। परन्तु परमेश्वर यूसुफ़ के साथ था और वुह भाग्यमान हुआ और वुह अपने मिस्री स्वामी के घर में रहा किया॥ ३। और उस के स्वामी ने यह देखा कि

परमेश्वर उस के साथ है और यह कि परमेश्वर ने उस के सारे कार्यों में
उसे भाग्यमान किया॥ ४। और यूसुफ़ ने उस की दृष्टि में अनुग्रह
पाया और उस ने उस की सेवा किई और उस ने उसे अपने घर पर
करोड़ा किया और सब जो कुछ कि उस का था उस के हाथ में कर दिया॥
५। और यों हुआ कि जब से उस ने उसे अपने घर पर और अपनी
सब वस्तुन पर करोड़ा किया परमेश्वर ने उस मिस्री के घर पर यूसुफ़ के
कारण बढ़ती दिई और उस की सारी वस्तुन में जो घर में और खेत
में थीं परमेश्वर की ओर से बढ़ती हुई॥ ६। और उस ने अपना
सब कुछ यूसुफ़ के हाथ में कर दिया और उस ने रोटी से अधिक जिसे
खा लेता था कुछ न जानता था और यूसुफ़ रूपमान और देखने में
सुंदर था॥ ७। और उस के पीछे यों हुआ कि उस के स्वामी की पत्नी
की आंख यूसुफ़ पर लगी और वुह बोली कि मुझे ग्रहण कर॥ ८।
परन्तु उस ने न माना और अपने स्वामी की पत्नी से कहा कि देख मेरा
स्वामी अपनी रोटी से अधिक जिसे खा लेता है किसी वस्तु को नहीं
जानता और उस ने अपना सब कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया॥ ९।
इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं और उस ने तुझ को छोड़ कोई वस्तु
मुझ से अलग नहीं रक्खी क्योंकि तू उस की पत्नी है भला फिर मैं ऐसी
महा दुष्टता कर क्यों ईश्वर का अपराधी होऊं॥ १०। और ऐसा
हुआ कि वुह यूसुफ़ को प्रतिदिन कहती रही पर वुह उसे ग्रहण
करने को अथवा उस के पास रहने को उस की न मानता था॥ ११।
और एक समय ऐसा हुआ कि वुह अपने कार्य के लिये घर में गया
और घर के लोगों में से वहां कोई न था॥ १२। तब उस ने उस का
पहिरावा पकड़के कहा कि मुझे ग्रहण कर तब वुह अपना पहिरावा
उस के हाथ में छोड़ कर भागा और बाहर निकल गया॥ १३। अब जो
उस ने देखा कि वुह अपना पहिरावा मेरे हाथ में छोड़गया और
भाग निकला॥ १४। तो उस ने अपने घर के लोगों को बुलाया और
कहा कि देखो वुह एक इबरानी को हमारे घर में लाया कि हम से
ठठोली करे वुह मुझे अपत करने को भीतर घुस आया और मैं चिल्ला
उठी॥ १५। और यों हुआ कि जब उस ने देखा कि मैं शब्द उठा

के चिल्लाई तो अपना पहिरावा मेरे हाथ में छोड़ भागा और बाहर निकल गया॥ १६। सो जब लों उस का पति घर में न आया उस ने उस का पहिरावा अपने पास रख छोड़ा॥ १७। तब उस ने ऐसी ही बातें उस्से कहीं कि यह इबरी दास जो तू ने हम पास ला रक्खा घुस आया कि मुझ से ठट्ठा करे॥ १८। और जब मैं चिल्ला उठी तो वुह अपना पहिरावा मेरे पास छोड़ कर बाहर निकल भागा॥ १९। जब उस के स्वामी ने ये बातें सुनी जो उस की पत्नी ने कहीं कि तेरे दास ने मुझ से यों किया तो उस का क्रोध भड़का॥ २०। और यूसुफ के स्वामी ने उसे लेके बंदीगृह में जहां राजा के बंधुए बंद थे बंधन में डाला और वुह वहां बंदीगृह में था॥ २१। परन्तु परमेश्वर यूसुफ के साथ था और उस पर कृपा किई और बंदीगृह के प्रधान को उस पर दयाल किया॥ २२। और बंदीगृह के प्रधान ने बंदीगृह के सारे बंधुओं को यूसुफ के हाथ में सौंपा और जो कुछ वे करते थे उन का प्रधान वही था॥ २३। और बंदीगृह का प्रधान उस के सारे कार्य्यों से निश्चिंत था इस लिये कि परमेश्वर उस के साथ था और उस के कार्य्यों में जो उस ने किये ईश्वर ने भाग्यमान किया॥

४० चालीसवां पर्ब्ब।

और इन बातों के पीछे यों हुआ कि मिस्र के राजा के पियाऊ ने और रसोइंया ने अपने प्रभु मिस्र के राजा का अपराध किया॥ २। और फ़िरऊ़न अपने दो प्रधानों पर अर्थात् प्रधान पियाऊ पर और प्रधान रसोइंया पर क्रुद्ध हुआ॥ ३। और उस ने उन्हें पहरू के प्रधान के घर में जहां यूसुफ बंद था बंदीगृह में डाला॥ ४। और पहरू के प्रधान ने उन्हें यूसुफ को सौंप दिया और उस ने उन की सेवा किई और वे कितने दिन लों बंद रहे॥ ५। और हर एक ने उन दोनों में से बंदीगृह में अर्थात् मिस्र के राजा के पियाऊ और रसोइंया ने एक ही रात एक एक स्वप्न अपने अपने अर्थ के समान देखा॥ ६। और बिहान को यूसुफ उन पास आया और उन पर दृष्टि करके क्या देखता है कि वे उदास हैं॥ ७। तब उस ने फ़िरऊ़न के प्रधानों से जो उस

के साथ उस के प्रभु के घर में बंद थे पूछा कि आज तुम क्यों कुरूप हो॥
८। वे बोले कि हम ने स्वप्न देखा है जिस का अर्थ करवैया नहीं तब
यूसुफ ने उन्हें कहा क्या अर्थ करना ईश्वर का कार्य्य नहीं मुझ से
कहो॥ ९। तब पियाऊ के प्रधान ने अपना स्वप्न यूसुफ से कहा और
उसे बोला कि अपने स्वप्न में क्या देखता हूं कि एक लता मेरे आगे
है॥ १०। और उस लता में तीन डालियां थीं उन में कलियां
निकलीं और उस में फूल लगे और उस के गुच्छों में पक्के दाख निकले॥
११। और फिरऊन का कटोरा मेरे हाथ में था और मैं ने दाखों को
लेके फिरऊन के कटोरे में निचोड़ा और मैं ने उस कटोरे को फिरऊन
के हाथ में दिया॥ १२। तब यूसुफ ने उसे कहा कि इस का यह अर्थ
है कि ये तीन डालियां तीन दिन हैं॥ १३। फिरऊन अब से तीन
दिन में तेरा सिर उभाड़ेगा और तुझे अपना पद फिर देगा और तू
आगे की नाईं जब तू फिरऊन का पियाऊ था उस के हाथ में फिर
कटोरा देगा॥ १४। परन्तु जब तेरा भला होय तो मुझे स्मरण
कीजियो और मुझ पर दयाल हूजियो और फिरऊन से मेरी चर्चा
करियो और मुझे इस घर से छुड़वाइयो॥ १५। क्योंकि निश्चय मैं
इबरानियों के देश से चुराया गया था और यहां भी मैं ने ऐसा काम
नहीं किया कि वे मुझे इस बंदीगृह में रक्खें॥ १६। जब रसोइयों के
प्रधान ने देखा कि अर्थ अच्छा हुआ तो यूसुफ से कहा कि मैं भी स्वप्न में
था और क्या देखता हूं कि मेरे सिर पर तीन श्वेत टोकरियां हैं॥
१७। और ऊपर की टोकरी में फिरऊन के लिये समस्त रीति का
भोजन था और पंछी मेरे सिर पर उस टोकरी में से खाते थे॥ १८।
तब यूसुफ ने उत्तर दिया और कहा उस का अर्थ यह है की ये तीन
टोकरियां तीन दिन हैं॥ १९। फिरऊन अब से तीन दिन में तेरा सिर
तेरे देह से अलग करेगा और एक पेड़ पर तुझे टांग देगा और पंछी तेरा
मांस नोच नोच खायेंगे॥ २०। और यों हुआ कि तीसरे दिन फिरऊन
के जन्म गांठ का दिन था और उस ने अपने सारे सेवकों का नेउंता
किया और उस ने अपने सेवकों में पियाऊ के प्रधान और रसोइयों के
प्रधान को उभाड़ा॥ २१। और उस ने पियाऊ के प्रधान को पियाऊ

का पद फिर दिया और उस ने फ़िरऊन के हाथ में कटोरा दिया॥ २२। परन्तु उस ने यूसुफ़ के अर्थ करने के समान रसोइयों के प्रधान को फांसी दिई॥ २३। तथापि पियाऊ के प्रधान ने यूसुफ़ को स्मरण न किया परन्तु उसे भूल गया॥

४१ एकतालीसवां पर्ब्ब।

फिर दो बरस बीते यों हुआ कि फ़िरऊन ने स्वप्न देखा और क्या देखता है कि आप नदी के तीर पर खड़ा है॥ २। और क्या देखता है कि नदी से सात सुंदर और मोटी मोटी गायें निकलीं और चराव पर चरने लगीं॥ ३। और क्या देखता है कि उन के पीछे और सात गायें कुरूप और डांगर नदी से निकलीं और नदी के तीर पर उन सात गायों के पास खड़ी हुईं॥ ४। और उन कुरूप और डांगर गायों ने उन सुंदर और मोटी सात गायों को खा लिया तब फ़िरऊन जागा॥ ५। और फिर सो गया और दुहराके स्वप्न देखा कि अन्न से भरी हुई और अच्छी सात बालें एक डांठी में निकलीं॥ ६। और क्या देखता है कि और सात बालें छितरी और पुरबी पवन से मुरझाई हुईं उन के पीछे निकलीं॥ ७। और वे छितरी सात बालें उन अच्छी भरी हुईं सात बालों को निगल गईं और फ़िरऊन जागा और क्या देखता है कि स्वप्न है॥ ८। और बिहान को यों हुआ कि उस का जीव व्याकुल हुआ तब उस ने मिस्र के सारे टोनहों और बुद्धिमानों को बुला भेजा और अपना स्वप्न उन से कहा परन्तु उन में से कोई फ़िरऊन के स्वप्न का अर्थ न कर सका॥ ९। तब प्रधान पियाऊ ने फ़िरऊन से कहा कि मेरा अपराध आज मुझे चेत आता है॥ १०। फ़िरऊन अपने दासों पर क्रुद्ध था और मुझे और रसोइयों के प्रधान को बंदीगृह के पहरू के घर में बंद किया था॥ ११। और एकी रात हम ने अर्थात् मैं ने और उस ने एक एक स्वप्न देखा हम में से हर एक ने अपने स्वप्न के अर्थ समान स्वप्न देखा॥ १२। और एक इबरानी तरुण पहरू के प्रधान का सेवक हमारे साथ था और हम ने उस से कहा और उस ने हमारे स्वप्न का अर्थ किया और उस ने हर एक के स्वप्न समान अर्थ किया॥ १३। और जैसा उस ने हमारे

लिये अर्थ किया तैसा ज़्आ मुझे आप ने पद फिर दिया और उसे फांसी दिई॥ १४। तब फ़िरज़न ने यूसुफ़ को बुलवा भेजा और उन्हों ने उसे बंदीगृह से दौड़ाया और उस ने बाल बनवाया और कपड़े बदल फ़िरज़न के आगे आया॥ १५। तब फ़िरज़न ने यूसुफ़ से कहा कि मैं ने एक स्वप्न देखा जिस का अर्थ कोई नहीं कर सक्ता और मैं ने तेरे बिषय में सुना है कि तू स्वप्न को समुझके अर्थ कर सक्ता है॥ १६। और यूसुफ़ ने उत्तर में फ़िरज़न से कहा कि मुझ से नहीं ईश्वर ही फ़िरज़न को कुशल का उत्तर देगा॥ १७। तब फ़िरज़न ने यूसुफ़ से कहा कि मैं ने स्वप्न देखा कि मैं नदी के तीर पर खड़ा हूं॥ १८। और क्या देखता हूं कि मोटी और सुंदर सात गायें नदी से निकलीं और चराई पर चरने लगीं॥ १९। और क्या देखता हूं कि उन के पीछे अत्यंत कुरूप और बुरी और डांगर और सात गायें निकलीं ऐसी बुरी जो मैं ने मिस्र के सारे देश में कभी न देखा॥ २०। और वे डांगर और कुरूप गायें अगिली मोटी सात गायों को खा गईं॥ २१। और जब वे उन के उदर में पड़ीं तब समुझ न पड़ा कि वे उन्हें खा गईं और वे वैसी ही कुरूप थीं जैसी पहिले थीं तब मैं जागा॥ २२। और फिर स्वप्न में देखा कि अच्छी घनी सात बालें एक डांठी में निकलीं॥ २३। और क्या देखता हूं कि और सात बालें मुरझाई ज़ईं और पतली पुरबी पवन से कुम्हलाई ज़ईं उन के पीछे उगीं॥ २४। और उन पतली बालों ने उन अच्छी सात बालों को निगल लिया और मैं ने यह टोनहों से कहा परन्तु कोई अर्थ न कर सका॥ २५। तब यूसुफ़ ने फ़िरज़न से कहा कि फ़िरज़न का स्वप्न एक ही है जो कुछ ईश्वर को करना है सो उस ने फ़िरज़न को दिखाया है॥ २६। वे सात अच्छी गायें सात बरस हैं और वे अच्छी सात बालें सात बरस हैं स्वप्न एक ही है॥ २७। और वे डांगर और कुरूप सात गायें जो उन के पीछे निकलीं सात बरस हैं और वे सात छूछी बालें जो पुरबी पवन से कुम्हलाई ज़ईं हैं सो अकाल के सात बरस हैं॥ २८। यही बात है जो मैं ने फ़िरज़न से कही ईश्वर जो कुछ किया चाहता है फ़िरज़न को दिखाया॥ २९। देखिये कि सात बरस लों मिस्र के सारे देश में बड़ी बढ़ती होगी॥ ३०। और उन

के पीछे सात बरस का अकाल होगा और मिस्र देश की सारी बढ़ती भुला जायगी और अकाल देश को नष्ट करेगा॥ ३१। और उस अकाल के मारे वुह बढ़ती देश में जानी न जायगी क्योंकि वुह बड़ा भारी अकाल होगा॥ ३२। और फ़िरऊन पर जो स्वप्न दोहराया गया सो इस लिये है कि वुह ईश्वर से ठहराया गया है और ईश्वर थोड़े दिन में उसे करेगा॥ ३३। सो अब फ़िरऊन एक चतुर बुद्धिमान मनुष्य ढूंढे और उसे मिस्र देश पर ठहरावे॥ ३४। फ़िरऊन यही करे और देश पर करोड़ा ठहरावे और सात बढ़ती के बरसों में मिस्र देश का पांचवां भाग लिया करे॥ ३५। और वे अवैये अच्छे बरसों का सारा भोजन एकट्ठा करें और फ़िरऊन के बश में अन्न धर रक्खें और वे अन्न नगरों में धर रक्खें॥ ३६। और वही भोजन मिस्र के देश में अकाल के अवैये सात बरसों के लिये देश के भंडार के लिये होगा जिसतें अकाल के मारे देश नष्ट न हो॥ ३७। तब यह बात फ़िरऊन की दृष्टि में और उस के सारे सेवकों की दृष्टि में अच्छी लगी॥ ३८। तब फ़िरऊन ने अपने सेवकों से कहा क्या हम इस जन के समान पा सक्ते हैं जिस में ईश्वर का आत्मा है॥ ३९। और फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा जैसा कि ईश्वर ने ये सारी बातें तुझे दिखाई हैं सो तेरे तुल्य बुद्धिमान और चतुर कोई नहीं है॥ ४०। तू मेरे घर का करोड़ा हो और मेरी सारी प्रजा तेरी आज्ञा में होगी केवल सिंहासन पर मैं तुझ से बड़ा हूंगा॥ ४१। फिर फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा कि देख मैं ने तुझे मिस्र के सारे देश पर करोड़ा किया॥ ४२। और फ़िरऊन ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से निकाल के यूसुफ़ के हाथ में पहिना दिई और उसे झीना वस्त्र से बिभूषित किया और सोने की सिकरी उस के गले में डाली॥ ४३। और उस ने उसे अपने दूसरे रथ में चढ़ाया और उस के आगे प्रचारा गया कि सन्मान करो और उस ने उसे मिस्र के सारे देश पर अध्यक्ष किया॥ ४४। और फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा कि मैं फ़िरऊन हूं और तुझ बिना मिस्र के सारे देश में कोई मनुष्य अपना हाथ पांव न उठावेगा॥ ४५। और फ़िरऊन ने यूसुफ़ का नाम सफ़नथफ़ानिअख़ रक्खा और उस ने ओन के नगर

के याजक पूतिफरअ की बेटी आसनाथ को उसे ब्याह दिया और यूसुफ मिस्र देश में सर्बत्र फिरा॥ ४६। और जब यूसुफ मिस्र के राजा फिरऊन के आगे खड़ा हुआ तब वुह तीस बरस का था और यूसुफ फिरऊन के आगे से निकलके मिस्र के सारे देश में सर्बत्र फिरा॥ ४७। और बढ़ती के सात बरसों में भूमि से मुट्ठी भर भर उत्पन्न हुआ॥ ४८। तब उस ने उन सात बरसों का सारा भोजन जो मिस्र देश में हुआ एकट्ठे किया और भोजन को नगरों में धर रक्खा हर नगर के आस पास के खेतों का अन्न उसी बस्ती में रक्खा॥ ४९। और यूसुफ ने समुद्र की बालू की नाईं बहुत अन्न बटोरा यहां लों कि गिन्ना छोड़ दिया क्योंकि अगणित था॥ ५०। और अकाल के बरसों से आगे यूसुफ के दो बेटे उत्पन्न हुए जो ओन के याजक फूतीफरअ की बेटी आसनाथ उस के लिये जनी॥ ५१। सो यूसुफ ने पहिले का नाम मुनस्सी रक्खा इस लिये कि उस ने कहा ईश्वर ने मेरा और मेरे पिता के घर का सब परिश्रम भुलाया॥ ५२। और दूसरे का नाम इफरायम रक्खा इस लिये कि ईश्वर ने मुझे मेरे दुख के देश में फलमान किया॥ ५३। और मिस्र देश के बढ़ती के सात बरस बीत गये॥ ५४। और यूसुफ के कहने के समान अकाल के सात बरस आने लगे और सारे देशों में अकाल पड़ा परन्तु मिस्र के सारे देश में अन्न था॥ ५५। पर जब कि मिस्र के सारे देश भूख से मरने लगे तो लोग रोटी के लिये फिरऊन के आगे चिल्लाये तब फिरऊन ने सारे मिस्रियों से कहा कि यूसुफ पास जाओ और उस का कहा मानो॥ ५६। और सारी भूमि पर अकाल था और यूसुफ ने खत्ते खोल खोल मिस्रियों के हाथ बेंचा और मिस्र के देश में कठिन अकाल पड़ा था॥ ५७। और सारे देशगण मिस्र में यूसुफ से मोल लेने आये क्योंकि सारे देशों में बड़ा अकाल था।

४२ बयालीसवां पर्ब्ब।

और जब यअक़ूब ने देखा कि मिस्र में अन्न है तब उस ने अपने बेटों से कहा कि क्यों एक एक को ताकते हो॥ २। तब उस ने

कहा देखो मैं सुनता हूं कि मिस्र में अन्न है उधर जाओ और वहां से
हमारे लिये मोल लेओ जिसतें हम जीवें और न मरें॥ ३। सो यूसुफ
के दस भाई अन्न मोल लेने को मिस्र में आये॥ ४। पर यअकूब ने
यूसुफ के भाई बिनयमीन को उस के भाइयों के साथ न भेजा क्योंकि
उस ने कहा कहीं ऐसा न हो कि उस पर कुछ बिपत पड़े॥ ५। और
इसराएल के बेटे और आनेवालों के साथ मोल लेने आये क्योंकि कनआन
देश में अकाल था॥ ६। और यूसुफ तो देश का अध्यक्ष था और
वुह देश के सारे लोगों के हाथ बेंचा करता था सो यूसुफ के भाई आये
और उन्हों ने उस के आगे भूमि लों प्रणाम किया॥ ७। और यूसुफ ने
अपने भाइयों को देखके उन्हें पहिचाना पर उस ने आप को अन पहि-
चान किया और उन से कठोरता से बोला और उस ने उन्हें पूछा कि तुम
लोग कहां से आते हो और वे बोले अन्न लेने को कनआन देश से॥ ८।
यूसुफ ने तो अपने भाइयों को पहिचाना पर उन्हों ने उसे न पहिचाना॥
९। और यूसुफ ने उन के विषय के स्वप्नों को जो उस ने देखे थे स्मरण
किया और उन्हें कहा कि देश की कुदशा देखने को भेदिये होकर आये
हो॥ १०। तब उन्हों ने उसे कहा नहीं मेरे प्रभु परन्तु आप के सेवक अन्न
लेने आये हैं॥ ११। हम सब एक ही जन के बेटे हैं हम सच्चे हैं आप
के सेवक भेदिये नहीं हैं॥ १२। तब वुह उन से बोला कि नहीं परन्तु देश
की कुदशा देखने आये हो॥ १३। तब उन्हों ने कहा कि आप के सेवक
बारह भाई कनआन देश में एक ही जन के बेटे हैं और देखिये छुटका
आज के दिन हमारे पिता पास है और एक नहीं है॥ १४। तब यूसुफ
ने उन्हें कहा सोई जो मैं ने तुम्हें कहा कि तुम लोग भेदिये हो॥ १५।
इसी से तुम जांचे जाओगे फिरऊन के जीवन की किरिया जब लों
तुम्हारा छोटा भाई न आवे तुम जाने न पाओगे॥ १६। अपना भाई
लाने को अपने में से एक को भेजो और तुम लोग बंदीगृह में रहोगे जिसतें
तुम्हारी बातें जांची जावें कि तुम सच्चे हो कि नहीं नहीं तो फिरऊन
के जीवन की किरिया तुम लोग निश्चय भेदिये हो॥ १७। फिर
उस ने उन को तीन दिन लों बंधन में रक्खा॥ १८। और तीसरे
दिन यूसुफ ने उन्हें कहा यों करके जीते रहो मैं ईश्वर से डरता हूं॥

१९। जो सच्चे हो तो एक को अपने भाइयों में से बंदीगृह में बंद रहने देओ और तुम अकाल के लिये अपने घर में अन्न ले जाओ॥ २०। परन्तु अपने छोटे भाई को मुझ पास लाओ सो तुम्हारी बातें यों ठहर जायंगी और तुम न मरोगे सो उन्हों ने ऐसा ही किया॥ २१। तब उन्हों ने आपुस में कहा कि हम निश्चय उस बात के विषय में दोषी हैं कि जब हमारे भाई ने बिनती किई और हम ने उस के प्राण के कष्ट को देखा तो उस की न सुनी इस लिये यह बिपत्ति हम पर पड़ी है॥ २२। तब रूबिन ने उत्तर में उन्हें कहा क्या मैं ने तुम्हें नहीं कहा कि इस लड़के के बिरुद्ध पाप न करो और तुम ने न सुना इस लिये देखो उस के लोहू का यही पलटा है॥ २३। और वे न जानते थे कि यूसुफ़ समुझता है क्योंकि उन के मध्य में एक दोभाषिया था॥ २४। तब वुह उन में से अलग गया और रोया और फिर उन पास आया और उन से बात चीत किई और उन में से समऊन को लेके उन की आंखों के आगे बांधा॥

२५। तब यूसुफ़ ने उन के बोरों को अन्न से भरने की और हर जन का रोकड़ उस के बोरे में फेरने की और मार्ग के लिये उन्हें भोजन देने की आज्ञा किई और उस ने उन्हें ऐसा ही किया॥ २६। और वे अपने गदहों पर अन्न लादके चल निकले॥ २७। और जब उन में से एक ने टिकान में अपने गदहे को दाना घास देने को अपना बोरा खोला तो उस ने अपना रोकड़ देखा क्योंकि वुह बोरे के मुंह पर था॥ २८। तब उस ने अपने भाइयों से कहा कि मेरा रोकड़ फेरा गया है और देखो कि वुह मेरे बोरे में है सो उन के जी में जी न रहा और वे डरके एक दूसरे को कहने लगे कि ईश्वर ने हम से यह क्या किया॥ २९। और वे कनआन देश में अपने पिता यअ़क़ूब पास पहुंचे और सब जो उन पर बीता था उस के आगे दोहराया॥ ३०। जो जन उस देश का स्वामी है सो हम से कठोरता से बोला और हमें देश का भेदिया ठहराया॥ ३१। और हम ने उसे कहा कि हम तो सच्चे मनुष्य हैं हम भेदिये नहीं हैं॥ ३२ हम बारह भाई एक पिता के बेटे हैं एक नहीं है और सब से छोटा आज अपने पिता के पास कनआन देश में है॥ ३३। तब उस जन ने अर्थात्

उस देश के स्वामी ने हम से कहा इस्से मैं तुम्हारी सच्चाई जानूंगा
अपना एक भाई मुझ पास छोड़ो और अपने घराने के लिये अकाल का
भोजन ले जाओ॥ ३४। और अपने छुटके भाई को मेरे पास ले आओ
तब मैं जानूंगा कि तुम भेदिये नहीं परन्तु सच्चे हो फिर मैं तुम्हारे भाई
को तुम्हें सौंपूंगा और तुम देश में ब्यापार कीजियो॥
३५। और यों हुआ कि जब उन्हों ने अपना अपना बोरा छूछा किया
तो देखो कि हर जन का रोकड़ उस के बोरे में है और जब उन्हों ने
और उन के पिता ने रोकड़ की थैलियां देखीं तो डर गये॥ ३६। और
उन के पिता यअकूब ने उन्हें कहा कि तुम ने मुझे निःसंतान किया
यूसुफ़ तो नहीं है और समऊन भी नहीं और तुम लोग बिनयमीन को ले
जाने चाहते हो ये सब बातें मुझ से बिरुद्ध हैं॥ ३७। तब रूबिन अपने
पिता से कहके बोला जो मैं उसे आप पास न लाऊं तो मेरे दोनों बेटों
को मार डालियो उसे मेरे हाथ में सौंपिये और मैं उसे फिर आप पास
पहुंचाऊंगा॥ ३८। और उस ने कहा मेरा बेटा तुम्हारे संग न जायगा
क्योंकि उस का भाई मर गया है और यह अकेला रह गया जो जाते
जाते मार्ग में उस पर कुछ बिपत्ति पड़े तो तुम मेरे पक्के बालों को शोक के
साथ समाधि में उतारोगे॥

४३ तेंतालीसवां पर्ब्ब।

और देश में बड़ा अकाल था॥ २। और यों हुआ कि जब वे
मिस्र से लाये हुए अन्न को खा चुके तो उन के पिता ने उन्हें कहा
कि फिर जाओ और हमारे लिये थोड़ा अन्न मोल लेओ॥ ३। तब यहूदाह
ने उसे कहा कि उस पुरुष ने हमें चिता चिता कहा कि जब लों तुम्हारा
भाई तुम्हारे साथ न हो मेरा मुंह न देखोगे॥ ४। सो जो आप हमारे
भाई को हमारे साथ भेजियेगा तो हम जायेंगे और आप के लिये अन्न
मोल लेंगे। ५। परन्तु जो आप न भेजेंगे तो हम न जा सकेंगे क्योंकि उस
पुरुष ने हम से कहा कि जब लों तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो तुम मेरा
मुंह न देखोगे। ६। तब इसराएल ने कहा कि तुम ने मुझ से क्यों ऐसा
बुरा ब्यवहार किया कि उस पुरुष से कहा कि हमारा और एक भाई है

७। तब वे बोले कि उस पुरुष ने हमें संकेती से हमारा और हमारे कुटुम्ब
का समाचार पूछा कि क्या तुम्हारा पिता अब लों जीता है क्या तुम्हारा
और कोई भाई है सो हम ने बातों के ब्यवहार के समान उसे कहा क्या
हम निश्चय जानते थे कि वुह हमें कहेगा कि अपने भाई को ले आओ॥ ८
तब यहूदाह ने अपने पिता इसराएल से कहा कि इस तरुण को मेरे साथ
कर दीजिये और हम उठ चलेंगे जिसतें हम और आप और हमारे बालक
जीवें और न मरें॥ ९। मैं उस का बिचवई हूंगा आप मेरे हाथ से उसे लीजि-
यो जो मैं उसे आप पास न लाऊं और आप के आगे न धरूं तो आप यह
दोष मुझ पर सदा धरिये॥ १०। क्योंकि जो हम बिलंब न करते तो
निश्चय अब लों दोहरा के फिर आये होते॥ ११। तब उन के पिता इस-
राएल ने उन्हें कहा कि जो अब योंही है तो यों करो कि इस देश के अच्छे
से अच्छे फल अपने पात्रों में रख लेओ और उस पुरुष के लिये भेंट ले जाओ
थोड़ा निर्यास थोड़ा मधु कुछ सुगंध द्रब्य और बोल और बतम और
बदाम॥ १२। और दूना रोकड़ हाथ में लेओ और वुह रोकड़ जो तुम्हारे
बोरों में फेर लाया गया है अपने हाथ में फेर ले जाओ क्या जाने वुह
भूल से हुआ हो॥ १३। अपने भाई को भी लेओ उठो और उस पुरुष
पास जाओ॥ १४। और सामर्थी ईश्वर उस पुरुष को तुम पर दयाल
करे जिसतें वुह तुम्हारे दूसरे भाई और बिनयमीन को छोड़ देवे और
जो मैं निर्बंश हुआ तो हुआ॥ १५। तब उन्हों ने वुह भेंट लिया और
दूने रोकड़ को अपने हाथ में बिनयमीन समेत लिया और उठे और
मिस्र को उतर चले और यूसुफ़ के आगे जा खड़े हुए॥ १६। जब
यूसुफ़ ने बिनयमीन को उन के संग देखा तो उस ने अपने घर के प्रधान
को कहा कि इन पुरुषों को घर में ले जा और कुछ मारके सिद्ध कर क्योंकि
ये मनुष्य दो पहर को मेरे संग खायेंगे॥ १७। सो जैसा कि यूसुफ़ ने
कहा था उस पुरुष ने वैसाही किया और वुह उन्हें यूसुफ़ के घर में लाया॥
१८। तब वे यूसुफ़ के घर में पहुंचाये जाने से डर गये और उन्हों ने कहा
कि उस रोकड़ के कारण जो पहिले बार हमारे बोरों में फिर गया हम यहां
पहुंचाये गये हैं जिसतें वुह हमारे बिरुद्ध एक कारण ढूंढ़े और हम पर
लपके और हमें पकड़के दास बनावे और हमारे गदहों को छीन लेवे॥

१९। तब उन्हों ने यूसुफ़ के घर के प्रधान पास आके घर के द्वार पर उस्से बात चीत किई॥ २०। और कहा कि महाशय हम निश्चय पहिले बेर अन्न मोल लेने आये थे॥ २१। तो यों हुआ कि जब हम ने टिकाश्रय पर उतरके अपने बोरों को खोला तो क्या देखते हैं कि हर जन का रोकड़ उस के बोरों के मुंह पर है हमारा रोकड़ सब पूरा था सो हम उसे अपने हाथ में फिर लाये हैं॥ २२। और अन्न लेने को और हम रोकड़ अपने हाथों में लाये हैं और हम नहीं जानते कि हमारा रोकड़ किस ने हमारे बोरों में रख दिया॥ २३। तब उस ने कहा कि तुम्हारा कुशल होवे मत डरो तुम्हारे ईश्वर और तुम्हारे पिता के ईश्वर ने तुम्हारे बोरों में तुम्हें धन दिया है तुम्हारा रोकड़ मुझे मिल चुका फिर वुह समऊन को उन पास निकाल लाया॥ २४। और उस जन ने उन्हें यूसुफ़ के घर में लाके पानी दिया और उन्हों ने अपने चरण धोये और उस ने उन के गदहों को दाना घास दिया॥ २५। फिर उन्हों ने दो पहर को यूसुफ़ के आने पर भेंट सिद्ध किया क्योंकि उन्हों ने सुना था कि हमें भोजन यहीं खाना है॥ २६। और जब यूसुफ़ घर आया तो वे अपने हाथ की उस भेंट को भीतर लाये और उस के आगे भूमि लों दंडवत किई॥ २७। और उस ने उन से कुशल क्षेम पूछा और कहा कि तुम्हारा पिता कुशल से है वुह वृद्ध जिस की चर्चा तुम ने किई थी अब लों जीता है॥ २८। और उन्हों ने उत्तर दिया कि आप का सेवक हमारा पिता कुशल से है वुह अब लों जीता है फिर उन्हों ने सिर झुकाके दंडवत किई॥ २९। फिर उस ने अपनी आंखें उठाईं और अपनी माता के बेटे अपने भाई बिनयमीन को देखा और कहा कि तुम्हारा छुटका भाई जिस की चर्चा तुम ने मुझ से किई थी यही है फिर कहा कि हे मेरे बेटे ईश्वर तुझ पर दयाल रहे॥ ३०। तब यूसुफ़ ने उतावली किई क्योंकि उस का जी अपने भाई के लिये भर आया और रोने चाहा और वुह कोठरी में गया और वहां रोया॥ ३१। फिर उस ने अपना मुंह धोया और बाहर निकला और आप को रोका और आज्ञा किई कि भोजन परोसो॥ ३२। तब उन्हों ने उस के लिये अलग और उन के लिये अलग और मिस्रियों के लिये जो उस के संग खाते थे अलग परोसा इस लिये कि मिस्री

इबरानियों के संग भोजन नहीं खा सके क्योंकि वुह मिस्रियों के लिये घिन है॥ ३३। और पहिलौंठा अपनी पहिलौंठाई के और छुटका अपनी छोटाई के समान वे उस के आगे बैठ गये तब वे आश्चर्य से एक दूसरे को देखने लगे॥ ३४। और उस ने अपने आगे से भोजन उन पास भेजा परन्तु बिनयमीन का भोजन हर एक के भोजन से पंचगुन था और उन्हों ने उस के साथ जी भर के पीया॥

४४ चौंतालीसवां पर्ब्ब।

और उस ने अपने घर के प्रधान को यह कहके आज्ञा किई कि उन मनुष्यों के बोरों को जितना वे ले जा सकें अन्न से भर दे और हर एक जन का रोकड़ उस के बोरे में डाल दे॥ २। और मेरा रूपे का कटोरा छुटके के बोरे के मुंह पर उस के अन्न के दाम समेत रख दे सो उस ने यूसुफ की आज्ञा के समान किया॥

३। और ज्योंहीं दिन निकला वे अपने गदहे समेत बिदा किये गये॥ ४। जब वे नगर से थोड़ी दूर बाहर गये यूसुफ ने अपने घर के प्रधान को कहा कि उठ और उन लोगों का पीछा कर और जब तू उन्हें जा लेवे तो उन्हें कह कि किस लिये तुम लोगों ने भलाई की संती बुराई किई है॥ ५। क्या यह वुह नहीं जिस में मेरा प्रभु पीता है उस की नाईं कोई आगम का सच्चा संदेश देता है तुम ने इस में बुरा किया है॥ ६। और उस ने उन्हें जा लिया और ये बातें उन्हें कहीं॥ ७। तब उन्हों ने उसे कहा कि हमारा प्रभु ऐसी बातें क्यों कहता है ईश्वर न करे कि आप के सेवक ऐसा काम करें॥ ८। देखिये यह रोकड़ जो हमने अपने थैलों में ऊपर पाया सो हम कनआन देश से आप पास फिर लाये थे सो क्योंकर होगा कि हम ने आप के प्रभु के घर से रूपा अथवा सोना चुराया हो॥ ९। आप के सेवकों में से वुह जिस के पास निकले वुह मार डाला जाय और हम भी अपने प्रभु के दास होंगे॥ १०। तब उस ने कहा कि तुम्हारी बातों के समान होगा जिस के पास वुह निकले सो मेरा दास होगा और तुम निर्दोष ठहरोगे॥ ११। तब हर एक पुरुष ने तुरंत अपना अपना बोरा भूमि पर उतारा और

हर एक ने अपना बोरा खोला॥ १२। और वुह बड़के से आरंभ करके
छुटके लों ढूंढ़ने लगा और कटोरा बिनयमीन के थैले में पाया गया॥
१३। तब उन्हों ने अपने कपड़े फाड़े और हर एक पुरुष ने अपना
गदहा लादा और नगर को फिरा॥ १४। और यहूदाह और उस के भाई
यूसुफ़ के घर आये क्योंकि वुह अब लों वहीं था और वे उस के आगे भूमि
पर गिरे॥ १५। तब यूसुफ़ ने उन्हें कहा कि तुम ने यह कैसा काम किया
क्या तुम न जानते थे कि मेरे ऐसा जन निश्चय गणना कर सक्ता है॥ १६
तब यहूदाह बोला कि हम अपने प्रभु से क्या कहें और क्या बोलें अथवा
क्योंकर अपने को निर्दोष ठहरावें ईश्वर ने आप के सेवकों की बुराई
प्रगट किई देखिये कि हम और वुह भी जिस पास कटोरा निकला अपने
प्रभु के दास हैं॥ १७। तब वुह बोला ईश्वर न करे कि मैं ऐसा करूं
जिस जन के पास कटोरा निकला वही मेरा दास होगा और तुम अपने
पिता पास कुशल से जाओ॥ १८। तब यहूदाह उस पास आके बोला कि
हे मेरे प्रभु आप का सेवक अपने प्रभु के कान में एक बात कहने की
आज्ञा पावे और अपने सेवक पर आप का कोप भड़कने न पावे क्योंकि
आप फ़िरऊन के समान हैं॥ १९। मेरे प्रभु ने अपने सेवकों से यों
कहके प्रश्न किया कि तुम्हारा पिता अथवा भाई है॥ २०। और हम
ने अपने प्रभु से कहा कि हमारा एक वृद्ध पिता है और उस का बुढ़ापे का
एक छोटा पुत्र है और उस का भाई मर गया और वुह अपनी माता का
एक ही रह गया और वुह अपने पिता का अति प्रिय है॥ २१। तब
आप ने अपने सेवकों से कहा कि उसे मेरे पास लाओ जिसतें मेरी दृष्टि उस
पर पड़े॥ २२। तब हम ने अपने प्रभु से कहा कि वुह तरुण अपने
पिता को छोड़ नहीं सक्ता क्योंकि जो वुह अपने पिता को छोड़ेगा तो
उस का पिता मर जायगा॥ २३। फिर आप ने अपने सेवकों से कहा कि
जब लों तुम्हारा छुटका भाई तुम्हारे साथ न आवे तुम मेरा मुंह फिर न
देखोगे॥ २४। और यों हुआ कि जब हम आप के सेवक अपने पिता
पास गये तो हम ने अपने प्रभु की बातें उस्से कहीं॥ २५। तब हमारा
पिता बोला फिर जाओ और हमारे लिये थोड़ा अन्न मोल लेओ॥
२६। तब हम बोले कि हम नहीं जा सक्ते जो हमारा छुटका भाई

हमारे साथ होवे तो हम जायेंगे क्योंकि जब लों हमारा छुटका भाई हमारे साथ न हो हम उस जन का मुंह न देखने पावेंगे॥ २७। और आप के सेवक मेरे पिता ने हमें कहा कि तुम जानते हो कि मेरी पत्नी मुझ से दो बेटे जनी॥ २८। और एक मुझ से अलग हुआ और मैं ने कहा निश्चय वुह फाड़ा गया और मैं ने उसे तब से न देखा॥ २९। अब जो तुम इसे भी मुझ से अलग करते हो और इस पर कुछ बिपत्ति पड़े तो तुम मेरे पक्के बालों को शोक से समाधि में उतारोगे॥ ३०। अब इस लिये जब मैं आप का सेवक अपने पिता पास पहुंचूं और वुह तरुण हमारे साथ न हो और इस कारण से कि उस का जीव इस तरुण के जीव से बंधा है॥ ३१। तो अंत को यही होगा कि वुह यह देख कर कि तरुण नहीं है मरही जायगा और आप के सेवक अपने पिता के पक्के बालों को शोक से समाधि में उतारेंगे॥ ३२। क्योंकि आप के सेवक ने अपने पिता पास इस तरुण का बिचवई होके कहा कि यदि मैं इसे आप पास न पहुंचाऊं तो मैं सर्बदा लों अपने पिता का अपराधी हूंगा॥ ३३। इस लिये अब मेरी बिनती सुनिये कि आप का सेवक तरुण की संती अपने प्रभु का दास होके रहे और तरुण को उस के भाइयों के संग जाने दीजिये॥ ३४। क्योंकि जो तरुण मेरे साथ न होवे मैं अपने पिता पास कैसे जाऊं ऐसा न होवे कि जो बिपत्ति मेरे पिता पर पड़े मैं उसे देखूं॥

४५ पैंतालीसवां पर्ब्ब।

तब यूसुफ़ उन सब के आगे जो उस पास खड़े थे अपने को रोक न सका और चिल्लाया कि हर एक को मुझ पास से बाहर करो सो जब यूसुफ़ ने अपने को अपने भाइयों पर प्रगट किया तब कोई उस के संग न था॥ २। और वुह चिल्लाके रोया और मिस्रियों और फ़िरऊन के घराने ने सुना॥ ३। और यूसुफ़ ने अपने भाइयों को कहा कि मैं यूसुफ़ हूं क्या मेरा पिता अब लों जीता है तब उस के भाई उसे उत्तर न दे सके क्योंकि वे उस के आगे घबरा गये॥ ४। और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा कि मेरे पास आइये वे पास आये वुह बोला मैं तुम्हारा भाई

यूसुफ़ हूं जिसे तुम ने मिस्र में बेंचा॥ ५। सो इस लिये कि तुम ने
मुझे यहां बेंचा उदास न होओ और व्याकुल मत होओ क्योंकि ईश्वर
ने तुम से आगे मुझे प्राण बचाने को भेजा॥ ६। क्योंकि दो बरस से
भूमि पर अकाल है और अभी और पांच बरस लों बोना लवना न होगा॥
७॥ तुम्हारे बंश की पृथिवी पर रक्षा करने को और बड़े उद्धार से तुम्हारे
प्राण बचाने को ईश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा॥ ८। सो अब तुम ने
नहीं परन्तु ईश्वर ने मुझे यहां भेजा और उस ने मुझे फ़िरऊन के पिता
के तुल्य बनाया और उस के सारे घर का प्रभु और सारे मिस्र देश का
अध्यक्ष बनाया॥ ९। फुरती करो और मेरे पिता पास जाओ और
उसे कहियो कि आप का बेटा यूसुफ़ यों कहता है कि ईश्वर ने मुझे
सारे मिस्र का स्वामी किया मुझ पास चले आइये ठहरिये मत॥ १०।
और आप जश्न की भूमि में रहियेगा और आप और आप के लड़के
और आप के लड़कों के लड़के और आप के झुंड और जन और जो
कुछ आप का है मेरे पास रहेंगे॥ ११। और यहां मैं आप का प्रति-
पाल करूंगा क्योंकि अब भी अकाल के पांच बरस हैं, न हो कि आप
और आप का घराना और सब जो आप के हैं कंगाल हो जायं॥ १२।
और देखो तुम्हारी आंखें और मेरे भाई बिनयमीन की आंखें देखती
हैं कि मैं आपही तुम से बोलता हूं॥ १३। और तुम मेरे पिता से मेरे
बिभव की जो मिस्र में है और सब कुछ की जो तुम ने देखा है चर्चा
कीजियो और फुरती करो और मेरे पिता को यहां ले आओ॥ १४।
और वुह अपने भाई बिनयमीन के गले लगके रोया और बिनयमीन
भी उस के गले लगके रोया॥ १५। और उस ने अपने सब भाइयों
को चूमा और उन से मिल के रोया उस के पीछे उस के भाइयों ने उस्से
बातें किईं॥ १६। और इस बात की कीर्त्ति फ़िरऊन के घर में
सुनी गई कि यूसुफ़ के भाई आये हैं और उस्से फ़िरऊन और उस के
सेवक बहुत आनन्दित हुए॥ १७। और फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा
कि अपने भाइयों से कह कि यह करो अपने पशुन को लादो और
कनआन देश में जा पहुंचो॥ १८। और अपने पिता और अपने
घरानों को लेओ और मुझ पास आओ और मैं तुम्हें मिस्र देश की अच्छी

बस्त्र दूंगा और तुम इस देश का पदारथ खाओगे॥ १९। सो अब तुझे यह आज्ञा है यह करो कि मिस्र देश से अपने लड़के बालों और अपनी पत्नियों के लिये गाड़ियां ले जाओ और अपने पिता को ले आओ॥ २०। और अपनी सामग्री की कुछ चिंता न करो क्योंकि मिस्र देश के सारे पदारथ तुम्हारे हैं॥ २१। और इसराएल के संतानों ने वैसाही किया और यूसुफ ने फिरऊन के कहे के समान उन्हें गाड़ियां दिईं और मार्ग के लिये भोजन दिया॥ २२। और उस ने उन सब में से हर एक को बस्त्र दिये परन्तु उस ने बिनयमीन को तीन सै टुकड़े चांदी और पांच जोड़े बस्त्र दिये॥ २३। और अपने पिता के लिये इस रीति से भेजा दस गदहे मिस्र की अच्छी बस्तुन से लदे हुए और दस गदहियां अनाज और रोटी और भोजन से लदी हुईं अपने पिता की यात्रा के लिये॥ २४। सो उस ने अपने भाइयों को बिदा किया और वे चल निकले तब उस ने उन्हें कहा कि देखो मार्ग में कहीं आपुस में बिगड़ो मत॥ २५। और वे मिस्र से सिधारे और अपने पिता यअकूब पास कनआन देश में पहुंचे॥ २६। और यह कहके उसे बोले कि यूसुफ तो अब लों जीता है और वुह सारे मिस्र देश का अध्यक्ष है और यअकूब का मन सनसना गया क्योंकि उस ने उन की प्रतीति न किई॥ २७। और उन्हों ने यूसुफ की कही हुई सारी बातें उस से दुहराईं और जब उस ने गाड़ियां जो यूसुफ ने उसे ले जाने के लिये भेजी थीं देखीं तो उन के पिता यअकूब का नया जीवन हुआ॥ २८। और इसराएल बोला यह बस है कि मेरा बेटा यूसुफ अब लों जीता है मैं जाऊंगा और अपने मरने से आगे उसे देखूंगा।

४६ छियालिसवां पर्ब्ब।

और इसराएल ने अपना सब कुछ लेके यात्रा किई और बिअरसबः में आके अपने पिता इज़हाक के ईश्वर के लिये बलिदान चढ़ाया॥ २। और ईश्वर ने रात को स्वप्न में इसराएल से बातें करके कहा कि हे यअकूब यअकूब और वुह बोला मैं यहां हूं तब उस ने कहा कि मैं ईश्वर तेरे पिता का ईश्वर हूं मिस्र में जाते हुए मत डर क्योंकि मैं तुझे वहां

बड़ी जाति बनाऊंगा॥ ४। मैं तेरे साथ मिस्र को जाऊंगा मैं तुझे
अवश्य फिर ले आऊंगा और यूसुफ़ तेरी आंखें मूंदेगा॥ ५। तब
यअ़क़ूब बिअरसबः से उठा और इसराएल के बेटे अपने पिता यअ़क़ूब
को और अपने लड़कों और अपनी स्त्रियों को गाड़ियों पर जो फ़िरऊन
ने उस के पहुंचाने को भेजी थीं ले चले॥ ६। और उन्हों ने अपना ढोर
और अपनी सामग्री जो उन्हों ने कनआन देश में पाई थी ले लिई और
यअ़क़ूब अपने सारे वंश समेत मिस्र में आया॥ ७। वुह अपने बेटों
और बेटों के बेटों और बेटियों और अपने बेटों की बेटियों और अपने
सारे वंश को मिस्र में लाया॥

८। और इसराएल के बेटों के नाम जो मिस्र में आये अर्थात्
यअ़क़ूब के बेटे ये हैं यअ़क़ूब का पहिलौंठा रूबिन॥ ९। रूबिन
के बेटे हनूक और फ़लू और हसरून और करमी॥ १०।
समऊन के बेटे यमूएल और यमीन और अहद और यकीन और
सुहर और कनआनी स्त्री का बेटा साऊल॥ ११। और लावी
के बेटे जैरसुन क़िहात और मिरारी॥ १२। और यहूदाह के
बेटे एर और ओनान और सेलः और फाड़स और शारिक परन्तु एर
और ओनान कनआन देश में मर गये और फाड़स के बेटे हसरून
और हमूल हुए॥ १३। और इशकार के बेटे तोलअ और फ़ूवः और
यूब और समरून॥ १४। और ज़बुलून के बेटे सरद और ऐलून और
यहलिएल ये लियाह के बेटे हैं जिन्हें वुह फद्दानअराम में यअ़क़ूब के लिये
जनी उस के सारे बेटे बेटियां तैंतीस प्राणी उस की बेटी दीनः के संग थे॥
१६। और जद के बेटे सिफयून और हज्जी और शूनी और इसबून
और एरी और अरूदी और अरेली॥ १७। और यसर के बेटे यिमनः
और इसवाह और इसवी और बरीअः और उन की बहिन सिरह और
बरीअः के बेटे हिब्र और मलकिएल॥ १८। ये उस ज़िलफ़ः के बेटे हैं
जिसे लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया था और इन्हें वुह यअ़क़ूब
के लिये जनी अर्थात् सोलह प्राणी॥ १९। और यअ़क़ूब की पत्नी
राख़िल से यूसुफ़ और बिनयमीन॥ २०। और मिस्र देश में यूसुफ़
के लिए मुनस्सी और इफरायम उत्पन्न हुए जिन्हें ऊन के अध्यक्ष फूती-

फर की बेटी आसनाथ जनी॥ २१। और बिनयमीन के बेटे बालिग और बकर और असबील और जैरा और नञमान और अख़ी और रूस और मपिम और ऊफ़फ़ीम और अरद॥ २२। इन्हें राख़िल यअकूब के लिये जनी सब चैादह प्राणी॥ २३। और दान का बेटा होशीम॥ २४। और नफताली के बेटे यहसीएल और जूनी और यिस्र और सलीम॥ २५। ये बिलहः के बेटे हैं जिसे लाबन ने अपनी बेटी राख़िल को दिया सो ये सब सात प्राणी हैं जिन्हें वुह यअक़ब के लिये जनी॥ २६। सो सारे प्राणी जो यअकूब के साथ मिस्र में आये और उस की कटि से उत्पन्न ज़ए उन से अधिक जो यअक़ब के बेटों की स्त्रियां थीं छियासठ प्राणी थे॥ २७। और यूसुफ़ के बेटे जो मिस्र में उत्पन्न ज़ए दो थे सो सारे प्राणी जो यअक़ब के घराने के थे और मिस्र में आये सत्तर थे॥ २८। और उस ने यहूदाह को अपने आगे आगे जश्न लों अपनी अगुआई करने को यूसुफ़ कने भेजा और वे जश्न की भूमि में आये॥ २९। और यूसुफ़ ने अपना रथ सिद्ध किया और अपने पिता इसराएल से भेंट करने के लिये जश्न को गया और उस पास पज़ंचा और उस के गले पर गिरके अबेर लों रोया किया॥ ३०। और इसराएल ने यूसुफ़ से कहा कि अब मैं मरने को सिद्ध ज़ं कि मैं ने तेरा मुंह देखा क्योंकि तू अब भी जीता है॥ ३१। और यूसुफ़ ने अपने भाइयों और अपने पिता के घराने से कहा कि मैं संदेश देने को फ़िरऊ़न पास जाता ज़ं और उसे कहता ज़ं कि मेरे भाई और मेरे पिता का घराना जो कनआ़न देश में थे मेरे पास आये हैं॥ ३२। और वे गड़रिये हैं क्योंकि ढोर चराना उन का उद्यम है और वे अपनी झुंड और ढोर और सब कुछ जो उन का है ले आये हैं॥ ३३। और यों होगा कि जब फ़िरऊ़न तुम्हें बुला के तुम्हारा उद्यम पूछे॥ ३४। तो कहियो कि आप के दास लड़काई से अब लों चरवाही करते रहे हैं क्या हम और क्या हमारे बाप दादे जिसतें तुम लोग जश्न की भूमि में रहो क्योंकि मिस्रियों को हर एक गड़रिये से घिन है।

४७ सैंतालीसवां पर्ब्ब ।

तब यूसुफ आया और फ़िरऊन से कहके बोला कि मेरा पिता और
मेरे भाई और उन की झुंड और ढोर और सब जो उन के हैं
कनआन देश से निकल आये और देखिये कि जश्न की भूमि में हैं॥
२। और उस ने अपने भाइयों में से पांच जन लेके उन्हें फ़िरऊन के
आगे किया॥ ३। और फ़िरऊन ने उस के भाइयों से कहा कि तुम्हारा
उद्यम क्या उन्हों ने फ़िरऊन को कहा कि आप के सेवक क्या हम और
क्या हमारे बाप दादे गड़ेरिये हैं॥ ४। फिर उन्हों ने फ़िरऊन से कहा
कि हम इस देश में रहने को आये हैं क्योंकि कनआन देश में अकाल के
मारे आप के सेवकों की झुंड के लिये चराई नहीं है अब इस लिये
अपने सेवकों को जश्न की भूमि में रहने दीजिये॥ ५। तब फ़िरऊन
ने यूसुफ से कहा कि तेरा पिता और तेरे भाई तुझ पास आये हैं॥
६। मिस्र देश तेरे आगे है अपने पिता और अपने भाइयों को सब से
अच्छी भूमि में बसा जश्न की भूमि में रहें और जो तू उन में चालाक
मनुष्य जानता है तो उन्हें मेरे ढोरों पर प्रधान कर॥ ७। तब यूसुफ
अपने पिता यअकूब को भीतर लाया और उसे फ़िरऊन के आगे खड़ा
किया और यअकूब ने फ़िरऊन को आशीष दिया॥ ८। और फ़िरऊन
ने यअकूब से पूछा कि तेरे जीवन के बय के बरसों के दिन कितने हैं॥
९। तब यअकूब ने फ़िरऊन से कहा कि मेरी यात्रा के दिनों के बरस
एक सौ तीस हैं मेरे जीवन के बरसों के दिन थोड़े और बुरे हुए हैं और
मेरे पितरों के जीवन के बरसों के दिनों को जब वे यात्रा करते थे नहीं
पहुंचे॥ १०। और यअकूब ने फ़िरऊन को आशीष दिया और
फ़िरऊन के आगे से बाहर गया॥ ११। और यूसुफ ने अपने पिता
और भाइयों को मिस्र देश में सब से अच्छी भूमि में रामसीस की भूमि
में जैसा फ़िरऊन ने कहा था रक्खा और अधिकारी किया॥ १२।
और यूसुफ ने अपने पिता और अपने भाइयों और अपने पिता के
सारे घराने का उन के लड़के बालों के समान प्रतिपाल किया।
१३। और सारे देश में रोटी न थी क्योंकि ऐसा कठिन अकाल था

कि मिस्र देश और कनआन देश अकाल के मारे झौंस गया था॥ १४।
और यूसुफ़ ने सारे रोकड़ को जो मिस्र देश और कनआन देश में था
उस अन्न की संती जो लोगों ने मोल लिया बटोरा और यूसुफ़ उस
रोकड़ को फ़िरऊन के घर में लाया॥ १५। और जब मिस्र देश और
कनआन देश में रोकड़ हो चुका तो सारे मिस्रियों ने आके यूसुफ़ से
कहा कि हमें रोटी दीजिये कि आप के होते हुए हम क्यों मरें क्योंकि
रोकड़ हो चुका है॥ १६। तब यूसुफ़ ने कहा कि जो रोकड़ न होय
तो अपने ढोर देओ मैं तुम्हारे ढोर की संती दूंगा॥ १७। वे अपने
ढोर यूसुफ़ के पास लाये और यूसुफ़ ने उन्हें घोड़ों और झुंड़ों और
ढोरों के चौपाये और गदहों की संती रोटियां दिईं और उस ने उन के
ढोर की संती उन्हें उस बरस पाला॥ १८। और जब वुह बरस बीत
गया वे दूसरे बरस उस पास आये और उसे कहा कि हम अपने प्रभु से
नहीं छिपावेंगे कि हमारा रोकड़ उठ गया हमारे प्रभु ने हमारे ढोरों
की झुंड भी लिई सो हमारे प्रभु की दृष्टि में हमारे देह और भूमि से
अधिक कुछ न बचा॥ १९। सो हम अपनी भूमि समेत आप की आंखों
के आगे क्यों नष्ट होवें हमें और हमारी भूमि को रोटी पर मोल लीजिये
और हम अपनी भूमि समेत फ़िरऊन के दास होंगे और अन्न दीजिये
जिसतें हम जीवें और न मरें जिसतें देश उजड़ न जाय॥ २०।
और यूसुफ़ ने मिस्र की सारी भूमि फ़िरऊन के लिये मोल लिई क्योंकि
मिस्रियों में से हर एक ने अपना अपना खेत बेंचा इस कारण कि
अकाल ने उन्हें निपट सकेत किया था सो वुह भूमि फ़िरऊन की हुई॥
२१। रहे लोग सो उस ने उन्हें नगरों में मिस्र के एक सिवाने से दूसरे
सिवाने लों भेजा॥ २२। उस ने केवल याजकों की भूमि मोल न
लिई क्योंकि याजकों ने फ़िरऊन से एक भाग पाया था और फ़िरऊन
के दिये हुए भाग से खाते थे इस लिये उन्हों ने अपनी भूमि को न बेंचा॥
२३। तब यूसुफ़ ने लोगों से कहा कि देखो मैं ने आज के दिन तुम्हें
और तुम्हारी भूमि को फ़िरऊन के लिये मोल लिया है सो यह बीज
तुम्हारे लिये है खेत में बोओ॥ २४। और उस की बढ़ती में ऐसा
होगा कि तुम पांचवां भाग फ़िरऊन को देना और चार भाग खेत के बीज

के लिये और तुम्हारे और तुम्हारे घराने के और तुम्हारे बालकों के
भोजन के लिये होंगे॥ २५। तब वे बोले कि आप ने हमारे प्राण बचाये
हैं हम अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पावें और हम फ़िरऊन के दास
होंगे॥ २६। और यूसुफ़ ने मिस्र देश के लिये आज लों यह व्यवस्था
बांधी कि फ़िरऊन पांचवां भाग पावे परन्तु केवल याजकों की भूमि
फ़िरऊन की न ऊई॥ २७। और इसराएल ने मिस्र की भूमि में जश्न
के देश में निवास किया और वे वहां अधिकारी थे और वे बढ़े और
बऊत अधिक ऊए॥ २८। और यअक़ूब मिस्र देश में सत्रह बरस
जीया से यअक़ूब के जीवन के बरसों के दिन एक सो सेंतालीस ऊए॥
२९। और इसराएल के मरने का समय आ पऊंचा तब उस ने अपने
बेटे यूसुफ़ को बुलाके कहा कि अब जो मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया
है अपना हाथ मेरी जांघ तले रख और दया और सच्चाई से मेरे संग
व्यवहार कर मुझे मिस्र में मत गाड़िये॥ ३०। परन्तु मैं अपने पितरों
में पड़ रहूंगा और तू मुझे मिस्र से बाहर ले जाइये और उन के समाधि
स्थान में गाड़िये तब वुह बोला कि आप के कहने के समान मैं करूंगा॥
३१। और उस ने कहा कि मेरे आगे किरिया खा और उस ने उस के
आगे किरिया खाई और इसराएल खाट के सिरहाने पर झुक गया।

४८ अठतालीसवां पर्ब्ब।

और इन बातों के पीछे यों ऊआ कि किसी ने यूसुफ़ से कहा कि
देखिये आप का पिता रोगी है तब उस ने अपने दो बेटे मुनस्सी
और इफ़रायम को अपने साथ लिया॥ २। और यअक़ूब को संदेश
दिया गया कि देख तेरा बेटा यूसुफ़ तुझ पास आता है और इसराएल
खाट पर संभल बैठा॥ ३। और यअक़ूब ने यूसुफ़ से कहा कि सर्व सा-
मर्थी ईश्वर ने कनआन देश के लैाज़ में मुझे दर्शन दिया और मुझे
आशीष दिया॥ ४। और मुझे कहा कि देख मैं तुझे फलमान करूंगा
और बढ़ाऊंगा और तुझ से बऊत सी जाति उत्पन्न करूंगा और तेरे पीछे
इस देश को तेरे बंश के लिये सर्बदा का अधिकार करूंगा॥ ५। और
अब तेरे दो बेटे इफ़रायम और मुनस्सी जो मिस्र में मेरे आने से आगे

तुझ से मिस्र देश में उत्पन्न हुए हैं मेरे हैं रूबिन और समऊन की नाईं वे
मेरे होंगे॥ ६। और तेरा बंश जो उन के पीछे उत्पन्न होगा तेरा होगा
और अपने अधिकार में वे अपने भाइयों के नाम पावेंगे॥ ७। और
मैं जो हूं सो जब फद्दान से आया और इफ़रातः थोड़ी दूर रह गया था
तब कनआन देश के मार्ग में राखिल मेरे पास मर गई और मैं ने इफ़रातः
के मार्ग में उसे वहीं गाड़ा वही बैतलहम है॥

८। तब इसराएल ने यूसुफ़ के बेटों को देखके कहा ये कौन हैं॥
९। यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा कि ये मेरे बेटे हैं जिन्हें ईश्वर ने मुझे
यहां दिया है वुह बोला उन्हें मुझ पास ला मैं उन्हें आशीष दूंगा॥
१०। [अब इसराएल कीं आंखें बुढ़ापे के मारे धुंधली हुईं थीं कि वुह
न देख सका] और वुह उन्हें उस के पास लाया और उस ने उन्हें चूमा और
उन्हें गले लगाया॥ ११। और इसराएल ने यूसुफ़ से कहा कि मुझे तो
तेरे मुंह देखने की आशा न थी और देख ईश्वर ने तेरा बंश भी मुझे
दिखाया॥ १२। और यूसुफ़ ने उन्हें अपने घुठनों में से निकाला और
अपने को भूमि पर झुकाया॥ १३। और यूसुफ़ ने उन दोनों को लिया
इफ़रायम को अपने दहिने हाथ में इसराएल के बाएं हाथ की ओर और
मुनस्सी को अपने बाएं हाथ में इसराएल के दहिने हाथ की ओर और
उस के पास लाया॥ १४। तब इसराएल ने अपना दहिना हाथ लंबा
किया और इफ़रायम के सिर पर जो छुटका था रक्खा और अपना
बायां हाथ मुनस्सी के सिर पर जान बूझके अपने हाथ को यों रक्खा
क्योंकि मुनस्सी पहिलौंठा था॥ १५। और उस ने यूसुफ़ को बर दिया
और कहा कि वुह ईश्वर जिस के आगे मेरे पिता अबिरहाम और
इज़हाक़ चलते थे और वुह ईश्वर जिस ने जीवन भर आज लों मेरी रख-
वाली किई॥ १६। वुह दूत जिस ने मुझे सारी बुराई से बचाया इन
लड़कों को आशीष देवे और मेरा नाम और मेरे पिता अबिरहाम और
इज़हाक़ का नाम उन पर होवे और उन्हें पृथिवी पर मछलियों की नाईं
बढ़ावे॥ १७। और जब यूसुफ़ ने अपने पिता को अपना दहिना हाथ
इफ़रायम के सिर पर रखते देखा तो उसे बुरा लगा और उस ने अपने
पिता का हाथ उठा लिया जिसतें उसे इफ़रायम के सिर पर से मुनस्सी

के सिर पर रखे॥ १८। श्रीर यूसफ़ ने अपने पिता से कहा कि हे मेरे
पिता ऐसा नहीं क्योंकि यह पहिलौंठा है अपना दहिना हाथ उस के
सिर पर रखिये॥ १९। पर उस के पिता ने न माना श्रीर कहा कि मैं
जानता हूं हे बेटे मैं जानता हूं वुह भी एक जातिगण बन जायगा
श्रीर वुह भी बड़ा होगा परन्तु निश्चय उस का छुटका भाइ उस्से भी बड़ा
होगा श्रीर उस के बंश भरपूर जातिगण बन जायेंगे॥ २०। श्रीर उस
ने उन्हें उस दिन यह कहके आशीष दिया कि इसराएल तेरा नाम लेके
यह आशीष देंगे कि ईश्वर तुझे इफ़रायम श्रीर मुनस्सी की नाईं बनावे
सो उस ने इफरायम को मुनस्सी से आगे किया॥ २१। श्रीर इसराएल
ने यूसुफ़ को कहा कि देख मैं मरता हूं परन्तु ईश्वर तुम्हारे साथ होगा
श्रीर तुम्हें तुम्हारे पितरों के देश में फेर ले जायगा॥ २२। इस्से
अधिक मैं ने तुझे तेरे भाइयों से एक भाग जो मैं ने अमूरियों के हाथ से
अपने तलवार श्रीर धनुष से निकाला अधिक दिया है॥

४९ उंचासवां पर्ब्ब।

श्रीर यअक़ूब ने अपने बेटों को बुलाया श्रीर कहा कि एकट्ठे होश्रो
जिसतें जो तुम पर पिछले दिनों में बीतेगा मैं तुम से कहूं॥
२। हे यअक़ूब के बेटो बटुर जाश्रो श्रीर सुनो श्रीर अपने पिता
इसराएल की श्रोर कान धरो॥ ३। हे रूबिन तू मेरा पहिलौंठा मेरा
बूता श्रीर मेरे सामर्थ्य का आरंभ महिमा की उत्तमता श्रीर पराक्रम
की उत्तमता॥ ४। जल की नाईं अस्थिर तू श्रेष्ठ न होगा इस कारण
कि तू अपने पिता की खाट पर चढ़ा तब मेरे बिछौने पर चढ़के उसे
अशुद्ध किया॥ ५। समऊन श्रीर लावी भाई हैं अंधेर के हथियार
उन के निवासों में हैं॥ ६। हे मेरे प्राण तू उन के भेद में मत जा मेरी
प्रतिष्ठा तू उन की सभा में मत मिल क्योंकि उन्हों ने अपने क्रोध
से एक मनुष्य को घात किया है श्रीर अपनी ही इच्छा से नगर की
भीत ढा दिई॥ ७। उन की प्रचंडरिस के लिये श्रीर उन के क्रूर कोप
के लिये धिक्कार मैं उन्हें यअक़ूब में अलग करूंगा श्रीर इसराएल में
छिन्न भिन्न करूंगा॥ ८। यहूदाह तेरे भाई तेरी स्तुति करेंगे तेरा हाथ

तेरे बैरियों के गले पर होगा तेरे पिता के बंश तेरे आगे दंडवत
करेंगे॥ ९। यहूदाह सिंह का बच्चा मेरे बेटे तू अहेर पर से उठ चला
वुह सिंह की हां बड़े सिंह की नाईं झुका और बैठा उसे कौन छेड़ेगा॥
१०। यहूदाह से राजदंड अलग न होगा और न व्यवस्थादायक उस के
बंश से जायगा जब लों सैला न आवे और लोग उस के पास एकट्ठे होंगे॥
११। उस ने अपना गदहा दाख से और अपनी गदही का बच्चा
चुने हुए दाख से बांध के अपने कपड़े दाखरस में और अपना पहिरावा
दाख के लोहू में धोया॥ १२। उस की आंखें दाखरस से लाल और
उस के दांत दूध से श्वेत होंगे॥

१३। ज़बुलून समुद्र के घाट पर निवास करेगा और जहाजों के लिये
घाट होगा और उस का सिवाना सैदा तक॥

१४। इशकार बली गदहा है जो दो बोझ तले झुका है॥ १५।
और उस ने देखा कि बिश्राम अच्छा है और भूमि सुदृश्य है उस ने अपना
कांधा बोझ उठाने को झुकाया और कर देने का दास हुआ॥ १६।
दान इसराएल की गोष्ठियों में के एक की नाईं अपने लोगों का न्याय
करेगा॥ १७। दान मार्ग का सर्प और पथ का नाग होगा जो घोड़े
की नलियों को ऐसा डसेगा कि उस का चढ़वैया पछाड़ा जायगा॥ १८।
हे परमेश्वर मैं तेरी मुक्ति की बाट जोहता हूं॥ १९। एक सेना जद को
जीतेगी परन्तु वुह अंत को आप जीतेगा॥ २०। यसर की रोटी
चिकनी होगी और वुह राजीय पदारथ प्राप्त करेगा॥

२१। नफताली एक छोड़ा हुआ हरिन है वुह सुबचन कहता है॥

२२। यूसुफ़ एक फलमय डाल है वुह फलदायक डाल जो सोते के
लग है जिस की डालियां भीत पर फैलती हैं॥ २३। धनुषधारियों
ने उसे निपट सताया और मारा और उस्से डाह रक्खा॥ २४। और
उस का धनुष बल में दृढ रहा और उस के हाथों की भुजाओं ने यअ़कूब
के सर्बशक्तिमान के हाथों से बल पाया वहां से गड़रिया इसराएल का
चटान है॥ २५। तेरे पिता का ईश्वर तेरी सहाय करेगा और सर्ब
सामर्थी जो तुझे ऊपर से स्वर्गीय आशीष और नीचे गहिराव के आशीष
और स्तनों का और कोख का आशीष देगा॥ २६। तेरे पिता के

आशीष मेरे माता पिता के आशीषों से इतने अधिक हैं कि सनातन पर्बतों के अंत लों बढ़ गये और ये यूसुफ के सिर पर और उस के सिर के मुकुट पर होंगे जो अपने भाइयों से अलग था॥
२७॥ बिनयमीन फड़वैये झुंडार की नाईं होगा बिहान को अहेर
भक्षेगा और सांझ को लूट बांटेगा॥ २८। ये सब इसराएल की बारह गोष्ठी हैं और उन के पिता ने उन्हें यह कहके आशीष दिया और अपने आशीष के समान हर एक को बर दिया॥ २९। फिर उस ने उन्हें आज्ञा किई और कहा कि मैं अपने लोगों में एकट्ठे होने पर हूं मुझे अपने पितरों में उस कंदला में जो हित्ती इफ़रून के खेत में है गाड़ियो॥ ३०।
उस कंदला में जो मकफील: के खेत में ममरी के आगे कनआन देश में है जिसे अबिरहाम ने समाधि स्थान के अधिकार के लिये खेत समेत इफ़रून हित्ती से मोल लिया था॥ ३१। वहां उन्हों ने अबिरहाम को और
उस की पत्नी सरः को गाड़ा वहां उन्हों ने इज़हाक को और उस की पत्नी रिबक़: को गाड़ा और वहां मैं ने लियाह को गाड़ा॥ ३२।
उन्हों ने वुह खेत उस कंदला समेत जो उस में था हित्त के बेटों से मोल लिया॥ ३३। और जब यअक़ूब अपने बेटों को आज्ञा कर चुका तो उस ने बिछौने पर अपने पांव को समेट लिया और प्राण त्यागा और अपने लोगों में जा मिला॥

५० पचासवां पर्ब्ब।

तब यूसुफ़ अपने पिता के मुंह पर गिर पड़ा और उस पर रोया और उसे चूमा॥ २। तब यूसुफ़ ने अपने पिता में सुगंध भरने के लिये अपने बैद्य सेवकों को आज्ञा किई और बैद्यों ने इसराएल में सुगंध भरा॥ ३। और उस के लिये चालीस दिन बीत गये क्योंकि जिस में सुगंध भरा जाता है उतने दिन बीत्ते हैं और मिस्रियों ने उस के लिये सत्तर दिन लों बिलाप किया॥ ४। और जब रोने के दिन उस के लिये बीत गये तो यूसुफ़ ने फ़िरऊन के घराने से कहा कि जो मैं ने तुम्हारी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो फ़िरऊन के कानों में कह देओ॥ ५। कि मेरे पिता ने मुझ से किरिया लिई कि देख मैं

मरता हूं तू मुझे मेरी समाधि में जो मैं ने कनआन देश में अपने लिये
खोदी है गाड़ियो सो मेरे पिता के गाड़ने को मुझे छुट्टी दीजिये और
मैं फिर आऊंगा॥ ६। फिरऊन ने कहा कि जा और तुझ से किरिया
लेने के समान अपने पिता को गाड़॥ ७। सो यूसुफ़ अपने पिता को
गाड़ने गया और फिरऊन के सारे सेवक और उस के घर के प्राचीन
और मिस्र देश के सारे प्राचीन उस के संग गये॥ ८। और यूसुफ़ का
सारा घराना और उस के भाई और उस के पिता का घराना सब उस
के संग गये उन्हों ने केवल अपने बालक और झुंड और ढोर जश्न की
भूमि में छोड़ दिये॥ ९। और रथ और घोड़चढ़े उस के साथ गये
और वुह एक अति बड़ी मंडली थी॥ १०। और वे अतद के खलिहान
पर जो यरदन पार है आये और वहां उन्हों ने अति बड़े बिलाप से
बिलाप किया और उस ने अपने पिता के लिये सात दिन लों शोक
किया॥ ११। जब देश के बासी कनआनियों ने अतद के खलिहान
का बिलाप देखा तो बोले कि यह मिस्रियों के लिये बड़ा बिलाप है सो
इस लिये उस का नाम मिस्रियों का बिलाप कहलाया और वुह यरदन
के पार है॥ १२। और उस की आज्ञा के समान उस के बेटों ने उस से
किया॥ १३। क्योंकि उस के बेटे उसे कनआन देश में ले गये और
उसे उस मकफील: के खेत की कंदला में जिसे अबिरहाम ने समाधि
स्थान के अधिकार के लिये इफ़रून हित्ती से ममरी के साम्ने मोल लिया
था गाड़ा।

१४। और यूसुफ़ आप और उस के भाई और सब जो उस के साथ
उस के पिता को गाड़ने गये थे उस के पिता को गाड़के मिस्र को फिरे॥
१५। और जब युसुफ़ के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता मर गया तो
उन्हों ने कहा क्या जाने यूसुफ़ हम से बैर करेगा और सारी बुराई का
जो हम ने उस से किई है निश्चय पलटा लेगा॥ १६। तब उन्हों ने
यूसुफ़ को यों कहला भेजा आप के पिता ने मरने से पहिले आज्ञा किई॥
१७। कि यूसुफ़ से कहियो कि अपने भाइयों के पाप और उन के
अपराध क्षमा कर क्योंकि उन्हों ने तुझ से बुराई किई सो अब अपने
पिता के ईश्वर के दासों के पाप क्षमा कीजिये और जब उन्हों ने यह

कहा तो यूसुफ़ रोया॥ १८। और उस के भाई भी गये और उस के
आगे गिर पड़े और उन्हों ने कहा कि देखिये हम आप के सेवक हैं॥
१९। यूसुफ़ ने उन्हें कहा कि मत डरो कि क्या मैं ईश्वर की संती
हूं॥ २०। पर तुम जो हो तुम ने मुझ से बुराई करने की इच्छा किई
परन्तु ईश्वर ने उसे भलाई कर दिई कि बहुत से लोगों का प्राण बचावे
जैसा कि आज है॥ २१। इस लिये तुम मत डरो मैं तुम्हारा और
तुम्हारे बालकों का प्रतिपाल करूंगा और उस ने उन्हें धीरज दिया और
उन से शांति की बातें कहीं॥ २२। और यूसुफ़ और उस के पिता के
घराने ने मिस्र में निवास किया और यूसुफ़ एक सौ दस बरस जीया॥
२३। और यूसुफ़ ने इफ़रायम की तीसरी पीढ़ी देखी और मुनस्सी के
बेटे मकीर के भी लड़के यूसुफ़ के घुठनों पर जनाये गये॥ २४। और
यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा कि मैं मरता हूं और ईश्वर तुम से निश्चय
भेंट करेगा और तुम्हें इस देश से बाहर उस देश में जिस के विषय में
उस ने अबिरहाम और इज़हाक और यअ़क़ूब से किरिया खाई थी ले
जायगा॥ २५। और यूसुफ़ ने इसराएल के संतानों से यह किरिया
लेके कहा कि ईश्वर निश्चय तुम से भेंट करेगा और तुम मेरी हड्डियों को
यहां से ले जाइयो॥ २६। सो यूसुफ़ एक सौ दस बरस का होके मर गया
और उन्हों ने उस में सुगंध भरा और उसे मिस्र में मंजूषा में रक्खा।

यात्रा की पुस्तक मूसा रचित।

पहिला पर्ब्ब।

अब इसराएल के संतानों के नाम ये हैं हर एक जो अपने
घराने को लेके यअ़क़ूब के साथ मिस्र में आया॥ २। रूबिन
समऊ़न लावी यहूदाह॥ ३। इशकार ज़बुलून बिनयमीन॥ ४।
दान और नफताली जद और यसर॥ ५। और समस्त प्राणी
जो यअ़क़ूब की जांघ से उत्पन्न हुए सत्तर थे और यूसुफ़ तो मिस्र में
था॥ ६। और यूसुफ़ और उस के सारे भाई और वुह समस्त पीढ़ी
मर गई॥ ७। परंतु इसराएल के संतान फलमान हुए और बहुताई
से अधिक हुए और बढ़ गये और अत्यंत सामर्थी हुए और देश उन से
भर गया॥ ८। तब मिस्र में एक नया राजा उठा जो यूसुफ़ को न
जानता था॥ ९। और उस ने अपने लोगों से कहा कि देखो इसराएल
के संतानों के लोग हम से अधिक और बलवंत हैं॥ १०। आओ हम
उन से चतुराई से व्यवहार करें न हो कि वे बढ़ जायें और ऐसा होय कि
जब युद्ध पड़े तो वे हमारे बैरियों से मिल जावें और हम से लड़ें और
देश से निकल जायें॥ ११। इस लिये उन्हों ने उन पर करोड़ों को
बैठाया कि उन्हें अपने बोझों से सतावें और उन्हों ने फिरऊ़न के लिये
भंडार नगरों को अर्थात् पितोम और रामसीस को बनाया॥ १२। परंतु
ज्यों ज्यों वे उन्हें दुख देते थे त्यों त्यों वे बढ़ते गये और बहुत हुए और
वे इसराएल के संतान के कारण से दुखी थे॥ १३। और इसराएल के
संतानों से मिस्रियों ने क्लेश से सेवा कराई॥ १४ और उन्हों ने

कठिन सेवा से गारा ग्रैार ईंट का कार्य ग्रैार खेत की भांति भांति की सेवा कराके उन के जीवन को कड़ुआ कर डाला उन की सारी सेवा जो वे कराते थे क्लेश के साथ थी॥

१५। तब मिस्र के राजा ने इब्रानी जनाई दाइयों को जिनमें एक का नाम सिफ़रः ग्रैार दूसरी का नाम फूग्रः था यों कहा॥ १६। कि जब इब्रानी स्त्री तुम से जनाई दाई का कार्य करावें ग्रैार तुम उन्हें ग्रासनों पर देखो यदि पुत्र होय तो उसे मार डालो ग्रैार यदि पुत्री होय तो जीने दो॥ १७। परंतु जनाई दाई ईश्वर से डरती थीं ग्रैार जैसा कि मिस्र के राजा ने उन्हें ग्राज्ञा किई थी वैसा न किया परंतु पुत्रों को जीता छोड़ा॥ १८। फिर मिस्र के राजा ने जनाई दाइयों को बुलवाया ग्रैार उन्हें कहा कि तुम ने ऐसा क्यों किया ग्रैार पुत्रों को क्यों जीता छोड़ा॥ १९। जनाई दाइयों ने फ़िरऊन से कहा इस कारण कि इब्रानी स्त्री मिस्र की स्त्रियों के समान नहीं क्योंकि वे फुरतीली हैं ग्रैार उस्से पहिले कि जनाई दाई उन पास पहुंचे वे जन बैठती हैं॥ २०। इस लिये ईश्वर ने जनाई दाइयों से सुव्यवहार किया ग्रैार लोग बढ़ गये ग्रैार ग्रत्यंत बलवंत हुए॥ २१। ग्रैार इस कारण कि जनाई दाई ईश्वर से डरती थीं यों हुग्रा कि उस ने उन को बसाया॥ २२। ग्रैार फ़िरऊन ने ग्रपने समस्त लोगों को ग्राज्ञा किई कि हरएक पुत्र जो उत्पन्न होय तुम उसे नदी में डाल देग्रो ग्रैार हरएक पुत्री को जीती छोड़ो॥

२ दूसरा पर्ब्ब।

ग्रैार लावी के घराने के एक मनुष्य ने जाकर लावी की एक पुत्री ग्रहण किई॥ २। वुह स्त्री गर्भिणी हुई ग्रैार बेटा जनी ग्रैार उस ने उसे सुन्दर देख के तीन मास लों छिपा रक्खा॥ ३। ग्रैार जब ग्रागे को छिपा न सकी तो उस ने सरकंडों का एक टोकरा बनाया ग्रैार उस पर लासा ग्रैार राल लगाया ग्रैार उस बालक को उस में रक्खा ग्रैार उस ने उसे नदी के तीर पर झाऊ में रख दिया॥ ४। ग्रैार उस की बहिन दूर से खड़ी देखती थी कि उस का क्या होगा॥ ५। तब फ़िरऊन की

पुत्री स्नान करने को नदी पर उतरी और उस की सहेलियां नदी के तीर पर फिरती थीं और उस ने झाऊ में टोकरा देखकर अपनी सहेली को भेजा कि उसे लावे॥ ६। जब उस ने उसे खोला तो बालक को देखा और देखो कि बालक रोता है वुह उस पर दया करके बोली कि यह किसी इब्रानियों के बालकों में से है॥ ७। तब उस की बहिन ने फिरऊन की पुत्री को कहा कि मैं जाके इब्रानी स्त्रियों में से एक दाई तुझ पास ले आऊं जिसतें वुह तेरे लिये इस बालक को दूध पिलावे॥ ८। फिरऊन की पुत्री ने उसे कहा कि जा वुह कन्या गई और बालक की माता को बुलाया॥ ९। फिरऊन की पुत्री ने उसे कहा कि इस बालक को ले और मेरे लिये उसे दूध पिला और मैं तुझे महिनवारी दूंगी और उस स्त्री ने उस लड़के को लिया और दूध पिलाया॥ १०। और जब बालक बढ़ा वुह उसे फिरऊन की पुत्री पास लाई और वुह उस का पुत्र हुआ तब उस ने उस का नाम मूसा रक्खा इस कारण कि उस ने उसे पानी से निकाला॥ ११। और उन दिनों में यों हुआ कि जब मूसा सयाना हुआ वुह अपने भाइयों पास बाहर गया और उन के बोझों को देखा और अपने भाइयों में से एक इब्रानी को देखा कि मिस्री उसे मार रहा है॥ १२। फिर उस ने इधर उधर दृष्टि किई और देखा कि कोई नहीं तब उस ने उस मिस्री को मार डाला और बालू में उसे छिपा दिया॥ १३। जब वुह दूसरे दिन बाहर गया तो क्या देखता है कि दो इब्रानी आपुस में झगड़ रहे हैं तब उस ने उस अंधेरी को कहा कि तू अपने परोसी को क्यों मारता है॥ १४। उस ने कहा कि किस ने तुझे हम पर अध्यक्ष अथवा न्यायी ठहराया क्या तू चाहता है कि जिस रीति से तू ने मिस्री को मार डाला मुझे भी मार डाले तब मूसा डरा और समझा कि यह बात खुल गई॥ १५। जब फिरऊन ने यह बात सुनी तो चाहा कि मूसा को मार डाले परन्तु मूसा फिरऊन के आगे से भाग निकला और मदियान के देश में जा रहा और एक कूएं के निकट बैठ गया॥ १६। और मदियान के याजक की सात पुत्री थीं वे आईं और खींचने लगीं और कठरों को भरा कि अपने बाप के झुंड को पानी पिलावें॥ १७। तब गड़रियों ने उन्हें हांक दिया परन्तु मूसा ने खड़े

होके उन की सहाय किई और उन की झुंड को पिलाया॥ १८। और
जब वे अपने पिता रऊएल पास आईं उस ने पूछा कि आज तुम क्योंकर
सवेरे फिरीं॥ १९। वे बोलीं कि एक मिस्री ने हमें गड़रियों के हाथ
से बचाया और हमारे लिये जितना प्रयोजन था पानी भरा और झुंड
को पिलाया॥ २०। तब उस ने अपनी पुत्रियों से कहा कि वुह कहां
है उस मनुष्य को क्यों छोड़ा उसे बुलाओ कि रोटी खावे॥ २१। तब
मूसा उस जन के घर में रहने पर प्रसन्न हुआ और उस ने अपनी बेटी
सफ़ूरः मूसा को दिई॥ २२। वुह पुत्र जनी उस ने उस का नाम
गैरसुम रक्खा क्योंकि उस ने कहा कि मैं परदेश में परदेशी हूं॥ २३।
और कितने दिन के पीछे मिस्र का राजा मर गया और इसराएल के
वंश सेवा के कारण आह भरने लगे और रोये और उन का रोना जो उन
की सेवा के कारण से था ईश्वर लों पहुंचा॥ २४। ईश्वर ने उन का
कहरना सुना और ईश्वर ने अपनी बाचा को जो अबिरहाम और
इज़हाक और यअ़क़ूब के साथ किई थी स्मरण किया। २५। और
ईश्वर ने इसराएल के संतान पर दृष्टि किई और उन की दशा को
बूझा।

३ तीसरा पर्व्व।

और मूसा अपने ससुर यितरू की जो मदियान का याजक था झुंड
को चराता था तब वुह झुंड को बन की पछी ओर ले गया
और ईश्वर के पहाड़ होरेब के पास आया॥ २। तब परमेश्वर का
दूत एक झाड़ी के मध्य आग की लौर में उस पर प्रगट हुआ और
उस ने दृष्टि किई तो क्या देखता है कि झाड़ी आग से जलती है और
झाड़ी भस्म नहीं होती॥ ३। तब मूसा ने कहा कि मैं अब एक अलंग
फिरूंगा और यह महा दर्शन देखूंगा कि यह झाड़ी क्यों नहीं जल
जाती॥ ४। जब परमेश्वर ने देखा कि वुह देखने को एक अलंग फिरा
तो ईश्वर ने झाड़ी के मध्य में से उसे पुकारके कहा कि हे मूसा हे मूसा
तब वुह बोला मैं यहां हूं॥ ५। तब उस ने कहा कि इधर पास मत
आ अपने पाओं से जूता उतार क्योंकि यह स्थान जिस पर तू खड़ा है

पवित्र भूमि है॥ ६। और उस ने कहा कि मैं तेरे पिता का ईश्वर अवि-
रहाम का ईश्वर इज़हाक का ईश्वर और यअकूब का ईश्वर हूं तब मूसा
ने अपना मुंह छिपाया क्योंकि वुह ईश्वर पर दृष्टि करने से डरा॥ ७।
और परमेश्वर ने कहा कि मैं ने अपने लोगों के कष्ट को जो मिस्र में हैं
निश्चय देखा और उन का चिल्लाना जो करोड़ों के कारण से है सुना
क्योंकि मैं उन के दुखों को जानता हूं॥ ८। और मैं उतरा हूं कि
उन्हें मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊं और उस भूमि से निकालके अच्छी
बड़ी भूमि में जहां दूध और मधु बहता है कनआनियों और हित्तियों
और अमूरियों और फरज़ियों और हवियों और यबूसियों के स्थान में
लाऊं॥ ९। और अब देख इसराएल के संतान का चिल्लाना मुझ लों
आया और मैं ने वुह अंधेर जो मिस्री उन पर करते हैं देखा॥
१०। सो अब तू आ और मैं तुझे फ़िरऊन पास भेजूंगा और तू मेरे
लोग इसराएल के संतान को मिस्र से निकाल ला॥ ११। तब मूसा ने
ईश्वर से कहा कि मैं कौन हूं कि फ़िरऊन पास जाऊं और इसराएल के
संतानों को मिस्र से निकालूं॥ १२। वुह बोला निश्चय मैं तेरे संग
हूंगा और तुझे भेजने का यह चिह्न होगा कि जब तू उन लोगों को
मिस्र से निकाले तो तुम इस पहाड़ पर ईश्वर की सेवा करोगे॥ १३।
तब मूसा ने ईश्वर से कहा कि देख जब मैं इसराएल के संतान पास
पहुंचूं और उन्हें कहूं कि तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने मुझे तुम्हारे पास
भेजा है और वे मुझे कहें कि उस का क्या नाम है तो मैं उन्हें क्या
बताऊं॥ १४। ईश्वर ने मूसा को कहा कि मैं हूं जो हूं और उस ने
कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कहियो कि वुह जो है उस ने मुझे
तुम्हारे पास भेजा है॥ १५। फिर ईश्वर ने मूसा से कहा कि तू
इसराएल के संतान से यों कहियो कि परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर
अविरहाम के ईश्वर इज़हाक के ईश्वर और यअकूब के ईश्वर ने मुझे तुम्हारे
पास भेजा है सनातन लों मेरा यही नाम है और समस्त पीढ़ियों में
यही मेरा स्मरण है॥ १६। जा और इसराएलियों के प्राचीनों को
एकट्ठा कर और उन्हें कह कि परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर
अविरहाम और इज़हाक और यअकूब का ईश्वर यों कहता हुआ मुझे

दिखाई दिया कि मैं ने निश्चय तुम्हारी सुधि लिई और जो कुछ तुम
पर मिस्र में ऊआ सो देखा॥ १७। और मैं ने कहा है कि मैं तुम्हें
मिस्रियों के दुखों से निकालके कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों
और फरजियों और हवियों और यबूसियों के देश में जहां दूध और
मधु बहता है लाऊंगा॥ १८। और वे तेरा शब्द मानेंगे और तू और
इसराएलियों के प्राचीन मिस्र के राजा पास आओगे और उसे कहोगे
कि परमेश्वर इबरानियों के ईश्वर ने हम से भेंट किई और अब हम
तेरी बिनती करते हैं कि हमें बन में तीन दिन के मार्ग जाने दे जिसतें
हम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान करें॥ १९। और मैं
निश्चय जानता हूं कि मिस्र का राजा तुम्हें जाने न देगा हां बड़े बल
से भी नहीं॥ २०। और मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा और अपने समस्त
आश्चर्यों से जो मैं उन के बीच दिखाऊंगा मिस्रियों को मारूंगा उस के
पीछे वुह तुम्हें जाने देगा॥ २१। और मैं उन लोगों को मिस्रियों की
दृष्टि में अनुग्रह दूंगा और यों होगा कि जब तुम जाओगे तो छूछे न
जाओगे॥ २२। परन्तु हर एक स्त्री अपनी परोसिन से और उस से
जो उस के घर में रहती है रूपे के गहने और सोने के गहने और बस्त्र
मांग लेगी और तुम अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों को पहिनाओगे
और मिस्रियों को लूटोगे।

४ चौथा पर्ब्ब।

तब मूसा ने उत्तर दिया और कहा कि देख वे मेरी प्रतीति न करेंगे
और मेरा शब्द न मानेंगे क्योंकि वे कहेंगे कि परमेश्वर तुझ पर
प्रगट न ऊआ॥ २। तब परमेश्वर ने उसे कहा कि तेरे हाथ में क्या है
वुह बोला कि छड़ी॥ ३। फिर उस ने कहा कि उसे भूमि पर डाल दे
उस ने भूमि पर डाल दिया और वुह सर्प्प बन गई और मूसा उस के आगे
से भागा॥ ४। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ बढ़ा और उस
की पूंछ पकड़ ले तब उस ने हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया वुह उस
के हाथ में छड़ी हो गई॥ ५। जिसतें वे बिश्वास करें कि परमेश्वर उन
के पितरों का ईश्वर अबिरहाम का ईश्वर इज़हाक का ईश्वर और यअकूब

का ईश्वर तुझ पर प्रगट ज्ञआ॥ ६। फिर परमेश्वर ने उसे कहा कि तू अपना हाथ अपनी गोद में कर और उस ने अपना हाथ अपनी गोद में किया और जब उस ने उसे निकाला तो देखो कि उस का हाथ हिम के समान कोढ़ी था॥ ७। और उस ने कहा कि अपना हाथ फिर अपनी गोद में कर उस ने फिर अपने हाथ को अपनी गोद में किया और अपनी गोद से निकाला तो देखा कि जैसी उस की सारी देह थी वुह वैसा फिर हो गया॥ ८। और ऐसा होगा कि यदि वे तेरी प्रतीति न करें और पहिले आश्चर्य को न मानें तो वे दूसरे आश्चर्य के बिश्वासी होंगे॥ ९। और ऐसा होगा कि यदि वे दोनों आश्चर्यों पर बिश्वास न लावें और तेरे शब्द के श्रोता न हों तो तू नदी का जल लेके सूखी पर ढालियो और वुह जल जो तू नदी से निकालेगा सूखी पर लोहू हो जायगा॥ १०। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि हे मेरे प्रभु मैं सुबक्ता नहीं न तो आगे से और न जब से कि तू ने अपने दास से बात चीत किई परंतु मैं भारी मुंह और भारी जीभ का हूं॥ ११। तब ईश्वर ने उसे कहा कि मनुष्य के मुंह को किस ने बनाया और कौन गूंगा अथवा बहिरा अथवा दर्शी अथवा अंधा बनाता है क्या मैं परमेश्वर नहीं॥ १२। अब तू जा और मैं तेरे मुंह के साथ हूंगा और जो कुछ तुझे कहना है तुझे सिखाऊंगा॥ १३। फिर उस ने कहा कि हे परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं कि जिसे चाहे तू उसे भेज॥ १४। तब परमेश्वर का क्रोध मूसा पर भड़का और उस ने कहा कि क्या तेरा भाई हारून लावी नहीं है मैं जानता हूं कि वुह सुबक्ता है और देख कि वह भी तेरी भेंट को आता है और तुझे देखके अपने मन में हर्षित होगा॥ १५। और तू उसे कहेगा और उस के मुंह में बात डालेगा और मैं तेरे और उस के मुंह के संग हूंगा और जो कुछ तुम्हें करना है सो तुम्हें सिखाऊंगा॥ १६। और लोगों पर वुह तेरा बक्ता होगा और वुह तेरे मुंह की संती होगा और तू उस के लिये ईश्वर के स्थान होगा॥ १७। और यह छड़ी जिस्से तू आश्चर्य दिखावेगा अपने हाथ में रखियो।

१८। तब मूसा अपने ससुर यितरू के पास फिर आया और उसे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे छुट्टी दे कि मिस्र में अपने भाइयों

पास फिर जाऊं और देखूं कि वे अब लों जीते हैं कि नहीं यित्रू ने मूसा को कहा कि कुशल से जा॥ १९। तब परमेश्वर ने मदियान में मूसा को कहा कि मिस्र में फिर जा क्योंकि वे सब जो तेरे प्राण के गाहक थे सो मर गये॥ २०। तब मूसा ने अपनी पत्नी को और अपने पुत्रों को लिया और उन्हें गदहे पर बैठाया और मिस्र के देश में फिर आया और मूसा ने ईश्वर की छड़ी हाथ में लिई॥ २१। और परमेश्वर ने मूसा को कहा कि जब तू मिस्र में फिर जाय तो देख कि सब आश्चर्य जो मैं ने तेरे हाथ में रक्खे हैं फ़िरऊन के आगे दिखाइयो परंतु मैं उस के मन को कठोर करूंगा कि वुह उन लोगों को जाने न देगा॥ २२। तब फ़िरऊन को यों कहियो कि परमेश्वर ने यों कहा है कि इसराएल मेरा पुत्र मेरा पहिलौठा है॥ २३। सो मैं तुझे कहता हूं कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वुह मेरी सेवा करे और यदि तू उसे रोकेगा तो देख मैं तेरे पहिलौठे को मार डालूंगा॥

२४। और मार्ग के एक टिकाव में यों हुआ कि परमेश्वर उसे मिला और चाहा कि उसे मार डाले॥ २५। तब सफ़ूरः ने एक चोखा पत्थर उठाया और अपने बेटे की खलड़ी काट डाली और उसे उस के पाओं पर फेंका और कहा कि तू निश्चय मेरे लिये रक्तपातीपति है॥ २६। तब उस ने उसे छोड़ दिया और वुह बोली कि ख़तने के कारण तू रक्तपातीपति है॥

२७। और परमेश्वर ने हारून को कहा कि बन में जाके मूसा से मिल वुह गया और उसे ईश्वर के पहाड़ पर मिला और उसे चूमा॥ २८। और ईश्वर ने जो उसे भेजा था मूसा ने उस की सारी बातें और आश्चर्य जो उस ने उसे आज्ञा किई थी हारून से कह सुनाये॥ २९। तब मूसा और हारून गये और इसराएल के संतानों के प्राचीनों को एकट्ठा किया॥ ३०। और जो सारी बातें परमेश्वर ने मूसा को कही थीं हारून ने कहीं और लोगों के आगे प्रत्यक्ष आश्चर्य किये॥ ३१। तब लोग बिश्वास लाये और सुनके कि परमेश्वर ने इसराएल के संतान की सुधि लिई और उन के दुख पर दृष्टि किई झुके और दंडवत किई।

५ पांचवां पर्ब्ब।

और उस के पीछे मूसा और हारून ने जाके फ़िरऊन से कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे कि वे अरण्य में मेरे लिये पर्ब करें॥ २। तब फ़िरऊन ने कहा कि परमेश्वर कौन है कि मैं उस के शब्द को मानके इसराएल को जाने दूं मैं परमेश्वर को नहीं जानता और मैं इसराएल को जाने न दूंगा॥ ३। तब उन्हों ने कहा कि इबरानियों के ईश्वर ने हम से भेंट किई है हमें छुट्टी दीजिये कि हम तीन दिन के पथ अरण्य में जायें और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान करें ऐसा न हो कि वुह हमें मरी अथवा खड्ग से मारे॥ ४। तब मिस्र के राजा ने उन्हें कहा कि हे मूसा और हारून तुम लोगों को उन के कार्य से क्यों रोकते हो तुम अपने बोझों को जाओ॥ ५। और फ़िरऊन ने कहा कि देखो देश के लोग अब बहुत हैं और तुम उन्हें उन के बोझों से रोकते हो॥ ६। और उसी दिन फ़िरऊन ने लोगों के करोड़ों को और अपने अध्यक्षों को आज्ञा किई॥ ७। कि अब आगे की नाईं उन लोगों को ईंटें बनाने के लिये पुआल मत देओ वे जाके अपने लिये पुआल बटोरें॥ ८। और आगे की नाईं ईंटें उन से लिया करो उस में से कुछ मत घटाओ वे आलसी हैं इसी लिये वे रो रोके कहते हैं हमें जाने देओ कि हम अपने ईश्वर के लिये बलिदान चढ़ावें॥ ९। उन मनुष्यों का काम बढ़ाया जाय कि वे उस में परिश्रम करें और दृथा बातों की ओर मन न लगावें॥ १०। तब लोगों के करोड़े और उन के अध्यक्ष निकले और लोगों से यों कहा कि फ़िरऊन कहता है कि मैं तुम्हें पुआल न दूंगा॥ ११। तुम जाओ और जहां मिले तहां से पुआल लाओ तथापि तुम्हारा कार्य न घटे॥ १२। सो लोग मिस्र के सारे देश में छिन्न भिन्न हुए कि पुआल की संती खूंटी एकट्ठी करें॥ १३। और करोड़ों ने शीघ्रता करके कहा कि जैसा पुआल पाते हुए करते थे वैसा अपने प्रतिदिन के कार्य उसी दिन देओ॥ १४। और इसराएल के संतानों के प्रधान जिन्हें फ़िरऊन के करोड़ों ने उन पर करोड़े किये थे मारे गये और पूछे गये कि अपनी

ठहराई ऊई सेवा को जो ईंटें बनाने की है कल और आज आगे की नाईं क्यों नहीं पूरा किया॥ १५। तब इसराएल के संतानों के प्रधान फ़िरऊन के आगे आके चिल्लाये और कहा कि अपने दासों से ऐसा व्यवहार क्यों करता है॥ १६। तेरे दासों को पुआल नहीं मिला है और वे हमें कहते हैं कि ईंटें बनाओ और देख कि तेरे सेवकों ने मार खाई है परंतु अपराध तेरे लोगों का है॥ १७। उस ने कहा कि तुम आलसी हो आलसी हो इस लिये तुम कहते हो कि हमें जाने दे कि परमेश्वर के लिये बलिदान करें॥ १८। सो अब तुम जाओ काम करो पुआल तुम को न दिया जायगा तथापि तुम गिनती की ईंटें देओगे॥ १९। इस कहने से कि तुम अपनी प्रतिदिन की ईंटों में से न घटाओगे इसराएल के संतान के प्रधानों ने देखा कि उन की दुर्दशा है॥ २०। और वे फ़िरऊन पास से निकलके मूसा और हारून को जो मार्ग में खड़े थे मिले॥ २१। और उन्हें कहा कि परमेश्वर तुम्हें देखे और न्याय करे इस लिये कि तुम ने हमें फ़िरऊन की और उस के सेवकों की दृष्टि में ऐसा घिनोना किया है कि हमारे मारने के कारण उन के हाथ में खड्ग दिया है॥ २२। तब मूसा परमेश्वर पास फिर गया और कहा कि हे प्रभु तू ने उन लोगों को क्यों क्लेश में डाला और मुझे क्यों भेजा॥ २३। इस लिये कि जब से तेरे नाम से मैं फ़िरऊन को कहने आया उसने उन लोगों पर बुराई किई और तू ने अपने लोगों को न बचाया॥

६ छठवां पर्ब्ब।

तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अब तू देखेगा मैं फ़िरऊन से क्या करूंगा क्योंकि वुह बलवंत भुजा से उन्हें जाने देगा और बलवंत भुजा से उन्हें अपने देश से निकालेगा॥ २। और ईश्वर मूसा से कहके बोला कि मैं परमेश्वर हूं॥ ३। और मैं अबिरहाम और इज़हाक और यअ़क़ूब को सर्वशक्तिमान ईश्वर करके दिखाई दिया परंतु मेरा नाम यहोवा उन पर प्रगट न ऊआ॥ ४। और मैं ने उन के साथ अपना नियम भी बांधा है कि मैं उन को कनआन का देश जो उन के प्रवास का देश है जिस में वे परदेशी थे दूंगा॥ ५। और मैं ने इसराएल के संतानों का

कुढ़ना भी सुना है जिन्हें मिस्री बंधुआई में रखते हैं और अपने नियम को स्मरण किया है॥ ६। सो तू इसराएल के संतानों से कह कि मैं परमेश्वर हूं और मैं तुम्हें मिस्रियों के बोझों के तले से निकालूंगा और मैं तुम्हें उन की दासता से छुड़ाऊंगा और मैं अपना हाथ बढ़ाके बड़े बड़े न्याय से तुम्हें मोच्च दूंगा॥ ७। और तुम्हें अपने लोग बनाऊंगा और मैं तुम्हारा ईश्वर हूंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के तले से निकालता हूं॥ ८। और मैं तुम्हें उस देश में लाऊंगा जिस के विषय में मैं ने हाथ उठाया है कि उसे अबिरहाम और इज़हाक और यअकूब को दूं और मैं उसे तुम्हारा अधिकार करूंगा परमेश्वर मैं हूं॥ ९। मूसा ने इसराएल के संतानों को योंहीं कहा परंतु उन्हों ने मन के क्लेश के मारे और परिश्रम के कष्ट से मूसा की न सुनी॥ १०। फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा॥ ११। जा और मिस्र के राजा फ़िरऊन से कह कि इसराएल के संतानों को अपने देश से जाने दे॥ १२। तब मूसा ने परमेश्वर के आगे कहा कि देख इसराएल के संतानों ने तो मेरी बात नहीं मानी है तो मैं जो होंठ का अख़तनः हूं फ़िरऊन मेरी क्योंकर सुनेगा॥ १३। तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को कहा और उन्हें इसराएल के संतान और मिस्र के राजा फ़िरऊन के विषय में आज्ञा किई कि इसराएल के संतान को मिस्र के देश से बाहर ले जावें॥ १४। उन के पितरों के घराने के प्रधान ये थे इसराएल के पहिलौठे रूबिन के पुत्र हनूख़ और पल्लू और हज़रून और करमी ये ये रूबिन के घराने॥ १५। शमऊन के पुत्र जमुएल और यामत और ओहाद और जाख़ीन और ज़ोहर और शावल कनआनी स्त्री का पुत्र ये शमऊन के घराने॥ १६। और लावी के पुत्रों के नाम उन के पीढ़ियों के समान ये जीरशून और कुहास और मरारी और लावी के जीवन के बरस एक सो सैंतीस थे॥ १७। जीरशून के पुत्र उन के घराने के समान लबनी और शमई थे॥ १८। कुहास के पुत्र अमराम और इज़हार और हिबरून और अज़ीएल और कुहास के जीवन के बरस एक सो तैंतीस थे॥ १९। और मरारी के पुत्र महली और मुशी उन की पीढ़ीयों के समान लावी के घराने ये थे॥ २०। अमराम ने अपने

पिता की बहिन यकीबद से ब्याह किया वुह उस के लिये हारून और मूसा को जनी अमराम के जीवन के बरस एक सौ सैंतीस थे ॥

२१। इज़हार के पुत्र क़रह और नाफग़ और ज़खरी थे॥ २२। अज़िएल के पुत्र मीसाएल और इलज़ाफ़ान और सथरी॥ २३। और हारून ने नखशन की बहिन अमीनादाब की पुत्री अलीशबा को पत्नी किया उस्से नादाब और अबीहू और इलिअज़र और ऐतामार उत्पन्न हुए॥ २४। क़रह के पुत्र असीर और इलक़ाना और अबियासाफ़ ये करीहू के घराने थे॥ २५। हारून के पुत्र इलिअज़र ने पुतिएल की पुत्रियों में से पत्नी किई उस्से फीनीहाज़ उत्पन्न हुआ लावियों के बाप दादों के घरानों में ये प्रधान थे॥ २६। ये वे हारून और मूसा हैं जिन्हें परमेश्वर ने कहा कि इसराएल के संतानों को उन की सेना की रीति मिस्र के देश से निकाल लाओ॥ २७। ये वे हैं जिन्हों ने मिस्र के राजा फ़िरऊन से इसराएल के संतानों को मिस्र से निकाल ले जाने को कहा ये वे ही मूसा और हारून हैं॥

२८। और जिस दिन परमेश्वर ने मूसा को कहा॥ २९। कि मैं परमेश्वर हूं सब जो मैं तुझे कहता हूं मिस्र के राजा फ़िरऊन से कह॥ ३०। मूसा ने परमेश्वर से कहा कि देख मैं होंठ का अखतनः हूं फ़िरऊन मेरी क्योंकर सुनेगा॥

७ सातवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं ने तुझे फ़िरऊन के लिये ईश्वर बनाया और तेरा भाई हारून तेरा आगमज्ञानी होगा॥ २। सब कुछ जो मैं तुझे आज्ञा करूंगा अपने भाई हारून से कहियो और वुह फ़िरऊन से कहेगा कि इसराएल के संतानों को मिस्र के देश से जाने दे॥ ३। और मैं फ़िरऊन के मन को कठोर करूंगा और अपने लक्षण और आश्चर्य को मिस्र के देश में अधिक करूंगा॥ ४। परंतु फ़िरऊन तुम्हारी न सुनेगा जिसतें मैं अपना हाथ मिस्र पर धरूं और अपनी सेनाओं को जो मेरे लोग इसराएल के संतान हैं बड़े न्याय दिखाके देश से मिस्र के निकाल लाऊं॥ ५। और जब मैं मिस्र पर हाथ चलाऊंगा

और इसराएल के संतानों को उन में से निकालूंगा तब मिस्री जानेंगे
कि मैं परमेश्वर हूं॥ ६। जैसा परमेश्वर ने उन्हें कहा मूसा और हारून
ने वैसाही किया॥ ७। और जिस समय में उन दोनों ने फ़िरऊन से
बात चीत किई मूसा अस्सी बरस का और हारून तिरासी बरस का था।
८। और परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा॥ ९। कि जब
फ़िरऊन तुम्हें कहे कि अपने लिये आश्चर्य दिखाओ तो हारून को
कहियो कि अपनी छड़ी ले और फ़िरऊन के आगे डाल दे वुह एक सर्प्प
बन जायेगी॥ १०। तब मूसा और हारून फ़िरऊन कने गये और
जैसा परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा ही किया हारून ने
अपनी छड़ी फ़िरऊन के और उस के सेवकों के आगे डाल दिई और वुह
सर्प्प हो गई॥ ११। तब फ़िरऊन ने भी पण्डितों और टोन्हों को
बुलवाया सो मिस्र के टोन्हों ने भी टोना से ऐसा ही किया॥ १२।
क्योंकि उन में से हर एक ने अपनी अपनी छड़ी डाल दिईं और वे सर्प्प
हो गईं परंतु हारून की छड़ी उन की छड़ियों को निंगल गई॥ १३।
और फ़िरऊन का मन कठोर रहा जैसा परमेश्वर ने कहा था उस ने उन
की न सुनी॥ १४। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरऊन का अंतः
करण कठोर है वुह उन लोगों को जाने नहीं देता॥ १५। अब तू
बिहान फ़िरऊन के पास जा देख कि वुह जल की ओर जाता है तू नदी
के तट पर जिधर से वुह आवे उस के सन्मुख खड़ा हूजियो और वुह छड़ी
जो सर्प्प हुई थी अपने हाथ में लीजियो॥ १६। और उसे कहियो कि
परमेश्वर इबरानियों के ईश्वर ने मुझे तेरे पास भेजा है और कहा है कि
मेरे लोगों को जाने दे जिसतें वे अरण्य में मेरी सेवा करें और देख कि
तू ने अब लों न सुना॥ १७। परमेश्वर ने यों आज्ञा किई कि इस्से तू
जानेगा कि मैं परमेश्वर हूं देख कि मैं यह छड़ी जो मेरे हाथ में है नदी
के पानियों पर मारूंगा और वे लोहू हो जायेंगे॥ १८। और मछलियां
जो नदी में हैं मर जायेंगी और नदी बसाने लगेगी और मिस्र के लोग
नदी का पानी पीने को घिन करेंगे॥ १९। फिर परमेश्वर ने मूसा से
कहा कि हारून से कह कि अपनी छड़ी ले और अपना हाथ मिस्र के
पानियों पर और उन की धारों और उन की नदियों और उन के कुण्डों

और उन के सब पानियों पर चला कि वे लोहू बन जायें और मिस्र के सारे देश में हर एक पत्थर और काठ के पात्र में लोहू हो जाय॥ २०। जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा और हारून ने वैसाही किया मूसा ने छड़ी उठाई और नदी के पानी पर फ़िरऊन के और उस के सेवकों के साम्ने मारी और नदी के सब पानी लोहू हो गये॥ २१। और नदी की मछलियां मर गईं और नदी बसाने लगी और मिस्र के लोग नदी का पानी पी न सके और मिस्र के सारे देश में लोहू हुआ॥ २२। तब मिस्र के टोन्हों ने भी अपने टोना से ऐसाही किया और फ़िरऊन का मन कठोर रहा और जैसा कि परमेश्वर ने कहा था वैसा उस ने उन की न सुनी॥ २३। फ़िरऊन फिरा और अपने घर को गया और उस ने अपना मन इस बात पर भी न लगाया॥ २४। और सारे मिस्रियों ने नदी के आस पास खोदे कि उन से पानी पीवें क्योंकि वे नदी का पानी पी न सके॥ २५। और परमेश्वर के नदी को मारने से पीछे सात दिन बीत गये॥

८ आठवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरऊन पास जा और उसे यह कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे जिसतें वे मेरी सेवा करें॥ २। और यदि तू उन्हें जाने न देगा तो देख मैं तेरे समस्त सिवानों को मेंडुकों से मारूंगा॥ ३। और नदी बहुताई से मेंडुकों को उत्पन्न करेगी और वे निकलके तेरे घर में और तेरे शयन स्थान में और तेरे बिछौनों पर और तेरे सेवकों के घरों में और तेरी प्रजा पर और तेरी भट्ठियों में और तेरे आटे गूंधने के कठरों में जायेंगे॥ ४। और मेंडुक तुझ पर और तेरी प्रजा पर और तेरे समस्त सेवकों पर चढ़ेंगे॥ ५। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि छड़ी से अपना हाथ धारों पर और नदियों पर और कुण्डों पर बढ़ा और मेंडुकों को मिस्र के देश पर चढ़ा॥ ६। तब हारून ने मिस्र के पानियों पर हाथ बढ़ाया और मेंडुकों ने निकलके मिस्र के देश को ढांप लिया॥ ७। और टोन्हों ने भी अपने टोना से ऐसाही किया और मिस्र के देश पर मेंडुक चढ़ाये॥ ८। तब फ़िरऊन ने मूसा और हारून को

बुलाया और कहा कि परमेश्वर से बिनती करो कि मेंड़कों को मुझ से और मेरी प्रजा से दूर करे और मैं उन लोगों को जाने देऊंगा कि वे परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ावें॥ ९। और मूसा ने फ़िरऊन को कहा कि तुझे मुझ पर यह महत्व हो मैं तेरे और तेरे सेवकों के और तेरी प्रजा के लिये प्रार्थना करूं कि मेंड़क तुझ से और तेरे घरों से दूर किये जावें और नदीही में रहें॥ १०। वुह बोला कि कल तब उस ने कहा कि तेरे बचन के अनुसार जिसतें तू जाने कि परमेश्वर हमारे ईश्वर के तुल्य कोई नहीं॥ ११। और मेंड़क तुझ से और तेरे घरों से और तेरे दासों और तेरी प्रजा से जाते रहेंगे वे केवल नदी में रहेंगे॥ १२। फिर मूसा और हारून फ़िरऊन पास से निकल गये और मूसा ने परमेश्वर के आगे मेंड़कों के लिये जो उस ने फ़िरऊन के कारण भेजे थे प्रार्थना किई॥ १३। और परमेश्वर ने मूसा की प्रार्थना के अनुसार किया और मेंड़क घरों और गांओं और खेतों में से मर गये॥ १४। और उन्हों ने उन्हें जहां तहां एकट्ठे कर कर ढेर कर दिये और देश बसाने लगा॥ १५। परंतु जब फ़िरऊन ने देखा कि सावकाश मिला तो उस ने अपना मन कठोर किया और जैसा परमेश्वर ने कहा था वैसा उन की न सुनी॥ १६। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि अपनी छड़ी बढ़ा और देश की धूल पर मार जिसतें वुह मिस्र के समस्त देश में जुईं बन जायें॥ १७। उन्हों ने वैसा ही किया क्योंकि हारून ने अपना हाथ छड़ी के साथ बढ़ाया और पृथिवी की धूल को मारा और वही मनुष्य पर और पशु पर जुईं बन गईं समस्त धूल मिस्र के सारे देश में जुईं बन गईं। १८। और टोन्हों ने भी चाहा कि अपने टोनों से जुईं निकालें पर निकाल न सके सो मनुष्य पर और पशु पर जुईं थीं॥ १९। तब टोन्हों ने फ़िरऊन से कहा कि यह ईश्वर की अंगुली है और फ़िरऊन का मन कठोर रहा और जैसा परमेश्वर ने कहा था उस ने उन की न सुनी॥ २०। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि बिहान को उठ और फ़िरऊन के आगे खड़ा हो देख वुह जल पर आता है तू उसे कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी सेवा करें॥ २१। नहीं तो यदि तू मेरे लोग को जाने न देगा तो

देख मैं तुझ पर और तेरे सेवकों पर और तेरी प्रजा पर और तेरे घरों में झुंड के झुंड मच्छड़ भेजूंगा और मिस्रियों के घर में और समस्त भूमि में जहां जहां वे हैं उन झुंडों से भर जायेंगे॥ २२। और मैं उस दिन जश्न की भूमि को जिस में मेरे लोग बास करते हैं अलग करूंगा कि मच्छड़ों के झुंड वहां न होंगे जिसतें तू जाने कि पृथिवी के मध्य में परमेश्वर मैं हूं॥ २३। और मैं तेरे लोग में और अपने लोग में बिभाग करूंगा और यह आश्चर्य कल होगा॥ २४। तब परमेश्वर ने यांहीं किया और फिरऊन के घर में और उस के सेवकों के घरों में और मिस्र के समस्त देश में मच्छड़ों के झुंड आये और मच्छड़ों के मारे देश नाश हुआ।

२५। तब फिरऊन ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा कि जाओ और अपने ईश्वर के लिये देश में बलि चढ़ाओ॥ २६। मूसा ने कहा कि यों करना उचित नहीं क्योंकि हम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये वुह बलि चढ़ावेंगे जिस से मिस्री घिन रखते हैं क्या हम मिस्रियों के घिन का बलि उन की दृष्टि के आगे चढ़ावें क्या वे हमें पत्थरवाह न करेंगे॥ २७। सो हम बन में तीन दिन के पथ में जायेंगे और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये जैसा वुह हमें आज्ञा करेगा बलिदान करेंगे॥ २८। फिरऊन बोला कि मैं तुम्हें जाने दूंगा जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बन में बलि चढ़ाओ केवल बहुत दूर मत जाओ मेरे लिये बिनती करो॥ २९। मूसा बोला देख मैं तेरे पास से बाहर जाता हूं और मैं परमेश्वर के आगे बिनती करूंगा कि मच्छड़ों के झुंड फिरऊन से और उस के सेवकों से और उस की प्रजा से कल जाते रहें परन्तु ऐसा न हो कि फिरऊन फिर छल करके लोगों को परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाने को जाने न देवे॥ ३०। तब मूसा फिरऊन पास से बाहर गया और परमेश्वर से बिनती किई॥ ३१। परमेश्वर ने मूसा की बिनती के समान किया और उस ने मच्छड़ों के झुंडों को फिरऊन से और उस के सेवकों से और उस की प्रजा पर से दूर किया और एक भी न रहा॥ ३२। फिरऊन ने उस बार भी अपना मन कठोर किया और उन लोगों को जाने न दिया।

९ नवां पर्ब्ब।

तब परमेश्वर ने मूसा को कहा कि फ़िरऊन पास जा और उसे कह
कि परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों
को जाने दे जिसतें वे मेरी सेवा करें॥ २। क्योंकि यदि तू जाने न देगा
और अब की भी उन्हें रोकेगा॥ ३। तो देख परमेश्वर का हाथ तेरे खेत के
पशुन पर घोड़ों पर गदहों पर ऊंटों पर बैलों पर और भेड़ों पर अत्यंत
मरी पड़ेगी॥ ४। और परमेश्वर इसराएल के और मिस्रियों के पशुन में
विभाग करेगा और उन में से जो इसराएल के संतानों के हैं कोई न
मरेगा॥ ५। और परमेश्वर ने एक समय ठहराया और कहा कि पर-
मेश्वर यह कार्य देश में कल करेगा॥ ६। और दूसरे दिन परमेश्वर
ने वैसाही किया और मिस्र के समस्त पशु मर गये परंतु इसराएल के
संतानों के पशुन में से एक भी न मरा॥ ७। तब फ़िरऊन ने भेजा तो
क्या देखता है कि इसराएलियों के पशुन में से एक न मरा और फ़िरऊन
का मन कठोर रहा और उस ने लोगों को जाने न दिया॥ ८। और
परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा कि भट्ठी में से मुट्ठी भर भर के राख
लो और मूसा उसे फ़िरऊन के साम्ने आकाश की ओर उड़ा दे॥ ९।
और वुह मिस्र की समस्त भूमि में सूक्ष्म धूल हो जायगी और मिस्र के
समस्त देश में मनुष्यों पर और पशुन पर फोड़े और फफोले फूट
निकलेंगे॥ १०। और उन्हों ने भट्ठी की राख लिई और फ़िरऊन के
आगे खड़े हुए और मूसा ने उसे स्वर्ग की ओर उड़ाया और तुरंत
मनुष्यों पर और पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकले॥ ११।
और फोड़ों के मारे टोन्हे मूसा के आगे खड़े न रह सके क्योंकि टोन्हों
पर और सारे मिस्रियों पर फोड़े थे॥ १२। और परमेश्वर ने फ़िरऊन
के मन को कठोर कर दिया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा से कहा था
वैसा उस ने उन की बात न मानी॥ १३। फिर परमेश्वर ने मूसा से
कहा कि कल तड़के उठ और फ़िरऊन के आगे खड़ा हो और उसे कह
कि परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को
जाने दे कि वे मेरी सेवा करें॥ १४। इस लिये कि मैं अब की अपनी

सारी विपत्ति तेरे मन पर और तेरे सेवकों पर और तेरी प्रजा पर
डालूंगा कि तू जाने कि समस्त पृथिवी पर मेरे तुल्य कोई नहीं॥
१५। क्योंकि अब मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा जिसतें मैं तुझे और तेरी
प्रजा को मरी से मारूं और तू पृथिवी पर से नष्ट हो जायगा॥ १६।
और निश्चय मैं ने तुझे इस लिये उठाया है कि अपना पराक्रम तुझ पर
दिखाऊं और अपना नाम सारे संसार में प्रगट करूं॥ १७। अब
लों तू मेरे लोगों पर अहंकार करता जाता है और उन्हें जाने नहीं
देता॥ १८। देख मैं कल इसी समय में ऐसे बड़े बड़े ओले बरसाऊंगा
जो मिस्र में उस के आरंभ से अबलों न पड़े थे॥ १९। सो अभी भेज
और अपने पशु और जो कुछ कि खेत में तेरा है सभों को एकट्ठे कर
क्योंकि हर एक मनुष्य पर और पशु पर जो खेत में होगा और घर में
लाया न जायगा ओले पड़ेंगे और वे मर जायेंगे॥ २०। जो परमेश्वर
के बचन से डरता था फ़िरऊन के सेवकों में से हर एक ने अपने सेवकों को
और अपने पशुन को घर में भगाया॥ २१। और जिस ने परमेश्वर के
बचन को न माना अपने सेवकों और अपने पशुन को खेत में रहने
दिया॥ २२। और परमेश्वर ने मूसा को कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की
ओर बढ़ा जिसतें मिस्र के सारे देश में मनुष्य पर और पशु पर और
खेत के हर एक साग पात पर जो मिस्र की भूमि में है ओले पड़ें॥
२३। और मूसा ने अपनी छड़ी स्वर्ग की ओर बढ़ाई और परमेश्वर ने
गर्ज्जन और ओले भेजे और आग भूमि पर चलती थी और ईश्वर ने
मिस्र की भूमि पर ओले बरसाये॥ २४। सो मिस्र की भूमि पर
ओले थे और ओले से आग अति कष्टित मिली ऊई थी यहां लों कि मिस्र
के समस्त देश में जब से कि वुह देशी ऊआ था ऐसा न पड़ा था॥ २५।
और ओलों ने मिस्र के समस्त देश में क्या मनुष्य को और क्या पशु सब
को जो खेत में थे मारा और ओलों से खेत के सब साग पात मारे गये
और खेत के सारे वृक्ष टूट गये॥ २६। केवल जश्न की भूमि में जहां
इसराएल के संतान थे ओले न पड़े॥ २७। तब फ़िरऊन ने भेजा
और मूसा और हारून को बुलवाया और उन्हें कहा कि मैं ने इस बार
अपराध किया परमेश्वर न्यायी है मैं और मेरी प्रजा दुष्ट हैं॥ २८।

परमेश्वर से बिनती करो कि अब आगे को परमेश्वर का शब्द और ओला
न हो और मैं तुम्हें जाने दूंगा फिर आगे न रहोगे॥ २९। तब मूसा ने
उसे कहा कि मैं नगर से बाहर निकलते ऊए परमेश्वर के आगे अपने
हाथ उठाऊंगा और गर्ज्जना थम जायेगी और ओले भी न बरसेंगे जिसतें
तू जाने कि पृथिवी परमेश्वर ही की है॥ ३०। परंतु मैं जानता हूं कि
तू और तेरे सेवक अब भी परमेश्वर ईश्वर से न डरेंगे॥ ३१। सो ओलों
से सन और जव मारे पड़े क्योंकि जव की बालें आ चुकी थीं और सन
बढ़ चुका था॥ ३२। पर गोहूं और जोंधरी मारे न पड़े क्योंकि वे
बढ़े न थे॥ ३३। और मूसा ने फिरऊन पास से नगर के बाहर जाके
परमेश्वर के आगे हाथ फैलाये और गर्ज्जना और ओले थम गये और
भूमि पर वृष्टि थम गई॥ ३४। जब फिरऊन ने देखा कि मेंह और
ओले और गर्ज्जना थम गया तो फेर दुष्टता किई और उस ने और उस के
सेवकों ने अपना मन कठोर किया॥ ३५। और जैसा कि परमेश्वर ने
मूसा की ओर से कहा था वैसा फिरऊन का अंतःकरण कठोर रहा और
उस ने इसराएल के संतानों को जाने न दिया॥

१० दसवां पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फिरऊन पास जा क्योंकि मैं ने उस
के अंतःकरण को और उस के सेवकों के अंतःकरण को कठोर कर
दिया है जिसतें मैं अपने ये लक्षण उन के आगे प्रगट करूं॥ २।
और जिसतें तू अपने पुत्र और पौत्रों को मेरे लक्षण और जो जो मैं ने
मिस्र में किया बर्णन कर सुनावे जिसतें तुम जानो कि परमेश्वर मैं ही हूं॥
३। सो मूसा और हारून ने फिरऊन पास आके उसे कहा कि परमेश्वर
इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि कब लों तू मेरे आगे आप को
नम्र करने से अलग रहेगा मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी सेवा करें
४। क्योंकि यदि तू मेरे लोगों के जाने से नाह करेगा तो देख कल मैं
तेरे सिवानों में टिड्डी भेजूंगा॥ ५। और वे पृथिवी को ढांप लेंगी कि
कोई पृथिवी को देख न सकेगा और वे उस बचे ऊए को जो ओलों से तेरे
लिये बच रहे हैं खा जायेंगी और हर एक वृक्ष को जो तुम्हारे लिये खेत

में उगता है चट करेंगी॥ ६। और वे तेरे घर में और तेरे सेवकों के घर में और सारे मिस्रियों के घर में भर जायेंगी जिन्हें तेरे पितरों ने और तेरे पितरों के पितरों ने जिस दिन से कि वे पृथिवी पर आये आज लों नहीं देखा तब वुह फिरा और फिरऊन पास से निकल गया।

७। फिरऊन के सेवकों ने उसे कहा कि यह पुरुष कबलों हमारे लिये फंदा होगा उन लोगों को जाने दे जिसतें वे परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करें अबलाईं तू नहीं जानता कि मिस्र नष्ट ऊआ॥ ८। तब मूसा और हारून फिरऊन पास फिर पऊंचाये गये और उस ने उन्हें कहा कि जाओ परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करो परंतु वे कौन से लोग हैं जो जायेंगे॥ ९। मूसा बोला कि हम अपने तरुणों और अपने वृद्ध और अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों और अपने झुंडों और अपने बैलों समेत जायेंगे क्योंकि हमें आवश्यक है कि अपने ईश्वर का पर्व मानें॥ १०। तब उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर यों हीं तुम्हारे संग रहे जो मैं तुम्हें और तुम्हारे बालकों को जाने दूं तुम जानो क्योंकि बुराई तुम्हारे आगे है॥ ११। ऐसा नहीं अब पुरुषगण जाओ और परमेश्वर की सेवा करो क्योंकि तुम ने यही चाहा सो वे फिरऊन के आगे से निकाले गये।

१२। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ टिड्डी के लिये मिस्र की भूमि पर बढ़ा जिसतें वे मिस्र के देश पर आवें और देश के हर-एक साग पात जो ओलों से बच रहा है खा लेवें॥ १३। सो मूसा ने मिस्र के देश पर अपनी छड़ी बढ़ाई और परमेश्वर ने उस सारे दिन और सारी रात पुरबी पवन चलाई और जब बिहान ऊआ तो वुह पुरबी पवन टिड्डी लाई॥ १४। और टिड्डी मिस्र के सारे देश पर आईं और मिस्र के समस्त सिवाने पर उतरीं वे अति थीं कि उन के आगे ऐसी टिड्डी न आईं थीं न उन के पीछे फिर आवेंगी॥ १५। क्योंकि उन्हों ने समस्त पृथिवी को छा लिया यहां लों कि देश अंधियारा हो आया और उन्हों ने देश की हर एक हरियाली को और वृक्षों के फलों को जो ओलों से बच गये थे चाट लिया और मिस्र के समस्त देश में किसी वृक्ष पर अथवा खेत के साग पात में हरियाली न बची॥ १६। तब फिरऊन ने मूसा और हारून को बेग बुलाया कि मैं परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर का और तुम्हारा

अपराधी हूं॥ १७। सो अब मैं तुम्हारी बिनती करता हूं केवल इस
बार मेरा अपराध क्षमा करो और परमेश्वर अपने ईश्वर से बिनती करो
कि केवल इसी मरी को मुझ से दूर करे॥ १८। सो वुह फ़िरऊन के
पास से निकल गया और परमेश्वर से बिनती किई॥ १९। और पर-
मेश्वर ने बड़ी पछुवां भेजी जो टिड्डी को ले गई और उन्हें लाल समुद्र में
डाल दिया और मिस्र के समस्त सिवानें में एक टिड्डी न रही॥ २०
परंतु परमेश्वर ने फ़िरऊन के मन को कठोर कर दिया और उस ने
इसराएल के संतान को जाने न दिया॥ २१। फिर परमेश्वर ने मूसा
से कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ा जिसतें मिस्र के देश पर
अंधकार छा जाय ऐसा अंधकार जो टटोला जावे॥ २२। तब मूसा
ने अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ाया और तीन दिन लों सारे मिस्र के देश
में गाढ़ा अंधियारा रहा॥ २३। उन्हों ने एक दूसरे को न देखा कोई
तीन दिन भर के अपने स्थान से न उठा परंतु सारे इसराएल के संतान
के निवासें में उंजियाला था॥ २४। तब फ़िरऊन ने मूसा को बुलाया
और कहा कि जाओ परमेश्वर की सेवा करो केवल तुम्हारे झुंड और
तुम्हारे बैल यहीं रहें तुम्हारे बालक भी तुम्हारे संग जायें॥ २५। मूसा
ने कहा कि तुझे अवश्यक है कि हमें बलिदान और होम की भेंट देवे
जिसतें हम परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बलि चढ़ावें॥ २६। हमारे
पशु भी हमारे संग जायेंगे एक खुर छोड़ा न जायगा क्योंकि हमें अवश्यक
है कि उन में से परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा के लिये लेवें और जब लों
उधर न जावें हम नहीं जानते कि कौनसी बस्तुन से परमेश्वर की सेवा
करें॥ २७। परंतु परमेश्वर ने फ़िरऊन के अंतःकरण को कठोर कर
दिया और उस ने उन्हें जाने न दिया॥ २८। और फ़िरऊन ने उसे
कहा कि मेरे आगे से दूर हो आप को चौकस रख और फिर मेरा मुंह
मत देख क्योंकि जिस दिन मेरा मुंह देखेगा तू मर जायगा॥ २९।
तब मूसा ने कहा कि तू ने अच्छा कहा मैं फिर तेरा मुंह न देखूंगा॥

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं फ़िरऊन पर और मिस्रियों
पर एक मरी और लाऊंगा उस के पीछे वुह तुम्हें यहां से जाने
देगा और जब वुह तुम्हें जाने दे तो निश्चय तुम्हें सर्ब्बथा धकिआवेगा॥
२। सो अब लोगों के कानों कान कह कि हर एक पुरुष अपने
परोसी से और हर एक स्त्री अपनी परोसिन से रूपे के और सोने के
गहने मांग लेवे॥ ३। और परमेश्वर ने उन लोगों को मिस्रियों की
दृष्टि में प्रतिष्ठा दिई और मूसा भी मिस्र की भूमि में फ़िरऊन के सेवकों
की और लोगों की दृष्टि में महान था॥ ४। और मूसा ने कहा कि
परमेश्वर यों कहता है कि मैं आधी रात को निकल के मिस्र के बीचों-
बीच जाऊंगा॥ ५। और मिस्र के देश में सारे पहिलौंठे फ़िरऊन के
पहिलौंठे से लेके जो सिंहासन पर बैठा है उस सहेली के पहिलौंठे लों
जो चक्की के पीछे है और सारे पशु के पहिलौंठे मर जायेंगे॥ ६।
और मिस्र के समस्त देश में ऐसा बड़ा रोना पीटना होगा जैसा कि
कभी न हुआ था न कभी फिर होगा॥ ७। परन्तु सारे इसराएल के
संतान पर एक कुकर भी अपनी जीभ न हिलावेगा न तो मनुष्य पर
और न पशु पर जिसतें तुम जानो कि परमेश्वर क्योंकर मिस्रियों में
और इसराएलियों में बिभाग करता है॥ ८। और यह तेरे समस्त
सेवक मुझ पास आवेंगे और मुझे प्रणाम करके कहेंगे कि तू निकल जा
और सब लोग जो तेरे पश्चाद्गामी हैं जावें और उस के पीछे मैं निकल
जाऊंगा फिर वुह फ़िरऊन के पास से निपट रिसियाके निकल गया।
९। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जिसतें मेरे आश्चर्य मिस्र के
देश में बढ़ जायें फ़िरऊन तुम्हारी न सुनेगा॥ १०। और मूसा और
हारून ने ये सब आश्चर्य फ़िरऊन के आगे दिखाये और परमेश्वर ने
फ़िरऊन के मन को कठोर कर दिया और उस ने अपने देश से इसराएल
के संतान को जाने न दिया।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

तब परमेश्वर ने मिस्र के देश में मूसा और हारून को कहा॥ २।
कि यह मास तुम्हारे लिये मासों का आरंभ होगा और यह तुम्हारे
बरस का पहिला मास होगा॥ ३। इसराएलियों की सारी मंडली से
कहो कि इस मास के दसवें में हर एक पुरुष से अपने पितरों के घर के
समान एक मेम्ना घर पीछे मेम्ना अपने लिये लेवें॥ ४। और यदि वुह
घर मेम्ना के लिये छोटा हो तो वुह और उस का परोसी जो उस के
घर से लगा हुआ हो प्राणी की गिनती के समान लेखे में मेम्ना को ठह-
रावे॥ ५। तुम्हारा मेम्ना निष्खोट होवे पहिले बरस का नरख भेड़ों से
अथवा बकरियों से लीजियो॥ ६। और तुम उसे उसी मास के चौदहवें
दिन लों रख छोड़ियो और इसराएलियों की समस्त मंडली सांझ को
उसे मारें॥ ७। और वे लोहू को लेवें और उन घरों के जहां वे
खायेंगे द्वार की दोनों ओर और ऊपर की चौखट पर छापा देवें॥ ८।
और वे उसी रात को आग में भुना हुआ उस का मांस अखमीरी रोटी
कड़वी तरकारी के साथ खावें॥ ९। उसे कच्चा और पानी में उसन
के न खावें परंतु उस के सिर पांव और उदर समेत आग पर भून के
खावें॥ १०। और उस में से बिहान लों कुछ न रहने दीजियो यदि
कुछ उस में से बिहान लों रह जाय आग से जला दीजियो॥ ११।
और उसे यों खाइयो कटि बंधे हुए अपनी जूतियां पाओं में पहिने हुए
अपना लठ अपने हाथों में लिये हुए और उसे बेग खा लीजियो कि
परमेश्वर का फसह है॥ १२। इस लिये कि मैं आज रात मिस्र के देश में
होके निकलूंगा और सब पहिलौंठे मनुष्य के और पशुन के जो उस में
हैं मारूंगा और मिस्र के समस्त देवताओं पर न्याय करूंगा मैं परमेश्वर
हूं॥ १३। और वुह लोहू तुम्हारे घरों पर जहां जहां तुम हो तुम्हारे
लिये एक चिन्ह होगा और मैं वुह लोहू देख के तुम पर से बीत जाऊंगा
और जब मिस्र के देश को मारूंगा तब मरी तुम पर नाश करने को न
आवेगी॥ १४। और यह दिन तुम्हारे लिये एक स्मरण के लिये होगा
और तुम अपनी समस्त पीढ़ियों के लिये उसे परमेश्वर के लिये पर्ब्ब

रखियो तुम नित्य उस बिधि से पर्ब्ब रखियो॥ १५। सात दिन लों अख़मीरी रोटी खाइयो पहिले ही दिन ख़मीर अपने घरों से उठा डालियो इस लिये कि जो कोई पहिले दिन से लेके सातवें दिन लों ख़मीरी रोटी खायगा सो प्राणी इसराएल से काटा जायगा॥ १६। और पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा और सातवें दिन भी पवित्र बुलावा होगा उस में कोई कार्य न होगा केवल भोजन ही का कार्य हर एक मनुष्य से किया जाय॥ १७। और इस अख़मीरी रोटी के पर्ब्ब को मानोगे क्योंकि उसी दिन मैं तुम्हारी सेनाओं को मिस्र के देश से निकाल लाया हूं इस लिये इस दिन को अपनी पीढ़ियों में बिधि से नित्य मानो॥ १८। पहिले मास की चौदहवीं तिथि से सांझ को इक्कीसवीं तिथि लों अख़मीरी रोटी खाइयो॥ १९। सात दिन लों तुम्हारे घरों में ख़मीर न पाया जावे क्योंकि जो कोई ख़मीरी खायेगा वही प्राणी इसराएल की मंडली से काटा जायगा चाहे परदेशी हो चाहे देशी॥ २०। तुम कोई बस्तु ख़मीरी मत खाइयो तुम अपने समस्त बस्तियों में अख़मीरी रोटी खाइयो॥ २१। तब मूसा ने इसराएल के समस्त प्राचीनों को बुलाया और उन्हें कहा कि अपने अपने घर के समान एक एक मेम्ना लेओ और फसह का मेम्ना मारो॥ २२। और एक मुट्ठी जूफा लेओ और उसे उस लोहू में जो बासन में है बोर के द्वार की दोनों ओर उससे छापो और तुम में से कोई बिहान लों अपने घर के द्वार से बाहर न जावे॥ २३। क्योंकि परमेश्वर मिस्रियों को मारने के लिये आरपार जायगा और जब वुह पटाव पर और दोनों द्वार की ओर लोहू को देखे तब परमेश्वर द्वार पर से बीत जायगा और नाशक तुम्हारे घरों में जाने न देगा कि मारे॥ २४। और अपने और अपने संतानों के लिये बिधि करके इसे नित्य मानियो॥ २५। और ऐसा होगा कि जब तुम उस देश में जो परमेश्वर तुम्हें अपनी बाचा के समान देगा प्रवेश करोगे तब इस सेवा का पालन करियो॥ २६। और ऐसा होगा कि जब तुम्हारे संतान तुम से कहें कि इस सेवा का क्या अर्थ है॥ २७। तब कहियो कि यह परमेश्वर के फसह का बलिदान है जो मिस्र में इसराएल के संतानों के घरों पर से बीत गया

जब उस ने मिस्रियों को मारा और हमारे घरों को बचाया तब
लोगों ने सिर झुकाये और प्रणाम किये॥ २८। और इसराएल के
संतान चले गये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को आज्ञा
किई थी उन्हों ने वैसाही किया॥ २९। और यों हुआ कि परमेश्वर
ने आधी रात को मिस्र के देश में सारे पहिलौंठे को फ़िरऊन
के पहिलौंठे से लेके जो अपने सिंहासन पर बैठता था उस बंधुआ
के पहिलौंठे लों जो बंदीगृह में था पशुन के पहिलौंठों समेत
नाश किये॥ ३०। और रात को फ़िरऊन उठा वुह और उस के
सब सेवक और सारे मिस्री उठे और मिस्र में बड़ा बिलाप था क्योंकि
कोई घर न रहा जिस में एक न मरा॥ ३१। तब उस ने मूसा और
हारून को रात ही को बुलाया और कहा कि उठो मेरे लोगों में से
निकल जाओ तुम और इसराएल के संतान जाओ और अपने कहेके
समान परमेश्वर की सेवा करो॥ ३२। जैसा तुम ने कहा है अपना
झुंड और बैल भी लेओ और बिदा होओ और मेरे लिये भी आशीष
चाहो॥ ३३ और मिस्री उन लोगों पर शीघ्रता करते थे कि वे मिस्र के
देश से बेग निकाले जायँ क्योंकि उन्हों ने कहा कि हम सब मरे॥ ३४।
और उन लोगों ने आटा गूंधा हुआ उस से आगे कि वुह ख़मीर हो
गूंधने के कठरे समेत कपड़ों में बांध के अपने कांधों पर उठा लिया॥
३५। और इसराएल के संतानों ने मूसा के कहने के समान किया
और उन्हों ने मिस्रियों से रूपे के और सोने के गहने और बस्त्र मांग
लिये॥ ३६। और परमेश्वर ने उन लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में
ऐसा अनुग्रह दिया कि उन्हों ने उन्हें दिया और उन्हों ने मिस्रियों
को लूट लिया।

३७। और इसराएल के संतान रामसीस से सुक्कात को पांव पांव चल
निकले जो बालकों को छोड़ छः लाख पुरुष थे॥ ३८। और एक मिली
जुली मंडली भी और झुंड और बैल और बहुत पशु उन के साथ गये॥
३९। और उन्हों ने उस गूंधे हुए आटे के जो वे मिस्र से ले निकले थे
फुलके पकाये क्योंकि वुह ख़मीर न हुआ था इस कारण कि वे मिस्र से
खदेड़े गये थे और ठहर न सके और अपने लिये कुछ भोजन सिद्ध न किया।

४०। अब इसराएल के संतानों का निवास जो मिस्र में रहते थे चार सौ
तीस बरस था॥ ४१। और चार सौ तीस बरस के अंत में यों ज़ुआ कि
ठीक उसी दिन परमेश्वर की समस्त सेना मिस्र के देश से निकल गई॥
४२। उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाने के कारण यह रात परमेश्वर के
लिये पालन करने के योग्य है कि वह उन्हें मिस्र के देश से बाहर लाया
यह परमेश्वर की वुह रात है जिसे चाहिये कि इसराएल के संतान अपनी
पीढ़ी पीढ़ी पालन करें॥ ४३। फिर परमेश्वर ने मूसा और हारून को
कहा कि फसह की बिधि यह है कि उस्से कोई परदेशी न खावे॥
४४॥ परंतु हर एक का मोल लिया ज़ुआ दास जब तू ने उस का
खतनः किया तब वुह उस्से खावे॥ ४५। बिदेशी और बनिहार सेवक
उस्से न खावें॥ ४६। यह एक ही घर में खाया जावे उस का मांस कुछ
घर से बाहर न निकाला जावे और न उस की हड्डी तोड़ी जावे॥ ४७।
इसराएल के संतान की समस्त मंडली उसे पालन करें॥ ४८। और
जब कोई परदेशी तुझ्में बास करे और परमेश्वर के लिये फसह चाहे तो
उस के सब पुरुष खतनः करावें तब वुह समीप आवे और उसे पालन
करे और वुह ऐसा होगा जैसा कि देश में जन्म पाया हो क्योंकि कोई
अखतनः जन उस्से न खावे॥ ४९। देश के उत्पन्न ज़ुओं के और देशी
और बिदेशी के लिये एक ही व्यवस्था होगी॥ ५०। सारे इसराएल के
संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को आज्ञा किई
वैसा ही किया॥ ५१। और यों ज़ुआ कि ठीक उसी दिन परमेश्वर ने
इसराएल के संतानों को सेना सेना मिस्र के देश से बाहर निकाला॥

१३ तेरहवां पर्ब्ब॥

और परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ २। कि सब पहिलौंठे मेरे लिये
पवित्र कर जो कुछ कि इसराएल के संतानों में गर्भ को खोले क्या
मनुष्य और क्या पशु सो मेरा है॥ ३। और मूसा ने लोगों से कहा
कि इस दिन को जिस में तुम मिस्र से बाहर आये और बंधुआई के घर से
निकले स्मरण रखियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हें बाज़ बल से निकाल लाया
खमीरी रोटी खाई न जावे॥ ४। तुम अबिब के मास में आज के दिन

बाहर निकलं॥ ५। और यों होगा कि जब परमेश्वर तुझे कनआनियों
और हित्तियों और अमूरियों और हवियों और यबूसियों के देश में
लावे जिसे उस ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई कि तुम्हें देगा जहां
दूध और मधु बहता है तब तू इस मास में इस सेवा को पालन करियो॥
६। सात दिन लों तू अखमीरी रोटी खाइयो और सातवें दिन
परमेश्वर के लिये पर्ब्ब होगा॥ ७। अखमीरी रोटी सात दिन खाई जावे
और कोई खमीरी रोटी तुझ पास दिखाई न देवे और न खमीर तेरे
समस्त देश में तेरे आगे दिखाई देवे॥ ८। और तू उसी दिन अपने
पुत्र को समझाइयो कि यह इस कारण है कि जब हम मिस्र से बाहर
निकले तब परमेश्वर ने हम से यह किया॥ ९। और यह एक
लक्षण तुझ पास तेरे हाथ में और तेरी दोनों आंखों के बीच
स्मरण के लिये होगा जिसतें परमेश्वर की व्यवस्था तेरे मुंह में हो क्योंकि
परमेश्वर तुझे भुजा के बल से मिस्र से निकाल लाया॥ १०। इस लिये
तू यह बिधि इस रितु में बरस बरस पालन करियो॥ ११। और ऐसा
होगा कि जब परमेश्वर तुझे कनआनियों के देश में लावे जैसा उस ने
तुझ से और तेरे पितरों से किरिया खाई है और उसे तुझे देवे॥ १२
तू सभों को जो कि गर्भ को खोलता है और हर एक पशु के पहिलौंठे
नर परमेश्वर का॥ १३। और गधे के हर एक पहिलौंठे को एक
मेम्ना से छुड़ाइयो और यदि तू उसे न छुड़ावे तो उस का गला तोड़
दीजियो और अपने संतानों में से मनुष्य के सारे पहिलौंठों को छुड़ा
लीजियो॥ १४। और यों होगा कि जब तेरा पुत्र कल को तुझे पूछे
कि यह क्या है तब उसे कहियो कि परमेश्वर हमें अपनी भुजा के बल से
मिस्र से और बंधुआई के घर से निकाल लाया॥ १५। और यों हुआ
कि जब फ़िरऊन ने हमें कठिनता से छोड़ा कि परमेश्वर ने मिस्र के देश
में सब पहिलौंठे मनुष्य के पहिलौंठों से लेके पशुन के पहिलौंठों लों मार
डाला इस कारण मैं उन सब नरों को जो गर्भ खोलते हैं परमेश्वर के
लिये बलि करता हूं परंतु अपने संतानों के सब पहिलौंठों को छुड़ाता
हूं॥ १६। और यह तेरे हाथ में और तेरी आंखों के बीच में एक
चिह्नानी होगी क्योंकि परमेश्वर अपने बाहु बल से हमें मिस्र से निकाल

लाया॥ १७। और यों ऊआ कि जब फ़िरऊन ने उन लोगों को जाने
दिया तब ईश्वर उन्हें फ़िलिसतियों के देश के मार्ग से ले न गया यद्यपि वुह
समीप था क्योंकि ईश्वर ने कहा कि न हो कि लोग लड़ाई देख के
पछतावे और मिस्र को फिर जावें॥ १८। परंतु ईश्वर उन लोगों को
लाल समुद्र के बन की ओर ले गया और इसराएल के संतान पांती पांती
मिस्र के देश से निकले चले गये॥ १९। और मूसा ने यूसुफ़ की हड्डियां
साथ ले लिईं क्योंकि उस ने इसराएल के संतान को किरिया देके कहा
था कि निश्चय ईश्वर तुम से भेंट करेगा और तुम यहां से मेरी हड्डियां
अपने साथ लेजाइयो॥ २०। फिर वे सुक्कात से चल निकले और बन
के छोर पर छावनी किई॥ २१। और परमेश्वर उन के आगे आगे
दिन को मेघ के खंभे में होके उन्हें मार्ग बताता था और रात को आग के
खंभे में होके कि उन्हें प्रकाश करे जिसतें रात दिन चले जावें॥ २२।
वुह दिन में मेघ के खंभे को और रात में आग के खंभे को उन लोगों
के आगे से न उठाता था॥

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

और परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ २। कि इसराएल के संतान से
कह कि फिरें और मिजदाल के आगे फ़ीउलहीरात और समुद्र
के मध्य में छावनी करें तुम बअलसफ़ून के सन्मुख जो समुद्र के तीर पर
है डेरा करो॥ ३। क्योंकि फ़िरऊन इसराएल के संतानों के विषय में
कहेगा कि वे इस देश में बझे हैं और बन ने उन्हें छेंक लिया है॥ ४।
और मैं फ़िरऊन के मन को कठोर करूंगा कि वुह उन का पीछा करेगा
और मैं फ़िरऊन और उस की समस्त सेना पर प्रतिष्ठित होऊंगा जिसतें
मिस्री जानें कि परमेश्वर मैं हूं और उन्हों ने ऐसाही किया॥ ५। और
मिस्र के राजा को कहा गया कि लोग भाग गये तब फ़िरऊन का और
उस के सेवकों का मन लोगों के विरोध में फिर गया और वे बोले कि
हम ने यह क्या किया कि इसराएल को अपनी सेवा से जाने दिया॥
६। तब उस ने अपना रथ जोता और अपने लोग साथ लिये॥ ७।
और उस ने छः सौ चुने ऊए रथ और मिस्र के समस्त रथ साथ लिये

ग्रोर उन सभें पर प्रधान बैठाये॥ ८। ग्रोर परमेश्वर ने मिस्र के राजा
फ़िरऊन के मन को कठार कर दिया ग्रोर उस ने इसराएल के संतानें
का पीछा किया परंतु इसराएल के संतान हाथ बढ़ाये ऊए निकले॥
९। परंतु मिस्री उन का पीछा किये चले गये ग्रोर फ़िरऊन के सारे
घोड़ें ग्रोर रथें ग्रोर उस के घोड़ चढ़ें ग्रोर उस की सेना ने समुद्र
के तीर फ़ीउलहीरात के समीप बग्रलसफ़ून के सन्मुख उन्हें छावनी
खड़ी करते जा ही लिया॥ १०। ग्रोर जब फ़िरऊन पास ग्राया
इसराएल के संतानें ने ग्रांखें ऊपर किईं ग्रोर मिस्रियें के ग्रपने पीछे
ग्राते ऊए देखा ग्रोर ग्रत्यंत डर गये तब इसराएल के संतानें ने परमेश्वर
की दोहाई दिई॥ ११। ग्रोर मूसा से कहा कि क्या मिस्र में समाधें
न थीं कि तू हमें मरने के लिये वहां से बन में लाया तू ने हम से यह
क्या व्यवहार किया कि हमें मिस्र से निकाल लाया॥ १२। क्या यह
वही बात नहीं जो हम ने मिस्र में तुझ से कही थी कि हम से हाथ
उठा जिसतें हम मिस्रियें की सेवा करें कि हमारे लिये मिस्रियें की
सेवा करनी बन में मरने से ग्रच्छी थी॥ १३। तब मूसा ने लोगें के
कहा कि मत डरो खड़े रहो ग्रोर परमेश्वर की मोक्ष देखो जो ग्राज के
दिन वुह तुम्हें दिखावेगा क्योंकि उन मिस्रियें के जिन्हें तुम ग्राज
देखते हो उन्हें फिर कधी न देखोगे॥ १४। परमेश्वर तुम्हारे लिये
युद्ध करेगा ग्रोर तुम चुप चाप रहोगे॥ १५। तब परमेश्वर ने मूसा से
कहा कि तू क्यों मेरी ग्रोर बिलाप करता है इसराएल के संतान से कह
कि वे ग्रागे बढ़ें॥ १६। परंतु तू ग्रपनी छड़ी उठा ग्रोर समुद्र
पर ग्रपना हाथ बढ़ा ग्रोर उसे दो भाग कर ग्रोर इसराएल के संतान
समुद्र के बीचोंबीच में से सूखी भूमि पर होके चले जायेंगे॥ १७। ग्रोर
देख कि मैं मिस्रियें के ग्रंतःकरण के कठार कर दूंगा ग्रोर वे उन का
पीछा करेंगे ग्रोर मैं फ़िरऊन ग्रोर उस की सेना ग्रोर उस के रथ ग्रोर
उस के घोड़ चढ़ें पर ग्रपनी महिमा प्रगट करूंगा॥ १८। ग्रोर जब
मैं फ़िरऊन ग्रोर उस के रथें ग्रोर उस के घोड़ चढ़ें पर ग्रपनी महिमा
प्रगट करूंगा तब मिस्री जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥ १९। ग्रोर ईश्वर
का दूत जो इसराएल की छावनी के ग्रागे चला जाता था सो फिरा ग्रोर

उन के पीछे आ रहा और मेघ का खंभा उन के सन्मुख से गया और
उन के पीछे जा ठहरा ॥ २० । और मिस्रियों की छावनी और
इसराएल की छावनी के मध्य में आया और वुह एक अंधियारा मेघ
मिस्रियों के लिये हो गया परंतु रात को इसराएल को उंजियाला देता
था सो रात भर एक दूसरे के पास न आया । २१ । फिर मूसा ने समुद्र
पर हाथ बढ़ाया और परमेश्वर ने बड़ी प्रचंड पुरवी आंधी से रात भर
समुद्र को चलाया और समुद्र को सुखा दिया और पानी को दो भाग
किया ॥ २२ । और इसराएल के संतान समुद्र के बीच में से सूखे पर होके
चले गये और पानी की भीत उन के दहिने और बायें ओर थी ॥ २३ ।
और मिस्रियों ने पीछा किया और फिरऊन के सब घोड़े और उस के
रथ और उस के घोड़चढ़े उस का पीछा किये हुए समुद्र के मध्य लों
आये ॥ २४ । और यों हुआ कि परमेश्वर ने पिछले पहर उस आग
और मेघ के खंभे में से मिस्रियों की सेना पर दृष्टि किई और मिस्रियों
की सेना को घबराया ॥ २५ । और उन के रथों के पहियों को निकाल
डाला कि वे भारी से हांके जाते थे सो मिस्रियों ने कहा कि आओ
इसराएलियों के सन्मुख से भागें क्योंकि परमेश्वर उन के लिये मिस्रियों से
लड़ता है ॥ २६ । और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ
समुद्र पर बढ़ा जिसतें पानी मिस्रियों पर और उन के रथों और
उन के घोड़चढ़ों पर फिर आवे ॥ २७ । तब मूसा ने अपना
हाथ समुद्र पर बढ़ाया और समुद्र बिहान होते अपनी सामर्थ्य पर
फिरा और मिस्री उस के आगे भागे और परमेश्वर ने मिस्रियों को
समुद्र में नाश किया ॥ २८ । और पानी फिरा और रथों और
घोड़चढ़ों और फिरऊन की सब सेना को जो उन के पीछे समुद्र के
बीच में आई थी छिपा लिया और एक भी उन में से न बचा ॥ २९ ।
परंतु इसराएल के संतान सूखी से समुद्र के बीच में से चले गये और
पानी की भीत उन के बायें और दहिने थी ॥ ३० । सो परमेश्वर
ने उस दिन इसराएलियों को मिस्रियों के हाथ से यों बचाया
और इसराएलियों ने मिस्रियों की लोथें समुद्र के तीर पर देखीं ॥
३१ । और जो बड़ा कार्य कि परमेश्वर ने मिस्रियों पर प्रगट किया

इसराएलियों ने देखा और लोग परमेश्वर से डरे तब परमेश्वर पर और उस के दास मूसा पर बिश्वास लाये ।

१५ पंद्रहवां पर्ब्ब ।

तब मूसा और इसराएल के संतान ने परमेश्वर का धन्यबाद और स्तुति इस रीति से गाया और कहके बोला कि मैं परमेश्वर का भजन करूंगा क्योंकि उस ने बिभव से जय पाया उस ने घोड़े को उस के चढ़वैया समेत समुद्र में नष्ट किया॥ २। परमेश्वर मेरी सामर्थ्य और मेरा गान है और वुह मेरी मुक्ति हुआ वुह मेरा ईश्वर है मैं उस के लिये निवास सिद्ध करूंगा मेरे पिता का ईश्वर है मैं उस की महिमा करूंगा ॥ ३। परमेश्वर योद्धा है परमेश्वर उस का नाम है॥ ४। उस ने फिरऊन के रथ और उस की सेना को समुद्र में डाल दिया उस के चुने हुए प्रधान भी लाल समुद्र में डूबे हैं॥ ५। गहिरापों ने उन्हें ढांप लिया वे पत्थर के समान नीचे लों डूब गये॥ ६। हे परमेश्वर तेरा दहिना हाथ सामर्थ्य में महान हुआ हे परमेश्वर तेरे दहिने हाथ ने बैरियों को टुकड़ा टुकड़ा किया॥ ७। तू ने अपनी महिमा के महत्व से अपने बिरोधियों को उलट डाला तू ने अपने कोप को भेजके उन्हें खूंटी की नाईं भस्म किया॥ ८। और तेरे नथुनों के श्वास से जल एकट्ठे हुए और बाढ़ ढेर होके खड़े हो गये और समुद्र के अंतःकरण में गहिरापे जम गये॥ ९। बैरी बोला कि मैं पीछा करूंगा मैं जाही लेऊंगा मैं लूट को बांट लूंगा उन से मैं अपनी लालसा को संतुष्ट करूंगा मैं अपना खड्ग खींचूंगा मेरा हाथ उन को नाश करेगा॥ १०। तू ने अपनी पवन से फूंक मारी समुद्र ने उन्हें छिपा लिया वे सीसे की नाईं महा जलों में डूब गये॥ ११। हे परमेश्वर देवों में तेरे तुल्य कौन है पवित्रता में तेरे तुल्य तेजोमय कौन है तेरी नाईं आश्चर्य करते स्तुति में भयंकर॥ १२। तू ने अपना दहिना हाथ बढ़ाया पृथिवी उन्हें निगल गई॥ १३। तू ने अपनी दया से अपने छोड़ाये हुए लोगों की अगुआई किई तू ने अपनी सामर्थ्य से उन्हें अपने पवित्र निवास लों पहुंचाया॥ १४। लोग सुनके डरेंगे और फिलिसतीया के निवासियों को भय पकड़ेगा॥ १५।

तब अदूम के प्रधान बिस्मित होंगे मोअब के बलवंतों को थर्थराहट
पकड़ेगी कनआन के समस्त बासी गल जायेंगे॥ १६। उन पर भय और
डर पड़ेगा तेरी भुजा के महत्व से वे पत्थर की नाईं रह जायेंगे जब लों
तेरे लोग पार न जावें हे परमेश्वर जब लों तेरे लोग जिन्हें तू ने मोल
लिया पार न जावें॥ १७। तू उन्हें भीतर लावेगा और अपने अधिकार
के पहाड़ पर जो हे परमेश्वर तू ने अपने निवास के लिये बनाया है और
पवित्र स्थान हे परमेश्वर जिसे तेरे हाथों ने स्थापा है उस स्थान में तू उन्हें
बोयेगा॥ १८। परमेश्वर सनातन सनातन राज्य करेगा॥ १९।
क्योंकि फिरऊन का घोड़ा उस के रथों और उस के घोड़ चढ़े समेत समुद्र
में पैठा परंतु इसराएल के संतान समुद्र के मध्य से सूखे सूखे चले गये॥
२०। तब हारून की बहिन मिरयम आगमज्ञानिनी ने मृदंग अपने
हाथ में लिया और सब स्त्री ढोलों के साथ नाचती हुईं उस के पीछे
चलीं॥ २१। और मिरयम ने उन्हें उत्तर दिया कि परमेश्वर का गान
करो क्योंकि वुह अति महान है उस ने घोड़े को उस के चढ़वैये समेत
समुद्र में नष्ट किया॥ २२। और मूसा इसराएल को लाल समुद्र से ले
गया और वे सूर के बन में गये और वे तीन दिन लों बन में चले गये
और पानी न पाया॥ २३। और जब वे मारः में आये तब मारः का
पानी पी न सके क्योंकि वुह कड़ुआ था इस कारण वुह मारः कहाया॥
२४। तब लोग यह कहिके मूसा के बिरोध में कुड़कुड़ाने लगे कि हम
क्या पीयें॥ २५। उस ने परमेश्वर से दोहाई दिई और परमेश्वर ने
उसे एक पेड़ दिखाया जब उस ने उसे पानियों में डाला तब पानी मीठे
हो गये वहां उस ने उन के लिये एक बिधि और ब्यवस्था बनाई और
वहां उस ने उन्हें परखा॥ २६। और कहा कि यदि तू परमेश्वर अपने
ईश्वर का शब्द ध्यान से सुने और जो उस की दृष्टि में अच्छा है उसे
करे और उस की आज्ञा पर कान धरे और उस की बिधि को चेत में
रक्खे तो मैं उन रोगों को जो मिस्रियों पर लाया तुझ पर न देऊंगा
क्योंकि मैं वुह परमेश्वर हूं जो तुझे चंगा करता है॥ २७। वे फिर
ऐलीम को जहां जल के बारह कूएं और खजूर के सत्तर वृक्ष थे आये
और उन्हों ने जल के तीर डेरा किया॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

फिर उन्हों ने ऐलीम से यात्रा किई और इसराएल के संतानों की समस्त
मंडली मिस्र देश से निकलने के पीछे दूसरे मास की पंद्रहवीं
तिथि को सीना के बन में जो ऐलीम और सीना के मध्य में है पहुंची॥
२। और इसराएल के संतानों की सारी मंडली मूसा और हारून पर
बन में कुड़कुड़ाई॥ ३। और इसराएल के संतानों ने उन्हें कहा कि
हाय कि हम परमेश्वर के हाथ से मिस्र के देश में मारे जाते जब हम मांस
की हांड़ियों के लग बैठते थे और रोटी मन मनती खाते थे क्योंकि तुम
हमें इस बन में निकाल लाये हो जिसतें सारी मंडली को भूख से मार
डालो॥ ४। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं स्वर्ग से तुम्हारे
लिये भोजन बरसाऊंगा और लोग प्रति दिन बंधेज से जाके बटोरें
जिसतें मैं उन्हें जांचूं कि वे मेरी व्यवस्था पर चलेंगे अथवा नहीं॥ ५।
और यों होगा कि वे छठवें दिन और दिन से दूना बटोरें और भीतर
ला के पकावें॥ ६। सो मूसा और हारून ने इसराएल के समस्त संतानों
से कहा कि सांझ को तुम जानोगे कि परमेश्वर तुम्हें मिस्र देश से
बाहर लाया॥ ७। और बिहान को परमेश्वर का ऐश्वर्य देखोगे क्योंकि
परमेश्वर के बिरोध में वुह तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुनता है हम
कौन कि तुम हम पर कुड़कुड़ाते हो॥ ८। और मूसा ने कहा कि यों
होगा कि संध्याकाल को परमेश्वर तुम्हें खाने को मांस और बिहान
को रोटी मनमनती देगा क्योंकि तुम्हारा झुंझलाना जो तुम उस पर
झुंझलाते हो परमेश्वर सुनता है और हम क्या हैं तुम्हारी झुंझलाहट
हम पर नहीं परंतु परमेश्वर पर है॥ ९। फिर मूसा ने हारून से
कहा कि इसराएल के संतान की सारी मंडली से कह कि परमेश्वर के
समीप आओ क्योंकि उस ने तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुना॥ १०। और
यों हुआ कि जब हारून इसराएल के संतान की सारी मंडली को
कह रहा था तब उन्हों ने बन की ओर दृष्टि किई और क्या देखते हैं कि
परमेश्वर की महिमा मेघ में प्रगट हुई॥ ११। और परमेश्वर ने मूसा
से कहा॥ १२। कि मैं ने इसराएल के संतानों का कुड़कुड़ाना सुना

उन्हें कह कि तुम सांझ को मांस खाओगे और बिहान को रोटी से तृप्त होओगे और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ १३।
और यों हुआ कि सांझ को बटेरें ऊपर आईं और छावनी को ढांप लिया और बिहान को सेना के आस पास ओस पड़ी॥ १४। और जब ओस
पड़के ऊपर गई तब क्या देखते हैं कि बन में छोटी छोटी गोल वस्तु ऐसी सेत जैसे पाला का टुकड़ा पृथिवी पर पड़ा हो॥ १५। और इसराएल
के संतानों ने देख के आपुस में कहा कि यह क्या है क्योंकि उन्हों ने न जाना कि वुह क्या है तब मूसा ने उन्हें कहा कि यह रोटी जिसे परमेश्वर
ने तुम्हें खाने को दिया है॥ १६। यह वुह बात है जो परमेश्वर ने तुम्हें कही थी कि हर एक उस में से अपने खाने के समान मनुष्य पीछे एक
ऊमर एकट्ठे करे अपने प्राणियों की गिनती के समान उन के लिये जो उस के तंबू में हैं लेवे॥ १७। तब इसराएल के संतानों ने योंहीं किया
और किसी ने थोड़ा और किसी ने बहुत एकट्ठा किया॥ १८। और
जब हरएक ने अपने को दूसरे से तौला तो जिस ने बहुत एकट्ठा किया था कुछ अधिक न पाया और उस का जिस ने थोड़ा एकट्ठा किया था कुछ
न घटा हर एक ने उन में से अपने खाने भर बटोरा॥ १९। और मूसा
ने उन से कहा कि कोई उस में से बिहान लों रख न छोड़े॥ २०।
तथापि उन्हों ने मूसा की बात को न माना परंतु कितनों ने बिहान लों कुछ रख छोड़ा और उस में कीड़े पड़ गये और बसाने लगा मूसा उन
पर क्रुद्ध हुआ॥ २१। और उन में से हर एक ने हर बिहान को अपने खाने के समान बटोरा और जब सूर्य्य की घाम पड़ी तब वुह पिघल गया।

२२। और यों हुआ कि छठवें दिन उन्हों ने दूना भोजन बटोरा जन पीछे दो ऊमर और मंडली के समस्त अध्यक्षों ने आके मूसा को जनाया॥
२३। तब उस ने उन्हें कहा कि यह वही है जो परमेश्वर ने कहा है कि कल बिश्राम परमेश्वर का पवित्र बिश्राम है तुम्हें भूंजना हो सो भूंज लेओ और जो पकाना हो सो पका लेओ और जो बच रहे सो अपने लिये बिहान लों यत्न से रक्खो॥ २४। सो जैसा मूसा ने कहा था वैसा उन्हों ने बिहान लों रहने दिया वुह न सड़ा न उस में कीड़े पड़े॥ २५।

और मूसा ने कहा कि उसे आज खाओ क्योंकि आज परमेश्वर का विश्राम
है आज तुम खेत में न पाओगे॥ २६। छः दिन लों उसे बटोरो परंतु
सातवां दिन विश्राम है उस में कुछ न पाओगे॥ २७। और ऐसा हुआ
कि बहुतेरे उन लोगों में से सातवें दिन बटोरने को गये और कुछ न
पाया॥ २८। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि कब लों तुम मेरी
आज्ञाओं को और मेरी व्यवस्था को पालन न करोगे॥ २९। देखो
कि परमेश्वर ने तुम्हें विश्राम दिया इस लिये वह तुम्हें छठवें दिन में दो
दिन का भोजन देता है हर एक तुम्ह से अपने स्थान से बाहर न जावे॥
३०। तब लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया॥ ३१। और इसराएल
के घराने ने उस का नाम मन्न रक्खा और वुह धनिआं की नाईं स्वेत और
उस का खाद मधु सहित टिकिया की नाईं था॥ ३२। और मूसा ने
कहा कि यह वुह बात है जो परमेश्वर आज्ञा करता है कि उस्से एक ओमर
भर अपनी पीढ़ियों के लिये धर रक्खो जिसतें वे उस रोटी को देखें जो
मैं ने तुम्हें बन में खिलाई जब मैं तुम्हें मिस्र के देश से बाहर लाया॥ ३३।
और मूसा ने हारून को कहा कि एक हांड़ी ले और एक ओमर मन्न उस में
भर और परमेश्वर के आगे रख छोड़ जिसतें वुह तुम्हारी पीढ़ियों के
लिये धरा जाय॥ ३४। सो जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को कहा था
वैसा हारून ने साक्षी के आगे उसे धर रक्खा॥ ३५। और इसराएल के
संतान चालीस बरस जब लों कि वे बस्ती में न आये मन्न खाते रहे जब लों
कि वे कनआन की भूमि के सिवाने में न आये मन्न खाते रहे॥ ३६।
अब एक ओमर ईफा का दसवां भाग है।

१७ सत्तरहवां पर्ब्ब।

तब इसराएल के संतान की समस्त मंडली ने अपने यात्र में परमेश्वर
की आज्ञा के समान सीन के बन से यात्रा किई और रफीदीम में
डेरा किया वहां लोगों के पीने को पानी न था॥ २। सो लोग मूसा से
झगड़ने लगे और कहा कि हमें पानी दे कि पीयें मूसा ने उन्हें कहा कि
मुझ से क्यों झगड़ते हो परमेश्वर की क्यों परीक्षा करते हो॥ ३।
और लोग पानी के पियासे थे और मूसा पर कुड़कुड़ाये और कहा कि

तू हमें मिस्र से क्यों निकाल लाया कि हमें और हमारे लड़कों को और
हमारे पशुन को पियास से मारे॥ ४। और मूसा ने पुकारके परमेश्वर
से कहा कि मैं इन लोगों से क्या करूं वे मुझ पर पत्थरवाह करने को
सिद्ध हैं॥ ५। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों के आगे
जा और इसराएल के संतान के प्राचीनों को अपने साथ ले और
अपनी छड़ी जिस्से तू ने समुद्र को मारा था अपने हाथ में ले और जा॥
६। देख मैं वहां होरेब के पहाड़ पर तेरे आगे खड़ा हूंगा तू उस
पहाड़ को मारेगा और उस्से जल निकलेगा कि लोग पीयें सो मूसा ने
इसराएल के प्राचीनों की दृष्टि में यही किया॥ ७। और इसराएल के
संतानों के बिबाद के कारण और इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर की
परीक्षा करके कहा था कि परमेश्वर हमारे मध्य में है कि नहीं उस ने उस
स्थान का नाम मस्सः और मरीबः रक्खा॥ ८। तब अमालीक चढ़ आये
और रफीदीम में इसराएल से लड़े॥ ९। तब मूसा ने यहूसूअ से कहा
कि हमारे लिऐ लोग चुन और निकल कर अमालीक से लड़ कल मैं ईश्वर
की छड़ी अपने हाथ में लेके पहाड़ की चोटी पर खड़ा हूंगा॥ १०।
सो जैसा मूसा ने उसे कहा था यहूसूअ ने वैसा किया और अमालीक से
लड़ा मूसा और हारून और हूर पहाड़ की चोटी पर चढ़े॥ ११। और
यों हुआ कि जब मूसा अपना हाथ उठाता था तब इसराएल के संतान
जय पाते थे और जब हाथ लटका देता था तब अमालीक जय पाते थे॥
१२। परंतु मूसा के हाथ भारी हो रहे थे तब उन्हों ने एक पत्थर लेके उस
के नीचे रक्खा वुह उस पर बैठा और हारून और हूर एक एक ओर और
दूसरा दूसरी ओर उस के हाथों को संभाले रहे और उस के हाथ सूर्य्य के
अस्त लों स्थिर रहे॥ १३। और यहूसूअ ने अमालीक और उस की
सेना को खड्ग की धार से जीत लिया॥ १४। तब परमेश्वर ने मूसा से
कहा कि स्मरण के लिये पुस्तक में इसे लिख रख और यहूसूअ के कान में
कह दे कि मैं अमालीक का नाम और चिन्ह स्वर्ग के नीचे से मिटा देऊंगा॥
१५। और मूसा ने यज्ञबेदी बनाई और उस का नाम यह रक्खा कि पर-
मेश्वर मेरी धुजा॥ १६। क्योंकि उस ने कहा कि परमेश्वर ने किरिया खाके
कहा है कि मैं अमालीक के साथ पीढ़ी से पीढ़ी लों लड़ता रहूंगा॥

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

जब मिदयान के याजक मूसा के ससुर यितरू ने यह सब सुना कि ईश्वर
ने मूसा और अपने लोग इसराएल के लिये क्या किया कि परमेश्वर
इसराएल को मिस्र से बाहर लाया॥ २। तो यितरू मूसा के ससुरे ने सफूर:
मूसा की पत्नी को उस के पीछे कि उस ने उसे फिर भेजा था लिया॥ ३।
और उस के दो बेटों को जिन में से एक का नाम गैरसुम इस लिये कि
उस ने कहा कि मैं परदेश में परदेशी हूं॥ ४। और दूसरे का नाम
इलिअज़र क्योंकि मेरे पिता का ईश्वर मेरा सहायक है और उस ने
मुझे फ़िरऊन के खड्ग से बचाया है॥ ५। और मूसा का ससुर यितरू
उस के पुत्र और उस की पत्नी को लेके मूसा पास बन में आया जहां उस ने
ईश्वर के पहाड़ पर डेरा किया था॥ ६। और मूसा को कहला भेजा कि
मैं तेरा ससुर यितरू तेरी पत्नी और उस के पुत्र तुझ पास आये हैं॥ ७।
तब मूसा अपने ससुर की भेंट को निकला और उसे प्रणाम किया और
उसे चूमा और आपुस में एक ने दूसरे का क्षेम कुशल पूछा और तंबू में
आये॥ ८। और जो कुछ परमेश्वर ने इसराएल के लिये फ़िरऊन
और मिस्रियों से किया था और समस्त कष्ट जो मार्ग में उन पर पड़े थे
और कि परमेश्वर ने उन्हें क्योंकर बचाया मूसा ने अपने ससुर यितरू से
सब कुछ वर्णन किया॥ ९। और यितरू उन सब उपकारों के कारण
से जिसे परमेश्वर ने इसराएल पर किया जिन्हें उस ने मिस्रियों के हाथ से
बचाया आनंदित हुआ॥ १०। और यितरू बोला कि परमेश्वर धन्य
है जिस ने तुझे मिस्रियों के हाथ और फ़िरऊन के हाथ से बचाया
जिस ने लोगों को मिस्रियों के बश से छुड़ाया॥ ११। अब मैं जानता हूं
कि परमेश्वर सब देवों से बड़ा है क्योंकि वुह उन कामों में जो उन्हों ने
अहंकार से किये उन पर प्रबल हुआ॥ १२। और मूसा का ससुर
यितरू जलाने की भेंट और बलिदान ईश्वर के लिये लाया और हारून
और इसराएल के समस्त प्राचीन मूसा के ससुर के साथ रोटी खाने के
लिये ईश्वर के आगे आये।

१३। और दूसरे दिन यों हुआ कि मूसा लोगों का न्याय करने को

बैठा और लोग मूसा के आगे बिहान से सांझ लों खड़े रहे॥ १४। तब मूसा के ससुर ने सब कुछ जो उस ने लोगें से किया देख के कहा कि यह तू लोगें से क्या करता है तू क्यों आप अकेला बैठा है और सब लोग बिहान से सांझ लों तेरे आगे खड़े हैं॥ १५। तब मूसा ने अपने ससुर से कहा कि यह इस लिये है कि लोग ईश्वर को ढूंढ़ने के लिये मुझ पास आते हैं॥ १६। जब उन में कुछ बिबाद होता है तब वे मेरे पास आते हैं और मैं मनुष्य में और उस के संगी के मध्य में न्याय करता हूं और मैं उन्हें ईश्वर की बिधि और उस की व्यवस्था से चिता देता हूं॥ १७। तब मूसा के ससुर ने उसे कहा कि तू अच्छा काम नहीं करता॥ १८। तू निश्चय क्षीण हो जायगा और यह मंडली भी जो तेरे साथ है क्योंकि यह काम तुझ पर निपट भारी है यह तुझ से अकेले न बन पड़ेगा॥ १९। अब मेरा कहा मान मैं तुझे मंत्र देता हूं और ईश्वर तेरे साथ रहे तू उन लोगें के पास ईश्वर के आगे हो और ईश्वर के पास उन का वचन लाया कर॥ २०। और तू व्यवहार और व्यवस्था की बातें उन्हें सिखा और वुह मार्ग जिस पर चलना और वुह काम जिसे करना उन्हें उचित है उन्हें बता॥ २१। सो तू समस्त लोगें में से योग्य मनुष्य चुन ले जो ईश्वर से डरते हैं और सत्यबादी हों और लोभी न होवें और उन्हें सहस्रों और सैकड़ों और पचास पचास और दस दस पर आज्ञाकारी कर॥ २२। कि हर समय में उन लोगें का न्याय करें और ऐसा होगा कि वे हर एक बड़ा कार्य्य तुझ पास लावें पर हर एक छोटे कार्य्य का बिचार आप करें यों तेरे लिये सहज हो जायगा और वे बोझ उठाने में तेरे साथी रहेंगे॥ २३। यदि तू यह काम करे और ईश्वर तुझे आज्ञा करे तो तू सहि सकेगा और ये लोग भी अपने अपने स्थान पर कुशल से जायेंगे॥ २४। सो मूसा ने अपने ससुर का कहा सुना और जो उस ने कहा था उस ने सब किया और मूसा ने समस्त इसराएलियों में से योग्य मनुष्य चुने और उन्हें लोगें का प्रधान किया सहस्रों का प्रधान सैकड़ों का प्रधान पचास का प्रधान और दस दस का प्रधान॥ २५। वे हर समय में लोगें का न्याय करते थे कठिन कार्य मूसा पास लाते थे॥ परंतु हर एक छोटी बात आप ही चुका लेते थे॥

२६। फिर मूसा ने अपने ससुर को बिदा किया और वुह अपने देश
को चला गया॥

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

इसराएल के संतान मिस्र की भूमि से बाहर होके तीसरे मास
के उसी दिन सीना के बन में आये॥ २। क्योंकि वे रफीदीम से
चलके सीना में आये और बन में डेरा किया और इसराएल ने पहाड़
के आगे तंबू खड़ा किया॥
३। तब मूसा ईश्वर पास चढ़ गया और परमेश्वर ने उसे पहाड़ पर से
बुलाया और कहा कि तू यअकूब के घराने को यों कहियो और इसराएल
के संतानों से यों बोलियो॥ ४। कि तुम ने देखा कि मैं ने मिस्रियों से
क्या किया और तुम्हें गिद्ध के डैनों पर बैठा के अपने पास ले आया॥
५। और अब यदि मेरे शब्द को निश्चय मानोगे और मेरी बाचा का
पालन करोगे तो तुम समस्त लोगों से विशेष धनिक होओगे क्योंकि सारी
पृथिवी मेरी है॥ ६ और तुम मेरे लिये याजकमय राज्य और एक
पवित्र जाति होओगे ये बात तू इसराएल के संतान को कहियो॥
७। तब मूसा आया और लोगों के प्राचीनों को बुलाया और उन के
सन्मुख सारी बातें जो परमेश्वर ने उसे कही थीं कह सुनाईं॥ ८।
और सब लोगों ने एक साथ उत्तर देके कहा कि जो कुछ परमेश्वर ने कहा
है सो हम करेंगे और मूसा ने लोगों का उत्तर परमेश्वर कने ले पहुंचाया॥
९। और परमेश्वर ने मूसा से कहा देख मैं अंधियारे मेघ में तुझ पास
आता हूं कि जब मैं तुझ से बातें करूं लोग सुनें और सदा लों प्रतीति
करें और मूसा ने लोगों की बातें परमेश्वर से कहीं॥ १०। और
परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों पास जा और आज कल में उन्हें पवित्र
कर और उन के कपड़े धुलवा॥ ११। और तीसरे दिन सिद्ध रहें कि
परमेश्वर तीसरे दिन सारे लोगों की दृष्टि में सीना के पहाड़ पर उतरेगा॥
१२। और तू लोगों के लिये चारों ओर बाड़ा बांधियो और कहियो
कि आप से चौकस रहो पहाड़ पर न चढ़ो और उस के खूंट को
न छूओ जो कोई पहाड़ को छूयेगा सो निश्चय प्राण से मारा जायगा॥

१३। कोई हाथ उसे न छूये नहीं तो वुह निश्चय पत्यरवाह किया जायगा अथवा बाण से मारा जायगा चाहे मनुष्य हो चाहे पशु जीता न बचेगा जब तुरही शब्द अबर करे तो पहाड़ पर चढ़ ॥ १४। तब मूसा ने पहाड़ पर से उतर के लोगों को पवित्र किया उन्हों ने अपने कपड़े धोये ॥ १५। और उस ने लोगों से कहा कि तीसरे दिन सिद्ध रहो स्त्रियों से अलग रहियो ॥ १६। और यों हुआ कि तीसरे दिन बिहान को मेघ गर्जने लगे और बिजलियां चमकीं और पहाड़ पर काली घटा उमड़ी और तुरही का अति बड़ा शब्द हुआ यहां लों कि सब लोग छावनी में थर्थरा उठे ॥ १७। और मूसा लोगों को तंबू के भीतर से बाहर लाया कि ईश्वर से भेंट करावे और वे पहाड़ की नीचाई में जा खड़े हुए ॥ १८। और सीना का पहाड़ धूआं से भर गया क्योंकि परमेश्वर लौर में होके उस पर उतरा और भट्ठी का सा धूआं उस पर से उठा और सारा पहाड़ अति कांप गया ॥ १९। और जब तुरही का शब्द बढ़ता जाता था तब मूसा ने कहा और ईश्वर ने उसे शब्द से उत्तर दिया ॥ २०। और परमेश्वर सीना पहाड़ पर उतरा पहाड़ की चोटी पर और परमेश्वर ने पहाड़ की चोटी पर मूसा को बुलाया और मूसा चढ़ गया ॥ २१। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उतर जा और लोगों को चिता ऐसा न हो कि वे मेड़ तोड़ के परमेश्वर को देखने आवें और बहुतेरे उन में नाश हो जावें ॥ २२। और याजक भी जो परमेश्वर के पास आये हैं अपने को पवित्र करें कहीं ऐसा न हो कि परमेश्वर उन पर चपेट करे ॥ २३। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि लोग सीना पहाड़ पर आ नहीं सक्ते क्योंकि तू ने तो हमें चिता दिया है कि पहाड़ के आस पास बाड़ा बांधें और उसे पवित्र करें ॥ २४। तब परमेश्वर ने उसे कहा कि चल नीचे जा और तू हारून समेत फिर ऊपर आ परंतु याजक और लोग मेड़ तोड़ के परमेश्वर पास ऊपर न आवें न होवे कि वुह उन पर चपेट करे ॥ २५। सो मूसा लोगों के पास नीचे उतरा और उन से कहा।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

फिर ईश्वर ने ये सब बातें कहीं॥ २। कि तेरा परमेश्वर ईश्वर जो तुझे मिस्र की भूमि से और बंधुआई के घर से निकाल लाया मैं हूं॥ ३। मेरे सन्मुख तेरे लिये दूसरा ईश्वर न होगा॥ ४। अपने लिये खोद के किसी की मूर्ति और किसी वस्तु की प्रतिमा जो ऊपर स्वर्ग में अथवा नीचे पृथिवी में अथवा जल में जो पृथिवी के नीचे है मत बनाइयो॥ ५। तू उन को प्रणाम मत कीजियो न उन की सेवा कीजियो इस लिये कि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर ज्वलित ईश्वर हूं पितरों के अपराध का दंड उन के पुत्रों को जो मेरा बैर रखते हैं उन की तीसरी और चौथी पीढ़ी लों देवैया हूं॥ ६। और उन में से सहस्रों पर जो मुझे प्रेम करते हैं और मेरी आज्ञाओं को पालन करते हैं दया करता हूं।

७। परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारथ मत लीजियो क्योंकि परमेश्वर उसे जो उस का नाम अकारथ लेता है निष्पाप न ठहरावेगा॥ ८। बिश्राम के दिन को पवित्र रखने के लिये स्मरण कीजियो॥ ९। छः दिन लों अपने समस्त कार्य्य कीजियो॥ १०। परंतु सातवां दिन तेरे परमेश्वर ईश्वर का है उस में कोई कुछ कार्य न करे न तू न तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा दास न तेरी दासी न तेरे पशु न तेरा पाहुन जो तेरे फाटक के भीतर है॥ ११। इस लिये कि परमेश्वर ने छः दिन में स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और सब कुछ जो उन में है बनाया और सातवें दिन बिश्राम किया इस कारण परमेश्वर ने बिश्राम दिन को आशीसमय और पवित्र ठहराया॥ १२। अपने माता पिता को प्रतिष्ठा दे जिसतें तेरी बय जिसे तेरा परमेश्वर ईश्वर तुझे पृथिवी पर देता है अधिक होवे॥ १३। हत्या मत कर॥ १४। परस्त्री गमन मत कर॥ १५। चोरी मत कर॥ १६। अपने परोसी पर झूठी साक्षी मत दे॥ १७। अपने परोसी के घर का लालच मत कर अपने परोसी की स्त्री और उस के दास और उस की दासी और उस के बैल और उस के गदहे और किसी वस्तु का जो तेरे परोसी की है लालच मत कर॥ १८। और सब लोगों ने

गर्ज्जना और बिजली का चमकना और तुरही का शब्द और पर्बत से धूआं उठना देखा सब लोगों ने जब यह देखा तो हटे और दूर जा खड़े रहे॥ १९। तब उन्हों ने मूसा से कहा कि तूही हम से बोल और हम सुनें परंतु ईश्वर हम से न बोले न हो कि हम मर जायें॥ २०। तब मूसा ने लोगों से कहा कि भय मत करो इस लिये कि ईश्वर आया है कि तुम्हें परखे और जिसतें उस का भय तुम्हारे सन्मुख प्रगट होय जिसतें तुम पाप न करो॥ २१। तब लोग दूर खड़े रहे और मूसा उस गाढ़े अंधकार के समीप गया जहां ईश्वर था॥ २२। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कह कि तुम ने देखा मैं ने स्वर्ग से बातें किईं॥ २३। तुम मेरे सन्मुख चांदी का ईश्वर और सोने का ईश्वर मत बनाइयो॥ २४। तू मेरे लिये मट्टी की यज्ञबेदी बना और उस पर अपने होम की भेंट चढ़ा और कुशल की भेंट और बलिदान अपनी भेड़ों और अपने बैलों से और जिस स्थान में अपना नाम प्रगट करूंगा वहां मैं तुझ पास आऊंगा और तुझे आशीष दूंगा॥ २५। और यदि तू मेरे लिये पत्थर की यज्ञबेदी बनावे तो गढ़े हुए पत्थर से मत बना क्योंकि यदि तू उस पर हथियार उठावे तो उसे अपवित्र करेगा॥ २६। और तू मेरी यज्ञबेदी पर सीढ़ी से मत चढ़ जिसतें तेरा नंगापन उस पर प्रगट न होवे॥

२१ एकीसवां पर्ब्ब।

अब बिचार जिन्हें तू उन के आगे धरे ये हैं॥ २। कि यदि तू इब्री दास को मोल लेवे तो वुह छः बरस सेवा करे और सातवें में सेंत से छोड़ दिया जायगा॥ ३। यदि वुह अकेला आया तो अकेला जायगा यदि वुह बिवाहित था तो उस की पत्नी उस के साथ निकल जायगी॥ ४। यदि उस के स्वामी ने उसे पत्नी दीई है और उस की पत्नी उस्से बेटे और बेटियां जनी तो उस की पत्नी और उस के बालक उस के स्वामी के होंगे और वुह अकेला चला जायगा॥ ५। और यदि वुह दास खोल के कहे कि मैं अपने स्वामी और अपनी पत्नी को और अपने बालक को प्यार करता हूं मैं निर्बंध न हूंगा॥ ६। तो उस का स्वामी उसे न्यायियों के

पास ले जाय फिर उसे द्वार पर अथवा द्वार की चौखट पर लावे और सुतारी से उस का कान छेदे और वुह सदा उस की सेवा करे॥ ७। और यदि कोई मनुष्य अपनी कन्या को बेंचे जिसतें वुह दासी होय तो वुह दासों की नाईं बाहर न जा सकेगी॥ ८। यदि वुह अपने स्वामी की दृष्टि में जिस ने उस्से बिवाह किया बुरी होय तब वह उसे छुड़वावे परंतु उसे सामर्थ्य नहीं कि किसी अन्यदेशी के हाथ बेंच डाले क्योंकि उस ने उस्से छल किया॥ ९। और यदि वुह उसे अपने बेटे से ब्याह देवे तो वुह उस्से बेटियों का व्यवहार करे॥ १०। यदि वुह दूसरी को लेवे तो उस का अन्न और वस्त्र और बिवाह का व्यवहार न घटावे॥ ११। और यदि वुह ये तीन उस्से न करे तो वुह सेंत से बिना दाम दिये चली जाय॥ १२। जो कोई किसी मनुष्य को मारे और वह मर जाय वुह निश्चय घात किया जाय॥ १३। और यदि वुह मनुष्य घात में न लगा हो परंतु ईश्वर ने उस के हाथ में सौंप दिया हो तब मैं तुझे उस के भागने का स्थान बता दूंगा॥ १४। परंतु यदि कोई मनुष्य अपने परोसी पर साहस से चढ़ आवे जिसतें उसे छल से मारे तो उसे तू मेरी यज्ञबेदी से ले जिसतें वुह मारा जाय॥ १५। और वुह जो अपने पिता अथवा अपनी माता को मारे निश्चय घात किया जायगा॥ १६। और जो मनुष्य को चुरावे और उसे बेंच डाले अथवा वुह उस के हाथ में पाया जाय तो वुह निश्चय घात किया जायगा॥ १७। और वुह जो अपने पिता अथवा अपनी माता पर धिक्कार करे निश्चय घात किया जायगा॥ १८। और यदि दो मनुष्य झगड़ें और एक दूसरे को पत्थर से अथवा मुक्का मारे और वुह न मरे परंतु बिछौने पर पड़ा रहे॥ १९। तो यदि वुह उठ खड़ा होय और लाठी लेके चले तो जिस ने मारा सो निर्दोष ठहरेगा केवल उस के समय की घटी के लिये भर देवे और चंगा करावे॥ २०। और यदि कोई अपने दास अथवा दासी को छड़ी मारे और वुह मार खाती ऊई मर जाय तो निश्चय उस का पलटा लिया जाय॥ २१। तथापि यदि वुह एक दिन अथवा दो दिन जीवे तो उसे दंड न दिया जावे इस लिये कि वुह उस का धन है॥ २२। यदि लोग झगड़ें और गर्भिणी को दुःख पऊंचावें ऐसा कि उस का गर्भ-

पात हो जाय परंतु वुह आप न मरे तो जिस रीति का दंड उस का पति कहे दिया जावे और न्यायियों के बिचार के समान उसे डांड़ देवे॥ २३। और यदि उसे कुछ हानि होवे तो तू प्राण की संती प्राण दे॥ २४॥ आंख की संती आंख दांत की संती दांत हाथ की संती हाथ पांव की संती पांव॥ २५। जलाने की संती जलाना घाव की संती घाव चोट की संती चोट॥ २६। और यदि कोई अपने दास अथवा अपनी दासी की आंख में मारे कि उस की आंख फूट जाय तो उस की संती में उसे छोड़ देवे॥ २७। और यदि वुह अपने दास का अथवा अपनी दासी का दांत तोड़े तो दांत की संती उसे छोड़ देवे॥ २८। यदि मनुष्य को अथवा स्त्री को बैल सींग मारे ऐसा कि वुह मर जाय तो वुह बैल पत्थरवाह किया जाय और उस का मांस खाया न जावे परंतु बैल का स्वामी निर्दोष है॥ २९। परंतु यदि वुह बैल आगे से सींग मारने की बान रखता था और उस के स्वामी को संदेश दिया गया और उस ने उसे बांध न रक्खा परंतु उस ने पुरुष अथवा स्त्री को मार डाला तो बैल पत्थरवाह किया जाय और उस का स्वामी भी घात किया जाय॥ ३०। और यदि उस पर डांड़ ठहराया जाय तो अपने प्राण के प्रायश्चित्त के लिये जो उस के लिये ठहराया गया हो वुह देवे॥ ३१। चाहे उस ने सींग से पुत्र को मारा हो अथवा पुत्री को इसी आज्ञा के समान उस के लिये बिचार किया जावे॥ ३२। यदि किसी के दास अथवा दासी को बैल सींग मार बैठे तो वुह उस के स्वामी को तीस शेकल रूपा देवे और बैल पत्थरवाह किया जाय॥ ३३। और यदि कोई गड़हा खोले अथवा खोदे और उस का मुंह न ढांपे और बैल अथवा गधा उस में गिरे॥ ३४। तो उस गड़हे का स्वामी उसे भर देवे और उन के स्वामी को दाम दे और लोथ उसी की होगी॥ ३५। और यदि किसी का बैल दूसरे के बैल को सतावे ऐसा कि वुह मर जाय तो वुह जीते बैल को बेंचे और उस के दाम को आधो आध आपुस में बांट लेवें और वुह मरा हुआ भी उन में आधो आध बांटा जाय॥ ३६। और यदि जाना जाय कि उस बैल को सींग मार बैठने की बान थी और उस के स्वामी ने उसे बांध न रक्खा तो वुह निश्चय बैल की संती बैल देवे

श्रीर मरा हुश्रा उस का होगा॥ ३७। यदि कोई बैल अथवा भेड़
चुरावे श्रीर उसे मारे अथवा बेंचे ताे वुह एक बैल के पांच बैल श्रीर
एक भेड़ की चार भेड़ें देगा॥

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

यदि चोर सेंध मारते हुए पाया जाय श्रीर कोई उसे मार डाले ताे
उस की संती लोहू न बहाया जायगा॥ २। यदि सूर्य्य उदय होवे ताे
उस की संती लोहू बहाया जायगा उचित था कि वुह उसे भर देता यदि
वुह कंगाल हो ताे अपनी चोरी के लिये बेंचा जायगा॥ ३। यदि चोरी
की वस्तु निश्चय उस के हाथ में जीवत पाई जाय चाहे बैल हो चाहे
गदहा चाहे भेड़ बकरी ताे वुह दूना देगा॥ ४। यदि कोई खेत अथवा
दाख की बारी खिलावे श्रीर अपने पशु उस में छोड़े श्रीर दूसरे के खेत
में चरावे ताे अपना अच्छे से अच्छा खेत श्रीर सुंदर से सुंदर दाख की
बारी उस की संती देगा॥ ५। यदि आग फूट निकले श्रीर कांटाें में
जा लगे एसा कि अनाज के ढेर अथवा बढ़ा हुश्रा अन्न अथवा खेत
जल जाय ताे जिस ने आग बारी निश्चय वुह भर देगा॥ ६। यदि कोई
अपने परोसी काे रूपा अथवा पात्र रखने काे सैांपे श्रीर उस के घर से
चोरी जाय ताे जब वुह चोर हाथ लगे ताे वुह दूना भर देगा॥ ७। यदि
चोर पकड़ा न जाय ताे उस घर का स्वामी न्यायियाें के आगे लाया जाय
उस ने अपने परोसी की संपत्ति पर अपना हाथ बढ़ाया कि नहीं॥ ८।
समस्त प्रकार के अपराध में चाहे बैल चाहे गदहे चाहे भेड़ चाहे कपड़े
चाहे किसी खोई हुई वस्तु काे जिसे दूसरा अपनी कहता है दोनाें की बात
न्यायियाें के पास लाई जावे श्रीर जिस काे न्यायी दोषी ठहरावे वुह अपने
परोसी काे दूना देगा॥ ९। यदि कोई अपने परोसी पास गदहा
अथवा बैल अथवा भेड़ अथवा कोई पशु थाती रक्खे श्रीर वुह मर जाय
अथवा अंग भंग हो जाय अथवा हांका जाय श्रीर कोई न देखे॥ १०।
ताे उन दोनाें के मध्य में परमेश्वर की किरिया लिई जाय कि उस ने अपने
परोसी की संपत्ति में हाथ नहीं बढ़ाया श्रीर उस का स्वामी मान ले तब
वुह उसे भर न देगा॥ ११। श्रीर यदि वुह उस के पास से चुराया जाय

तो वुह उस के स्वामी को भर दे॥ १२। यदि वुह फाड़ा जाय तो वुह उसे साक्षी के लिये लावे और भर न देगा॥ १३। यदि कोई मनुष्य अपने परोसी से कुछ भाड़ा लेवे और वुह अंग भंग हो जाय अथवा मर जाय यदि स्वामी उस के साथ न था तो वुह निश्चय उसे भर देगा॥ १४। पर यदि उस का स्वामी उस के साथ था तो वुह भर न देगा यदि भाड़े का होय तो उस के भाड़े के लिये जायगा॥ १५। यदि कोई किसी कन्या को फुसलावे जिस की बचनदत्त न हुई और उस के संग शयन करे वुह अवश्य उसे दैजा देके पत्नी करे॥ १६। यदि उस का पिता उस के देने में सर्वथा नाह करे तो वुह कुआंरियों के दान के समान उसे दैजा देगा॥ १७। तू टोनहिन को जीने मत दे॥ १८। जो कोई पशु से रति करे निश्चय घात किया जायगा॥ १९। जो कोई परमेश्वर को छोड़ किसी देवता को बलिदान देगा वुह निश्चय नाश किया जायगा॥ २०। परदेशी को मत खिजा और उसे मत सता इस लिये कि तुम मिस्र के देश में परदेशी थे॥ २१। किसी बिधवा को अथवा अनाथ लड़के को दुःख मत देओ॥ २२। यदि तू उसे किसी रीति से दुःख देवे और वुह मेरी दोहाई देवे तो मैं निश्चय उन का रोना सुनूंगा॥ २३। और मेरा क्रोध भड़केगा मैं तुम्हें खड्ग से मारूंगा और तुम्हारी पत्नियां बिधवा और तुम्हारे संतान अनाथ हो जायेंगे॥ २४। यदि तू मेरे लोग में के कंगाल को कुछ ऋण देवे तो उस पर ब्याज ग्राहक के समान मत हो और उस्से ब्याज मत ले॥ २५। यदि तू अपने परोसी का बस्त्र बंधक रक्खे तो चाहिये कि तू सूर्य अस्त होते हुए उसे पहुंचा दे॥ २६। क्योंकि उस का केवल यही ओढ़ना है यह उस के देह का बस्त्र है जिस में वुह सो रहता है और यों होगा कि जब वुह मेरे आगे दोहाई देगा तब मैं उस की सुनूंगा क्योंकि मैं दयाल हूं॥ २७। तू अध्यक्षों को दुर्बचन मत कह और अपनी मंडली के प्राचीनों को स्राप मत दे॥ २८। अपने पक्के फलों की बढ़ती में से और अपने दाखरस में से देने में बिलंब मत कर अपने पुत्रों में से पहिलौठा मुझे दे॥ २९। ऐसा ही तू अपने बैलों से और भेड़ों से कीजियो सात दिन लों वुह अपनी मा के साथ रहे आठवें दिन उसे मुझे दीजियो॥ ३०। और तुम मेरे लिये पवित्र मनुष्य होओगे और जो

पशु खेत में फाड़ा जाय उस का मांस मत खाइयो तुम उसे कुत्तों को दीजियो॥

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

तू मिथ्या संदेश मत फैलाइयो अधर्म की साची में दुष्टों का साथी मत हो॥ २। बुराई में मंडली का पीछा मत कर और तू किसी झगड़े में बज्जतों की ओर होके अन्याय का उत्तर मत दीजियो॥ ३। और न कंगाल पर उस के व्यवहार पद में दृष्टि कीजियो॥ ४। यदि तू अपने बैरी के बैल अथवा गदहे को बहकते देखे तो उसे आवश्यक उस पास पज्जंचाइयो॥ ५। यदि तू अपने बैरी के गदहे को देखे कि बोझ के नीचे बैठ गया क्या उस की सहाय न करेगा तू निश्चय उस की सहाय कीजियो॥ ६। तू अपने कंगाल के व्यवहार पद में न्याय से अलग मत रहियो॥ ७। झूठी बात से दूर रहियो और निर्द्दोषियों और धर्मियों को घात मत कीजियो क्योंकि मैं दुष्टों को निर्दोष न ठहराऊंगा॥ ८। तू अकोर मत लेना क्योंकि अकोर दृष्टिमानों को अंधा करता है और धर्मियों के बचन को फेर देता है॥ ९। बिदेशियों पर भी अंधेर मत कीजियो क्योंकि तुम परदेशी के मन को जानते हो इस लिये कि तुम आप भी मिस्र के देश में परदेशी थे॥ १०। अपनी भूमि में छः बरस बो और उस के फल एकट्ठे कर॥ ११। पर सातवें में उसे चैन में पड़ी रहने दे जिसते तेरे लोग के कंगाल उसे खावें और जो उन से बचे खेत के पशु चरें इसी रीति अपनी द्राचा और जलपाई की बारी से व्यवहार कीजियो॥ १२। छः दिन अपना काम काज करना और सातवें दिन बिश्राम कीजियो जिसतें तेरे बैल और तेरे गदहे चैन करें और तेरी दासियों के बेटे और परदेशी सुस्तावें॥ १३। और सब बात में जो मैं ने तुझे आज्ञा दिई है चौकस रह उपरी देवता का नाम लों मत ले और तेरे मुंह से सुना न जाय॥ १४। तू बरस दिन में तीन बार मेरे लिये पर्ब मान तू अखमीरी रोटी का पर्ब्ब मान॥ १५। सात दिन लों जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है अखमीरी रोटी खा आबिब के मास में कोई मेरे आगे छूछा न आवे॥ १६। लवने का पर्ब तेरे परिश्रम के प्रथम ही फल जो

तू ने अपने खेत में बोये और एकट्ठा करने का पर्ब बरस के अंत जब तू खेत से अपने परिश्रम के फल एकट्ठा कर ले ॥ १७। तेरे समस्त पुरुष बरस बरस तीन बार परमेश्वर ईश्वर के सन्मुख होवें ॥ १८। तू मेरे बलिदान का लोहू जो मेरे लिये है खमीरी रोटी के साथ मत चढ़ा और मेरे बलि की चिकनाई बिहान लों रहने न पावे ॥ १९। अपनी भूमि के पहिले फलों के पहिले को परमेश्वर अपने ईश्वर के मंदिर में ला तू बकरी का मेम्ना उस की माता के दूध में मत सिझा ॥ २०। देख मैं एक दूत तेरे आगे भेजता हूं कि मार्ग में तेरी रक्षा करे और तुझे उस स्थान में जो मैं ने सिद्ध किया है ले जाय ॥ २१। उस्से चौकस रह और उस का कहा मान उसे मत खिजा क्योंकि वुह तुम्हारे अपराध को क्षमा न करेगा इस लिये कि मेरा नाम उस में है ॥ २२। यदि तू सच मुच उस का कहा माने और सब जो मैं कहता हूं माने तो मैं तेरे शत्रुन का शत्रु और तेरे बैरियों का बैरी हूंगा ॥ २३। क्योंकि मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा और तुझे अमूरियों और हित्तियों और फरजियों और कनआनियों और हव्वियों और यबूसियों के देश में लावेगा और मैं उन्हें नाश करूंगा ॥ २४। तू उन के देवतों के आगे मत झुकियो न उन की सेवा करना न उन के ऐसा कार्य करना परंतु उन्हें ढा दे और उन की मूर्त्तिन को तोड़ डाल ॥ २५। और परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करो और वुह तुम्हारे अन्न जल में आशीष देगा और मैं तुम्हारे बीच में से रोग उठा लूंगा ॥ २६। तेरे देश में कोई गर्भपात और बांझ न रहेगी मैं तेरे दिनों की गिनती को पूरा करूंगा ॥ २७। मैं अपने भय को तेरे आगे भेजूंगा मैं उन लोगों को जिन पास तू आवेगा नाश करूंगा और मैं ऐसा करूंगा कि तेरे बैरी तेरे आगे पीठ फेर देंगे ॥ २८। मैं तेरे आगे बर्य को भेजूंगा जो हव्वी और कनआनी और हित्ती को तेरे साम्ने से भगावेगी ॥ २९। मैं उन्हें एक ही बरस में तेरे आगे से दूर न करूंगा ऐसा न हो कि देश उजाड़ होवे और बन के पशु तेरे बिरोध में बढ़ जायें ॥ ३०। मैं उन्हें थोड़े थोड़े कर के तेरे आगे से दूर करूंगा यहां लों कि तू बढ़ जाय और देश का अधिकारी हो जाय ॥ ३१। लाल समुद्र से लेके फिलस्तियों के समुद्र लों और बन से नदी लों तेरा सिवाना बांधूंगा क्योंकि मैं देश के

वासियों को तेरे बश में करूंगा और तू उन्हें अपने आगे से निकाल
देगा॥ ३२। तू न उन से न उन के देवतों से बाचा बांधना॥ ३३।
वे तेरे देश में न रहेंगे ऐसा न हो कि वे मेरे बिरोध में तुझ से पाप
करावें क्योंकि यदि तू उन के देवों की सेवा करे तो यह तेरे लिये निश्चय
फंदा होगा॥

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

और उस ने मूसा से कहा कि परमेश्वर पास चढ़ आ तू और हारून
और नदब और अबिहू और इसराएल के संतान के प्राचीनों में
से सत्तर मनुष्य सहित और तुम दूर से दण्डवत करो॥ २। और मूसा
अकेला परमेश्वर के पास जायगा पर वे पास न आवें और लोग उस के
साथ न चढ़ जायें।

३। और मूसा ने आके परमेश्वर की सारी बातें और न्याय लोगों से
कहे और सारे लोगों ने एक शब्द से उत्तर देके कहा कि सारी बातें जो
परमेश्वर ने कहीं हैं हम करेंगे॥ ४। और मूसा ने परमेश्वर की सारी
बातें लिखीं और बिहान को तड़के उठा और पहाड़ के नीचे एक बेदी
बनाई और इसराएल की बारह गोष्ठी के समान बारह खंभे खड़े किये॥
५। और उस ने इसराएल के संतानों के तरुण मनुष्यों को भेजा और
उन्हों ने होम का और कुशल का बलिदान बैलों से परमेश्वर के लिये
चढ़ाया॥ ६। और मूसा ने आधा लोहू लेके पात्रों में रक्खा और
आधा रुधिर बेदी पर छिड़का॥ ७। फिर उस ने नियम की पत्री
लिई और लोगों को पढ़ सुनाई वे बोले कि सब कुछ जो परमेश्वर ने
कहा है हम करेंगे और अधीन रहेंगे॥ ८। मूसा ने उस लोहू को
लेके लोगों पर छिड़का और कहा कि यह लोहू उस नियम का है जिसे
परमेश्वर ने उन बातों के कारण तुम्हारे साथ किया है॥ ९। तब मूसा
और हारून और नदब और अबिहू और इसराएल के सत्तर प्राचीन
ऊपर गये॥ १०। और उन्हों ने इसराएल के ईश्वर को देखा
और उस के चरण के नीचे जैसे नीलमणि की गच के कार्य स्वर्ग की
आकृति की नाईं थे॥ ११। और इसराएल के संतानों के अध्यक्षों

पर उस ने अपना हाथ न रक्खा और उन्हों ने ईश्वर को देखा और
खाया पीया भी।
१२। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि पहाड़ पर मुझ पास आ
और वहां रह और मैं तुझे पत्थर की पटियों में ब्यवस्था और आज्ञा
जो मैं ने लिखी है दूंगा जिसतें तू उन्हें सिखावे॥ १३। और मूसा
और उस का सेवक यहूसूअ उठे और ईश्वर के पहाड़ के ऊपर गये॥
१४। और उस ने प्राचीनों से कहा कि हमारे लिये यहां ठहरो जब लों
तुम पास हम फिर न आवें और देखो कि हारून और हूर तुम्हारे साथ
हैं यदि किसी को कुछ काम होवे तो उन पास जाय॥ १५। तब मूसा
पहाड़ के ऊपर गया और एक मेघ ने पहाड़ को ढांप लिया॥ १६।
और परमेश्वर का बिभव सीना के पहाड़ पर ठहरा और मेघ उसे छः
दिन लों ढांपे रहा और सातवें दिन उस ने मेघ के मध्य में से मूसा को
बुलाया॥ १७। और परमेश्वर का बिभव इसराएल की दृष्टि में
पहाड़ के ऊपर धधकती हुई आग की नाईं देख पड़ता था॥ १८।
और मूसा मेघ के मध्य में चला गया और पहाड़ पर चढ़ गया और
मूसा पहाड़ पर चालीस दिन रात रहा।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

और परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ २। कि इसराएल के संतान से
कह कि वे मेरे लिये भेंट लेवें हर एक से जो अपनी इच्छा और
अपने मन से मुझे देवे तुम मेरी भेंट ले लीजियो॥ ३। और भेंट जो
तुम उन से लेओगे सो ये हैं सोना रूपा और पीतल॥ ४। नीला और
बैंजनी और लाल और झीना कपड़ा और बकरी के रोम॥ ५। और
मेढ़ों का रंगा हुआ लाल चमड़ा और नील बर्ण और शमशाद की
लकड़ी॥ ६। और दीपक के लिये तेल और लगाने के तेल के लिये
और धूप के लिये सुगंध द्रब्य॥ ७। और सूर्यकांत मणि और पटु का
और चपरास पर जड़ने के लिये मणि॥ ८। और वे मेरे लिये एक
पवित्र स्थान बनावें और मैं उन के मध्य में बास करूंगा॥ ९। तंबू
और उस के समस्त पात्रों को जैसा मैं तुझे दिखाऊं वैसा ही बनाइयो॥

१०। और शमशाद की लकड़ी की एक मंजूषा बनावें जिस की लंबाई
अढ़ाई हाथ और चैाड़ाई डेढ़ हाथ और ऊंचाई डेढ़ हाथ होवे॥
११। और तू उस के भीतर और बाहर निर्मल सोना मढ़िया और
उस के ऊपर आस पास सोने के कलस बनाइयो॥ १२। और उस के
लिये सोने के चार कड़े ढालके उस के चारों कोनों पर दो कड़े एक
अलंग दो कड़े दूसरी अलंग लगाइयो॥ १३। और शमशाद की लकड़ी
के बहंगर बनाइयो और उन पर सोना मढ़िया॥ १४। और उस
मंजूषा के अलंग अलंग के कड़े में उन बहंगरों को डाल दीजियो जिसतें
उन से मंजूषा उठाई जाय॥ १५। मंजूषा के कड़ों में बहंगर डाले
जायें वे उस्से अलग न हों॥ १६। और तू उस साक्षी को जो मैं तुझे
देऊंगा उस मंजूषा में रखियो॥ १७। और तू निर्मल सोने का दया
का एक आसन बनाइयो जिस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चैाड़ाई डेढ़
हाथ होवे॥ १८। और पीटे ज़ए सोने के दो करोबी उस दया के
आसन के दोनों खूंटों में बनाइयो॥ १९। एक करोबी एक में और
दूसरा दूसरे खूंट में दया के आसन में से दो करोबी उस के दोनों खूंट में
बनाइयो॥ २०। और वे करोबी पर फैलाये ज़ए हों ऐसे कि दया का
आसन उन के पंखों के नीचे ढंप जाय और उन के मुंह आम्ने साम्ने दया
के आसन की ओर होवें॥ २१। और तू उस दया के आसन को उस
मंजूषा के ऊपर रखियो और वुह साक्षी जो मैं तुझे देऊं उस मंजूषा में
रखियो॥ २२। वहां मैं तुझ से भेंट करूंगा और मैं दया के आसन
पर से दोनों करोबियों के मध्य से जो साक्षी की मंजूषा के ऊपर होंगे
उन सब बस्तुन के कारण जो मैं इसराएल के संतानों के लिये तुझे आज्ञा
करूंगा तुझ से बातचीत करूंगा।

२३। और तू शमशाद की लकड़ी का दो हाथ लंबा और एक हाथ
चैाड़ा और डेढ़ हाथ ऊंचा मंच बनाइयो॥ २४। और उसे निर्मल
सोने से मढ़िया और उस पर चारों ओर सोने का एक कलस बनाइयो॥
२५। और उस के लिये चार अंगुल झालर चारों ओर बनाइयो और
उस झालर के चारों ओर सोने के मुकुट बनाइयो॥ २६। और उस
के लिये सोने के चार कड़े बनाइयो और उस के चार पायों के चार कोनों

में लगाइयो॥ २७। झालर के आगे कड़े वहंगर के कारण हों कि मंच उठाया जाय॥ २८। और तू वहंगर शमशाद की लकड़ी का बनाना और उन्हें सोने से मढ़ना कि मंच उन से उठाया जाय॥ २९। और उस के पात्रों और करछुल और ढकने और उंडेलने के कटोरे निर्मल सोने से बनाइयो॥ ३०। और मंच पर भेंट की रोटियां मेरे सन्मुख सदा रखियो॥ ३१। और तू दीपक का एक झाड़ निर्मल सोने का बना पीटे हुए कार्य का झाड़ बने और उस की डंडी और उस की डालियां और उस की कली और उस के फल और उस के फूल एकही के होवें॥ ३२। और छः डालियां उस की अलंगों से निकलें एक अलंग से तीन दूसरी अलंग से तीन हों॥ ३३। और चाहिये कि तीन कली बदामी एक डाली में और फूल फल के साथ हों और उसी रीति से तीन कली बदामी दूसरी डाली में अपने फूल फल के साथ हों इसी रीति से छः डालियों में जो दीअट से निकली हुई हों॥ ३४। और दीअट में चाहिये कि चार कली बदामी फूल फल के साथ हों॥ ३५। और एक एक कली उस की दो दो डालियों के नीचे होवें छः डालियां जो दीअट से निकली हैं उन के नीचे ऐसी ही हों॥ ३६। उन की कली और उन की डालियां उसी से हों और सब के सब गढ़े हुए निर्मल सोने के हों॥ ३७। और तू उस के लिये सात दीपक बना और उन्हें जला जिसतें उस के सन्मुख उंजियाला होवे॥ ३८। और तू उस की कतरनी और उस का पात्र निर्मल सोने के बना॥ ३९। वुह उसे इन समस्त पात्र समेत मन सवा एक निर्मल सोने के बनावे॥ ४०। चोकस हो कि जैसा मैं ने तुझे पहाड़ पर दिखाया तू उसी डौल का बना।

२६ छबीसवां पर्ब्ब।

और तू बटे हुए झीने सूती कपड़े के दस ओटों का तंबू बना नीला और बैंजनी और लाल और तू उन्हें चित्रकारी से करोबीम बना॥ २। और हर एक ओट की लंबाई अट्ठाईस हाथ और हर एक ओट की चौड़ाई चार हाथ की हो और हर एक ओट एक ही नाप की हो॥ ३।

ओर पांचों ओट एक दूसरे से जोड़ी ऊई हो ओर पांच एक दूसरे से जोड़ी ऊई हो॥ ४। ओर एक ओट के अंचल में मिलाने के खूंट में नीले तुकमे बना ओर ऐसे ही दूसरी ओट के अंत खूंट में मिलाने की ओर वना॥ ५। एक ओट में पचास तुकमे वना ओर पचास तुकमे दूसरी ओट के मिलाने के खूंट में बना जिसतें तुकमे एक दूसरे में जुट जावें॥ ६। ओर सोने की पचास घुण्डी बना ओर उन्हीं घुण्डियों से ओट को जोड़ जिसतें एक तंबू हो जाय॥ ७॥ ओर बकरी के बालों की ओट बना जिसतें तंबू के लिये ढांपन हो ग्यारह ओटें तू बना॥ ८। एक ओट की लंबाई तीस हाथ ओर एक ओट की चौड़ाई चार हाथ होय ग्यारहों ओट एक ही नाप की हों॥ ९। ओर पांच ओट को अलग जोड़ ओर छः ओट को अलग जोड़ ओर छठवीं ओट को तंबू के साम्ने दोहराव॥ १०। ओर पचास तुकमे एक ओट के खूंट में जो अंत के जोड़ में है ओर पचास तुकमे दूसरी ओट के जोड़ में बना॥ ११। ओर पीतल की पचास घुण्डियां बना ओर घुण्डियों को तुकमों में डाल ओर तंबू को मिला जिसतें एक होवे॥ १२। ओर तंबू की ओटों के बचे ऊए को आधी ओट जो बची ऊई है तंबू के पिछली ओर लटकी रहे॥ १३। ओर तंबू को ओटों की लंबाई से जो बचा ऊआ हाथ भर इधर ओर हाथ भर उधर है तंबू के घटाटोप के लिये बना॥ १४। ओर तंबू के लिये एक घटाटोप मेढ़ों के लाल रंगे ऊए चमड़ों से ओर एक घटाटोप सब के ऊपर नीले चमड़ों का बना॥ १५। ओर तंबू के लिये शमशाद की लकड़ी से खड़े पाट बना॥ १६। हरएक पाट की लंबाई दस हाथ चौड़ाई डेढ़ हाथ होवे॥ १७। ओर हर एक पाट में दो दो चूल हों कि एक दूसरे में किया जाय ओर यों तंबू के समस्त पाटों में कर॥ १८। ओर तंबू के लिये दक्षिण की ओर बीस पाट वना॥ १९। ओर बीस पाटों के नीचे चांदी के चालीस पाए दो दो पाए हर एक पाट के नीचे उस की दोनों चूलों के लिये बना। २०। ओर तंबू की दूसरी ओर के लिये जो उत्तर की है बीस पाट॥ २१। ओर उन के लिये चांदी के चालीस पाए एक पाट के नीचे दो पाए ओर दूसरे पाट के लिये दो पाए बना॥ २२। ओर तंबू की पश्चिम ओर छः पाट बना। २३।

और दो पाट तंबू के कोनों के लिये दोनों ओर बना॥ २४। और वे नीचे में मिलाये जावें और ऊपर से एक कड़ी में जोड़े जावें ऐसा ही दोनों कोनों के लिये होय॥ २५। सो आठ पाट और उन के सोलह चांदी के पाए होंगे दो पाए एक पाट के नीचे और दो पाए दूसरे पाट के नीचे॥ २६। और तू शमशाद की लकड़ी के अड़ंगे बना तंबू के एक अलंग के पाट के लिये पांच॥ २७। और पांच अड़ंगे तंबू की दूसरी ओर के पाट के लिये और पांच अड़ंगे तंबू के अलंग के पाटों के लिये पश्चिम के दोनों अलंग के लिये॥ २८। और पाटों के मध्य के बीच का अड़ंगा एक ओर से दूसरी ओर लों पहुंचे॥ २९। और पाटों को सोने से मढ़ और अड़ंगों के लिये सोने के कड़े बना और अड़ंगों को सोने से मढ़॥ ३०। और तंबू को जैसा कि मैं ने तुझे पहाड़ पर दिखाया है वैसा ही खड़ा कर॥ ३१। और बटे हुए झीने बूटे काढ़े हुए सूती कपड़े से नीला और बैंजनी और लाल घूंघट और करोबी समेत बना॥ ३२। और उसे सोने से मढ़े हुए शमशाद की लकड़ी के चार खंभे पर लटका उन के सोने के अंकुरे चांदी की चार चूलों पर होवें॥ ३३। और घूंघट को घुण्डी के नीचे लटका जिसतें तू घूंघट के भीतर साक्षी की मंजूषा लावे और वुह घूंघट पवित्र और महा पवित्र स्थान में बिभाग करेगा॥ ३४। और दया का आसन साक्षी की मंजूषा पर महा पवित्र स्थान में रख॥ ३५। और मंच को घूंघट के बाहर रख और दीअट को मंच के सन्मुख तंबू की एक ओर दक्षिण अलंग और मंच को उत्तर अलंग रख॥ ३६। और तंबू के द्वार के लिये नीला और बैंजनी और लाल और बटे हुए झीने वस्त्र से बूटा काढ़ी हुई एक ओट बना॥ ३७। और ओट के लिये शमशाद के पांच खंभे बना और उन्हें सोने से मढ़ उन के अंकुरे सोने के हों और तू उन के लिये पीतल के पांच पाए ढाल के बना॥

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब।

और तू शमशाद की लकड़ी की एक यज्ञबेदी पांच हाथ लंबी और पांच हाथ चौड़ी बना यज्ञबेदी चौकोर होवे और उस की ऊंचाई तीन हाथ हो॥ २। और उस के चारों कोनों के लिये सींग

बना और उस की सींगें उसी से हों और उसे पीतल से मढ़॥ ३। और उस की राख के लिये पात्र बना उस की फावड़ियां और उस के कटोरे और उस का त्रिशूल और अंगेठियां बना उस के समस्त पात्र पीतल के बना॥ ४। और उस के लिये पीतल के जाल की एक झंझरी बना और उस जाल में पीतल के चार कड़े उस के चारों कोनों में बना॥ ५। और उसे बेदी के घेरा के नीचे रख जिसतें बेदी के मध्य लों पहुंचे॥ ६। और यज्ञबेदी के लिये शमशाद की लकड़ी का बहंगर बना और उन्हें पीतल से मढ़॥ ७। और उन बहंगरों को कड़ों में डाल और बहंगर यज्ञबेदी के उठाने के लिये दोनों अलंग में होवें॥ ८। उस के पाट यों पोले बनाइयो जैसा कि तुझे पहाड़ में दिखाया गया वैसाही उन्हें बनाइयो॥ ९। और तंबू के कारण एक आंगन बना दक्षिण दिशा के आंगन के कारण बटे हुए झीने सूती कपड़े से सौ हाथ लंबा एक अलंग के लिये ओट बना॥ १०। और उस के बीस खंभे और उन के बीस पाए पीतल के हों और खंभों के अंकुरे और उन के डंडे रूपे के बना॥ ११। और ऐसे ही उत्तर की ओर की लंबाई के लिये सौ हाथ की लंबी ओट और उस के बीस खंभे और उन के पीतल के बीस पाए और खंभों के अंकुरे और उन के डंडे रूपे के हों॥ १२। और पश्चिम अलंग के आंगन की चौड़ाई में पचास हाथ की ओट हों और उन के दस खंभे और उन के दस पाए हों॥ १३। और पूर्ब अलंग के आंगन की चौड़ाई पचास हाथ हो॥ १४। एक ओर की ओट पंद्रह हाथ होय उन के तीन खंभे और उन के तीन पाए हों॥ १५। और दूसरी ओर की ओट पंद्रह हाथ उन के तीन खंभे और उन के तीन पाए॥ १६। और आंगन के फाटक के लिये नीला और बैंजनी और लाल रंग का बटे हुए झीने सूती कपड़े से बूटे काढ़े हुए का बीस हाथ की एक ओट बना उन के खंभे चार और उन के पाए चार॥ १७। और आंगन के चारों ओर के समस्त खंभे रूपे के डंडों से हों उन के अंकुरे रूपे के और उन के पाए पीतल के॥ १८। आंगन की लंबाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई पांच हाथ झीने बटे हुए सूती कपड़े से और उन के पाए पीतल के॥ १९। तंबू

की समस्त सेवा के लिये समस्त पात्र और उस के सब खूंटे उस के और आंगन के समस्त खूंटे पीतल के हों॥ २०। और इसराएल के संतान को आज्ञा कर कि तेरे पास कूटे हुए जलपाई का निर्मल तेल लावें जिसतें दीपक सदा बरा करे॥ २१। घूंघट के बाहर जो साक्षी के आगे है मंडली के तंबू में हारून और उस के बेटे सांझ से ले के बिहान लों परमेश्वर के आगे नित्य उन की पीढ़ी से पीढ़ी लों इसराएल के संतानों के लिये यह बिधि है।

२८ अठाईसवां पर्ब्ब।

और इसराएल के संतानों में से अपने भाई हारून को अपने पास ले जिसतें वुह और उस के बेटे नदब और अबिहू और इलिअज़र और ईतमर याजक के पद में मेरी सेवा करें॥ २। और अपने भाई हारून के लिये और बिभव के लिये पवित्र बस्त्र बना॥ ३। और उन समस्त बुद्धिमानों से जिन्हें मैं ने बुद्धि का आत्मा दिया है कह कि वे हारून को पवित्र करने के लिये बागा बनावें जिसतें वुह याजक मेरे लिये हो॥ ४। और वे ये बस्त्र बनावें चंपरास और एफोद और बागा और बूटा काढ़ी हुई कुरती और मुकुट और कटिबंध और वे पवित्र बस्त्र तेरे भाई हारून और उस के बेटों के लिये बनावें कि मेरे लिये याजक होवें॥ ५। और वे सोना और नीला और बैंजनी और लाल झीना कपड़ा लेंगे॥ ६। और वे एफोद को सोने और नीले और बैंजनी और लाल और बटे हुए झीने कपड़े से बूटा काढ़ा हुआ बनावें॥ ७। दो कंधे का जोड़ा उस की दोनों ओरों से मिले हुए हों जिसतें यों मिलाया जाय॥ ८। और बूटा काढ़ा हुआ एफोद का पटुका जो उस पर है उसी के कार्य के समान उसी से हो सोने और नीले और बैंजनी और लाल और झीने बटे हुए सूती कपड़े से हो॥ ९। और दो बैदूर्यमणि ले और उन पर इसराएल के संतानों के नाम खोद॥ १०। उन में से छः के नाम एक मणि पर और शेष के छः नाम दूसरे मणि पर उन की उत्पत्ति के बिधि से होवें॥ ११। मणि के खोदवैये के कार्य से छापा के खोदने के समान दोनों मणि पर इसराएल

के संतानों के नाम खोद उन्हें सोने के ठिकानों में जड़॥ १२। और दोनों मणि को एफोद के दोनों मोंढ़ों पर रख कि इसराएल के संतानों के स्मरण के लिये होवें और हारून उन के नाम परमेश्वर के आगे अपने दोनों कंधों पर स्मरण के लिये उठावेगा॥ १३। और सोने के ठिकाने बना॥ १४। और दोनों सीकरें निर्म्मल सोने से खूंटों में गूथने के कार्य्य से उन्हें बना और गुथी हुई सीकरों को उन ठिकानों में जड़॥ १५। और चित्रकारी से न्याय के लिये एक चपरास बना एफोद के कार्य्य के समान सोने और बैंजनी और लाल और झीने बटे हुए सूती कपड़े से बना॥ १६। यह चौकोर दोहरा होवे उस की लंबाई एक बित्ता और उस की चौड़ाई एक बित्ता॥ १७। और मणि की चार पांती उस में भर दे पहिली पांती में मणि का और पद्मराग और लालड़ी॥ १८। दूसरी पांती में मर्कत और नीलमणि और हीरे॥ १९। तीसरी पांती में लशम और सूर्य्यकांत और नीलिम॥ २०। चौथी पांती में बैदूर्य्य और फिरोज़ा और चंद्रकांत वे सोने के ठिकाने में जड़े जावें॥ २१। और मणि इसराएल के बंश के नाम के संग हैं छापे के खोदे हुए उन के नाम के संतान भेद बारह गोष्ठी के समान हर एक अपने नाम के संग होवे॥ २२। और चपरास के ऊपर निर्म्मल सोने की गुथी हुई सीकरें खूंट में बना॥ २३। और चपरास पर सोने की दो कड़ियां बना और उन्हें चपरास के दोनों खूंटों में लगा॥ २४। और सोने की गुथी हुई सीकर उन दोनों कार्य्यों में जो चपरास के दोनों खूंटों में हैं लगा॥ २५। और गुथे हुए दोनों के दोनों खूंट उन के दो ठिकाने में जड़ और उन्हें एफोद के कंधों पर आगे रख॥ २६। और सोने की दो कड़ियां बना और उन्हें चपरास के किनारे के खूंट पर जो एफोद के भीतर है और उस के जोड़ने के साम्ने एफोद के पटुके के ऊपर रख॥ २७। और सोने की दो कड़ियां एफोद के नीचे दोनों अलंग में रख उस के आगे की ओर जोड़ के साम्ने चित्रकारी के एफोद के ऊपर रख॥ २८। और वे चपरास को उस की कड़ियों से एफोद की कड़ियों में नीले गोटे से बांधें कि एफोद के पटुके के ऊपर हों जिसतें चपरास एफोद से न हटे॥ २९। और हारून नित्य परमेश्वर के आगे

स्मरण के लिये जब वुह पवित्र स्थान में जावे इसराएल के संतानों के
नाम न्याय की चपरास पर अपनी छाती पर उठावे॥ ३०। ब्रौर तू
जरिम ब्रौर थम्मिम को न्याय की चपरास में रख यह हारून की छाती
पर परमेश्वर के ब्रागे जाने पर होगा ब्रौर हारून इसराएल के संतानों के
न्याय को अपनी छाती पर परमेश्वर के ब्रागे सदा लिये रहे॥ ३१।
ब्रौर एफोद का बागा सर्ब्बत्र नीला बना॥ ३२। ब्रौर उस के ऊपर
मध्य में एक छेद होवे ब्रौर उस छेद की चारों ब्रोर बिने ऊए कार्य के
गाेटे हों जैसा झिलम का मुंह होता है जिसतें फटने न पावे॥ ३३।
ब्रौर उस के खूंट के घेरे में नीले ब्रौर बैंजनी ब्रौर लाल रंग के अनार
बना ब्रौर घेरे में सोने की घुण्डी उन के मध्य में बना॥ ३४। सो एक
सोने की घुण्डी ब्रौर एक अनार ब्रौर एक सोने की घुण्डी ब्रौर एक अनार
बागे के खूंट के घेरे में लगा॥ ३५। ब्रौर सेवा के समय हारून उसे पहिने
ब्रौर जब वुह पवित्र स्थान में परमेश्वर के ब्रागे जावे ब्रौर जब निकले तब
उस का शब्द सुना जायगा जिसतें वुह मर न जाय॥ ३६। ब्रौर निर्म्मल
सोने की एक पटरी बना ब्रौर उस पर खोदे ऊए छाप की नाईं खोद कि
परमेश्वर के लिये पवित्रमय॥ ३७। ब्रौर उस पर नीले गोटे लगा
जिसतें वुह मुकुट पर होवे सो मुकुट ब्रागे की ब्रोर होवे॥ ३८। ब्रौर वुह
हारून के ललाट पर होय कि हारून पवित्र बस्तु के पापों को जिसे इस-
राएल के संतान अपनी समस्त पवित्र भेंटों में पवित्र करेंगे ब्रौर वही उस
के ललाट पर सदा हो जिसतें वे परमेश्वर के ब्रागे ग्राह्य होवें॥ ३९।
ब्रौर बागे पर झीने सूती कपड़े से बूटा काढ़ ब्रौर मुकुट को झीने बस्त्र
से बना ब्रौर कटिबंध को चित्रकारी से बना॥ ४०। ब्रौर हारून के बेटों
के लिये बागे बना ब्रौर उन के लिये कटिबंध ब्रौर पगड़ी उन की शोभा
ब्रौर बिभव के लिये बना। ४१। ब्रौर उन्हें अपने भाई हारून पर ब्रौर उस
के संग उस के बेटों पर पहिना ब्रौर उन्हें अभिषेक कर ब्रौर उन्हें स्थापित
ब्रौर पवित्र कर जिसतें कि वे मेरे लिये याजक होवें॥ ४२। ब्रौर उन के
लिये सूती जांघिया बना कि उन की नग्नता ढांपी जाय ब्रौर चाहिये कि
यह कटि से जांघ लों हो॥ ४३। ब्रौर वे हारून ब्रौर उस के बेटों पर
होवें जब वे मंडली के मंदिर में प्रवेश करें अथवा जब वे पवित्र स्थान में

यज्ञवेदी के पास सेवा को आवें कि वे पाप न उठावें और मर जायें यह
विधि उस के और उस के पीछे उस के बंश के लिये सदा को है।

२९ उंतीसवां पर्ब्ब ।

और वुह जो तू उन के लिये करेगा जिसतें उन्हें पवित्र करे कि वें
मेरे लिये याजक होवें याजक के पद में मेरी सेवा यह है कि
तू एक बछड़ा और दो निष्कलंक मेंढ़े ले॥ २। और अखमीरी रोटी
और फुलके और अखमीरी फुलके तेल से चुपड़े हुए और अखमीरी
टिकरी तेल में चुपड़ी हुई खेत गेहूं के पिसान की बना॥ ३। और
उन्हें एक टोकरी में रख और उन्हें टोकरी में बछड़े और दोनों मेंढ़ों
समेत आगे ला॥ ४। और हारून और उस के बेटों को मंडली के
तंबू के द्वार पर ला और उन्हें जल से नहला॥ ५। और वस्त्र ले और
हारून को कुरती और पटुके का बागा पहिना और एफोद और
चपरास एफोद का पटुका उस पर बांध॥ ६। और मुकुट को उस के
सिर पर रख और पवित्र किरीट मुकुट पर धर॥ ७। तब अभिषेक
करने का तेल ले और उस के सिर पर ढाल और उसे अभिषेक कर॥
८। फिर उस के बेटों को आगे ला और उन्हें कुरती पहिना॥ ९।
और हारून और उस के बेटों पर कटिबंध लपेट और उन पर पगड़ी
बांध जिसतें याजक का पद सनातन की बिधि के लिये उन्हीं का होवे
और हारून और उस के बेटों को स्थापित कर॥ १०। फिर उस बैल
को मंडली के तंबू के आगे ला और हारून और उस के बेटे अपने हाथ
उस के सिर पर रक्खें॥ ११। और उस बैल को मंडली के तंबू के द्वार
पर परमेश्वर के आगे बलिदान कर॥ १२। और उस के लोहू में से
कुछ ले और अपनी अंगुली से यज्ञवेदी के सींगों पर लगा और बचा
हुआ लोहू यज्ञवेदी के नीचे ढाल॥ १३। और उस की समस्त
चिकनाई जो उस के अंतर को ढांपती है और जो कलेजे के ऊपर है
और दोनों गुर्दे और जो चिकनाई उन पर है ले और उन्हें यज्ञबदी
पर जला॥ १४। परंतु उस बैल का मांस और खाल और गोबर
छावनी के बाहर आग से जला यह पापों का बलिदान है॥ १५।

एक मेंढ़े को भी ले और हारून और उस के बेटे अपने हाथ उस के सिर
पर रक्खें॥ १६। और उसे बलिदान कर और तू उस के लोहू को
यज्ञबेदी पर और उस के चारों ओर छिड़क॥ १७। और मेंढ़े
को टुकड़ा टुकड़ा कर और उस के अंतर और उस के पांव धो और
उस के टुकड़े सिर के साथ एकट्ठे कर॥ १८। और उस समस्त मेंढ़े को
यज्ञबेदी पर जला यह होम की भेंट परमेश्वर के लिये अग्नीय सुगंध बास
परमेश्वर के लिये है।

१९। फिर दूसरा मेंढ़ा ले और हारून और उस के बेटे अपने हाथ
उस के सिर पर रक्खें॥ २०। तब तू उस मेंढ़े को बलिदान कर और
उस के लोहू में से ले और हारून के और उस के बेटों के दहिने कान
की लहर पर और उन के दहिने हाथ के अंगूठे पर और दहिने पांव
के अंगूठे पर लगा और यज्ञबेदी पर चारों ओर छिड़क॥ २१। और
उस लोहू में से जो यज्ञबेदी पर है और अभिषेक का तेल ले और
हारून पर और उस के बस्त्र पर और उस के बेटों पर और उन के
बस्त्रों पर उस के साथ छिड़क तब वुह और उस के बस्त्र और उस के बेटे
और उन के बस्त्र उस के संग पवित्र होंगे॥ २२। और मेंढ़े की चिकनाई
और पूंछ और वुह चिकनाई जो ओझ को ढांपती है और जो कलेजे
को ढांपती है और दोनों गुर्दे को और वुह चिकनाई जो उन्हों पर है
और दहिना मोंढा ले इस लिये कि यह मेंढ़ा स्थापने का है॥ २३।
और एक रोटी और तेल में चुपड़ी हुई रोटी का फुलका और अखमीरी
रोटी के टोकरे में से एक टिकरी जो परमेश्वर के सन्मुख है॥ २४।
और यह सब हारून के और उस के बेटों के हाथ पर रख और उन्हें
परमेश्वर के आगे हिलाने के बलिदान के लिये हिला॥ २५। और
उन्हें उन के हाथ से ले और यज्ञबेदी पर जलाने के बलिदान के लिये
जला कि परमेश्वर के आगे सुगंध के लिये हो यह आग का बलिदान
परमेश्वर के लिये है॥ २६। और तू हारून के स्थापित मेंढ़े की छाती
ले और उसे परमेश्वर के आगे हिलाने के बलिदान के लिये हिला और
वुह तेरा भाग होगा॥ २७। और तू हिलाने के बलिदान की छाती
को और उठाने के पुट्ठे को जो हारून और उस के बेटों को स्थापित करने

का मेंढ़ा हिलाया और उठाया गया है पवित्र कर॥ २८। और हारून
और उस के बेटों के लिये और सब इसराएल के संतानों में यह बिधि
सदा होगी इस लिये कि ये उठाये हुए बलिदान हैं और चाहिये कि सदा
इसराएल के संतानों से उस के कुशल के बलिदानों में से उठाये हुए
बलिदान हों और यह उठाया हुआ बलिदान परमेश्वर के लिये है॥
२९। और हारून के पवित्र बस्त्र उस के पीछे उस के बेटों के कारण
उन के अभिषेक के लिये हों कि वे उन में स्थापित होवें॥ ३०। जो बेटा
उस की संती याजक होवे जब वुह मंडली के तंबू में पवित्र सेवा करने को
आवे तब वुह उन्हें सात दिन पहिने॥ ३१। और स्थापने का मेंढ़ा ले और
उस का मांस पवित्र स्थान में उसिन॥ ३२। और हारून और उस के बेटे
मेंढ़े का मांस और वह रोटी जो टोकरी में मंडली के तंबू के द्वार पर है
खावें॥ ३३। और जिन बस्तुन से प्रायश्चित्त हुआ कि उन्हें स्थापित और
पवित्र करें वे खावें परंतु परदेशी न खावे क्योंकि पवित्र है॥ ३४।
और यदि स्थापित के मांस में से अथवा रोटी में से बिहान लों रह जाय
तो वुह खाया न जाय परंतु जला देवें इस लिये कि पवित्र है॥ ३५। और
तू हारून और उस के बेटों को मेरी समस्त आज्ञा के समान यों कीजियो
सात दिन उन्हें स्थापित कीजियो॥ ३६। और तू प्रतिदिन पाप के प्राय-
श्चित्त के कारण एक बैल को चढ़ाइयो और यज्ञबेदी को पवित्र करने को
जब तू उस के लिये प्रायश्चित्त करे तो उसे पावन करने को अभिषेक कर॥
३७। तू बेदी के लिये सात दिन प्रायश्चित्त करके उसे पवित्र कर और
वुह अत्यंत पवित्र हो जायगी जो कुछ उसे छूये सो पवित्र हो जायगा॥
३८। यह तू यज्ञबेदी पर कीजियो पहिले बरस का दो मेम्ना प्रतिदिन
नित्य चढ़ाइयो॥ ३९। एक मेम्ना बिहान को और दूसरा मेम्ना सांझ
को बलिदान कर॥ ४०। गोहूं के पिसान का दसवां भाग जो जलपाई
के कूटे हुए तीन पाव तेल से मिला हुआ हो और तीन पाव दाख रस एक
मेम्ना के साथ पीने की भेंट के लिये होय॥ ४१। और दूसरा मेम्ना सांझ
की भेंट का और उसे बिहान के मांस की भेंट के समान और पीने की भेंट
के समान परमेश्वर के सुगंध की बासना के लिये होम कर॥ ४२। होम की
भेंट तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी लों मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे

नित्य होगी जहां मैं तुम से वार्त्ता करने के लिये भेंट करूंगा॥ ४३।
और मैं इसराएल के संतान से वहां भेंट करूंगा और वुह मेरी महिमा के
लिये पवित्र होगा॥ ४४। और मैं मंडली के तंबू को और यज्ञबेदी को
पवित्र करूंगा और हारून और उस के बेटों को पवित्र करूंगा कि वे
मेरे लिये याजक होवें॥ ४५। और मैं इसराएल के संतानों में बास
करूंगा और मैं उन का ईश्वर हूंगा॥ ४६। और वे जानेंगे कि मैं
परमेश्वर उन का ईश्वर हूं जो उन्हें मिस्र की भूमि से निकाल लाया
जिसतें मैं उन में बास करूं मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूं॥

३० तीसवां पर्ब्ब।

और तू शमशाद की लकड़ी से धूप जलाने के लिये एक यज्ञबेदी
बना॥ २। उस की लंबाई और चौड़ाई एक एक हाथ चौकोर
होवे और उस की ऊंचाई दो हाथ उस के सींग उसी से हों॥ ३। और
उसे निर्मल सोने से मढ़ उस की छत और उस के चारों ओर के मुकुट
और उस के सींगों को और उस के चारों ओर सोने का मुकुट बना॥
४। और सोने के दो कड़े उस के मुकुट के नीचे उस के दोनों कोनों
के पास उस की दोनों अलंग पर बना और वे उठाने के बहंगर के स्थान
होंगे॥ ५। और बहंगर को शमशाद की लकड़ी से बना और उसे
सोने से मढ़॥ ६। और उसे ओझल के आगे जो साक्षी की मंजूषा के
ऊपर है रख दया के आसन के साम्ने जो साक्षी के ऊपर है जहां मैं तुझ
से भेंट करूंगा॥ ७। और हर बिहान को हारून उस पर सुगंध द्रव्य
का धूप जलावे जब वुह दीपकों को सुधारे वुह उस पर धूप जलावे॥
८। और जब हारून संध्या के समय में दीपक को बारे वुह उस पर
तुम्हारी समस्त पीढ़ियों में परमेश्वर के आगे धूप जलावे॥ ९। तुम उस
पर उपरी धूप और होम का बलिदान और मांस की भेंट न चढ़ाइयो
और उस पर पीने की भेंट न चढ़ाइयो॥ १०। और हारून बरस भर
में एक बार उस के सींगों पर पाप की भेंट के प्रायश्चित्त के लोहू से
प्रायश्चित्त करे तुम्हारे समस्त पीढ़ियों में बरस में एक बार उस पर
प्रायश्चित्त करे यह परमेश्वर के लिये अति पवित्र है॥

११। और परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला॥ १२। कि जब तू इसराएल के संतानों को गिने तब उन में से हर मनुष्य अपने प्राण के छुड़ाने के लिये परमेश्वर को देवे जब तू उन की गिनती करे जिसतें गिनती करने में उन पर मरी न आवे॥ १३। जो कोई गिनती किये गये होवें सो पवित्र स्थान के शेकलों के समान आधा शेकल देवे एक शेकल बीस गिरह सो आधा शेकल परमेश्वर की भेंट है॥ १४। जो कोई गिनती किये गये में होवें बीस बरस का और जो ऊपर होवे सो परमेश्वर के लिये भेंट देवे॥ १५। अपने प्राण का प्रायश्चित्त करने को परमेश्वर की भेंट देने में धनी कंगाल से अधिक न देवे और कंगाल आधे शेकल से न घटावे॥ १६। और तू इसराएल के संतानों के प्रायश्चित्त का दाम ले और उसे मंडली के तंबू के कार्य कि सेवा के लिये ठहरा और यह इसराएल के संतानों के लिये परमेश्वर के आगे स्मरण और उन के प्राणों का प्रायश्चित्त होगा॥

१७। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १८। कि पीतल का एक स्नान पात्र बना और उस का पाया स्नान करने के लिये पीतल का बना और उस को मंडली के तंबू और यज्ञबेदी के मध्य में रख और उस में जल डाल॥ १९। और हारून और उस के बेटे अपने हाथ पांव उस्से धोवें। २०। जब वे मंडली के तंबू में जावें वे जल से धोवें जिसतें नाश न होवें अथवा जब वे सेवा के लिये यज्ञबेदी के पास जावें और परमेश्वर के लिये होम की भेंट जलावें॥ २१। वे अपने हाथ पांव धोवें जिसतें वे न मरें यह व्यवहार उन के लिये अर्थात् उस के और उस के बंश की समस्त पीढ़ी लों सदा के लिये होवे॥ २२। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २३। कि तू अपने लिये पांच सौ शेकल के चोखे गंधरस का प्रधान सुगंध द्रव्य और उस की आधी अर्थात् अढ़ाई सौ की मीठी दारचीनी और अढ़ाई सौ का सुगंध बच अपने लिये ले॥ २४। और पवित्र स्थान कि शेकल के तौल पांच सौ शेकल भर तज ले और जलपाई का तेल तीन सेर॥ २५। और इन्हें पवित्र लेपन का तेल बना गंधी की रीति के समान मिला के लेपन बना यही पवित्र के अभिषेक का तेल होवे॥ २६। और उस्से मंडली के

तंबू को और साक्षी की मंजूषा को अभिषेक कर॥ २७। और मंच और
उस के समस्त पात्र और दीअट और उस के पात्र और धूप की बेदी॥
२८। और भेंट के होम करने की बेदी उस के समस्त पात्र सहित
और स्नान पात्र और उस का पाया॥ २९। और उन्हें पवित्र कर कि
वे अति पवित्र हो जायें जो उन्हें छूवे सो पवित्र होगा॥ ३०। और हारून
और उस के बेटों को अभिषेक करके उन्हें स्थापित कर कि मेरे लिये
याजक होवें॥ ३१। और इसराएल के संतान को यह कहके बोल कि
यह पवित्र अभिषेक का तेल मेरे लिये तुम्हारी समस्त पीढ़ियों में होय॥
३२। किसी मनुष्य के शरीर पर न डाला जाय और तुम वैसा और
उसी के मेल में न बनाइयो कि यह पवित्र है तुम्हारे लिये पवित्र होगा॥
३३। जो कोई उस के समान बनावे अथवा जो कोई उसे किसी पर-
देशी पर लगावे सो अपने लोगों से कट जायगा॥ ३४। और परमेश्वर
ने मूसा से कहा कि तू अपने लिये सुगंध द्रब्य अर्थात् बोल और नखी
और शुद्ध कुंदुरू और सुगंध द्रब्य और चोखा लोबान लीजियो और
हर एक को समान लीजियो॥ ३५। और उन का सुगंध बनाइयो गंधी
के कार्य के समान मिलाया हुआ पवित्र और शुद्ध होवे॥ ३६। और उस
में से कुछ बुकनी कर और उस में से कुछ मंडली के तंबू की साक्षी के
आगे रख जहां मैं तुझ से भेंट करूंगा वह तुम्हारे लिये अति पवित्र
होगा॥ ३७। और सुगंध द्रब्य अथवा धूप को जिसे तू बनावे तो तुम
उस की मिलावट के समान अपने लिये मत बनाओ वही तुम्हारे पास
परमेश्वर के लिये पवित्र होगा॥ ३८। जो कोई सूंघने के लिये उस के
समान बनावेगा सो अपने लोगों में से कट जायगा॥

३१ एकतीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला॥ २। कि देख मैं ने ऊरी के पुत्र
बजिलिएल को जो हूर का पोता यहूदाह के कुल में का है नाम लेके
बुलाया॥ ३। और मैं ने उसे बुद्धि में और समझ में और ज्ञान में और
समस्त प्रकार की हथौटी में परमेश्वर के आत्मा से भर दिया॥ ४। कि
सोने और रूपे और पीतल के कार्य करने में अपनी बुद्धि से हथौटी का

कार्य निकाले॥ ५। मणि के खोदने और जड़ने में और काष्ठ के खोदने में जिसतें समस्त प्रकार की हथौटी का कार्य करे॥ ६। और देख मैं ने उस के संग अहलिअब को जो अखिसमक का पुत्र और दान के कुल में का है दिया और मैं ने समस्त बुद्धिमानों के अंतःकरणों में बुद्धि दिई कि सब जो मैं ने तुझे आज्ञा किई है बनावे॥ ७। मंडली का तंबू और साक्षी की मंजूषा और दया का आसन जो उस पर है और तंबू के समस्त पात्र॥ ८। और मंच और उस के पात्र और पवित्र दीअट उस के पात्र सहित और धूप की बेदी॥ ९। और भेंट के होम की बेदी उस के समस्त पात्र समेत और स्नान पात्र और उस का पाया॥ १०। और सेवा के वस्त्र और हारून याजक के लिये पवित्र बस्त्र और उस के बेटों के बस्त्र जिसतें याजक की सेवा में सेवा करे॥ ११। और अभिषेक का तेल और पवित्र स्थान के लिये सुगंध धूप उस समस्त आज्ञा के समान जो मैं ने तुझ से किई है वे करें॥ १२। फिर परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला॥ १३। कि तू इसराएल के संतानों को यह कहके बोल कि निश्चय तुम मेरे विश्रामों का पालन करो इस लिये कि वुह मेरे और तुम्हारे मध्य में और तुम्हारी समस्त पीढ़ियों में एक चिन्ह है जिसतें तुम जानो कि मैं परमेश्वर तुम्हें पवित्र करता हूं॥ १४। इस कारण विश्राम का पालन करो क्योंकि वुह तुम्हारे लिये पवित्र है हर एक जो उसे अशुद्ध करेगा निश्चय बध किया जायगा क्योंकि जो कोई उस में कार्य करे सो अपने लोगों में से काट डाला जायगा॥ १५। छः दिन कार्य होवे परंतु सातवां चैन का विश्राम परमेश्वर के लिये पवित्र है सो जो कोई विश्राम के दिन में कार्य करे वुह निश्चय मार डाला जायगा॥ १६। इस कारण इसराएल के संतान विश्राम का पालन करें कि सनातन नियम के लिये उन की समस्त पीढ़ियों में विश्राम का पालन होवे॥ १७। मेरे और इसराएल के संतानों के मध्य में यह सदा के लिये चिन्ह है क्योंकि परमेश्वर ने छः दिन में स्वर्ग और पृथिवी उत्पन्न किये और सातवें दिन अवकाश पाया और तृप्त हुआ॥ १८। और जब वुह मूसा से सीना के पहाड़ पर वार्त्ता कर चुका तब साक्षी के पत्थर की दो पटियां ईश्वर की अंगुलियों से लिखी हुईं उस ने उसे दिईं॥

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब ।

और जब लोगों ने देखा कि मूसा ने पहाड़ से उतरने में बिलंब किया तब वे हारून के पास एकट्ठे ऊए और उसे कहा कि उठ और हमारे लिये ईश्वर बना कि हमारे आगे चले क्योंकि यह मूसा जो हमें मिस्र के देश से निकाल लाया हम नहीं जानते कि क्या ऊआ॥
२। तब हारून ने उन्हें कहा कि अपनी पत्नियों और पुत्रों और पुत्रियों के कानों से सोने की बालियां तोड़ तोड़ के मुझ पास लाओ॥ ३। सो समस्त लोग सोने की बालियां तोड़ तोड़ के जो उन के कानों में थीं हारून के पास लाये॥ ४। और उस ने उन के हाथों से लिया और ढाला ऊआ एक बछड़ा बना के टांकी से उस का डौल किया और उन्हें कहा कि हे इसराएल यह तेरा ईश्वर है जो तुझे मिस्र के देश से निकाल लाया॥ ५। और जब हारून ने देखा तो उस के आगे बेदी बनाई और यह कहके प्रचार कराया कि कल परमेश्वर के लिये पर्ब्ब है॥ ६। फिर वे बिहान को तड़के उठे और होम की भेंट चढ़ाई और कुशल का बलिदान लाये और लोग खाने पीने को बैठे और लीला करने को उठे।

७। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उतर जा क्योंकि तेरे लोगों ने जिन्हें तू मिस्र के देश से निकाल लाया आप को भ्रष्ट किया है॥ ८। वे उस मार्ग से जो मैं ने उन्हें बताया था शीघ्र फिर गये और अपने लिये ढाला ऊआ बछड़ा बनाया और उसे पूजा और उस के लिये बलिदान चढ़ा के कहा कि हे इसराएल यह तेरा ईश्वर है जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया॥ ९। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं ने इन लोगों को देखा और देखो कि ये लोग एक कठोर गले लोग हैं॥
१०। सो अब तू मुझे छोड़ कि मेरा क्रोध उन पर अत्यंत भड़के और मैं उन्हें भस्म करूं और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा॥ ११। फिर मूसा ने परमेश्वर अपने ईश्वर की बिनती किई और कहा कि हे परमेश्वर किस लिये तेरा क्रोध अपने लोगों पर भड़का जिन्हें तू मिस्र देश से महा पराक्रम और सामर्थी हाथ से निकाल लाया॥ १२। किस लिये मिस्री कह के बोलें कि वुह बुराई के लिये उन्हें यहां से निकाल

ले गया जिसतें उन्हें पहाड़ों में नाश करे और पृथिवी पर से भस्म करे
अपने अत्यंत क्रोध से फिर जा और अपने लोगों पर बुराई पहुंचाने से
फिर जा॥ १३। अपने दास अबिरहाम इज़्हाक और इसराएल को
स्मरण कर जिन से तू ने अपनी ही किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हारे
बंश को स्वर्ग के तारों के समान बढ़ाऊंगा और यह समस्त देश जिस के
विषय में मैं ने कहा है कि मैं तुम्हारे बंश को देऊंगा और वे उस के
सनातन के अधिकारी होंगे॥ १४। तब परमेश्वर उस बुराई से जो
चाही थी कि अपने लोगों पर करे फिरा॥ १५। और मूसा फिरा
और पहाड़ से उतरा और साक्षी की दोनों पटियां उस के हाथ में थीं
और पटियां दोनों ओर लिखी हुई थीं॥ १६। और वे पटियां ईश्वर
के कार्य थीं और जो लिखा हुआ सो ईश्वर का लिखा पटियों पर खोदा
हुआ॥ १७। और जब यहूसूअ ने लोगों के कोलाहल का शब्द सुना
तो मूसा से कहा कि छावनी में लड़ाई का शब्द है॥ १८। फिर कहा कि
यह आपुस में जो शब्द होता है सो हार जीत का नहीं है न यह दुर्बलता
का शब्द है परंतु गीत का शब्द है॥ १९। और यों हुआ कि जब
वुह छावनी के पास आया तब उस ने उस बछड़े को और नाचना देखा
तब मूसा का क्रोध भड़का तब उस ने पटियां अपने हाथों से फेंक दिईं
और उन्हें पहाड़ के नीचे तोड़ डाला॥ २०। फिर उस ने उस बछड़े
को जिसे उन्हों ने बनाया था लिया और उसे आग में जलाया और उसे
बुकनी किया और पानी पर बिथराया और इसराएल के संतानों को
पिलाया॥ २१। फिर मूसा ने हारून को कहा कि इन लोगों ने तुझ
से क्या किया कि तू उन पर ऐसा महा पाप लाया॥ २२। और हारून
ने कहा कि मेरे प्रभु का क्रोध न भड़के तू लोगों को जानता है कि वे
बुराई पर हैं॥ २३। क्योंकि उन्हों ने मुझे कहा कि हमारे लिये
ईश्वर बना कि हमारे आगे चले इस लिये कि यह मूसा जो हमें मिस्र
देश से निकाल लाया हम नहीं जानते कि क्या हुआ॥ २४। तब मैं
ने उन्हें कहा कि जिस किसी के पास सोना हो सो तोड़ लावे सो उन्हों ने
मुझे दिया तब मैं ने उसे आग में डाला उस्से यह बछड़ा निकला।

२५। और मूसा ने लोगों को निरङ्कुश देखा क्योंकि हारून ने उन

की निरङ्कुशता उन को लाज के लिये उन के शत्रुन के सन्मुख खोल दिई॥ २६। तब मूसा छावनी के निकास पर खड़ा हुआ और कहा कि जो परमेश्वर की ओर है सो मेरे पास आवे तब समस्त संतान लावी के उस पास एकट्ठे हुए॥ २७। और उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने यह कहा है कि हर मनुष्य अपना खड्ग बांधे और एक फाटक से दूसरे फाटक लों छावनी के एक निकास से दूसरे निकास लों और हर एक मनुष्य अपने भाई को और अपने संगी को और अपने परोसी को घात करे॥ २८। और मूसा ने जैसा लावी के संतानों को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसाही किया सो उस दिन लोगों में से तीन सहस्र मनुष्य मारे पड़े॥ २९। और मूसा ने कहा कि आज परमेश्वर के लिये अपने हाथ भरो हर एक मनुष्य अपने पुत्र और अपने भाई से और आज अपने ऊपर आशीष लाओ॥ ३०। और दूसरे दिन सबेरे यों हुआ कि मूसा ने लोगों से कहा कि तुम ने महा पाप किया और अब मैं परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं क्या जाने मैं तुम्हारे पाप के लिये प्रायश्चित्त करूं॥ ३१। और मूसा परमेश्वर की ओर फिर गया और कहा कि हाय इन लोगों ने महा पाप किया और अपने लिये सोने का देवता बनाया॥ ३२। और अब यदि तू उन के पाप क्षमा करे नहीं तो मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे अपनी उस पुस्तक से जो लिखी है मेट दे॥ ३३। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जिस ने मेरा अपराध किया है मैं उसी को अपनी पुस्तक से मेट देऊंगा॥ ३४। और अब तू लोगों के साथ उस स्थान को जो मैं ने तुझे बताया है जा और देख कि मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा तथापि मैं अपने विचार के दिन में उन से उन के अपराध का विचार करूंगा॥ ३५। तब परमेश्वर ने बछड़ा बनाने के कारण जिसे हारून ने बनाया लोगों पर मरी भेजी।

३३ तेंतीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा कि यहां से जा तू और वह लोग जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल लाया उस देश को जा जिसके विषय में

अबिरहाम और इजहाक और यअकूब से यह कहके मैं ने किरिया खाई
है कि मैं उसे तेरे बंश को देऊंगा॥ २। और मैं तेरे साम्ने दूत भेजूंगा
और कनआनियों और अमूरियों और हित्तियों और फरजियों और
हवियों और यबूसियों को हांक देऊंगा॥ ३। एक देश में जहां दूध
और मधु बहता है क्योंकि मैं तेरे मध्य में न जाऊंगा इस लिये कि तुम
लोग कठोर न हो कि मैं तुम्हें मार्ग में भस्म कर डालूं॥ ४।
और जब लोगों ने यह बुरा समाचार सुना तो बिलाप किया और
किसी ने अपना आभूषण न पहिना॥ ५। क्योंकि परमेश्वर ने
मूसा से कहा कि इसराएल के संतान से कह कि तुम एक कठोर लोग
हो मैं तेरे मध्य एक पलंमात्र में आके तुझे भस्म करूंगा इस कारण
अपना आभूषण उतारो जिसतें मैं जानूं कि तुम से क्या करूं॥ ६।
तब इसराएल के संतानों ने होरेब के पहाड़ पर अपना आभूषण उतार
डाला॥ ७। और मूसा ने तंबू ले के छावनी के बाहर दूर खड़ा किया
और उस का नाम मंडली का तंबू रक्खा और यों हुआ कि हर एक जो
परमेश्वर का खोजी था सो भेंट के तंबू के पास जो छावनी के
बाहर था जाता था॥ ८। और यों हुआ कि जब मूसा बाहर
तंबू के पास गया तो सब लोग खड़े हुए और हर एक पुरुष अपने
तंबू के द्वार पर खड़ा होके मूसा के पीछे देखता था यहां लों कि वुह तंबू
में गया॥ ९। और जब मूसा ने तंबू में प्रवेश किया तो मेघ का खंभा उतरा
और तंबू के द्वार पर ठहरा और उस ने मूसा से बार्त्ता किई॥ १०।
और समस्त लोगों ने मेघ का खंभा तंबू के द्वार पर ठहरा हुआ देखा और
सब के सब अपने अपने तंबू के द्वार पर उठे और दंडवत किई॥ ११।
और परमेश्वर ने मूसा से आम्ने साम्ने बार्त्ता किई जैसे कोई अपने मित्र
से बार्त्ता करता है और वुह छावनी को फिरा परंतु उस का सेवक
नून का बेटा यहूसूअ एक तरुण मनुष्य तंबू के बाहर न निकला॥ १२।
फिर मूसा ने परमेश्वर से कहा कि देख तू मुझ से कहता है कि उन
लोगों को ले जा और मुझे नहीं बताया कि किसे मेरे साथ भेजेगा
तथापि तू ने कहा है कि मैं नाम सहित तुझे जानता हूं और तू
ने मेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है॥ १३। सो यदि मैं ने तेरी दृष्टि में

अनुग्रह पाया है तो मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपना मार्ग मुझे बता जिसतें मुझे निश्चय होवे कि में ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और देख कि ये जाति तेरे लोग हैं॥ १४। तब उस ने कहा कि मैं ही जाऊंगा और मैं तुझे बिश्राम देऊंगा॥ १५। मूसा ने कहा कि यदि आप न जायं तो हमें यहां से मत ले जाइये॥ १६। क्योंकि किस रीति से जाना जायगा कि मैं ने और तेरे लोगों ने तुझ से अनुग्रह पाया है क्या इस में नहीं कि तू हमारे साथ जाता है सो मैं और तेरे लोग समस्त लोगों से जो पृथिवी पर हैं अलग किये जायंगे॥ १७। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जो बात तू ने कही है मैं ने उसे भी मान लिया क्योंकि तू ने मेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और मैं तुझे नाम सहित जानता हूं॥ १८। तब मूसा ने कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे अपनी महिमा दिखा॥ १९। उस ने कहा कि मैं अपनी सब भलाई को तेरे आगे चलाऊंगा और मैं परमेश्वर के नाम का प्रचार तेरे आगे करूंगा और जिस पर कृपाल हूं उसी पर कृपा करूंगा और जिस पर दयाल हूं उसी पर दया करूंगा॥ २०॥ और बोला कि तू मेरा रूप नहीं देख सक्ता क्योंकि मुझे देख के कोई न जीयेगा॥ २१। और परमेश्वर ने कहा कि देख एक स्थान मेरे पास है और तू उस टीले पर खड़ा रह॥ २२। और यों होगा कि जब मेरी महिमा चल निकलेगी तो मैं तुझे पहाड़ के दरार में रक्खूंगा और जब लों जा निकलों तुझे अपने हाथ से ढांपूंगा॥ २३। और अपना हाथ उठा लूंगा और तू मेरा पीछा देखेगा परंतु मेरा मुंह दिखाई न देगा॥

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने लिये पहिली पटियों के समान पत्थर की दो पटियां चीर और मैं उन पटियों पर वे बातें लिखूंगा जो पहिली पटियों पर थीं जिन्हें तू ने तोड़ डाला॥ २। और तड़के सिद्ध हो और बिहान को सीना के पहाड़ पर चढ़ आ और वहां पहाड़ की चोटी पर मेरे आगे हो जा॥ ३। और कोई मनुष्य तेरे साथ न आवे और समस्त पहाड़ पर कोई देखा न जावे झुंड और लेहंड़ा पहाड़ के

आगे चराई न करें॥ ४। तब अगिली पटियों के समान पत्थर की दो
पटियां चीरीं और जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी बिहान को
मूसा पत्थर की दोनों पटियां अपने हाथ में लिये ज्ञए सीना के पहाड़ पर
चढ़ गया॥ ५। और परमेश्वर मेघ में उतरा और उस के साथ वहां
खड़ा रहा और परमेश्वर के नाम का प्रचार किया॥ ६। और परमेश्वर
उस के आगे से चला और प्रचार किया कि परमेश्वर परमेश्वर ईश्वर
दयाल और कृपाल और धीर और भलाई और सचाई में भरपूर है॥
७। सहस्रों के लिये दया रखता है पाप और अपराध और चूक का क्षमा
करता और जो किसी भांति से अपराधी को निर्दोषी न ठहरावेगा
और जो पितरों के पाप का उन के पुत्रों और पौत्रों पर तीसरी और
चौथी पीढ़ी लों प्रतिफलदायक है॥ ८। तब मूसा ने शीघ्रता से भूमि
की ओर सिर झुका के दंडवत किई॥ ९। और बोला कि हे परमेश्वर
यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो हे मेरे प्रभु मैं तेरी बिनती
करता ज्ञं कि हम्में होके चल क्योंकि ये कठोर लोग हैं और हमारे पाप
और अपराध क्षमा कर और हमें अपना अधिकार ठहरा॥ १०। तब
वुह बोला कि देख मैं तेरे समस्त लोगों के आगे एक बाचा बांधता ज्ञं कि
मैं ऐसा आश्चर्य करूंगा जैसा कि समस्त पृथिवी पर और किसी देश में न
ज्ञआ है और सब लोग जिन में तू है परमेश्वर के कार्य देखेंगे क्योंकि मैं
तुझ से भयंकर कार्य करूंगा॥ ११। जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा
करता ज्ञं उसे मानियो देख मैं अमूरियों और कनआनियों और हित्तियों
और फरज़ियों और हवियों और यबूसियों को तेरे आगे से हांकता ज्ञं॥
१२। आप से चौकस रह ऐसा न हो कि तू उस भूमि के बासियों के साथ
जिस में तू जाता है कुछ बाचा बांधे और तेरे मध्य में फंदा होवे॥
१३। परंतु तुम उन की यज्ञबेदियों को नाश करो और उन की मूर्त्तिन
को तोड़ डालो और उन की बाटिका को काट डालो॥ १४। इस लिये
किसी देव की पूजा न करो क्योंकि वुह परमेश्वर जिस का नाम ज्वलन है
ज्वलित ईश्वर है॥ १५। ऐसा न होवे कि तू उस देश के बासियों से
कुछ बाचा बांधे और वे अपने देवों के पीछे व्यभिचार करें और अपने देव
के लिये बलिदान करें और तुझे बुलावें और तू उस के बलिदान से खा

लेवे॥ १६। श्रीर तू उन की बेटियां अपने बेटों के लिये लावे श्रीर उन की बेटियां अपने देवों के पीछे व्यभिचार करें श्रीर तेरे बेटों को भी अपने देवों के पीछे व्यभिचार करावें॥ १७। तू अपने लिये ढाले ऊए देव मत बनाइयो॥ १८। अखमीरी रोटी के पर्ब्ब का पालन कीजियो सात दिन लों जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है आबिब के मास के समय में ठहरा के अखमीरी रोटी खाइयो इस लिये कि तू आबिब के मास में मिस्र से बाहर आया॥ १९। सब जो गर्भ को खोलते हैं श्रीर तेरे पशुन के समस्त पहिलौंठे बैल अथवा भेड़ के मेरे हैं॥ २०। परंतु गदहे के पहिलौंठे को मेम्ना देके छुड़ाइयो श्रीर यदि न छुड़ावे तो उस का गला तोड़ डालियो अपने पुत्रों के समस्त पहिलौंठों को छुड़ाइयो श्रीर मेरे आगे कोई छूछे हाथ न आवे॥ २१। छः दिन लों कार्य करना परंतु सातवें दिन बिश्राम करना हल जोतने श्रीर लवने का समय हो बिश्राम करना॥ २२। श्रीर अठवारों का पर्ब्ब गोहूं के पहिले फल लवने के समय श्रीर संबत के अंत में एकट्ठा करने का पर्ब्ब करना॥ २३। श्रीर तुम्हारे समस्त पुत्र बरस में तीनबार परमेश्वर ईश्वर के आगे जो इसराएल का ईश्वर है आवें॥ २४। इस लिये कि मैं देशियों को तेरे आगे से बाहर निकालूंगा श्रीर तेरे सिवानों को बढ़ाऊंगा जब कि तू बरस में तीन बार अपने परमेश्वर ईश्वर के आगे जायगा तब कोई तेरे देश को बांछा न करेगा॥ २५। तू मेरी यज्ञबेदी पर लोहू खमीर के साथ बलिदान मत चढ़ाना श्रीर पर्ब्ब का बलिदान कधी बिहान लों रहने न पावे॥ २६। तू अपने देश के पहिले फलों का पहिला अपने परमेश्वर ईश्वर के मंदिर में लाना मेम्ना को उस की माता के दूध में मत सिझाना॥ २७। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू ये बातें लिख क्योंकि इन बातों के समान मैं ने तुझ से श्रीर इसराएल से बाचा बांधी है॥ २८। श्रीर मूसा चालीस दिन रात वहां परमेश्वर के पास था उस ने न रोटी खाई न पानी पीया श्रीर उस ने उस नियम की बातें वे दस आज्ञा पटियों पर लिखीं॥ २९। श्रीर जब मूसा नियम की पटिया अपने दोनों हाथ में लिये ऊए सीना के पहाड़ से नीचे उतरा तो ऐसा ऊआ कि उस ने पहाड़ से उतरते न जाना कि जब वुह उस के साथ बात करता

था उस का रूप चमकता था॥ ३०। और जब हारून और इसराएल के समस्त संतानों ने मूसा को देखा तो क्या देखते हैं कि उस का रूप चमकता था और वे उस के पास आने में डरते थे॥ ३१। मूसा ने उन्हें बुलाया और हारून और लोगों के समस्त प्रधान उस पास उलटे फिरे और मूसा ने उन से बातें किईं॥ ३२। और अंत को इसराएल के समस्त संतान पास आये और उस ने उन सब बातों की जो परमेश्वर ने उसे सीना के पहाड़ पर कही थीं उन्हें आज्ञा किई॥ ३३। और जब मूसा उन से बातें कर चुका तो उस ने अपने मुंह पर घूंघट डाला॥ ३४। पर जब मूसा परमेश्वर के आगे उस्से बार्त्ता करने जाता था तो जब लों बाहर न आता था घूंघट को उतार देता था और जो आज्ञा होती थी वुह बाहर आके इसराएल के संतानों को कहता था॥ ३५। और इसराएल के संतानों ने मूसा का मुंह देखा कि उस का मुंह चमकता था और मूसा ने मुंह पर घूंघट डाला जब लों कि ईश्वर से बातें करने गया॥

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब।

और मूसा ने इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को एकट्ठा करके कहा कि परमेश्वर ने इन बातों की आज्ञा किई है कि तुम उन्हें पालन करो॥ २। छः दिन लों कार्य किया जावे परंतु सातवां दिन तुम्हारे लिये पवित्र दिन होवे परमेश्वर के चैन का विश्राम दिन होगा जो कोई उस में कार्य करेगा मार डाला जायगा॥ ३। विश्राम के दिन अपने समस्त निवासों में आग मत बारियो॥ ४। और मूसा ने इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को कहा वुह आज्ञा जो परमेश्वर ने किई यह है॥ ५। तुम अपने में से परमेश्वर के लिये भेंट लाओ और जो कोई मन से चाहे सो परमेश्वर के लिये भेंट लावे सोना और रूपा और पीतल॥ ६। और नीला और बैंजनी और लाल झीने सूती वस्त्र और बकरियों के बाल॥ ७। और लाल रंगे हुए मेंढ़ों के चमड़े और तखसों के चमड़े और शमशाद की लकड़ी॥ ८। और जलाने का तेल और अभिषेक के तेल के लिये और धूप के लिये सुगंध द्रव्य॥ ९। और सूर्यकांतमणि और एफोद और चपरास पर जड़ने के लिये मणि॥ १०।

और तुम में से जो बुद्धिमान है आवे और जो कुछ परमेश्वर ने आज्ञा
किई है बनावे॥ ११। निवास और तंबू और उस का घटाटोप और
उस की घुंण्डियां और उस के पाट और उस के अड़ंगे और उस के खंभे
और उस के पाए॥ १२। और मंजूषा और उस के बहंगर और दया
का आसन और ढांपने का घूंघट॥ १३। मंच और उस के बहंगर और
उस के समस्त पात्र और भेंट की रोटी॥ १४। और ज्योति के लिये दीअट
और उस की सामग्री और प्रकाश के लिये तेल के संग उस के दीपक॥
१५। और धूप की यज्ञबेदी और उस के बहंगर और अभिषेक का तेल
और धूप और सुगंध द्रव्य और तंबू में प्रवेश करने के द्वार की ओट॥
१६। यज्ञबेदी पीतल की झारनी और उस के बहंगर और उस के समस्त
पात्र और स्नानपात्र उस के पाए समेत॥ १७। आंगन की ओट
और उस के खंभे और उन के पाए और आंगन के द्वार की ओट॥
१८। तंबू के खूंटे और आंगन के खूंटे और उन की डोरियां॥ १९।
सेवा के बस्त्र जिसतें पवित्र स्थान में सेवा करें हारून याजक के लिये
पवित्र बस्त्र और उस के बेटों के पवित्र बस्त्र जिसतें याजक के पद में सेवा
करें॥ २०। तब इसराएल के संतानों की समस्त मंडली मूसा के आगे से
चली गई॥ २१। और हर एक जिस के मन ने उसे उभाड़ा और हर एक
अपने मन के अभिलाष से जिस ने जो चाहा मंडली के तंबू के कार्य्य के
कारण और उस के नैवेद्य और उस की समस्त सेवा और पवित्र बस्त्र के
लिये परमेश्वर की भेंट लाया॥ २२। और वे आये क्या स्त्री क्या पुरुष
जितनों को वांछा हुई और खड़वे और बालियां और कुंडल और
अंगूठियां ये सब सोने के गहने थे और हर एक मनुष्य जिस ने
परमेश्वर के लिये सोने की भेंट दिई॥ २३। और हर एक मनुष्य
जिस के पास नीला और बैंजनी और लाल सूत के झीने वस्त्र और
बकरियों के रोम और मेंढ़ों के लाल चमड़े और तखसों के चमड़े
लाया॥ २४। हर एक जिस ने कि परमेश्वर को रूपे की अथवा
पीतल की भेंट दिई अपनी भेंट परमेश्वर के लिये लाया और जिस किसी
के पास शमशाद की लकड़ी थी सो उसे सेवा के कार्य के लिये लाया॥
२५। और समस्त स्त्रियों ने जो बुद्धिमान थीं अपने अपने हाथों से काता

और अपना काता ऊआ नीला और बैंजनी और लाल और झीने सूत
का वस्त्र लाईं॥ २६। और समस्त स्त्रियों ने जिन के मनों ने उन्हें बुद्धि
में उभाड़ा बकरियों के रोम काते॥ २७। और प्रधान सूर्य्यकांत एफोद
और चपरास पर जड़ने का मणि लाये॥ २८। और सुगंध द्रब्य और
जलाने का तेल और अभिषेक का तेल और सुगंध लाये॥ २९। और
क्या पुरुष और क्या स्त्री जिस का मन चाहा सो समस्त कार्य्य के लिये जो
परमेश्वर ने बनाने को मूसा की ओर से कहा था इसराएल के संतान
परमेश्वर के लिये बांछित भेंट लाये॥

३०। तब मूसा ने इसराएल के संतानों से कहा कि देखो परमेश्वर ने
ऊरी के पुत्र बज़िलिएेल को जो ह्रर का पोता और यहूदाह के कुल का है
नाम लेके बुलाया॥ ३१। और उस ने उसे बुद्धि और समझ में ज्ञान
में और समस्त प्रकार की हथौटी में परमेश्वर के आत्मा से भर दिया॥
३२। और अपनी बुद्धि से हथौटी का कार्य्य निकाले जिसतें सोने और
रूपे और पीतल के कार्य्य करे॥ ३३। और मणि के खोदने और जड़ने
में और काष्ठ के खोदने में जिसतें समस्त प्रकार की हथौटी के कार्य्य
करे॥ ३४। और उस ने उस के और अखिसमक के बेटे अहलिअब को
जो दान के कुल से है मन में डाला॥ ३५। और उन के अंतःकरणों में
ऐसा ज्ञान दिया कि खोदक के और हथौटक के और बूटाकाढ़क के समस्त
कार्य्य में और नीला और बैंजनी और लाल और झीने वस्त्र में और
जोलाहे के कार्य्य में और हथौटी के कार्य्य में जो बुद्धि से निकालते हैं॥

३६ छतीसवां पर्ब्ब।

तब बज़िलिएेल और अहलिअब और सब बुद्धिमानों ने जिन में
परमेश्वर ने बुद्धि और समझ रक्खी थी कि मंदिर के शरण स्थान
की सेवा के समस्त प्रकार के कार्य्य जैसा कि परमेश्वर ने समस्त आज्ञा उन्हें
दिई वैसा उन्हों ने किया॥ २। सो मूसा ने बज़िलिएेल और अहलिअब
और हर एक बुद्धिमान को जिस के हृदय में परमेश्वर ने बुद्धि और समझ
डाली थी और हर एक जिस के मन ने उसे उभाड़ा था कि कार्य्य करने के
लिये पास आवे॥ ३। और उन्हों ने मूसा के हाथ से समस्त भेंट जिसे इसरा-

एल के संतान शरण स्थान की सेवा के कार्य के लिये लाये थे पाई और वे हर बिहान उस के पास मन मनती भेंट लाते थे॥ ४। यहां लों कि सब विद्यमानों ने शरण स्थान के कार्य किये हर एक मनुष्य अपने अपने काम से जो उन्हों ने बनाया था आये॥ ५। और मूसा को कहके बोले कि कार्य की सेवा से जो परमेश्वर ने आज्ञा किई है लोग अधिक लाते हैं॥ ६। तब मूसा ने आज्ञा किई और समस्त छावनी में प्रचार कराया कि क्या पुरुष और क्या स्त्री अब कोई शरण स्थान की भेंट के कार्य के लिये और न बनावे सो लोग लाने से रोके गये॥ ७। क्योंकि जो सामग्री उन के पास थी समस्त कार्य बनाने के लिये बहुत और अधिक थी॥ ८। और तंबू के कार्यकारियों में से हर एक ने जो बुद्धिमान था बटे हुए सूती बस्त्र के नीले और बैंजनी और लाल हथौटी के कार्य से करोबीम के साथ दस ओट बनाईं॥ ९। हर ओट की लंबाई अठाइस हाथ और उस की चौड़ाई चार हाथ सब ओट एक नाप की॥ १०। और पांच ओट को एक दूसरे में मिलाया और पांच ओट एक दूसरे में मिलाया॥ ११। और उस ने एक ओट के कोर पर अनबंट से लेके जोड़ पर नीले तुकमे बनाये इसी रीति से दूसरी ओट के अत्यंत अलंग में दूसरे के जोड़ पर बनाये॥ १२। और उस ने एक ओट के अंचल में पचास तुकमे बनाये और पचास तुकमे दूसरी ओट के मिलाने के खूंट में बनाये जिसतें तुकमे एक दूसरे में जुट जायें॥ १३। और उस ने सोने की पचास घुंण्डी बनाई और उन घुंण्डियों से ओट को जोड़ा जिसतें एक तंबू हो गया॥ १४। और उस ने बकरी के रोम के ग्यारह ओट बनाये जिसतें तंबू के लिये ढपना हो॥ १५। एक ओट की लंबाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ ग्यारहो ओट एकही परिमाण की बनाईं॥ १६। और उस ने पांच ओट को अलग जोड़ा और छः ओट को अलग॥ १७। और उस में पचास तुकमें एक ओट के खूंट में जो अंत के खूंट के जोड़ में है और पचास तुकमे दूसरी ओट के खूंट में बनाये॥ १८। और उस ने तंबू को जोड़ने के लिये जिसतें एक होजावे पीतल की पचास घुंण्डियां बनाईं॥ १९। और उस ने मेंढ़ों के रंगे हुए लाल चमड़ों से और तखसों के चमड़ों से तंबू के लिये ढांपन बनाया॥

२०। और उस ने तंबू के लिये शमशाद की लकड़ी से खड़े पाट बनाये॥ २१। हर पाट की लंबाई दस हाथ और उस की चौड़ाई डेढ़ हाथ॥ २२। हर पाट में दो दो पाए जो एक दूसरे से समान अंतर में थे उस ने तंबू के समस्त पाटों के लिये योंही बनाया॥ २३। और उस ने तंबू के लिये पाट बनाया बीस दक्षिण की ओर के लिये॥ २४। और उस ने उन बीस पाटों के नीचे के लिये रूपे के चालीस पाए बनाये हर पाट के नीचे के लिये दो दो उस के फलों के समान॥ २५। और दूसरे पाट की पाए के लिये तंबू की दूसरी अलंग जो उत्तर की ओर है बीस पाट बनाये॥ २६। और चालीस रूपे के पाए हर एक पाट के नीचे दो पाए एक पाट के और उस में तंबू की पश्चिम अलंग के लिये छः पाट बनाये॥ २७। और तंबू की दोनों अलंग में कोने के लिये दो पाट बनाये॥ २८। और वे नीचे जोड़े गये और एक कड़ी में ऊपर से जोड़े गये इसी रीति से उस ने दोनों के दोनों कोनों में जोड़ा॥ ३०। और आठ पाट और उन की चांदी के सोलह पाए थे एक पाट के नीचे दो दो पाए॥ ३१। और शमशाद काष्ठ से अड़ंगे बनाये तंबू की एक अलंग के पाटों के लिये पांच॥ ३२। और तंबू की दूसरी अलंग के पाट के लिये पांच अड़ंगे और तंबू की पश्चिम अलंगों के लिये पांच॥ ३३। और उस ने मध्य का अड़ंगा ऐसा बनाया कि एक सिरे से दूसरे सिरों के पाटों में प्रवेश होवे॥ ३४। और पाटों को सोने से मढ़ा और उन के कड़े सोने के बनाये अड़ंगों के लिये स्थान और अड़ंगों को सोने से मढ़ा॥ ३५। और नीला और बैंजनी और लाल रंग और बटे हुए झीने सूती बस्त्र से एक घूंघट बनाया हथौटी के कार्य से उसे करोबीम के साथ बनाया॥ ३६। और उस के लिये शमशाद के चार खंभे बनाये और उन्हें सोने से मढ़ा और उन के आंकड़े सोने के और उन के लिये चार पाए चांदी के ढाल कर बनाये॥ ३७। और वुह नीला और बैंजनी और लाल और बटा हुआ झीने सूत से बूटा काढ़ी हुई तंबू के द्वार के लिये एक ओट बनाई॥ ३८। और उस के पांच खंभे आंकड़े सहित बनाये और उन के सिरे और कंगनी सोने से मढ़े परंतु उन के पांच पाए पीतल के।

३७ सैंतीसवां पर्व्व ।

और बज़िलिएल ने शमशाद् काष्ठ से मंजूषा को बनाया जिस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊंचाई डेढ़ हाथ की॥ २। और उसे चोखे सोने से भीतर बाहर मढ़ा और उस की चारों ओर के लिये एक सोने की कंगनी बनाई॥ ३। और उस ने उस के चार कोनों के लिये सोने के चार कड़े ढाले दो कड़े उस की एक अलंग और दो कड़े उस की दूसरी अलंग॥ ४। और शमशाद् की लकड़ी के बहंगर बनाये और उन्हें सोने से मढ़ा॥ ५। और उस ने बहंगरों को मंजूषा की अलंग के कड़ों में डाला कि मंजूषा को उठावें॥ ६। और उस ने दया के आसन को चोखे सोने से बनाया उस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ॥ ७। और सोने के दो करोबी बनाये एक टुकड़े से पीट के दया के आसन के दोनों खूंट में उन्हें बनाया॥ ८। एक करोबी इस खूंट में और एक करोबी उस खूंट में दया के आसन में से उस ने करोबियों को दोनों खूंट में बनाया॥ ९। और करोबियों ने अपने पंख ऊपर फैलाये और अपने पंख से दया के आसन को ढांप लिया उन के मुंह एक दूसरे की ओर थे दया के आसन की ओर उन के मुंह थे॥ १०। और उस ने मंच को शमशाद् की लकड़ी से बनाया उस की लंबाई दो हाथ और चौड़ाई एक हाथ और उस की ऊंचाई डेढ़ हाथ॥ ११। और उसे चोखे सोने से मढ़ा और उस के लिये चारों ओर सोने का एक कलस बनाया॥ १२। और उस ने उस के लिये चार अंगुल की एक कंगनी बनाई और उस कंगनी के लिये चारों ओर सोने के कलस बनाये॥ १३। और उस ने उस के लिये सोने के चार कड़े ढाले और उन्हें उस के चारों पायों के चारों कोनों में लगाया॥ १४। कंगनी के सन्मुख कड़े थे बहंगर के स्थान मंच उठा ने के लिये॥ १५। और उस ने बहंगरों को शमशाद् की लकड़ी का बनाया और उन्हें सोने से मढ़ा मंच उठाने के लिये॥ १६। और मंच पर के पात्र और उस के थाल और उस के कटोरे और उस की थालियां और उस की कटोरियां ढपने के लिये निर्म्मल सोने के बनाये॥ १७। और उस ने

दीअट को निर्म्मल सोने से गढ़ के बनाया और उस की डंडी और डाली और कटोरियां और कलियां और उस के फूल एक ही से थे॥ १८। और उस के अलंगों से छः डालियां निकलती थीं दीअट की एक अलंग से तीन डालियां और दीअट की दूसरी अलंग से तीन डालियां॥ १९। तीन कटोरियां बदाम की नाईं हर एक डाली में थीं और कली और फूल उन्हीं छओ डालियों में जो दीअट से निकलती थीं॥ २०। और दीअट में चार कटोरियां बदाम की नाईं बनी हुई थीं उस की कलियां और फूल॥ २१। और उस की दो दो डालियों के नीचे एक एक कली थी छः डालियों के समान जो उस्से निकलती थीं॥ २२। कलियां और डालियां उन की उसी से थीं ये सब के सब निर्म्मल सोने से गढ़े हुए थे॥ २३। और उस के लिये सात दीपक और उस के फूल की कतरनियां और उस के पात्र निर्म्मल सोने से बनाये॥ २४। और उस ने उस के समस्त पात्रों को एक तोड़ा निर्म्मल सोने का बनाया॥ २५। और धूप बेदी को शमशाद की लकड़ी से बनाया जिस की लंबाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ चौकोर बनाया और उस की ऊंचाई दो हाथ और उस के सींग उसी से थे॥ २६। और उस का छपना और उस की चारों ओर की अलंग और उस के सींग निर्म्मल सोने से मढ़े और उस के लिये सोने के चारों ओर कलस बनाये॥ २७। और उस ने उस के कलस के नीचे के लिये उस के दोनों कोनों के पास उस की दोनों अलंगों पर जिसतें उस के उठाने के बहंगर के स्थान होवें सोने के दो कड़े बनाये॥ २८। और उस ने बहंगरों को शमशाद की लकड़ी से बनाया और उन्हें सोने से मढ़ा।

२९। और अभिषेक का पवित्र तेल और गंधी के कार्य के समान सुगंध द्रब्य से चोखी धूप बनाई।

३८ अठतीसवां पर्ब्ब॥

और उसने यज्ञबेदी को शमशाद की लकड़ी से बनाया उस की लंबाई पांच हाथ और चौड़ाई पांच हाथ चौखूंटी और उस की ऊंचाई तीन हाथ॥ २। और उस के चारों कोनों पर सींग बनाये उस के सींग उस में से थे और उस ने उन्हें पीतल से मढ़ा॥ ३। और उस ने

यज्ञबेदी के समस्त पात्र बटलोही और फावड़ियां और कटोरे और मांस
के कांटे और अंगेठियां उस के समस्त पात्र पीतल से बनाये॥ ४। और
उस ने बेदी के नीचे के लिये पीतल की एक झंझरी बनाई॥ ५। और
उस ने पीतल की झंझरी के चारों कोनों के लिये बहंगर के स्थान पर
चार कड़े बनाये॥ ६। और उस ने बहंगरों को शमशाद की लकड़ी से
बनाया और उन्हें पीतल से मढ़ा॥ ७। और उस ने बहंगरों को बेदी के
उठाने के लिये अलंगों के कड़ों में डाला उस ने बेदी को पटियों से पोला
बनाया॥ ८। और उस ने स्नान पात्र और उस की चौकी पीतल से
बनाई उन स्त्रियों के दर्पण से जो मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठी
होती थीं॥ ९। और उस ने आंगन बनाया उस के दक्षिण दिशा
के दक्षिण ओर झीने बटे हुए सूती बस्त्र से ओट सौ हाथ की बनाई॥
१०। उन के बीस खंभे और उन के पीतल के बीस पाए और खंभों के
आंकड़े और उन की सामी चांदी की॥ ११। और उत्तर दिशा के
लिये सौ हाथ उन के बीस खंभे उन के पीतल के बीस पाए खंभों के
आंकड़े और सामी चांदी की॥ १२। और पश्चिम की ओर पचास हाथ
की ओट और उन के दस खंभे और उन के दस पाए और खंभों के आंकड़े
और सामी उन की चांदी की॥ १३। और पूर्ब दिशा की पूर्ब ओर के
लिये पचास हाथ॥ १४। ओट पंद्रह हाथ की आंगन पर उन के
खंभे तीन और उन के पाए तीन॥ १५। और आंगन के द्वार की
दूसरी अलंग के लिये इधर उधर पंद्रह हाथ की ओट उन के तीन
खंभे और उन के तीन पाए॥ १६। आंगन की चारों ओर की समस्त
ओट बटे हुए झीने सूती बस्त्र की थी॥ १७। और खंभों के पाए
पीतल के और खंभों के आंकड़े और उन की सामी चांदी की और उन के
माथे चांदी से मढ़े हुए और आंगन के सब खंभे चांदी के शलाके के थे॥
१८। और आंगन के द्वार की ओट बूटा कढ़े हुए नीले और बैंजनी
और लाल और बटे हुए झीने सूती बस्त्र की थी उस की लंबाई बीस
हाथ और चौड़ाई पांच हाथ आंगन की ओट से मिलती थी॥ १९।
और उन के चार खंभे और उन के चार पाए पीतलके उन के आंकड़े
चांदी के और उन के माथे और सामी चांदी से मढ़े हुए थे॥ २०। और

तंबू की और आंगन की चारों ओर के सब खूंटे पीतल के॥ २१। हारून याजक के पुत्र ईतमर के हाथ से लावियों की सेवा के लिये मूसा की आज्ञा के समान साक्षी के तंबू का लेखा यह है॥ २२। यहूदा के कुल से हूर के नाती ऊरी के बेटे बजिलिएल ने सब कुछ जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी बनाया॥ २३। और उस के साथ दान के कुल का अखिसमक का बेटा अहलिअब था जो खोदने के और हथौटी के कार्य में और नीला और बैंजनी और लाल बूटा काढ़ने में और झीने वस्त्र में॥ २४। समस्त सोना जो जो पवित्र कार्यों में उठा था अर्थात् भेंट का सोना सो उंतीस तोड़े और सात सौ तीस शेकल शरण स्थान के शेकल से था॥ २५। और मंडली की गिनती में की चांदी एक सौ तोड़े और एक सहस्र सात सौ पछहत्तर शेकल शरण स्थान के शेकल के समान था॥ २६। हर मनुष्य के लिये एक बीका अर्थात् आधा शेकल शरण स्थान के शेकल के समान हर एक के लिये बीस बरस से और ऊपर जिस की गिनती हुई छः लाख तीन सहस्र साढ़े पांच सौ थे॥ २७। और चांदी के सौ तोड़े से शरण स्थान के पाए और घूंघट के पाए ढाले गये सौ तोड़े के सौ पाए एक तोड़े का एक पाया॥ २८। और एक सहस्र सात सौ पछहत्तर शेकल से उस ने खंभों के आंकड़े बनाये और उन के माथे मढ़े और उन में सामी लगाईं॥ २९। और भेंट का पीतल जो सत्तर तोड़े और दो सहस्र चार सौ शेकल थे॥ ३०। और उस ने उस्से मंडली के तंबू के द्वार के लिये पाए और पीतल की यज्ञबेदी और उस की पीतल की झंझरी और बेदी के समस्त पात्र बनाये॥ ३१। और आंगन की चारों ओर के पाए और आंगन के द्वार के पाए और तंबू के सब खूंटे और आंगन की चारों ओर के सब खूंटे।

३९ उंतालीसवां पर्ब्ब॥

और नीले और बैंजनी और लाल से उन्हों ने पवित्र सेवा के लिये सेवा के कपड़े बनाये और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी हारून के लिये पवित्र वस्त्र बनाये॥ २। और उस ने एफोद को सोने और नीले और बैंजनी और लाल और झीने बटे हुए सूत से बनाया॥

३। श्रीर उन्हों ने सोने के पतील पतील पत्तर गढ़े श्रीर तार खींचे जिसतें उन्हें नीले में श्रीर बैंजनी में श्रीर लाल में श्रीर भीने सूती बस्त्र के साथ चित्रकारी की क्रिया से बनावें॥ ४। श्रीर उस के लिये कंधा के टुकड़े बनाये कि जोड़े वुह दोनों खूंट से जोड़ा ङ्गश्रा था॥ ५। श्रीर उस के एफोद का पटुका जो उस के कार्य के समान सोने का श्रीर नीले श्रीर बैंजनी श्रीर लाल श्रीर बटे ङ्गए भीने सूत से जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को श्राज्ञा किई थी उसी में से था ॥ ६। श्रीर वे बैदूर्यमणि को श्रीर उन्हें सोने के ठिकानें में जड़ा श्रीर उन में इसराएल के सतानें के नाम खोदे जैसा कि श्रंगूठी खोदी जाती है॥ ७। कि मणि इसराएल के संतानें के स्मरण के लिये उन्हें एफोद के कंधें में रक्खा जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को श्राज्ञा किई थी॥ ८। श्रीर चपरास को हथैाटी के कार्य से एफोद की नाईं सोने श्रीर नीले श्रीर बैंजनी श्रीर लाल श्रीर बटे ङ्गए भीने सूती बस्त्र से बनाया॥ ९। वुह चैाकोर था उन्हों ने चपरास को दोहरा बनाया उस की लंबाई श्रीर चैाड़ाई बित्ता भरकी दोहरी थी॥ १०। श्रीर उन्हों ने उस में मणि की चार पांती जड़ीं पहिली पांती में माणिक्य श्रीर पद्मराग श्रीर लालड़ी॥ ११। दूसरी पांती में एक पन्ना एक नीलम एक हीरा॥ १२। तीसरी पांती में एक लशम एक सूर्यकांत श्रीर एक नीलमणि॥ १३। चैाथी पांती में एक बैदूर्य श्रीर एक फीरोजा चंद्रकांत सोने के घरें में जड़े ङ्गए थे॥ १४। इन मणिन में इसराएल के संतानें के नाम के समान बारहें के नाम के समान बारह भेद के समान हर एक का नाम खोदा ङ्गश्रा था जैसी श्रंगूठी खोदी जाती है॥ १५। श्रीर चपरास की कोरें में निर्मल सोने की गुथी ङ्गई सीकरें बनाईं॥ १६। श्रीर उन्हों ने सोने के दो घर श्रीर सोने के दो कड़े बनाये श्रीर दोनों कड़ें को चपरास के दोनों कड़ें में लगाया॥ १७। श्रीर उन्हों ने गुथी ङ्गई सोने की दो सीकरें चपरास की कोरें के दोनों कड़ें में लटकाईं॥ १८। श्रीर गुंथी ङ्गई दो सीकरें के दोनों खूंट को उन्हों ने दोनों घरें में दृढ़ किया श्रीर उन्हें एफोद के दोनों पट्टों के टुकड़ों के श्रागे लगाया॥ १९। श्रीर उन्हों ने सोने के दो कड़े बनाये श्रीर उन्हें चपरास की दो कोरें में लगाया उस खूंट पर जो एफोद के भीतर की श्रीर था॥ २०। श्रीर उन्हों

ने सोने के दो कड़े बनाये श्रीर उन्हें एफोद के नीचे की दो अलंग में उस
के आगे की ओर उस के जोड़ के सन्मुख एफोद के पटुके के ऊपर लगाये ॥
२१। जिसतें वुह एफोद के पटुके के ऊपर होवे और जिसतें एफोद से
चपरास खुल न जाय जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उन्हों
ने चपरास को उस के कड़ों से एफोद के कड़ों में नीले गोटों से बांधा॥
२२। और उस ने एफोद के वस्त्र को बिना बटे नीले कार्य से बनाया॥
२३। और उसी वस्त्र के मध्य में एक छेद हो और उस छेद की चारों
ओर और उस के घेरे के घर में बिने ज्ञए कार्थ के गोटे हों जैसा कि भिलम
का मुंह होता है जिसतें फटने न पावे॥ २४। और उन्हों ने उस वस्त्र के
खूंट के घेरे में नीले और बैंजनी और लाल रंग और बटे ज्ञए सूत के अनार
बनाये॥ २५। और उन्हों ने चोखे सोने की घंटियां बनाईं और घंटियों को
उस वस्त्र के अनार के मध्य में लगाया अनार के मध्य में चारों ओर लगाया
२६। घंटी और अनार घंटी और अनार बागे के अंचल की चारों
ओर सेवा के लिये जैसा कि परमेश्वर नें मूसा को आज्ञा किई थी॥ २७।
और भीने सूत की कुरतियां हारून और उस के बेटों के लिये बिने ज्ञए
कार्य से बनीं॥ २८। भीने सूती पगड़ी और मुकुट और बटे ज्ञए
भीने सूती सुथार॥ २९। और बटे ज्ञए भीने सूती वस्त्र का पटुका और
नीला और बैंजनी और लाल बूटा काढ़ा ज्ञआ जैसा कि परमेश्वर ने
मूसा को आज्ञा किई थी बनाया॥ ३०। और पवित्र मुकुट के पत्र को
निर्मल सोने से बनाया और उस में खोदी ज्ञई अंगूठी की नाईं यह खोदा
परमेश्वर के लिये पवित्रता॥ ३१। और उस में एक नीला गोटा
बांधा जिसतें मुकुट के ऊपर हो जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
किई थी॥ ३२। इस रीति से मंडली के तंबू का कार्य बन गया और
इसराएल के संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी
वैसा ही किया॥ ३३। और वे तंबू को और उस की समस्त सामग्री को
और उस की घुण्डियों को उस की पटिया और उस के अड़ंगे और उस
के खंभे और उस के पाए मूसा के पास लाये॥ ३४। रंगे ज्ञए लाल चमड़े
का घटाटोप और तखसों के चमड़े का घटाटोप और घटाटोप का घूंघट॥
३५। साक्षी की मंजूषा और उस के बहंगर और दया का आसन॥

३६। मंच ओर उस के समस्त पात्र ओर भेंट की रोटी॥ ३७। पवित्र
दीअट उस के दीपक समेत ओर दीपक जो बिधि से रक्खे जायें ओर
उस के समस्त पात्र ओर जलाने का तेल॥ ३८। ओर सोने की बेदी
ओर अभिषेक का तेल ओर सुगंध धूप ओर तंबू के द्वार की ओट॥
३९। पीतल की बेदी ओर उस की पीतल की झंझरी ओर उस के
बहंगर ओर उस के समस्त पात्र स्नान पात्र ओर उस की चौकी॥ ४०।
आंगन की ओट उस के खंभे उस के पाए ओर आंगन के द्वार की
ओट उस की रस्सियां ओर खूंटे ओर मंडली के तंबू के लिये तंबू की
सेवा के समस्त पात्र॥ ४१। पवित्र स्थान में सेवा के लिये सेवा के बस्त्र
ओर हारून याजक के लिये पवित्र बस्त्र ओर उस के बेटों के बस्त्र कि
याजक के पद में सेवा करें॥ ४२। जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
किई थी वैसे ही इसराएल के संतानों ने सब काम किये॥ ४३। ओर
मूसा ने सब काम को देखा ओर देखो कि जैसा परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा
किई थी वैसाही उन्हों ने किया तब उस ने उन्हें आशीष दिई॥

४० चालीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि पहिले मास के पहिले
दिन तंबू को जो मंडली का तंबू है खड़ा कर॥ ३। ओर उस में साक्षी
की मंजूषा रख ओर मंजूषा पर घूंघट डाल॥ ४। ओर मंच को भीतर
ले जा ओर उस पर की बस्तु उस पर बिधि से रख फिर दीअट भीतर
ले जा ओर उस के दीपक बार॥ ५। ओर धूप के लिये सोने की बेदी
को साक्षी की मंजूषा के आगे रख ओर तंबू के द्वार पर ओट रख॥
६। ओर यज्ञबेदी को तंबू के द्वार के आगे रख मंडली के तंबू के आगे॥
७। फिर स्नान पात्र मंडली के तंबू ओर बेदी के बीच में रख ओर उस में
पानी डाल॥ ८। फिर आंगन की चारों ओर खड़ा कर ओर ओट
को आंगन के द्वार पर टांग॥ ९। फिर अभिषेक का तेल ले ओर तंबू
को ओर सब जो उस में है अभिषेक कर ओर उसे पवित्र कर ओर उसे
ओर उस के समस्त पात्र को ओर वुह पवित्र किया जायगा॥ १०। ओर
बेदी को ओर उस के समस्त पात्र को अभिषेक कर ओर बेदी को पवित्र

कर तब बेदी अति पवित्र होगी ॥ ११। और स्नान पात्र और उस की चौकी को भी अभिषेक कर और उसे पवित्र कर ॥ १२। और हारून और उस के बेटों को मंडली के तंबू के द्वार के समीप ला और उन को पानी से नहला ॥ १३। और हारून को पवित्र बस्त्र पहिना और उसे अभिषेक कर और उसे पवित्र ठहरा जिसतें वुह मेरे लिये याजक के पद में सेवा करे ॥ १४। और उस के बेटों को समीप ला और उन्हें कुरतियां पहिना ॥ १५। और उन्हें अभिषेक कर जैसे उन के पिता को अभिषेक किया जिसतें वे मेरे लिये याजक होवें क्योंकि उन के अभिषेक का होना निश्चय सनातन की याजकता उन की समस्त पीढ़ियों में होगी ॥ १६। जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने वैसाही किया ॥

१७। और दूसरे बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में तंबू खड़ा हो गया ॥ १८। और मूसा ने तंबू को खड़ा किया और उस के पाए दृढ़ किये और उस के पाट खड़े किये और उस के अड़ंगे प्रवेश किये और उस के खंभे खड़े किये ॥ १९। और उस ने तंबू को तंबू पर फैलाया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने तंबू के घटाटोप को उस के ऊपर रक्खा ॥

२०। उस ने साक्षी को मंजूषा में रक्खा और बहंगर को मंजूषा के ऊपर रक्खा और दया के आसन को मंजूषा के ऊपर रक्खा ॥ २१। और वुह मंजूषा को तंबू के भीतर लाया और घूंघट टांग दिये और साक्षी की मंजूषा को ढांप दिया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥ २२। और घूंघट के बाहर तंबू की उत्तर अलंग उस ने मंडली के तंबू में मंच को रक्खा ॥ २३। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसाही उस ने रोटी को बिधि से उस पर परमेश्वर के आगे रक्खा ॥ २४। फिर उस ने दीअट को मंडली के तंबू में मंच के सन्मुख तंबू की दक्षिण अलंग रक्खा ॥ २५। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने परमेश्वर के आगे दीपक को बारा ॥ २६। और उस ने सोने की बेदी को मंडली के तंबू में घूंघट के आगे रक्खा ॥ २७। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उस

पर सुगंध धूप जलाया॥ २८। फिर तंबू के द्वार पर ओट को टांगा॥
२९। और यज्ञबेदी को तंबू के द्वार पर मंडली के तंबू के पास खड़ा
किया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उस
पर होम की भेंट और मांस की भेंट चढ़ाई॥ ३०। और उस ने स्नान
पात्र को मंडली के तंबू के और यज्ञबेदी के मध्य में रक्खा और नहाने
के लिये उस में पानी डाला॥ ३१। तब उस्से मूसा और हारून और
उस के बेटों ने अपने हाथ पांव धोये॥ ३२। जब वे मंडली के तंबू में
प्रवेश करते और यज्ञबेदी के पास आते जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को
आज्ञा किई थी नहाते॥ ३३। फिर उस ने तंबू की और बेदी की
चारों ओर आंगन पर और आंगन के द्वार पर ओट टांगी सो मूसा ने
सब कार्य पूरा किया॥ ३४। तब मेघ ने मंडली के तंबू को ढांपा और
तंबू में परमेश्वर का तेज भर गया॥ ३५। और मूसा मंडली के तंबू में
प्रवेश न कर सका इस लिये कि मेघ उस पर ठहरा था और तंबू परमेश्वर
के तेज से भरा था॥ ३६। और जब मेघ तंबू पर से ऊपर उठाया
जाता था तब इसराएल के संतान अपनी समस्त यात्रा में बढ़ जाते थे॥
३७। परंतु जब मेघ ऊपर उठाया न जाता था तब वे यात्रा न करते
थे॥ ३८। क्योंकि दिन को परमेश्वर का मेघ और रात को आग तंबू
पर इसराएल के सारे घरानें की दृष्टि में उन की समस्त यात्रां में
ठहरता था॥

मूसा की तीसरी पुस्तक जो लैव्यव्यवस्था कहावती है।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

और परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और मंडली के तंबू में से यह
बचन उसे कहा॥ २। कि इसराएल के संतानों से बाल और
उन्हें कह कि यदि कोई तुम्में से परमेश्वर के लिये भेंट लावे तो तुम ढोर
में से अर्थात् गाय बैल और भेड़ बकरी में से अपनी भेंट लाओ॥ ३।
यदि उस की भेंट गाय बैल में से होम का बलिदान होवे तो निष्खोट
नर होवे वुह मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे अपनी
प्रसन्नता के लिये लावे॥ ४। और वुह होम की भेंट के सिर पर
अपना हाथ रक्खे और वुह उस के प्रायश्चित्त के लिये ग्रहण किया
जायगा॥ ५। और वुह उस बैल को परमेश्वर के आगे बलि करे और
हारून के बेटे याजक लोहू को निकट लावें और उस लोहू को बेदी के
चारों ओर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है छिड़कें॥ ६। तब वुह
उस होम के बलिदान की खाल निकाले और उसे टुकड़ा टुकड़ा करे॥
७। फिर हारून के बेटे याजक बेदी पर आग रक्खें और उस पर
लकड़ी चुनें॥ ८। और हारून के बेटे याजक उस के टुकड़ों को और
सिर और चिकनाई को उन लकड़ियों पर जो बेदी की आग पर हैं
बिधि से धरें॥ ९। परंतु उस का ओझ और पगों को पानी से धोवे
और याजक सभों को बेदी पर जलावे जिसतें होम का बलिदान होवे
जो आग से परमेश्वर के सुगंध के लिये भेंट किया गया॥ १०। और
यदि उस की भेंट झुंड में से अर्थात् भेड़ बकरी में से होम के बलिदान के

लिये होवे तो वुह निष्खोट नरुख लावे॥ ११। और उसे परमेश्वर के आगे बेदी की उत्तर दिशा में बलि करे और हारून के बेटे याजक उस के लोहू को बेदी पर चारों ओर छिड़कें॥ १२। फिर वुह उस के टुकड़ों और सिर और चिकनाई को अलग अलग करे और याजक उन्हें उन लकड़ियों पर जो बेदी की आग पर हैं चुने॥ १३। परंतु ओझ और पगों को पानी में धोवे और याजक सभों को लेके बेदी पर जलावे यह होम का बलिदान जो परमेश्वर के सुगंध के लिये भेंट किया गया॥ १४। और यदि उस के होम का बलिदान परमेश्वर की भेंट के लिये पक्षियों में से होवे तो वुह पिण्डुकी अथवा कपोत के बच्चों में से भेंट लावे॥ १५। और याजक उसे बेदी पर लाके उस का सिर मरोड़ डाले और उसे बेदी पर जला दे और उस के लोहू को बेदी की अलंग पर निचोड़े। १६। और उस के झोझ को पर सहित निकाल के बेदी की पूर्ब अलंग राख के स्थान में फेंक दे॥ १७। और वुह उसे उस के डैनों सहित काटे परंतु अलग न कर डाले तब याजक बेदी की आग पर की लकड़ियों पर उसे जलावे यह होम का बलिदान जो परमेश्वर के सुगंध के लिये आग से भेंट किया गया।

२ दूसरा पर्ब्ब।

और जब कोई भोजन की भेंट परमेश्वर के लिये लावे तो उस की भेंट चोखा पिसान हो और वुह उस पर तेल डाल के उस के ऊपर गंधरस रक्खे॥ २। और वुह उसे हारून के बेटों के पास जो याजक हैं लावे और वुह उस पिसान में से और तेल में से और समस्त गंधरस सहित मुट्ठी भर लेवे और याजक उस के स्मरण को बेदी पर जलावे यह आनंद का सुगंध परमेश्वर की भेंट के लिये है॥ ३। और भोजन की भेंट का उबरा हुआ हारून और उस के बेटों का होगा यह होम की भेंट में से परमेश्वर के लिये अत्यंत पवित्र है॥ ४। यदि तुम्हारी भेंट भोजन की भेंट भट्ठी में की पक्की हुई होवे तो अखमीरी पिसान अथवा अखमीरी चपातियां तेल से चुपड़ी हुई होवें॥ ५। और यदि तेरी भेंट भोजन की भेंट तवे की होवे अखमीरी तेल से मिली हुई चोखे

पिसान की होवे॥ ६। उसे टुकड़ा टुकड़ा करना और उस पर तेल डालना यह भोजन की भेंट है॥ ७। और यदि तेरी भेंट भोजन की भेंट कराही में की होवे तो चोखा पिसान तेल सहित बने॥ ८। और तू भोजन की भेंट को जो परमेश्वर के लिये इन बस्तुन से बनी है ला और याजक के आगे धर दे और वुह उसे यज्ञबेदी के आगे लावे॥ ९। और याजक उस भोजन की भेंट में से उस के स्मरण के लिये कुछ लेवे और बेदी पर जलावे यह परमेश्वर के लिये सुगंध की भेंट आग से बनी है॥ १०। और जो कुछ भोजन की भेंट में से बच रहा है सो हारून और हारून के बेटों का है यह भेंट अत्यंत पवित्र परमेश्वर के लिये आग से बनी है॥ ११। कोई भोजन की भेंट जो तुम परमेश्वर के लिये लाओ खमीर से न बने क्योंकि खमीर और नई मधु परमेश्वर के लिये किसी भेंट में न जलाया जावे॥ १२। पहिले फलों की भेंट जो है तुम उन्हें परमेश्वर के आगे लाओ परंतु सुगंध के लिये बेदी पर जलाई न जावे॥ १३। और तू अपने भोजन की हर एक भेंट को नोन से लोनी कीजियो और तेरे भोजन की भेंट अपने ईश्वर के नियम के नोन से रहित न होने पावे अपनी समस्त भेंटों में नोन की भेंट लाइयो॥ १४। और यदि तू पहिले फलों से परमेश्वर के लिये भोजन की भेंट लावे तो अपने पहिले फलों के भोजन की भेंट अन्न की हरी बालें भुनी हुई अर्थात् भरी बालों में से अन्न पीटा हुआ॥ १५। उस पर तेल डालियो और गंधरस ऊपर रखियो यह भोजन की भेंट है॥ १६। और पीटे हुए अन्न में से और उस के तेल में से और उस के समस्त गंधरस सहित याजक जलावे यह आग से परमेश्वर के लिये भेंट है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

और यदि उस की भेंट कुशल का बलिदान होवे और वुह गाय बैल में से लावे चाहे नर अथवा स्त्री वर्ग होवे परमेश्वर के आगे निष्खोट लावे॥ २। और वुह अपना हाथ अपनी भेंट के सिर पर रक्खे और मंडली के तंबू के द्वार पर उसे बलि करे और हारून के बेटे जो याजक हैं उस के लोहू को बेदी पर चारों ओर छिड़कें॥ ३। और वुह कुशल

की भेंट के बलिदान में से परमेश्वर के लिये आग की भेंट लावे चिकनाई जो ओझ को ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझ पर है॥ ४। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे॥ ५। और हारून के बेटे उन्हें बेदी के ऊपर होम के बलिदान पर आग की लकड़ियों पर जलावें यह परमेश्वर के लिये सुगंध जो आग से भेंट किया गया॥ ६। और यदि उस की भेंट कुशल की भेंट का बलिदान परमेश्वर के लिये भेड़ बकरी से नरुख अथवा स्त्री बर्ग से होवे तो वुह उसे निष्खोट चढ़ावे॥ ७। और यदि वुह अपनी भेंट के लिये मेम्ना लावे वुह उसे परमेश्वर के आगे भेंट देवे॥ ८। और वुह अपना हाथ अपनी भेंट के सिर पर रक्खे और उसे मंडली के तंबू के आगे बलि करे और हारून के बेटे उस के लोहू को बेदी पर चारों ओर छिड़कें॥ ९। और वुह कुशल के बलिदान में से कुछ होम का बलिदान परमेश्वर के लिये लावे उस की चिकनाई और समस्त पूंछ रीढ़ से अलग करके और चिकनाई जो ओझों को ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझों पर है॥ १०। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों के पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे॥ ११। याजक उसे बेदी पर जलावे यह भेंट का भोजन आग से बना हुआ परमेश्वर के लिये है॥ १२। और यदि उस का बलिदान बकरी होय तो परमेश्वर के आगे लावे॥ १३। वुह अपना हाथ उस के सिर पर रक्खे और उसे मंडली के तंबू के आगे बलि करे और हारून के बेटे उस के लोहू को बेदी पर चारों ओर छिड़कें॥ १४। तब वुह उस में से अपनी भेंट लावे जो भेंट परमेश्वर के लिये होम से बने चिकनाई जो ओझ को ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझ पर है॥ १५। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे॥ १६। और याजक उन्हें बेदी पर जलावे वुह भेंट का भोजन आग से परमेश्वर के सुगंध के लिये बना है सारी चिकनाई परमेश्वर की॥ १७। यह तुम्हारी बस्तियों में तुम्हारी पीढ़ियों के लिये सनातन की बिधि है जिसतें तुम कुछ चिकनाई और लोहू न खाओ॥

४ चैाथा पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला॥ २। कि इसराएल के
संतानों से कह कि यदि कोई प्राणी परमेश्वर की आज्ञाओं के बिरोध
में अज्ञानता से पाप करे जिस का होना अनुचित था। ३॥ यदि वुह
अभिषेक किया ऊआ याजक लोगों के पाप के समान पाप करे तो वुह
अपने पाप के कारण जो उस ने किया है अपने पाप की भेंट के लिये
निष्खोट एक बछिया परमेश्वर के लिये लावे॥ ४। और वुह उस
बछिया को मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे लावे और
बछिया के सिर पर अपना हाथ रक्खे और बछिया को परमेश्वर के आगे
बलि करे॥ ५। और वुह याजक जो अभिषेक किया ऊआ है उस
बछिया के लोहू से कुछ लेवे और मंडली के तंबू में लावे॥ ६। और
याजक अपनी अंगुली लोहू में डुबो के परमेश्वर के आगे पवित्र स्थान
के घूंघट के साम्ने उस लोहू से सात बार छिड़के॥ ७। और याजक
लोहू से सुगंध बेदी के सींगों पर जो मंडली के तंबू में है परमेश्वर के
आगे लगावे और उस बछिया के उबरे ऊए लोहू को होम की भेंट की
बेदी की जड़ पर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है ढाले॥ ८। और
सारी चिकनाई को पाप की भेंट के बछड़ से अलग करे और जो चिकनाई
ओझ को ढांपती है और सब चिकनाई जो ओझ पर है॥ ९। और
दोनों गुर्द्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे
पर की झिल्ली गुर्द्दे समेत अलग करे॥ १०। जिस रीति से कुशल के
बलिदान की भेंट के बछड़े से अलग किया जाता है और याजक उन्हें
होम की भेंट की बेदी पर जलावे॥ ११। और उस बछड़े की खाल
और उस का समस्त मांस और उस के सिर पांव समेत और उस के
ओझ और उस का गोबर॥ १२। अर्थात् समस्त बछड़ा तंबू के बाहर
निर्मल स्थान में जहां राख डाली जाती है ले जावे और उसे लकड़ियों पर
आग से जलावे राख डाल ने के स्थान पर जलाया जावे॥ १३। और
यदि इसराएल के संतानों की सारी मंडली अज्ञानता से ऐसा पाप करें
जो मंडली की दृष्टि से छिप जावे और वे परमेश्वर की आज्ञाओं में से ऐसा

कुछ करें जो बिपरीत है और अपराधी हो जायें॥ १४। तो जब वुह पाप जो उन्हों ने किया जाना जावे तब मंडली एक बछड़ा पाप के बलिदान के लिये लेवे और मंडली के तंबू के साम्ने लावे॥ १५। और मंडली के प्राचीन अपने हाथ परमेश्वर के आगे उस बछड़े के सिर पर रक्खें और बछड़ा परमेश्वर के आगे बलि किया जावे॥ १६। और याजक जो अभिषेक किया हुआ है उस बछड़े के लोहू में से मंडली के तंबू में लावे॥ १७। और याजक अपनी अंगुली लोहू में डुबो के परमेश्वर के आगे घूंघट के साम्ने सात बार छिड़के॥ १८। और लोहू से बेदी के सींगों पर जो परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू में है लगावे और उबरा हुआ लोहू होम की भेंट की बेदी की जड़ पर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है ढाल दे॥ १९। और उस की सारी चिकनाई निकाल के बेदी पर जलावे॥ २०। और जैसे अपराध के बलिदान के बछड़े से किया था वैसाही इस बछड़े से करे और याजक उन के लिये प्रायश्चित्त करे और वुह उन के लिये क्षमा किया जायगा॥ २१। और उस बछड़े को छावनी से बाहर ले जाय और जैसा उस ने पहिली बछिया को जलाया था वैसा इसे भी जलावे यह मंडली के लिये पाप की भेंट है॥ २२। जब कोई अध्यक्ष पाप करे और अज्ञानता से अपने परमेश्वर की किसी आज्ञा में से कोई ऐसा कार्य करे जो उचित न था और अपराधी होवे॥ २३। अथवा यदि उस का पाप जिसे उस ने किया जाना जावे तब वुह बकरी का निष्खोट नर मेम्ना अपनी भेंट के लिये लावे॥ २४। और अपना हाथ उस बकरे के सिर पर रक्खे और उसे उस स्थान में जहां होम की भेंट बलि होती है परमेश्वर के आगे बलि करे यह पाप की भेंट है॥ २५। और याजक पाप की भेंट के लोहू में से अपनी अंगुली पर लेके भेंट के बलिदान के सींगों पर लगावे और उस का लोहू होम की भेंट की बेदी की जड़ पर ढाले॥ २६। और उस की सब चिकनाई कुशल की भेंट के बलिदान की बेदी पर जलावे और याजक उस के पाप के कारण प्रायश्चित्त करे और उस के लिये क्षमा किया जायगा॥ २७। और यदि उस देश के लोगों में से अज्ञानता से कोई पाप करे और परमेश्वर की आज्ञा के

विरुद्ध अनुचित करे और दोषी होवे॥ २८। अथवा यदि उस का पाप जो उस ने किया है उसे जान पड़े तब वुह अपने पाप के लिये जो उस ने किया है अपनी भेंट के लिये एक स्त्री बर्ग निष्खोट बकरी का एक मेम्ना लावे॥ २९। और अपना हाथ पाप की भेंट के सिर पर रक्खे और पाप की भेंट को भेंट के बलिदान के स्थान में बलि करे॥ ३०। और याजक उस के लोहू में से अपनी अंगुली पर लेवे और जलाने की भेंट की बेदी के सींगों पर लगावे और उस का समस्त लोहू बेदी की जड़ पर ढाले॥ ३१। और उस की सब चिकनाई जिस रीति से कुशल की भेंट के बलिदान की चिकनाई अलग किई जाती है अलग करे और याजक उसे परमेश्वर के सुगंध के लिये बेदी पर जलावे और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वुह उस के लिये क्षमा किया जायगा॥ ३२। और यदि वुह अपने पाप की भेंट के लिये मेम्ना लावे तो वुह एक स्त्री बर्ग निष्खोट लावे॥ ३३। और वुह अपना हाथ अपने पाप की भेंट के सिर पर रक्खे और उसे जहां जलाने की भेंट बलि किई जाती है वहां पाप के लिये बलिदान करे॥ ३४। और याजक पाप की भेंट के लोहू से अपनी अंगुली पर लेके होम की भेंट की बेदी के सींगों पर लगावे और उस का समस्त लोहू बेदी की जड़ पर ढाले॥ ३५। और उस की समस्त चिकनाई जिस रीति से कि कुशल की भेंट के बलिदान की चिकनाई उस मेम्ना से अलग किई जाती है अलग करे और याजक उन्हें परमेश्वर की आग की भेंट के समान बेदी पर जलावे और याजक उस के पाप के लिये जो उस ने किया है यह प्रायश्चित्त करे और वुह उस के लिये क्षमा किया जायगा॥

५ पांचवां पर्ब्ब।

यदि कोई प्राणी पाप करे और किरिया का शब्द सुने और साक्षी होवे चाहे देखा अथवा जाना हो यदि वुह न बतावे तो वुह दोषी होगा॥ २। अथवा यदि कोई प्राणी कोई अपवित्र बस्तु छूये चाहे अपवित्र पशु की लोथ अथवा अपवित्र ढोर की लोथ अथवा अपवित्र रेंगवैया जंतु की लोथ छूये और उस्से अज्ञान होवे तो वुह अपवित्र और

दोषी होगा॥ ३। अथवा यदि वुह मनुष्य की अपवित्रता को छूये हो जिस्से मनुष्य अशुद्ध होता है जब उसे जान पड़े तब वुह दोषी होगा॥ ४। अथवा यदि कोई प्राणी मुंह से बुरा अथवा भला करने को उच्चारे अथवा किरिया खाय और जो कुछ वुह किरिया खाके उच्चारण करे और वुह उस्से गुप्त हो जब उसे जान पड़े तब एक इन में से दोषी होगा॥ ५। और यों होगा कि जब वुह उन में से एक बात का दोषी होवे तो वुह मान लेवे कि मैं ने यह पाप किया है॥ ६। तब वुह अपने अपराध की भेंट अपने पाप के लिये जो उस ने किया है झुंड में से स्त्री बर्ग एक भेड़ अथवा बकरी में से एक मेम्ना अपने अपराध की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे लावे और याजक उस के पाप के लिये प्रायश्चित्त करे॥ ७। और यदि उसे भेड लाने की पूंजी न हो तो वुह अपने किये हुए अपराध के लिये दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे परमेश्वर के लिये लावे एक पाप की भेंट के लिये और दूसरा होम की भेंट के लिये॥ ८। फिर वुह उन्हें याजक पास लावे और वुह पहिले पाप की भेंट चढ़ावे और उस का सिर गले के पास से मरोड़ डाले परंतु अलग न करे॥ ९। और पाप की भेंट के लोहू को बेदी के अलंग पर छिड़के और उबरा हुआ लोहू बेदी की जड़ पर निचोड़े यह पाप की भेंट है॥ १०। और दूसरे को व्यवहार के समान होम की भेंट के लिये चढ़ावे और याजक उस के किये हुए अपराध का प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा किया जायगा॥

११। पर यदि उसे दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे लाने की पूंजी न हो तो वुह अपने पाप की भेंट के लिये सेर भर चोखा पिसान पाप की भेंट के लिये लावे उस पर तेल न डाले न गंधरस रक्खे यह पाप की भेंट है॥ १२॥ तब वुह उसे याजक पास लावे और याजक उस में से स्मरण के लिये अपनी मुट्ठी भर के उस भेंट के समान जो परमेश्वर के लिये आग से होती है बेदी पर जलावे यह पाप की भेंट है॥ १३। और याजक उस पाप के कारण जो उस ने किया इन बातों में से प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा किया जायगा और भोजन की भेंट के समान याजक का होगा॥ १४। फिर परमेश्वर मूसा से बोला॥ १५। कि यदि कोई प्राणी अपराध करे और परमेश्वर की पवित्र वस्तुन में से अज्ञानता से

पाप करे तो वुह अपने अपराध के लिये झुंड में से एक निष्खोट मेढ़ा
पवित्र स्थान के शेकल के समान चांदी के शेकल तेरे मोल के ठहराने के
समान अपराध की भेंट के लिये ईश्वर के आगे लावे॥ १६। और वुह
उस अपराध के कारण जो उस ने पवित्र वस्तु में किया है पलटा देवे और
उस में से पांचवां भाग मिलाके याजक को देवे और याजक उस अपराध
की भेंट में से उस का प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा किया जायगा॥
१७। और यदि कोई प्राणी पाप करे और वही करे जो परमेश्वर की
आज्ञाओं से वर्जित है और यद्यपि वुह नहीं जानता था तथापि वुह
अपराधी है वुह अपने पाप को भोगेगा॥ १८। और तेरे ठहराये हुए
मोल के समान अपराध की भेंट के लिये एक निष्खोट मेढ़ा झुंड में से
याजक पास लावे और याजक उस की अज्ञानता के कारण जिस में उस ने
अंजान की चूक किई और न जाना उस के लिये प्रायश्चित्त करे और
वुह क्षमा किया जायगा॥ १९। यह अपराध की भेंट है उस ने निश्चय
परमेश्वर के बिरुद्ध अपराध किया है॥

६ छठवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि यदि कोई प्राणी पाप
करे और परमेश्वर के बिरुद्ध में अपराध करे और अपने परोसी की
थाती में जो उस पास रक्खी गई थी अथवा साझे में अथवा किसी वस्तु
में जो बरबस लिई जाय अथवा अपने परोसी को छल दिया है॥ ३।
अथवा कोई वस्तु जो खोई गई थी पावे और उस के विषय में झूठ
बोले और झूठी किरिया खाय इन सारी बातों से जो मनुष्य करके पापी
होता है॥ ४। सो इस कारण कि उस ने पाप किया है और दोषी है
वुह उसे जिसे उस ने बरबस लिया है अथवा जो उस ने छल से पाया है
अथवा वुह जो उस पास थाती थी अथवा खोई हुई जो उस ने पाई है
फेर देवे॥ ५। अथवा सब जिस के कारण उस ने झूठी किरिया खाई है
वुह मूल को भर देवे और पांचवां भाग उस में मिलावे और जिस का
आता हो वुह अपने अपराध की भेंट के दिन में उस को फेर देवे॥ ६।
और परमेश्वर के लिये वुह अपने पाप की भेंट झुंड में से एक निष्खोट

मेढ़ा तेरे ठहराये ज्डए मोल के समान अपराध की भेंट के लिये याजक पास लावे॥ ७। और याजक उस के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे और उस बात में उस ने जो कोई अपराध किया है उस के लिये क्षमा किया जायगा॥ ८। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ९। कि हारून और उस के बेटों को आज्ञा कर कि यह होम की भेंट की व्यवस्था है होम की भेंट इस लिये है कि बेदी पर रात भर बिहान लों जलाने के कारण है॥ १०। और याजक अपने सूती बस्त्र पहिने और सूती जांघिया से अपना शरीर ढांपे और राख को उठा लेवे जिसे आग ने होम की बेदी पर भस्म किया है और उसे बेदी के पास रक्खे॥ ११। फिर वुह अपने बस्त्र उतारके दूसरे बस्त्र पहिने और उस राख को छावनी के बाहर एक पावन स्थान पर ले जावे॥ १२। और बेदी की आग उस में जलती रहे वुह कभी बुझने न पावे और याजक उस पर लकड़ी हर बिहान जलाया करे और उस पर होम की भेंट चुने और उस पर कुशल की भेंट की चिकनाई जलावे॥ १३। अवश्य है कि आग बेदी पर सदा जलती रहे और बुझने न पावे॥ १४। भोजन की भेंट की व्यवस्था यह है कि उसे हारून के बेटे बेदी के आगे परमेश्वर के लिये चढ़ावें॥ १५। और भोजन की भेंट में से एक मुट्ठी भर पिसान और कुछ तेल में से और सब गंधरस जो उस भोजन की भेंट पर है उठा लेवे और उन्हें स्मरण के कारण परमेश्वर के आनंद के सुगंध के लिये बेदी पर जलावे॥ १६। और उस का उबरा ज्डआ हारून और उस के बेटे खावें वुह अखमीरी रोटी के साथ पवित्र स्थान में खाया जावे मंडली के तंबू के आंगन में उसे खावे॥ १७। वुह खमीर के साथ न पकाया जावे मैं ने अपनी भेंट से जो आग से बनी है उन के भाग में दिया है जैसी पाप की और अपराध की भेंट अत्यंत पवित्र है वैसी यह भी है॥ १८। हारून के संतान में से पुरुष उसे खावे यह परमेश्वर की भेंट के बिषय में जो आग से बनी है तुम्हारी सदा की पीढ़ियों में यह अत्यंत पवित्र है॥

१९। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २०। कि हारून और उस के बेटे की भेंट जिसे वे अपने अभिषेक होने के दिन परमेश्वर के आगे भेंट लावें सो यह है ईफा का दसवां भाग चोखा पिसान भोजन की भेंट

उस का आधा बिहान को और उस का आधा सांझ को नित्य हुआ
करे॥ २१। और यह तेल से बनके तवे पर पकाया जावे पकी हुई
भीतर लाओ भोजन की भेंट पके हुए टुकड़े टुकड़े परमेश्वर के सुगंध के
लिये चढ़ाओ॥ २२। उस के बेटों में का याजक जो उस के स्थान पर
अभिषेक हो वुह उसे चढ़ावे यह बिधि परमेश्वर के कारण सदा होवे वुह
संपूर्ण जलाया जावे॥ २३। याजक के हर एक भोजन की भेंट सब की
सब जलाई जावे सो कभी खाई न जावे॥ २४। और परमेश्वर मूसा से
कहके बोला॥ २५। कि हारून और उस के बेटों से कह पाप की भेंट
की व्यवस्था यह है कि जिस स्थान में जलाने की भेंट बलि किई जाती है
वहीं पाप की भेंट भी परमेश्वर के आगे बलि किई जाय यह अत्यंत
पवित्र है॥ २६। जो याजक पाप के लिये उसे चढ़ावे सो उसे खाय वुह
पवित्र स्थान में मंडली के तंबू के आंगन में खाया जावे॥ २७। जो कोई
उस के मांस को छूयेगा सो पवित्र होगा और जब उस का लोहू किसी वस्त्र
पर छिड़का जाय उसे पवित्र स्थान में धो॥ २८। परंतु जिस मिट्टी
के पात्र में वुह सिझाया जावे सो तोड़ा जाय और यदि वुह पीतल के
पात्र में सिझाया जावे तब वुह मांजा जाके पानी में खंघारा जाय॥
२९। याजकों में से समस्त पुरुष उसे खावें वुह अत्यंत पवित्र है॥ ३०।
और पाप की कोई भेंट जिस का कुछ भी लोहू मंडली के तंबू में मिलाप के
कारण लाया जाय सो खाया जायगा आग से जलाया जावे॥

७ सातवां पर्ब्ब ।

और अपराध की भेंट की व्यवस्था भी यह है वुह अत्यंत पवित्र है॥
२। जिस स्थान में वे होम की भेंट को बलि करें उसी स्थान में
अपराध की भेंट को बलि करें और उस के लोहू को बेदी के चारों ओर
पर छिड़कें॥ ३। और वुह उस की सारी चिकनाई को चढ़ावे उस की
पूंछ और वुह चिकनाई जो ओझ को ढांपती है॥ ४। और दोनों गुर्दे
और उन पर की चिकनाई जो पांजरों के पास है और कलेजी पर की
झिल्ली गुर्दों समेत अलग करे॥ ५। और याजक उन्हें परमेश्वर की
आग की भेंट के लिये होम की बेदी पर जलावे यह अपराध की भेंट है॥

६। याजकों में से हर एक पुरुष उसे खावे वुह पवित्र स्थान में खाई जावे वुह अत्यंत पवित्र है॥ ७। जैसे पाप की भेंट वैसे ही अपराध की भेंट की एक ही व्यवस्था है जो याजक उसे प्रायश्चित्त करता है उसी की होगी॥ ८। और जो याजक किसी मनुष्य के होम की भेंट चढ़ाता है सो उसी होम की खाल उसी याजक की होगी जिसे उस ने चढ़ाया॥ ९। और समस्त भोजन की भेंट जो भट्ठे में पकाई जावे और सब जो कड़ाही में अथवा तवे पर सो उसी याजक की होगी जो उसे चढ़ाता है॥ १०। और हर एक भोजन की भेंट जो तेल से मिली ऊई हो अथवा सूखी हो सो सब हारून के बेटों के लिये समान होगी॥ ११। और कुशल की भेंट के बलिदान जो वुह परमेश्वर के लिये चढ़ावे उस की यह रीति है॥ १२। यदि वुह धन्यबाद के लिये चढ़ावे तो उस के साथ तेल से मिले ऊए अखमीरी फुलके और अखमीरी तेल से चुपड़ी ऊई और तेल में पकी ऊई चोखे पिसान की पूरी धन्यबाद के लिये चढ़ावे॥ १३। और फुलके से अधिक वुह खमीरी रोटी की अपनी भेंट धन्यबाद के बलिदान के और अपनी कुशल की भेंट के साथ लावे॥ १४। और वुह समस्त नैवेद्य में से एक को परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट चढ़ावे और यह उस याजक का होगा जो कुशल की भेंट के लोह्ह को छिड़कता है॥ १५। और कुशल की भेंट और बलिदान का मांस जो धन्यबाद के लिये है उसे चढ़ाये जाने के दिन में खाया जावे और वुह उस में से बिहान लों कुछ न छोड़े॥ १६। परंतु यदि भेंट का बलिदान मनौती का अथवा उस के बांछित का हो तो वुह चढ़ाने के दिन खाया जाय और उबरे ऊये से दूसरे दिन भी खाया जाय॥ १७। परंतु बलिदान का उबरा ऊआ मांस तीसरे दिन आग से जला दिया जाय॥ १८। और यदि कुशल के बलिदान के मांस में से कुछ तीसरे दिन खाया जाय तो वुह ग्रहण न किया जायगा न भेंट दायक के लिये लेखा किया जायगा वुह घिनित होगा जो प्राणी उस में से खावे सो अपने पाप को भोगेगा॥ १९। और वुह मांस जो किसी अशुद्ध बस्तु को छूये सो खाया न जायगा परंतु जलाया जावे और मांस जो है सो हर एक जो पवित्र हो सो उस में से खावे॥ २०। परंतु जो अशुद्ध प्राणी

परमेश्वर के कुशल की भेंट के बलिदान का मांस खावे सोई प्राणी अपने लोगें में से काट डाला जायगा॥ २१। श्रीर अधिक जो प्राणी किसी अशुद्ध वस्तु को छूये चाहे मनुष्य का अथवा पशु का अथवा किसी घिनित वस्तु को छूवे श्रीर परमेश्वर के कुशल की भेंट के बलिदान से मांस खावे वही प्राणी अपने लोगें में से काटा जायगा।

२२। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २३। कि इसराएल के संतानें से कह कि बैल श्रीर भेड़ श्रीर बकरी की कोई चिकनाई न खावे॥ २४। श्रीर उस लोथ की चिकनाई जो आप से आप मर गया हो अथवा उस की चिकनाई जो पशुन से फाड़ा गया हो श्रीर किसी कार्य्य में उठाया जाय परंतु उस में से किसी भांति से मत खाइयो॥ २५। क्योंकि जो मनुष्य एसे पशु की चिकनाई खावे जिस्से आग के बलिदान परमेश्वर के आगे चढ़ाये जाते हैं सोई प्राणी अपने लोगें में से काटा जायगा॥ २६। श्रीर तुम किसी पक्षी का अथवा पशु का किसी भांति का लोहू अपने सब स्थानें में मत खाइयो॥ २७। श्रीर जो प्राणी किसी भांति का लोहू खावे सोई प्राणी अपने लोगें में से काटा जायगा॥ २८। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २९। कि इसराएल के संतानें से कह कि जो कोई अपने कुशल के बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ावे सो अपने कुशल के बलिदान में से परमेश्वर के आगे नैवेद्य लावे॥ ३०। वुह उस बलिदान को जो परमेश्वर के लिये जलाया जाता है श्रीर छाती की चिकनाई को अपने हाथें में लावे जिसतें छाती के हिलाने के बलिदान के लिये परमेश्वर के आगे हिलाया जावे॥ ३१। श्रीर याजक चिकनाई को बेदी पर जलावे परंतु छाती हारून की श्रीर उस के बेटें की होगी॥ ३२। श्रीर तुम कुशल की भेंट के बलिदानें से दहिना कांधा याजक को हिलाने की भेंट के लिये दीजियो॥ ३३। हारून के बेटें में से जो कुशल के बलिदान का लोहू श्रीर चिकनाई चढ़ाता है सो दहिना कांधा अपने भाग के लिये लेवे॥ ३४। क्योंकि कुशल की भेंटें के बलिदानें में से हिलाने की छाती श्रीर उठाने का कांधा मैं ने इसराएल के संतानें से लिया श्रीर हारून याजक श्रीर उस के बेटें को सनातन की बिधि के

लिये दिया॥ ३५। हारून और उस के बेटों के अभिषेक का जिस दिन में वुह उन्हें आगे धरे कि याजक के पद में परमेश्वर की सेवा करे परमेश्वर के लिये आग की भेटों में का भाग होगा॥ ३६। उसे परमेश्वर ने इसराएल के संतान को जिस दिन में उस ने उन्हें अभिषेक किया उन्हें देने को आज्ञा किई कि उन की पीढ़ियों में सनातन के लिये बिधि होवे॥ ३७। होम की भेंट और भोजन की भेंट और पाप की भेंट और अपराध की भेंट और स्थापित करने की भेंट और कुशल की भेंट के बलिदान की यह व्यवस्था है॥ ३८। जिस दिन उस ने इसराएल के संतानों को आज्ञा किई थी कि परमेश्वर के आगे सीना के बन में अपना नैबेद्य चढ़ावें जिसे परमेश्वर ने सीना पर्वत पर मूसा को आज्ञा किई थी॥

८ आठवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि हारून और उस के साथ उस के बेटों को और बस्त्र को और अभिषेक का तेल और पाप की भेंट का एक बैल और दो मेढ़े और एक टोकरी अखमीरी रोटी ले॥ ३। और तू सारी मंडली को मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठा कर॥ ४। सो जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने वैसाही किया और सारी मंडली मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठी ऊई॥ ५। तब मूसा ने मंडली से कहा कि यह वुह बात है जो परमेश्वर ने पालन करने को आज्ञा किई है॥ ६। फिर मूसा हारून को और उस के बेटों को आगे लाया और उन्हें पानी से नहलाया॥ ७। और उस पर कुरती पहिनाई और उस की कटि में पटुका लपेटा और उसे बागा पहिनाया और उस पर एफोद रक्खा और एफोद के अनोखे पटुके से उस की कटि बांधी और उसे उस पर लपेटा॥ ८। और उस पर चपरास रक्खी और उसी चपरास पर यूरीम और तमीम जड़े॥ ९। और उस के सिर पर मुकुट रक्खा और मुकुट पर और ललाट की ओर सोने का पत्तर पवित्र मुकुट पर लगाया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥ १०। और मूसा ने अभिषेक का तेल लिया और तंबू को और उस के समस्त पात्रों को अभिषिक्त करके पवित्र किया और उस में से कुछ बेदी पर सात

बार छिड़का और बेदी और उस के सारे पात्र और स्नान पात्र
और उस की चौकी को अभिषेक करके शुद्ध किया॥ १२। और
अभिषेक के तेल में से हारून के सिर पर ढाला और उस को अभिषेक
करके पवित्र किया। १३॥ और मूसा हारून के बेटों को आगे लाया
और उन्हें कुरती पहिनाई और उन की कटि पर पटुके बांधे और उन
के सिर पर पगड़ी रक्खी जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥
१४। फिर पाप की भेंट के लिये बैल लाया और हारून और उस के
बेटों ने अपने हाथ पाप की भेंट के बैल के सिर पर रक्खे॥ १५। और
उसे बलि किया और मूसा ने उस के लोहू को लिया और अपनी अंगुली
से बे ी के सींगों पर चारों ओर लगाया और बेदी को पवित्र किया
और लोहू को बेदी की जड़ पर ढाला और उसे पवित्र किया जिसतें उस
के लिये प्रायश्चित्त करे॥ १६। और उस ने सब चिकनाई जो ओझ
पर और कलेजे पर की झिल्ली और दोनों गुर्दे और उन की चिकनाई
लिई और मूसा ने बेदी पर जलाया॥ १७। परंतु बैल को और उस
की खाल को और मांस को और गोबर को छावनी के बाहर आग से
जलाया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥ १८। फिर उस ने
होम की भेंट के लिये मेंढ़ा लिया और हारून और उस के बेटों ने
अपने हाथ उस मेंढ़े के सिर पर रक्खे॥ १९। फिर उसे बलि किया
और मूसा ने बेदी के चारों ओर लोहू छिड़का॥ २०। और उस ने
मेंढ़े को टुकड़ा टुकड़ा किया और मूसा ने सिर को और टुकड़ों को और
चिकनाई को जलाया॥ २१। और उस ने ओझ और पांव पानी से
धोया और मूसा ने सारे मेंढ़े को बेदी पर जलाया यह आग की भेंट
परमेश्वर के सुगंध के लिये होम का बलिदान है जैसा कि परमेश्वर ने
मूसा को आज्ञा किई।

२२। फिर वुह दूसरा मेंढ़ा अर्थात् स्थापित का मेंढ़ा लाया और
हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ उस मेंढ़े के सिर पर रक्खे॥ २३।
और उसे बलि किया और मूसा ने उस के लोहू में से लिया और हारून
के दहिने कान की लहर पर और दहिने हाथ के अंगूठे और दहिने
पांव के अंगूठे पर लगाया॥ २४। फिर वुह हारून के बेटों को लाया

और लोहू में से उन के दहिने कानों की लहर पर और दहिने हाथों के अंगठों पर और दहिने पांव के अंगठों पर मूसा ने लगाया और मूसा ने लोहू को बेदी के चारों ओर छिड़का॥ २५। और चिकनाई और पुंछ और सब चिकनाई जो ओझ पर और कलेजे पर की झिल्ली और दोनों गुर्दे उन की चिकनाई और दहिना कांधा लिया॥ २६। और उस अखमीरी रोटी की टोकरी में से जो परमेश्वर के सन्मुख थी एक अखमीरी फुलका और एक फुलका तेल में चुपड़ा हुआ और एक लिट्टी निकाली और उन्हें चिकनाई पर और दहिने कांधे पर रक्खा॥ २७। और उस ने सब को हारून और उस के बेटों के हाथों पर रक्खा और उन को परमेश्वर के सन्मुख हिलाने की भेंट के लिये हिलाया॥ २८। फिर मूसा ने उन्हें उन के हाथों से लिया और होम की भेंट की बेदी पर जलाया यह स्थापना सुगंध के लिये थी यह परमेश्वर के लिये होम की भेंट है॥ २९। फिर मूसा ने छाती लिई और उसे हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे हिलाया स्थापित करने के मेंढ़े से मूसा का भाग था जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥ ३०। फिर मूसा ने अभिषेक का तेल और बेदी पर के लोहू में से लिया और हारून पर और उस के बस्त्रों पर और उस के साथ उस के बेटों पर और उन के बस्त्रों पर छिड़का और हारून को और उस के बस्त्रों को और उस के बेटों को और उन के बस्त्रों को पवित्र किया॥ ३१। और मूसा ने हारून से और उस के बेटों से कहा कि मांस को मंडली के तंबू के द्वार पर उसिन और उसे उस स्थान में उस रोटी के साथ जो स्थापित करने की टोकरी में है खाओ जैसे मैं ने यह कहके आज्ञा किई कि हारून और उस के बेटे उसे खावें॥ ३२। और मांस और रोटी में से जो उबरे उसे आग से जलाओ॥ ३३। और तुम मंडली के तंबू के द्वार से सात दिन लों बाहर न जाओ जब लों स्थापित करने के दिन पूरे न होवें क्योंकि वुह तुम्हें सात दिन में स्थापित करेगा॥ ३४। जैसा उस ने आज के दिन किया है परमेश्वर ने आज्ञा किई है कि तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त होवे॥ ३५। इस कारण मंडली के तंबू के द्वार पर सात रात दिन ठहरो और परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करो जिसतें न मरो क्योंकि मुझे योंही आज्ञा है॥ ३६। सो सब कुछ

जो परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा किई थी हारून और
उस के बेटों ने किया॥

९ नवां पर्ब्ब।

और जब आठवां दिन हुआ तब मूसा ने हारून को और उस के
बेटों को और इसराएल के प्राचीनों को बुलाया॥ २। और
हारून से कहा कि तू एक बछड़ा पाप की भेंट के लिये और एक निष्खोट
मेंढ़ा होम की भेंट के लिये ले और परमेश्वर के आगे चढ़ा॥ ३। और
इसराएल के संतान को यह कहके बोल कि एक बकरी पाप की भेंट के
लिये और एक बछड़ा और पहिले बरस का एक मेम्ना होम की भेंट के
लिये लेओ॥ ४। और एक बैल और एक मेंढ़ा कुशल की भेंट के लिये
लाओ जिसतें परमेश्वर के आगे बलि किये जावें और तेल से मिली हुई
भोजन की भेंट क्योंकि आज के दिन परमेश्वर तुम्हों पर प्रगट होगा॥
५। जैसा कि मूसा ने आज्ञा किई थी वे मंडली के तंबू के आगे लाये
और सारी मंडली आगे बढ़के परमेश्वर के आगे खड़ी हुई॥ ६।
और मूसा ने कहा कि यह वुह बात है जिस की आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हें
दिई तुम उसे पालन करो और परमेश्वर की महिमा तुम्हों पर प्रगट
होगी॥ ७। और मूसा ने हारून से कहा कि बेदी पास जा और अपने
पाप की भेंट और होम की भेंट चढ़ा और अपने और लोगों के लिये
प्रायश्चित्त कर और लोगों की भेंट चढ़ा और उन के लिये प्रायश्चित्त
कर जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा किई॥ ८। इस लिये हारून बेदी पर
गया और पाप की भेंट का बछड़ा जो अपने लिये था बलि किया॥ ९।
और हारून के बेटे उस पास लोहू लाये और उस ने अपनी अंगुली उस में
डुबोई और बेदी के सींगों पर लगाया और लोहू को बेदी की जड़ पर
ढाला॥ १०। परंतु चिकनाई और गुर्दे और कलेजे पर की झिल्ली
अपराध की भेंट से लेके बेदी पर जलाये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को
आज्ञा किई॥ ११। और मांस और खाल को छावनी के बाहर आग से
जलाया॥ १२। और उस ने होम की भेंट को बलि किया और हारून के
बेटों ने उसे लोहू दिया जिसे उस ने बेदी के चारों ओर छिड़का॥ १३

फिर उन्हों ने होम की भेंट को उस के टुकड़े और सिर समेत उसे दिये और उस ने बेदी पर जलाये॥ १४। और उस ने ओझ को और पांव को धोया और होम की भेंट पर बेदी के ऊपर बेदी पर जलाया॥

१५। फिर वुह लोगों की भेंट को लाया और लोगों के पाप की भेंट के लिये बकरी को लिया और उसे बलि किया और उसे पहिली के समान पाप के लिये चढ़ाया॥ १६। और उस ने होम की भेंट को लाके उसी रीति के समान चढ़ाया॥ १७। और बिहान के होम के बलिदान से वुह भोजन की भेंट लाया और उस्से एक मुट्ठी भर लिया और बेदी पर जलाया॥ १८। और उस ने बैल और मेंढ़ा लोगों के कुशल की भेंट के बलिदान को बलि किया और हारून बेटे उस के पास लोहू ले आये जिसे उस ने बेदी की चारों ओर छिड़का॥ १९। और बैल की और मेंढ़े की चिकनाई और पूंछ और जो ओझ को ढांपती है और गुर्दे को और कलेजे पर की चिकनाई॥ २०। और उन्हों ने चिकनाई को छातियों पर रक्खा और उस ने चिकनाई को बेदी पर जलाया॥ २१। छातियों को और दहिने कांधे को जैसे परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई हारून ने परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये हिलाया॥ २२। फिर हारून ने मंडली की ओर अपना हाथ उठाया और उन्हें आशीष दिई और पाप की भेंट और होम की भेंट और कुशल की भेंट चढ़ा के नीचे उतरा॥ २३। फिर मूसा और हारून मंडली के तंबू में गये और बाहर निकल के लोगों को आशीष दिई और सारी मंडली पर परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई॥ २४। और परमेश्वर के आगे से आग निकली और बेदी पर जलाने की भेंट और चिकनाई को भस्म किया जब सारे लोगों ने देखा वे चिल्ला के औंधे मुंह गिरे॥

१० दसवां पर्ब्ब।

और नदब और अबिहू हारून के बेटों ने अपना अपना धूप पात्र लिया और उस में आग भरके उस पर धूप रक्खा और परमेश्वर के आगे उपरी आग चढ़ाई जिसे परमेश्वर ने उन्हें बरजा था॥ २। तब परमेश्वर की ओर से आग निकली और उन्हें भस्म किया और वे परमेश्वर

के आगे मर गये॥ ३। तब मूसा ने हारून से कहा कि यह वुह है जो
परमेश्वर ने कहा था कि जो जो मेरे पास आवे मैं उन से पवित्र
किया जाऊंगा और तब मैं सारे लोगों के आगे महिमा पाऊंगा तब
हारून चुप हो रहा॥ ४। फिर मूसा ने हारून के चाचा उज़्ज़िएल के बेटे
मीसाएल और इलज़ाफ़ान को बुलाया और कहा कि पास आओ और
अपने भाइयों को पवित्र स्थान के साम्ने से तंबूओं के बाहर उठा ले जाओ॥
५। सो वे पास आये और उन्हें अपने सूती कपड़ों में उठाके जैसा मूसा
ने कहा था वैसा तंबुओं से बाहर ले गये॥ ६। फिर मूसा ने हारून
और उस के बेटे इलिअज़र और ईतमर को कहा कि अपने सिर को
मत उघारो और अपने कपड़े मत फाड़ो न हो कि मर जाओ और सारे
लोगों पर परमेश्वर का कोप पड़े परंतु तुम्हारे भाई इसराएल के घराने
उस ज्वलन के लिये बिलाप करें जिसे परमेश्वर ने बारा है॥ ७। और
तुम मंडली के तंबू के द्वार से बाहर न जाओ जिसतें न हो कि मर जाओ
क्योंकि परमेश्वर के अभिषेक का तेल तुम पर है सो उन्हों ने मूसा के
कहने के समान किया॥ ८। फिर परमेश्वर कहके हारून से बोला॥
९। कि जब तुम मंडली के तंबू में प्रवेश करो तो न तू न तेरे संग
तेरे बेटे दाखरस अथवा तीक्ष्ण मदिरा पीजियो जिस में नाश न हो
यह सनातन के लिये तुम्हारी पीढ़ियों में बिधि है॥ १०। और
जिसतें तुम पावन और अपावन और शुद्ध और अशुद्ध में ब्यवरा करो॥
११। और जिसतें तुम सारी बिधि जो परमेश्वर ने मूसा की ओर से
उन्हें आज्ञा किई है इसराएल के संतानों को सिखाओ॥ १२। फिर
मूसा ने हारून और उस के बेटे इलिअज़र और ईतमर से जो बचे थे
कहा कि परमेश्वर की भेंटों में से आग से बनी ऊई जो भोजन की भेंट
बच रही है लेओ और उसे बेदी के पास बिना ख़मीर से खाओ क्योंकि
अत्यंत पवित्र है॥ १३। और उसे पवित्र स्थान में खाओ इस लिये कि
परमेश्वर की आग के बलिदानों में से तेरा और तेरे बेटों का यह भाग
है क्योंकि मुझे योंही आज्ञा ऊई है॥ १४। और हिलाने की छाती
और उठाने के कांधे को किसी पवित्र स्थान में तू और तेरे पुत्र और
तेरी पुत्रियां तेरे साथ खावें क्योंकि यह तेरा और तेरे पुत्रों का भाग है

जो इसराएल के संतानों के कुशल की भेंटों के बलिदानों में से दिया
जाता है॥ १५। और उठाने का कांधा और हिलाने की छाती भेंटों
के साथ जो चिकनाई आग से चढ़ाई जाती है जिसतें परमेश्वर के आगे
हिलाने की भेंट के लिये हिलाया जावे तेरे और तेरे बेटों के कारण
सनातन के लिये विधि होगी जैसा कि परमेश्वर ने कहा है॥ १६।
फिर मूसा ने पाप की भेंट की बकरी को बज्जत ढूंढ़ा तो क्या देखता है
कि वुह जल गई तब उस ने हारून के बचे ज्जए बेटे इलिअज़र और
ईतमर पर रिसियाके कहा॥ १७। कि तुम ने पाप की भेंट को क्यों
नहीं पवित्र स्थान में खाया है वुह अत्यंत पवित्र है तुम्हें दिया गया है
जिसतें तुम मंडली का पाप उठा लेओ और उन के लिये परमेश्वर के
आगे प्रायश्चित्त करो॥ १८। देखो उस का लोहू पवित्र स्थान में न
पज्जंचाया गया अवश्य था तुम उसे पवित्र स्थान में खाते जैसा मैं ने आज्ञा
किई है॥ १९। तब हारून ने मूसा से कहा कि देख आज ही उन्हों ने
अपने पाप की भेंट और अपने होम की भेंट परमेश्वर के आगे चढ़ाई है
और मुझ पर ऐसी बातें बीतीं यदि मैं पाप की भेंट आज खाता तो
क्या परमेश्वर की दृष्टि में ग्राह्य होता॥ २०। और मूसा ने यह
सुनके मान लिया।

११ ग्यारहवां पर्व्व।

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २। कि तुम
इसराएल के संतानों से कहो कि समस्त पशुन में से जो पृथिवी पर हैं
इन पशुन को खाइयो॥ ३। पशुन में से जिन का खुर बिभाग हो
और जिन का पांव चीरा ज्जआ हो और जो पागुर करते हों उन्हें
खाइयो॥ ४। तथापि उन में से इन्हें न खाइयो जो पागुर करते हैं
अथवा जिन का खुर बिभाग हो ऊंट को इस कारण कि वुह पागुर
करता है परंतु उस का खुर बिभाग नहीं है वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध
है॥ ५। और साफन इस कारण कि वुह पागुर करता है परंतु उस
का खुर बिभाग नहीं वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध॥ ६। और खरहा इस
कारण कि वुह पागुर करता है परंतु उस का खुर बिभाग नहीं है वुह

तुम्हारे लिये अशुद्ध ॥ ७। और सूअर यद्यपि उस का खुर बिभाग है
और उस का पांव चीरा तथापि वुह पागुर नहीं करता वह तुम्हारे
लिये अशुद्ध ॥ ८। तुम उन के मांस में से कुछ न खाइयो और उन
की लोथों को न छूइयो क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं।

९ और समस्त पानियों में का खाइयो नदियों में और समुद्रों में
और पानियों में जिस किसी के पंख अथवा छिलके हों उन्हें खाइयो॥
१०। और सब जो समुद्रों में और नदियों में और सब जो पानियों में
चलते हैं और कोई जीवधारी जो पानियों में हैं जिन के पंख और
छिलके नहीं हैं घिनित होंगे॥ ११। और वे तुम्हारे लिये घिनित होंगे
तुम उन के मांस में से न खाओ परंतु उन की लोथ को घिनित समुझो॥
१२। जिन के पानियों में पंख और छिलके नहीं हैं वे सब तुम्हारे लिये
घिनित होंगे॥ १३। और पक्षियों में से तुम उन्हें घिनित समुझो
और उन्हें न खाइयो वे घिनित हैं गिद्ध और हड़फोड़ और कुरूल॥
१४। और शकुन और भांति भांति की चील्ह॥ १५। और भांति
भांति के हर एक काग॥ १६। और शुतुरमुर्ग और तख़मस और
कोकिल और भांति भांति की तुरमती॥ १७। और छोटा उल्लू और
हाड़गील और बड़ा उल्लु॥ १८। और राजहंस और पनिबुड्डी और
रखम॥ १९। और सारस और भांति भांति के बगुला और टिटिहिरी
और चमगुदड़ी॥ २०। और सारे कीट जो उड़ते और चार पांव से
रेंगते हैं तुम्हारे लिये वे घिनित हैं॥ २१। तथापि तुम सब पक्षियों
में से जो चारों पांव से रेंगते हैं जिन की पिछली टांगें अगले पांव से
लपटी हुई हैं जिस्से वे फांद कर पृथिवी पर चलें तुम उन्हें खाइयो॥
२२। तुम उन्हों में से इन्हें खाइयो जैसे भांति भांति की टिड्डी और
भांति भांति के फनगे और भांति भांति के ख़रगोल और भांति भांति
के किलिके॥ २३। परंतु सब रेंगवैये पक्षियों में से जिन के चार पांव
हैं वे तुम्हारे लिये घिनित हैं॥ २४। और उन के लिये तुम अशुद्ध
होगे जो कोई उन की लोथ को छूयेगा सो सांझ लों अपवित्र रहेगा॥
२५। और जो कोई उन में से किसी की लोथ को उठावे सो अपने कपड़े
धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २६। हर एक पशु जिन के

खर बिभाग हों और पांव चीरा न हो और पागुर करता न हो सो तुम्हारे लिये अशुद्ध है जो कोई उन्हें छूयेगा सो अशुद्ध होगा॥ २७। और समस्त प्रकार के पशु जो चार पांव और थाप पर चलते हैं तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं जो कोई उन की लोथ को छूयेगा सो सांझ लों अशुद्ध रहेगा॥ २८। और जो कोई उन की लोथ को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और वुह सांझ लों अशुद्ध रहेगा ये तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। २९। और पृथिवी पर के रेंगवैयों में से ये तुम्हारे लिये अपवित्र हैं नेउर और चूहा और भांति भांति का कछुआ॥ ३०। और टिक्टिकी और गिरगिटान और बम्हनी और छछूंदर और घोंघा॥ ३१। सब रेंगवैयों में से ये तुम्हारे लिये अपवित्र हैं जो कोई उन की लोथ को छूये सो सांझ लों अशुद्ध होगा॥ ३२। और जिस किसी पर इन्हों में से मरके गिर पड़े सो अशुद्ध होगा चाहे लकड़ी का पात्र अथवा वस्त्र अथवा खाल अथवा टाट जो पात्र होवे जिस्से काम होता हो सो अवश्य जल में डाला जावे और सांझ लों अपवित्र रहेगा और इसी रीति से पवित्र होगा॥ ३३। और सब मिट्टी के पात्र जिन में उन में से गिरे जो उस में होवे सो अशुद्ध होगा तुम उसे तोड़ डालियो॥ ३४। समस्त भोजन जो खाया जाता है जो उस में उन से पानी पड़े सो अशुद्ध होगा और जो कुछ एसे पात्रों में पीया जाता है सो अशुद्ध होगा॥ ३५। और जिस पर उन की लोथ पड़े सो अपवित्र होगा चाहे भट्ठी चाहे चूल्हा होय तोड़ा जायगा वे अपवित्र हैं और तुम्हारे लिये अशुद्ध होंगे॥ ३६। तथापि सोता और कूआ जिस में बहुत जल होवे वुह शुद्ध होगा परंतु जो कोई उन की लोथ को छूवेगा सो अशुद्ध होगा॥ ३७। और यदि उस की लोथ किसी बोने के बीज पर गिरे सो पवित्र रहेगा॥ ३८। परंतु यदि उस बीज पर पानी पड़ा हो और उन की लोथ से कुछ उस पर गिरे सो तुम्हारे लिय अशुद्ध होगा॥ ३९। और यदि तुम्हारे खाने के पशुन में से कोई मरे जो कोई उस की लोथ को छूये सो सांझ लों अशुद्ध होगा॥ ४०। और जो कोई उस की लोथ में से खावे सो अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अशुद्ध होगा और जो उस की लोथ को उठाता है सो भी अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अशुद्ध होगा॥ ४१। और हर एक जो पृथिवी पर

रेंगता है सो घिनित है उस्से खाया न जायगा॥ ४२। जो पेट के बल
चलता है और जो चार पाओं पर चलते हैं और रेंगवैये में से जो
अधिक पांव रखते हैं और पृथिवी पर रेंगते हैं तुम उन्हें न खाइयो
क्योंकि वे घिनित हैं॥ ४३। तुम किसी रेंगवैये से जो पृथिवी पर
रेंगता है अपने को घिनित मत करो और न आप को उन के कारन से
अपवित्र करो यहां लों कि तुम उस्से अशुद्ध हो जाओ॥ ४४। क्योंकि
मैं तुम्हारा ईश्वर परमेश्वर हूं इस लिये तुम आप को शुद्ध करो और तुम
पवित्र होगे क्योंकि मैं पवित्र हूं और अपने को किसी रेंगवैये जन्तु से जो
पृथिवी पर रेंगता है अशुद्ध न करो॥ ४५। क्योंकि मैं परमेश्वर हूं जो
मिस्र के देश से तुम्हें ले जाता हूं जिसतें तुम्हारा ईश्वर हूं सो तुम शुद्ध होओ
क्योंकि मैं पवित्र हूं॥ ४६। चारपाये और पक्षी और सब जीवधारी
जो पानी में चलते हैं और हर एक जन्तु जो पृथिवी पर रेंगते हैं उन की
यही व्यवस्था है॥ ४७। कि शुद्ध और अशुद्ध में और उन पशुन में जो
खाये जावें और उन में जो न खाये जावें तुम बिभेद करो।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों से
कह कि जब स्त्री गर्भिणी होवे और बेटा जने तब वुह सात दिन अशुद्ध
होगी जैसे दुर्बलता के कारण अलग होने के दिनों में होती है॥ ३।
और आठवें दिन लड़के का खतनः किया जावे॥ ४। और वुह रुधिर
से पवित्र होने के लिये तेंतीस दिन पड़ी रहे वुह किसी पवित्र बस्तु को न
छूये और जब लों उस के पवित्र होने के दिन पूर्ण न होवें तब लों वुह
पवित्र स्थान में न जावे॥ ५। और यदि लड़की जने तो वुह दो अठवारे
अशुद्ध होगी जैसे अपने अलग किये जाने के दिनों में थी और वुह अपने
रुधिर की पवित्रता के लिये छियासठ दिन पड़ी रहेगी॥ ६। और
जब उस के पवित्र होने के दिन पुत्र के अथवा पुत्री के पूर्ण होवें तब वुह
पहिले बरस का एक मेम्ना होम की भेंट के लिये लेवे और एक कपोत का
बच्चा अथवा पिण्डुकी पाप की भेंट के लिये मंडली के तंबू के द्वार पर
याजक पास लावे॥ ७। वुह उसे परमेश्वर के आगे चढ़ावे और उस के

लिये प्रायश्चित्त करे और वुह अपने रुधिर बहने से पवित्र होगी यह पुत्र और पुत्री जन्ने के लिये व्यवस्था है॥ ८। और यदि उसे मेम्ना लाने की पूंजी न हो तो दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे लावे एक होम की भेंट के लिये और दूसरा अपराध की भेंट के लिये और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे तब वुह पवित्र हो जायगी।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २। जब किसी के शरीर में सूज अथवा खजुली अथवा चकचकिया बिंदु हो और उस के शरीर के चमड़े में कोढ़ की मरी सी हो तब उसे हारून याजक के पास अथवा उस के किसी पुत्र याजक पास लावें॥ ३। और वुह याजक उस के शरीर के चमड़े की मरी को देखे यदि मरी के स्थान का बाल उजला हो गया हो और वुह मरी देखने में चमड़े से गहिरी हो तो वुह कोढ़ की मरी है याजक उसे देख के उस को अशुद्ध ठहरावे॥ ४। यदि उस के शरीर के चमड़े पर चकचकिया बिंदु देखने में चमड़े से गहिरा न हो और उस पर के बाल उजले न हुए हों तो याजक उसे सात दिन लों बंद करे॥ ५। और सातवें दिन उसे देखे यदि मरी उस के देखने में वैसीही हो और मरी चमड़े पर फैली न हो तो याजक उसे और सात दिन लों बंद करे॥ ६। फिर सातवें दिन दूसरे बार उसे देखे यदि मरी कुछ काली हुई हो और चमड़े पर फैली न हो तो याजक उसे पवित्र ठहरावे वुह खाज है वुह अपने कपड़े धोवे और पवित्र होवे॥ ७। परंतु यदि वुह खाज याजक के देखने और पवित्र करने के पीछे चमड़े पर बहुत फैल जावे तो वुह मनुष्य याजक को फिर दिखाया जावे॥ ८। और याजक देखे कि वुह खाज चमड़े पर बढ़ गई हो तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे वुह कोढ़ है॥

९। जब किसी मनुष्य को कोढ़ की मरी होय तब उसे याजक पास लावें॥ १०। याजक उसे देखे यदि वुह सूज चमड़े पर उजला हो और उस ने बालों को उजला कर दिया हो और उभरे हुए में मूआ मांस हो॥ ११। तो यह उस के शरीर के चमड़े में पुराना कोढ़ है याजक उसे

अशुद्ध ठहरावे और उसे बंद न करे क्योंकि वुह अशुद्ध है॥ १२। और यदि कोढ़ चमड़े पर फैल जावे और जहां कहीं याजक देखे तहां उस के चमड़े पर कोढ़ सिर से पांव लों छाले॥ १३। तब याजक देखे और यदि कोढ़ ने उस के समस्त शरीर को छिपा लिया हो तो वुह उस मरी को पवित्र ठहरावे क्योंकि वुह सब उजला हो गया है और वुह पवित्र है॥ १४। परंतु जब मूआ मांस उस में दिखाई देवे तब वुह अपवित्र होगा॥ १५। और याजक मूए मांस को देखे और उसे अपवित्र ठहरावे क्योंकि सड़ा मांस अपवित्र है यह कोढ़ है॥ १६। और यदि मूआ हुआ लाल मांस फिर कर उजला हो जाये वुह याजक पास आवे॥ १७। याजक उसे देखे और यदि वुह उजला हो गया हो तो याजक उसे पवित्र ठहरावे क्योंकि वुह पवित्र है॥ १८। और जिस के शरीर के चमड़े पर फुड़िया होय और चंगी हो जाये॥ १९। और फुड़िया के स्थान पर उजला उभरा हो अथवा चकचकिया बिंद अथवा उजला और तनिक लाल होय और वुह याजक को दिखाया जावे॥ २०। और यदि याजक की दृष्टि में वुह चमड़े से कुछ दबा हुआ हो और उस पर के बाल भी उजले हो गये हों तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे क्योंकि यह कोढ़ की मरी है जो फुड़िया से फट निकली है॥ २१। परंत यदि याजक उसे देखे कि उस पर श्वेत बाल नहीं है और वुह चमड़े से दबा नहीं है परंतु कुछ कुछ काला है तो याजक उसे सात दिन बंद करे॥ २२। यदि वुह चमड़े पर बहुत फैल गया हो तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे क्योंकि मरी है॥ २३। परंतु यदि चकचकिया बिंदु अपने स्थान ही पर रहे और फैल न जाय तो वुह ज्वलित फुड़िया है याजक उसे पवित्र ठहरावे॥ २४। और यदि मांस के चमड़े में बड़ी जलन हो और उस फूले हुए में मांस निकला हो कुछ लाल अथवा केवल उजला हुआ हो॥ २५। तो याजक उसे देखे और यदि उस चकचकिया बिंदु पर के बाल उजले हो गये हों और वुह देखने में चमड़े से दबा हो तब ज्वलन से वुह फूटा हुआ कोढ़ है याजक उसे अशुद्ध ठहरावे वुह कोढ़ की मरी है॥ २६। परंतु यदि याजक उसे देखे और उस पर और उस चकचकिया बिंदु पर उजला बाल न सूझ पड़े और यदि चमड़े से गहिरा दिखाई न देवे परंतु कुछ

काला होवे तो उसे सात दिन लों बंद करे॥ २७। और सातवें दिन याजक उसे देखे यदि वुह चमड़े पर बज्जत फैल गया हो तब याजक उसे अपवित्र कहे वुह कोढ़ की मरी है॥ २८। और यदि वुह चकचकिया बिंदु अपने स्थान पर हो और चमड़े पर न फैले परंतु कुछ काला होय तो वुह केवल जलने का उभरना है याजक उसे शुद्ध ठहरावे क्योंकि जलने की जलन है॥

२९। यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री के सिर अथवा डाढ़ी में मरी होय॥ ३०। तब याजक उस मरी को देखे यदि वुह देखने में चमड़े से गहिरी देख पड़े और उस पर पीला बाल हो तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे यह सेज्जआं सिर अथवा डाढ़ी का कोढ़ है॥ ३१। और यदि याजक उस सेज्जआं की मरी को देखे और चमड़े से गहिरी न सूझ पड़े और उस पर काला बाल भी न हो तो याजक उस सेज्जआं मरी जन को सात दिन लों बंद करे॥ ३२। और सातवें दिन याजक उस मरी को देखे और यदि सेज्जआं को फैला न देखे और उस पर पीला बाल न हो और सेज्जआं देखने में चमड़े से गहिरा न हो॥ ३३। वुह मुड़ाये जावें परंतु सेज्जआं को न मुंड़ावे और जिस पर सेज्जआं है याजक उस को और सात दिन बंद करे॥ ३४। फिर सातवें दिन याजक उसे देखे यदि सेज्जआं को चमड़े पर फैलते देखे चमड़े से गहिरा होय तो याजक उसे पवित्र ठहरावे वुह अपने कपड़े धोवे और पवित्र होवे॥ ३५। और यदि उस के पवित्र होने के पीछे वुह सेज्जआं चमड़े पर बज्जत फैल जावे॥ ३६। तो याजक उसे देखे और यदि सेज्जआं चमड़े पर फैला देखे तो याजक पीले बाल को न ढूंढ़े वुह अपवित्र है॥ ३७। परंतु यदि उस के देखने में सेज्जआं वैसाही है और उस में काला बाल निकला हो तो वुह सेज्जआं चंगा ज्जआ वुह पवित्र है याजक उसे पवित्र ठहरावे॥ ३८। यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री के शरीर के चमड़े पर उजला अथवा चकचकिया बिंदु होय॥ ३९। तब याजक देखे उस के शरीर के चमड़े पर के चकचकिया बिंदु तनिक काला उजला सूझ पड़ें वुह छीप है जो चमड़े से निकलता है वुह पवित्र है॥ ४०। और जिस मनुष्य के सिर के बाल गिर गये हों वुह चंदुला है वुह पवित्र है॥ ४१। और जिस मनुष्य के सिर के बाल मुंह की ओर से गिर गये हों वुह चंदुला है पवित्र है॥

४२ । यदि उस चंदुले सिर अथवा माथे में उजला लाल सा घाव होवे वुह कोढ़ है जो उस के चंदुले सिर अथवा माथे में फैला ऊआ है॥ ४३। सो याजक उसे देखे और यदि घाव के ऊपर उजला लाल सा उस के चंदुले सिर अथवा चंदुले माथे में दिखाई देवे जैसा कि शरीर के चमड़े में कोढ़ दिखाई देता है॥ ४४। तो वह मनुष्य कोढ़ी अपवित्र है याजक उसे सर्वथा अपवित्र ठहरावे उस की मरी उस के सिर पर है॥ ४५। और जिस कोढ़ी पर मरी है उस के कपड़े फाड़े जायें और सिर नंगा किया जाय तब वुह अपनी ऊपरी होंठ पर आड़ करे और चिल्ला चिल्ला के कहे कि अपवित्र अपवित्र॥ ४६। जितने दिन लों मरी उस पर रहे वुह अशुद्ध रहेगा वुह अपावन है वुह अकेला रहा करे उस का निवास छावनी के बाहर होवे॥ ४७। वुह बस्त्र भी जिस में कोढ़ की मरी हो ऊन का अथवा सूत का बस्त्र हो॥ ४८। उस बस्त्र के ताने में अथवा बाने में सूत का हो अथवा ऊन का और चाहे चमड़े पर हो चाहे किसी बस्तु पर जो चमड़े की हो॥ ४९। और यदि वुह मरी बस्त्र में अथवा हरी सी अथवा लाल सी हो अथवा चमड़े में अथवा ताने में अथवा बाने में हो अथवा किसी चमड़े की बस्तु में हो वुह मरी का कोढ़ है याजक को दिखाया जाय॥ ५०। और याजक उस मरी को देखे और उसे सात दिन बंद करे॥ ५१। और सातवें दिन उस मरी को देखे यदि वुह मरी कपड़े पर अथवा ताने बाने में अथवा चमड़े पर अथवा किसी बस्तु पर जो चमड़े से बनी ऊई है फैल जाये वुह मरी कटाव का कोढ़ है वुह अपवित्र है॥ ५२। सो वुह उस बस्त्र को जो ऊन का अथवा सूत का हो जिस के ताने में है अथवा बाने में और चमड़े की कोई बस्तु जिस में मरी है उसे जला देवे क्योंकि वुह कटाव का कोढ़ है वुह आग से जलाया जाय॥ ५३। और यदि याजक देखे कि वुह मरी जो बस्त्र में ताने में अथवा बाने में अथवा चमड़े की किसी बस्तु में है फैली नहीं॥ ५४। तो याजक आज्ञा करे कि उस बस्तु को जिस में मरी होवे और फिर उसे और सात दिन लों रख छोड़े॥ ५५। फिर उसे धोने के पीछे उस मरी को देखे यदि उस मरी का रंग बदला न देखे और मरी न फैली हो तो वुह अपवित्र है उसे आग में जलावे कि वुह

कटाव चाहे भीतर चाहे बाहर हो॥ ५६। और यदि याजक दृष्टि करे और देखे कि मरी धोने के पीछे कुछ काली हो तो वुह उस बस्त्र से और चमड़े से ताने से अथवा बाने से फाड़ फेंके॥ ५७। और यदि वुह मरी वस्त्र में ताने में अथबा बाने में अथवा किसी चमड़े की वस्तु में प्रगट बनी रहे तो वुह फैलती है तू उसे जिस में मरी है आग से जला देना॥ ५८। और यदि मरी उस बस्त्र से ताने से अथवा बाने से अथवा चमड़े की वस्तु से जिसे तू धोयेगा यदि मरी उन से जाती रहे तो वुह दो बार धोया जाये और पवित्र हो जायगा॥ ५९। यह कोढ़ की मरी की व्यवस्था है जो ऊन अथवा सूत के बस्त्र में ताने अथवा बाने में अथवा किसी चमड़े की बस्तु में पवित्र अथवा अपवित्र ठहरावे।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि उस के लिये जिस दिन कोढ़ी पवित्र किया जावे यह व्यवस्था है उसे याजक पास लावें॥ ३। और याजक छावनी से बाहर जाके देखे यदि वुह कोढ़ी कोढ़ की मरी से चंगा हो गया हो॥ ४। तो याजक आज्ञा करे कि जो पवित्र किया जाता है सो अपने लिये दो पवित्र जीते पक्षी और शमशाद की लकड़ी और लाल और ज़ूफ़ा लेवे॥ ५। फिर याजक आज्ञा करे कि उन पक्षियों में से एक मिट्टी के पात्र में बहते पानी पर मारा जाय॥ ६। और वुह जीते पक्षी को और शमशाद की लकड़ी और लाल और ज़ूफ़ा समेत लेके उस पक्षी के लोहू में जो बहते पानी पर मारा गया है चभोरे॥ ७। और जो कोढ़ से पवित्र किया जाता है उस पर सातबार छिड़के और उसे पवित्र ठहरावे और उस जीते पक्षी को खुले चौगान की ओर उड़ा देवे॥ ८। और जो पवित्र किया जाता है सो अपने कपड़े धोवे और अपने सारे बाल मुंड़ावे और पानी में स्नान करे जिसतें पवित्र होवे उस के पीछे वह छावनी में आवे और सात दिन लों अपने तंबू के बाहर ठहरे॥ ९। और सातवें दिन अपने सिर के सब बाल और अपनी डाढ़ी और अपनी भौंहें अर्थात् अपने सारे बाल मुंड़ावे और अपने कपड़े धोवे और अपना शरीर भी पानी से धोवे तब वुह पवित्र होगा॥ १०।

और आठवें दिन दो निष्खोट मेम्ना और पहिले बरस की एक निष्खोट भेड़ा और चोखा पिसान तीन दसवे भाग तेल से मिला हुआ और एक नपुआ तेल भोजन की भेंट के लिये लेवे॥ ११। तब याजक जो पवित्र करता है उस मनुष्य को जो पवित्र किया जाता है उन वस्तुन सहित परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर ले आवे॥ १२। और याजक एक मेम्ना पाप के बलिदान के कारण उस नपुआ तेल समेत पास लावे और उन्हें हिलाने के बलिदान के लिये परमेश्वर के आगे हिलावे॥ १३। और उस मेम्ना को उस स्थान पर जहां पाप की भेंट और होम की भेंट बलि किई जाती है पवित्र स्थान में बलि करे क्योंकि जैसी पाप की भेंट याजक की है वैसी अपराध की भेंट है वुह अत्यंत पवित्र है॥ १४। और याजक पाप की भेंट का कुछ लोहू लेके उस के जो पवित्र किया जाता है दहिने कान की लहर पर और दहिने हाथ के अंगूठे पर और दहिने पांव के अंगूठे पर लगावे॥ १५। और याजक उस नपुआ का कुछ तेल लेके अपने बांए हाथ की हथेली पर डाले॥ १६। और याजक अपनी दहिनी अंगुली उस तेल में जो उस की बांई हथेली पर है डुबोवे और परमेश्वर के आगे सात बार अपनी अंगुली से कुछ तेल छिड़के॥ १७। और उस तेल में से जो उस की हथेली पर उबरा है उस मनुष्य के दहिने कान की लहर पर जो पवित्र किया जाता है और उस के दहिने हाथ के अंगूठे पर और उस के दहिने पांव के अंगूठे पर अपराध की भेंट के लोहू को लगावे॥ १८। और याजक उस उबरे हुए तेल को जो उस की हथेली पर है उस मनुष्य के सिर पर जो पवित्र किया जाता है डाल देय और याजक उन के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे॥ १९। और याजक पाप की भेंट चढ़ावे और उस के लिये जो अपवित्रता से पवित्र किया जाता है प्रायश्चित्त करे उस के पीछे होम की भेंट को बलि करे॥ २०। और होम की भेंट और भोजन की भेंट याजक बेदी पर चढ़ावे और उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वुह पवित्र होगा॥ २१। और यदि वुह कंगाल होय और इतना ला न सके तो वुह अपराध की भेंट के कारण हिलाने के लिये एक मेम्ना लेवे जिसतें उस के लिये प्रायश्चित्त दिया जाय और एक दसवां भाग चोखा

पिसान तेल से मिला हुआ भेंट के बलिदान के कारण और एक लोग़ी
तेल॥ २२। और दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे जैसा वुह पा
सके लेवे उन में से एक पाप की भेंट और दूसरा होम की भेंट का होगा॥
२३। और वुह उन्हें आठवें दिन अपने पवित्र होने के कारण मंडली के
तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे याजक पास लावे॥ २४। और
याजक अपराध की भेंट का मेम्ना और एक लोग़ी तेल लेवे और वुह उन्हें
परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये हिलावे॥ २५। फिर वुह
पाप की भेंट के मेम्ने को बलि करे और याजक पाप की भेंट के लोहू में
से कुछ लेके उस के जो पवित्र किया जाता है दहिने कान की लहर पर
और दहिने हाथ के अंगूठे और दहिने पांव के अंगूठे पर लगावे॥
२६। और उस तेल में से कुछ अपनी बाईं हथेली पर डाले॥ २७।
और याजक उस तेल में से जो उस की बाईं हथेली पर है थोड़ा सा
अपनी दहिनी अंगुली से परमेश्वर के आगे सात बार छिड़के॥ २८।
और याजक उस तेल में से जो उस की हथेली पर है उस के जो पवित्र
किया जाता है दहिने कान की लहर पर और उस के दहिने हाथ के
अंगूठे और उस के दहिने पांव के अंगूठे पर पाप की भेंट के लोहू के स्थान
पर लगावे॥ २९। और याजक उबरे हुए तेल को जो उस की हथेली पर
है उस के सिर पर जो पवित्र किया जाता है डाले कि उस के लिये परमेश्वर
के आगे प्रायश्चित्त करे। ३०। और वुह उन पिण्डुकियों में से अथवा कपोत
के बच्चों में से जो उस के हाथ लगे॥ ३१। एक तो पाप की भेंट के लिये
और दूसरा होम की भेंट के लिये भोजन की भेंट के साथ चढ़ावे और याजक
उस के लिये जो पवित्र किया जाता है परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे॥
३२। यह उस कोढ़ी की मरी की व्यवस्था है जो अपने पवित्र करने की
पूंजी न रखता हो॥ ३३। फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके
बोला॥ ३४। कि जब तुम कनआन देश में पहुंचो जो मैं तुम्हें अधिकार
के लिये देता हूं और मैं तुम्हारे अधिकार के देश के किसी घर में कोढ़ की
मरी लाओं॥ ३५। तब उस घर का स्वामी याजक पास आके कहे कि
मुझे ऐसा दिखाई देता है कि घर में कुछ मरी सी है॥ ३६। तब याजक
आज्ञा करे कि वे उस घर को उस्से आगे कि याजक मरी को देखने जाय

छूछा करें जिसतें घर की समस्त सामग्री अपवित्र न हो जाय उस के पीछे याजक घर के भीतर देखने जाय॥ ३७। और वुह उस मरी पर दृष्टि करे यदि मरी उस घर की भीतों पर हरी सी अथवा लाल सी और गहिरी लकीर दिखाई देवे॥ ३८। तो याजक घर के द्वार से बाहर निकल के घर को सात दिन लों बंद करे॥ ३९। और याजक सातवें दिन फिर आके देखे यदि वुह मरी घर की भीतों पर फैली दिखाई देवे॥ ४०। तो याजक आज्ञा करे कि उन पत्थरों को जिन में मरी है निकाल डालें और नगर के बाहर अपवित्र स्थान पर फेंक देवें॥ ४१। फिर वुह घर के भीतर चारों ओर खुरचवावे और वे उस खुरची धूल को नगर के बाहर अपवित्र स्थान में फेंक देवें॥ ४२॥ और वे और पत्थर लेके उन पत्थरों के स्थान पर जोड़ें और वुह दूसरा खोआ लेकर घर की गच करे॥ ४३। और यदि पत्थर निकालने के और घर खुरचाने के पीछे और गच करने के पीछे मरी आवे और उस घर में फूट निकले॥ ४४। तब याजक आके देखे यदि वुह मरी घर में फैली देखे तो वुह घर कोढ़ी और अशुद्ध है॥ ४५। वुह उस घर को और उस के पत्थरों को और उस की लकड़ियों को और उस के सब खोये को गिरा देवे और वुह उन्हें नगर के बाहर अपवित्र स्थान में ले जाय॥ ४६। इस्से अधिक जब लों वुह घर बंद होय जो कोई उस घर में जाय सो सांझ लों अशुद्ध होगा॥ ४७। और जो कोई उस घर में सोये सो अपने कपड़े धोवे और जो कोई उस घर में कुछ खाय सो अपने कपड़े धोवे॥ ४८। और यदि घर के गच होने के पीछे याजक आते आते उस घर में आवे और देखे कि वुह मरी घर पर नहीं फैली तो याजक उस घर को पवित्र ठहरावे क्योंकि वुह मरी से चंगा हो गया॥ ४९। तब उस घर को पवित्र करने के लिये दो चिड़ियां और शमशाद की लकड़ी और लाल और जूफा लेवे॥ ५०। और उन चिड़ियों में से एक को मिट्टी के पात्र में बहते पानी पर बलि करे॥ ५१। फिर वुह शमशाद की लकड़ी और जूफा और लाल और उस जीती चिड़िया को लेके उन्हें बलि किई हुई चिड़िया के लोहू में और उस बहते पानी में चभोरे और सात बेर उस घर पर छिड़के॥ ५२। और चिड़िया के लोहू और बहते पानी और जीती चिड़िया और शमशाद की

लकड़ी और जूफा और लाल से उस घर को पवित्र करे॥ ५३। परंतु वुह उस जीती चिड़िया को नगर के बाहर चौगान की ओर छोड़े और उस घर के लिये प्रायश्चित्त करे और वुह पवित्र हो जायगा॥

५४। हर भांति के कोढ़ की मरी और सेहुआं के॥ ५५। और वस्त्र और घर के कोढ़ के लिये॥ ५६। और उभरना और घाव और चकचकिया बिंदु के लिये यह व्यवस्था है॥ ५७। अपवित्र और पवित्र होने के दिन सिखलावे क्योंकि कोढ़ के लिये यही व्यवस्था है॥

१५ पंद्रहवां पर्व्व॥

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि यदि किसी मनुष्य के प्रमेह का रोग होवे तो वुह प्रमेह के कारण से अशुद्ध है॥ ३। और यदि उस का प्रमेह थम जाय अथवा बना रहे वुह अशुद्ध है॥ ४। हर एक बिछौना जिस पर प्रमेही लेटता है सो अशुद्ध होगा और हर एक वस्तु जिस पर वुह बैठता है अशुद्ध होगी॥ ५। और जो कोई उस के बिछौने को छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ ६। और जो कोई उस वस्तु पर जिस पर प्रमेही बैठता है बैठे सो अपने कपड़े धोवे और पानी में नहावे और सांझ लों अशुद्ध रहेगा॥ ७। और जो कोई उस के शरीर को जिसे प्रमेह है छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहेगा॥ ८। और यदि प्रमेही किसी पवित्र मनुष्य पर थूके तो वुह मनुष्य अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ ९। और जिस आसन पर वुह बैठे सो अपवित्र होगा॥ १०। और जो कोई उस वस्तु को जो उस प्रमेही के नीचे है छूवे सो सांझ लों अपवित्र रहेगा और जो कोई उन वस्तुन को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ ११। और बिन हाथ धोये जिस किसी को प्रमेही छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ १२। और जिस मिट्टी के पात्र को प्रमेही छूवे सो तोड़ा जाय और यदि काष्ठ का पात्र

होय तो पानी से धोया जाय॥ १३। और जब प्रमेही चंगा हो जाय तब वुह अपने पवित्र होने के लिये सात दिन गिने तब वुह अपने कपड़े धोवे और अपना शरीर बहते पानी से धोवे तब वुह पवित्र होगा॥ १४। और आठवें दिन दो पिण्डुकी अथवा कपोत के दो बच्चे लेके परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर आवे और उन्हें याजक को सौंपे॥ १५। याजक उन्हें चढ़ावे एक पाप की भेंट के लिये और दूसरी होम की भेंट के लिये और याजक उस प्रमेही के कारण परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे॥ १६। और यदि किसी मनुष्य से रात को बीर्य्य जाय तब वुह अपना समस्त शरीर पानी से धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ १७। और जिस कपड़े अथवा चमड़े पर रतिका बीर्य्य पड़े सो पानी से धोया जाय और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ १८। और स्त्री भी जिस्से पुरुष रति करे दोनों पानी से स्नान करें और सांझ लों अपवित्र रहेंगे॥ १९। और यदि स्त्री रजस्वला हो तो वुह सात दिन अलग किई जाय जो कोई उसे छूयेगा सो सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २०। और सब वस्तें जिस पर वुह अपने अलग होने के दिन में लेटे अपवित्र होंगी और हर एक वस्तु जिस पर वुह बैठे सो अपवित्र होगी॥ २१। और जो कोई उस के बिछौने को छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २२। और जो कोई किसी वस्तु को छूवे जिस पर वुह बैठी थी सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २३। और यदि कोई वस्तु उस के बिछौनों पर अथवा किसी पर हो जिस पर वुह बैठती है और उस समय कोई उस वस्तु को छूवे तो वुह सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २४। और यदि पुरुष उस के साथ लेटे और वुह रजस्वला में होय तो वुह सात दिन लों अपवित्र रहेगा और हर एक बिछौना जिस पर वुह पुरुष लेटता है सो अपवित्र होगा॥ २५। और यदि स्त्री का रजोधर्म्म उस के ठहराये हुए दिनों से अधिक होवे अथवा यदि उस के अलग होने के समय से अधिक बहे तो उस की अपवित्रता के बहने से सब दिन उस के अलग होने के दिनों के समान होवें क्योंकि वुह अपवित्र है॥ २६। और उस के बहने के सब दिनों में हर एक बिछौना

जिस पर वुह लेटती है और जिस पर वुह बैठती है सो उस के अलग होने की अपवित्रता के समान अपवित्र होगा॥ २७। और जो कोई उन बस्तुन को छूवे सो अपवित्र होगा और अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २८। और जब वुह अपने रज से पवित्र होवे तब सात दिन गिने उस के पीछे वुह पवित्र होगी॥ २९। और आठवें दिन वुह दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे लेवे और तंबू के द्वार पर याजक पास आवे॥ ३०। और याजक एक को पाप की भेंट और दूसरे को होम की भेंट के लिये चढ़ावे और याजक उस के रज की अपवित्रता के लिये परमेश्वर के आगे उस के लिये प्रायश्चित्त करे॥ ३१। तुम इसराएल के संतानों को उन की अपवित्रता से यों अलग करो जिस में वे अपनी अपवित्रता से मर न जावें जब वे मेरे तंबू को जो उन के मध्य में है अपवित्र करें॥ ३२। उस के लिये जिसे प्रमेह का रोग होय और उस के लिये जो रति करने से अपवित्र होय और उस के लिये जो रजस्वला होय और उस पुरुष और स्त्री के लिये जिसे प्रमेह का रोग होय और उस पुरुष के लिये जो रजस्वला के साथ लेटता हो यही व्यवस्था है॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

और जब हारून के दो बेटे परमेश्वर के आगे नैवेद्य लाये और मर गये उस के पीछे परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ २। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने भाई हारून को कह कि वुह हर समय पवित्र स्थान के ओहार के भीतर दया के आसन के आगे जो मंजूषा पर है न आया करे न हो कि मर जाय क्योंकि मैं मेघ में दया के आसन पर दिखाई दूंगा॥ ३। पवित्र स्थान में हारून यों आवे पाप की भेंट के लिये एक बछड़ा और होम की भेंट के लिये एक मेंढ़ा लावे॥ ४। पवित्र सूती कुरती पहिने और उस के शरीर पर सूती सूथनी हो और सूती पटुके से उस की कटि बंधी हो और अपने सिर पर सूती पगड़ी रक्खे ये पवित्र बस्त्र हैं और वुह अपना शरीर पानी से धोवे और उन्हें पहिने॥ ५। और इसराएल के संतानों की मंडली से बकरी के दो मेम्ने पाप की भेंट

के लिये और एक मेंढ़ा होम की भेंट के लिये लेवे॥ ६। और हारून
पाप की भेंट के उस बछड़े को जो उस के लिये है लावे और अपने लिये
और अपने घर के लिये प्रायश्चित्त करे॥ ७। फिर उन दोनों बकरों
को लेके मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे ले आवे॥ ८।
और हारून उन दोनों बकरों पर चिट्ठी डाले एक चिट्ठी परमेश्वर के
लिये और दूसरी बकरा छुड़ाने के लिये॥ ९। और हारून उस
बकरे को लावे जिस पर परमेश्वर के नाम की चिट्ठी पड़े और उसे पाप
की भेंट के लिये बलि चढ़ावे॥ १०। परंतु छुड़ाने के लिये जिस बकरे
पर चिट्ठी पड़े उसे परमेश्वर के आगे जीता लावे कि उस्से प्रायश्चित्त
किया जाय और उस को छुड़ावन के लिये बन में छोड़ दे॥ ११।
तब हारून अपने लिये पाप की भेंट के बछड़े को लावे और अपने और
अपने घर के लिये प्रायश्चित्त करे और पाप की भेंट के बछड़े को जो
अपने लिये है बलि करे॥ १२। और वुह परमेश्वर के आगे बेदी पर से
एक धूपावरी अंगारों से भरी ऊई और अपनी मुट्ठी भरी ऊई सुगंध लेवे
और घूंघट के भीतर लावे॥ १३। और उस धूप को परमेश्वर के आगे
आग में डाल देवे जिस में धूप का मेघ दया के आसन को जो साक्षी
पर है छिपावे और आप न मरे॥ १४। फिर वुह बछड़े का लोहू लेके
अपनी अंगुली से दया के आसन की पूर्व ओर छिड़के और दया के आसन
के आगे अपनी अंगुली से सात बेर लोहू छिड़के॥ १५। फिर वुह
लोगों के लिये पाप की भेंट की बकरी को बलि करे और उस के लोहू
को घूंघट के भीतर लाके जैसा उस ने बछड़े के लोहू से किया था वैसाही
करे और दया के आसन के ऊपर और उस के आगे छिड़के॥ १६।
और पवित्र स्थान के कारण इसराएल के संतानों की अपवित्रता के लिये
और उन के पापों और उन के समस्त अपराधों के लिये प्रायश्चित्त करे
और वुह मंडली के तंबू के लिये भी जो उन के साथ उन की अपवित्रता
के मध्य में है ऐसा ही करे॥ १७। और जब वुह प्रायश्चित्त करने के
लिये मंडली के तंबू में जाय तो जब लों वुह बाहर न आवे और अपने
लिये और अपने घराने के लिये और इसराएल की मंडली के लिये
प्रायश्चित्त न देवे तब लों तंबू में कोई न जाय॥ १८। फिर वुह निकल के

उस बेदी पर आवे जो परमेश्वर के आगे है और उस के लिये प्रायश्चित्त
करे और उस बछड़े और उस बकरे के लोहू में से लेके बेदी के सींगों
की चारों ओर लगावे॥ १९। और अपनी अंगुली से उस पर सात
बेर लोहू छिड़के और उसे इसराएल के संतानों की अपवित्रता से पावन
और शुद्ध करे॥ २०। और जब वुह पवित्र स्थान के और मंडली के
तंबू के और बेदी के लिये मिलाप कर चुका तब उस जीते बकरे को
लावे॥ २१। और हारून अपने दोनों हाथ उस जीते बकरे के सिर
पर रक्खे और इसराएल के संतानों की बुराइयों और उन के सारे पाप
और अपराधों को मान लेके उन्हें इस बकरे के सिर पर धरे और उसे
किसी मनुष्य के हाथ जो उस के लिये ठहरा हो बन को भिजवा दे॥ २२।
और वुह बकरा उन की सारी बुराइयां अपने ऊपर उठाके दूर देश
में ले जायगा और वुह उस बकरे को बन में छोड़ देवे॥ २३। फिर
हारून मंडली के तंबू में आवे और सूती बस्त्रों को जो उस ने पवित्र
स्थान में जाने के समय पहिने थे उतारे और उन्हें वहां रख देवे॥ २४।
फिर वुह पवित्र स्थान में अपना शरीर पानी से धोवे और अपने बस्त्र
पहिन के बाहर आवे और अपने होम की भेंट और लोगों के होम की
भेंट चढ़ावे और अपने लिये और लोगों के लिये प्रायश्चित्त करे॥ २५।
और पाप की भेंट की चिकनाई बेदी पर जलावे॥ २६। और जिस ने
छुड़ाया हुआ बकरा छोड़ दिया सो अपने कपड़े धोवे और पानी से
नहावे और उस के पीछे छावनी में प्रवेश करे॥ २७। और पाप की
भेंट को और बकरे को जिस का लोहू पवित्र स्थान में प्रायश्चित्त के लिये
पहुंचाया गया छावनी से बाहर ले जावें और उन की खालें और उन
का मांस और गोबर आग में जला देवें॥ २८। और जिस ने उन्हें
जलाया सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे उस के पीछे
छावनी में आवे॥ २९। यह तुम्हारे लिये सनातन की बिधि होगी
सातवें मास की दसवीं तिथि को तुम अपने प्राण को कष्ट देओ और
कुछ कार्य्य न करो चाहे देशी चाहे परदेशी जो तुम्हों में बास करता
है॥ ३०। क्योंकि उस दिन तुम्हारे कारण तुम्हें पवित्र करने के लिये
प्रायश्चित्त किया जायगा जिसतें तुम अपने समस्त पापों से परमेश्वर के

आगे पवित्र हो जाओ॥ ३१। यह तुम्हारे लिये स्मरण का बिश्राम होगा तुम उस दिन अपने प्राण को कष्ट दीजियो यह तुम्हारे लिये सदा की बिधि है॥ ३२। और वुह जिस याजक को अभिषेक करे और जिसे वुह याजक के पद में सेवा करने के लिये अपने पिता की संती सेवा के लिये स्थापित करे सोई प्रायश्चित्त करे और पवित्र सूती बस्त्र को पहिने॥ ३३। और पवित्र स्थान के लिये और मंडली के तंबू के लिये और बेदी के लिये और याजकों के लिये और मंडली के सब लोगों के लिये प्रायश्चित्त करे॥ ३४। और यह तुम्हारे लिये सनातन की बिधि है जिसतें तुम इसराएल के संतानों के लिये उन के सब पापों के कारण बरस में एक बार प्रायश्चित्त करो सो जैसा परमेश्वर ने मूसा से कहा था उस ने वैसा ही किया।

१७ सतरहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि हारून और उस के बेटों और इसराएल के समस्त संतानों से कहके बोल कि यह वुह बात है जिसे परमेश्वर ने आज्ञा किई है॥ ३। जो मनुष्य इसराएल के घरानों में से बैल अथवा मेम्ना अथवा बकरी छावनी में अथवा छावनी के बाहर बलि करे॥ ४। और मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के तंबू के आगे भेंट चढ़ाने के लिये न लावे तो उस मनुष्य पर लोहू का दोष होगा क्योंकि उस ने लोहू बहाया और वुह मनुष्य अपने लोगों में से कट जायगा॥ ५। यह इस लिये है कि इसराएल के संतान अपने बलिदानों को जिन्हें वे चौगान में चढ़ाते हैं परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावें और उन्हें परमेश्वर के आगे कुशल की भेंट के लिये चढ़ावें॥ ६। और याजक वुह लोहू मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर की बेदी पर छिड़के और परमेश्वर के सुगंध के लिये चिकनाई को जलावे॥ ७। और आगे को पिशाचों के लिये जिन के पीछे वे बेश्यागामी थे न चढ़ावें उन की पीढ़ियों में यह सनातन की बिधि होगी॥

८। और तू उन्हें कह कि इसराएल के घराने में अथवा परदेशी में जो तुम्हों में बास करता है जो कोई होम की भेंट अथवा बलि की भेंट

चढ़ावे॥ ९। और उसे मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के लिये न
चढ़ावे वही मनुष्य अपने लोगों में से काट डाला जायगा॥ १०। और
इसराएल के घरानों में से अथवा परदेशियों में से जो तुम्हों में बास करता
है जो कोई किसी रीति का लोहू खाय निश्चय मैं उसी लोहू के भक्षक
का बिरोधी हूंगा और उसे उस के लोगों में से काट डालूंगा॥ ११।
क्योंकि शरीर का जीवन लोहू में है सो मैं ने उसे बेदी पर तुम्हें दिया
है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त होवे क्योंकि लोहू से प्राण के
लिये प्रायश्चित्त होता है॥ १२। इस लिये मैं ने इसराएल के संतानों से
कहा कि तुम्में से कोई प्राणी लोहू न खाय और कोई परदेशी जिस का
बास तुम्में है लोहू न खाय॥ १३। और इसराएल के संतानों में से
अथवा परदेशियों में से जिस का बास तुम्में है जो कोई खाने के योग्य पशु
अथवा पक्षी अहेर करके पकड़े सो लोहू को बहा देवे और उसे धूल से
ढांप देवे॥ १४। क्योंकि यह हर एक शरीर का जीव है उस का लोहू
उस का जीव है इस लिये मैं ने इसराएल के संतानों को आज्ञा किई कि
किसी रीति के मांस का लोहू मत खाओ क्योंकि लोहू हर एक मांस का
जीव है जो कोई उसे खायेगा सो अपने लोगों में से कट जायगा॥ १५।
जो कुछ मर जाय अथवा फाड़ा जाय चाहे देशी होवे चाहे परदेशी जो
प्राणी उसे खाय सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ
लों अपवित्र रहे तब वुह पवित्र होगा॥ १६। पर यदि वुह न धोवे
और स्नान न करे तो वुह दोषी होगा॥

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों
से कहके बोल कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ३। तुम मिस्र के
देश की चालों पर जिस में तुम रहते थे न चलियो और कनआन के देश
के से काम न करो जहां मैं तुम्हें ले जाता हूं और उन के व्यवहारों पर
न चलियो॥ ४। मेरे बिचारों पर चलो और मेरी बिधि को पालन
करो और उन पर चलो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ५। सो मेरी
बिधि और मेरे बिचारों को पालन करो यदि मनुष्य उन्हें पालन करे तो

वुह उन से जीयेगा मैं परमेश्वर हूं॥ ६। उन का नंगापन उघारने के लिये तुम्में से कोई अपने कुटुम्ब के पास न जाय मैं परमेश्वर हूं॥ ७। अपने पिता का नंगापन अथवा अपनी माता का नंगापन मत उघार क्योंकि वुह तेरी माता है तू उस का नंगापन मत उघार॥ ८। अपने पिता की पत्नी का नंगापन मत उघार वुह तेरे पिता का नंगापन है॥ ९। अपनी बहिन का नंगापन अपने पिता की बेटी का अथवा अपनी माता की बेटी का जो घर में अथवा बाहर उत्पन्न हुई हो नंगापन मत उघार॥ १०। अपने पुत्र की बेटी का अथवा अपनी बेटी का नंगापन मत उघार क्योंकि उन का नंगापन तेरा ही है॥ ११। तेरे पिता की पत्नी की बेटी जो तेरे पिता की जन्मी है तेरी बहिन है तू उस का नंगापन मत उघार॥ १२। अपने पिता की बहिन का नंगापन मत उघार वुह तेरे पिता की समीपी कुटुम्ब है॥ १३। अपनी माता की बहिन का नंगापन मत उघार क्योंकि वुह तेरी माता की समीपी कुटुम्ब है॥ १४। अपने पिता के भाई का नंगापन मत उघार और उस की पत्नी पास मत जा वुह तेरी चाची है॥ १५। अपनी बहू का नंगापन मत उघार वुह तेरे बेटे की पत्नी है उस का नंगापन मत उघार॥ १६। अपने भाई की पत्नी का नंगापन मत उघार वुह तेरे भाई का नंगापन है॥ १७। किसी स्त्री का और उस की बेटी का नंगापन मत उघार उस के बेटे की बेटी का और उस की बेटी का नंगापन मत उघार क्योंकि वुह उस की समीपी कुटुम्ब है यह बड़ी दुष्टता है॥ १८। और तू किसी स्त्री को खिजाने के लिये उस के जीते जी उस की बहिन समेत मत ले जिसतें उस का नंगापन उघारे॥ १९। और जब लों स्त्री अपवित्रता के लिये अलग किई गई हो उस का नंगापन उघारने के लिये उस के पास मत जा॥ २०। और अपने परोसी की पत्नी के संग कुकर्म्म मत कर जिसतें आप को उस्से अपवित्र करे॥ २१। अपने पुत्रों में से मोलक को मत चढ़ा और अपने परमेश्वर के नाम को अनरीति से मत ले मैं परमेश्वर हूं॥ २२। तू पुरुष गमन मत कर वुह घिनित है॥ २३। पशु गामी होके आप को अशुद्ध मत कर और कोई स्त्री पशु गामिनी न हो यह गड़बड़ है॥ २४।

इन बातें में आप को अशुद्ध मत कर क्योंकि जिन जातिगणें को मैं तुम्हारे आगे निकालता हूं वे इन बातें में अशुद्ध हैं॥ २५। और देश अशुद्ध है इस कारण मैं उस के अपराध का पलटा लेता हूं और देश भी अपने बासियें को उगलता है॥ २६। सो तुम मेरी विधि और मेरे विचारें को पालन करो और इन घिनितें में से किसी को न करो न देशी न तुम्हारा परदेशी जो तुम्में बास करता है॥ २७। क्योंकि देशी ने जो तुम से आगे थे ये समस्त घिनित कार्य्य किये और देश अशुद्ध हुआ है॥ २८। जिसतें जब तुम देश को अशुद्ध करो वुह तुम्हें भी उगल न देवे जिस रीति से उन जातिगणें को जो तुम से आगे थे उगला॥ २९। जो कोई उन घिनैानी क्रियें में से कुछ करेगा ऐसा कुकर्म्मी प्राणी अपने लोगें में से कट जायेगा॥ ३०। सो तुम मेरी व्यवस्थां को पालन करो और उन घिनैानी क्रियें में से जो तुम से आगे किई गईं कोई क्रिया न करो और अपने को उन से अशुद्ध न करो मैं तुम्हारा परमेश्वर ईश्वर हूं॥

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। इसराएल के संतानें की सारी मंडली से कहके बोल कि पवित्र होओ क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर पवित्र हूं॥ ३। तुम अपने अपने माता पिता से डरते रहो और मेरे बिश्राम के दिनें को पालन करो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ४। तुम मूर्तिन की ओर मत फिरो और न ढाल के अपने लिये देवता बनाओ मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ५। और यदि तुम कुशल की भेटें का बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाओ तो अपनी प्रसन्नता के लिये चढ़ाओ॥ ६। चाहिये कि जब उसे चढ़ाओ वुह उसी दिन और दूसरे दिन खाया जाय और यदि तीसरे दिन लों कुछ बच रहे तो आग में जला दिया जाय॥ ७। और यदि वुह तनिक भी तीसरे दिन खाया जाय तो घिनित है वुह ग्राह्य न होगा॥ ८। सो जो कोई उसे खायगा सो अपराधी होगा क्योंकि उस ने परमेश्वर की पवित्र बस्तु को अशुद्ध किया वुह मनुष्य अपने लोगें में से काटा जायगा॥

९। और जब तू अपना खेत काटे तब खेत के कोने को सर्बत्र मत काट ले और न अपने खेत का बिन्ना कर॥ १०। और तू अपने दाख को मत बिन और न अपने हर एक अंगूर को बटोर उन्हें कंगालों और परदेशी के लिये छोड़ मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ११। तुम चोरी मत करो और झुठाई से ब्यवहार न करो एक दूसरे से झूठ मत बोलो॥ १२। और मेरा नाम लेके झूठी किरिया मत खाओ तू अपने ईश्वर के नाम को अपवित्र मत कर मैं परमेश्वर हूं॥ १३। अपने परोसी से छल मत कर और उस्से कुछ मत चुरा बनिहारों की बनी रात भर बिहान लों तेरे पास न रह जाय॥ १४। बहिरे को दुर्बचन मत कह तू अंधे के आगे ठोकर खाने की बस्तु मत रख परंतु अपने ईश्वर से डरता रह मैं परमेश्वर हूं॥ १५। तुम न्याय में अधर्म्म मत करो तू कंगाल का पक्ष मत कर और बड़े को बड़ाई के लिये प्रतिष्ठा मत दे परंतु धर्म्म से अपने परोसी का न्याय कर॥ १६। अपने लोगों में लुतड़ा बन के मत आया जाया कर और अपने परोसी के लोहू के बिरोध में मत खड़ा हो मैं परमेश्वर हूं॥ १७। मन में अपने भाई से बैर मत रख तू अपने परोसी को किसी भांति से दपट दे और उस पर पाप मत छोड़॥ १८। तू अपने लोगों के संतानों से बैर मत रख और अपना पलटा मत ले परंतु अपने परोसी को अपने समान प्यार कर मैं परमेश्वर हूं॥ १९। तुम मेरी बिधि का पालन करो तू अपने ढोरों को और जातियों से मत मिलने दे तू अपने खेत में मिले हुए बीज मत बो और सूत का मिला हुआ बस्त्र मत पहिन॥ २०। जो कोई किसी स्त्री से जो बचन दत्त दासी हो और छुड़ाई न गई हो और निर्बंध न हुई हो ब्यभिचार करता है सो ताड़ना पावेगा वे मार डाले न जावेंगे इस लिये कि वुह निर्बंध न थी॥ २१। सो वुह परमेश्वर के लिये मंडली के तंबू के द्वार पर अपने अपराध की भेंट लावे अपराध की भेंट एक मेढ़ा होवे॥ २२। और याजक उस के लिये अपराध की भेंट के मेढ़े को परमेश्वर के आगे उस के पाप के लिये प्रायश्चित्त करे तब वुह अपराध जो उस ने किया है क्षमा किया जायगा॥ २३। और जब तुम उस देश में पहुंचो और खाने के लिये भांति भांति के पेड़ लगाओ तो तुम उस के फल को अखतनः

समझो तीन बरस लों तुम्हारे लिये अखतनः के तुल्य रहे वुह खाया
न जायगा॥ २४। परंतु चौथे बरस उस के सारे फल परमेश्वर की
स्तुति के लिये पवित्र होंगे॥ २५। और पांचवें बरस तुम उस का फल
खाओ जिसतें तुम्हारे लिये अपनी बढ़ती देवे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर
हूं॥ २६। तुम लोहू सहित मत खाओ और टोना मत करो और
समयों को न मानो॥ २७। तुम अपने सिरों के बालों को गोलाई से
मत मुड़ाओ और अपनी दाढ़ी के कोनों को मत बिगाड़ो॥ २८।
मृतकों के लिये अपने मांस को मत काटो और अपने ऊपर गोदने से
चिन्ह मत करो मैं परमेश्वर हूं॥ २९। बेश्या बनाने के लिये अपनी
कन्या से ब्यभिचार मत करा ऐसा न होवे कि देश बेश्यागामी में पड़े और
दुष्टता से परिपूर्ण होवे॥ ३०। मेरे बिश्राम के दिनों का पालन करो
और मेरे पवित्र स्थान की प्रतिष्ठा करो मैं परमेश्वर हूं॥ ३१। ओझा
को मत मानो और टोन्हों का पीछा करके आप को अशुद्ध मत करो मैं
परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ३२। पक्के बालों के आगे उठ खड़ा हो
और पुरनिया के रूप को प्रतिष्ठा दे और अपने ईश्वर से डर मैं परमेश्वर
हूं॥ ३३। यदि तुम्हारे देश में परदेशी टिके तो तुम उस को मत
खिजाओ परंतु परदेशी को जो तुम्में बास करता है ऐसा जानो जैसा कि
वुह तुम्में जन्मा और उसे अपने तुल्य प्यार करो इस लिये कि तुम मिस्र की
भूमि में परदेशी थे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ३५। बिचार में
परिमाण में तौल में मापने में अधर्म्म मत करो॥ ३६। धर्म्म का तुला
धर्म्म का नपुआ धर्म्म की दससेरिया और धर्म्म की पसेरी तुम्में होवे मैं
परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र की भूमि से निकाल लाया॥
३७। सो तुम मेरी समस्त बिधि और मेरे बिचारों को पालन करो
और उन्हें मानो मैं परमेश्वर हूं॥

२० बीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि अब तू इसराएल के
संतानों को फेर कह कि जो कोई इसराएल के संतानों में से अथवा
परदेशी जो उन में टिका है अपने बंश में से मोलक को भेंट चढ़ा-

वेगा वुह निश्चय घात किया जायगा देश के लाेग उस पर पत्थरवाह करें॥ ३। और मैं उस मनुष्य पर बैर की रुखाई करूंगा और उस के लाेगाें में से उसे काट दूंगा इस लिये कि उस ने अपने बंश में से मोलक को चढ़ाया जिसतें मेरे पवित्र स्थान को अपवित्र और मेरे पवित्र नाम का अपमान करे॥ ४। और यदि देश के लाेग किसी भांति से उस मनुष्य से आंख छिपावें जिस ने अपने बंश में से मोलक को भेंट चढ़ाया है और उसे घात न करें॥ ५। तो मैं उस मनुष्य पर और उस के घराने पर बैर की रुखाई करूंगा और उसे उन सब समेत जो मोलक से व्यभिचार करते हैं उन्हें अपने लाेगाें में से काट डालूंगा॥ ६। और उस मनुष्य पर जो ओझाओं और टोन्हों की ओर जाता है जिसतें उन के समान व्यभिचार करे मैं उस मनुष्य पर अपना क्रोध भड़काऊंगा और उसे उस के लाेगाें में से काट डालूंगा॥ ७। सो अब आप को पवित्र करो और पावन होओ क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ८। और मेरी व्यवस्थाें को स्मरण करो और उन्हें मानो मैं वुह परमेश्वर हूं जो तुम्हें पवित्र करता है॥ ९। जो कोई अपनी माता अथवा पिता को धिक्कारे सो निश्चय मार डाला जायगा क्योंकि उस ने अपने माता पिता को धिक्कारा है उस का लोहू उसी पर है॥ १०। और जो मनुष्य किसी की पत्नी से अथवा अपने परोसी की पत्नी से कुकर्म करे कुकर्मी और कुकर्मिणी दोनों निश्चय मार डाले जायेंगे॥ ११। और जो मनुष्य अपने पिता की पत्नी से व्यभिचार करे सो दोनों निश्चय मार डाले जायेंगे क्योंकि उस ने अपने पिता का नंगापन खोला उन का लोहू उन्हीं पर है॥ १२। और जो मनुष्य अपनी बहू से कुकर्म करे वे दोनों निश्चय मार डाले जायेंगे उन्हों ने गड़बड़ किया है उन का लोहू उन्हीं पर है॥ १३। और यदि कोई मनुष्य पुरुषगामी होवे तो उन दोनों ने घिनित कार्य किया है वे अवश्य मार डाले जायेंगे उन का लोहू उन्हीं पर है॥ १४। और यदि कोई स्त्री को और उस की माता को भी रक्खे यह दुष्टता है वे तीनों के तीनों जलाये जायेंगे जिसतें तुम्हों में दुष्टता न रहे॥ १५। और यदि कोई मनुष्य पशु से कुकर्म करे वुह निश्चय मार डाला जायगा और उस पशु को घात करो। १६। और यदि स्त्री

पशु से कुकर्म्म करे और उस के तले होय तो उस स्त्री को और उस पशु को मार डालो वे निश्चय प्राण से मारे जावें उन का लोहू उन्हीं पर है॥ १७। और यदि कोई मनुष्य अपनी बहिन को अथवा अपने पिता की बेटी को अथवा अपनी माता की बेटी को लेके आपुस में एक दूसरे की नग्नता देखे यह दुष्ट कर्म्म है वे दोनों अपने लोगों के आगे मार डाले जायेंगे उस ने अपनी बहिन का नंगापन प्रगट किया वुह दोषी होगा॥ १८। और यदि मनुष्य रजस्वला स्त्री के साथ सोवे और उस की नग्नता उघारे तो उस ने उस का सोता उघारा है और उस ने अपने लोहू का सोता खुलवाया वे दोनों अपने लोगों से काटे जायेंगे॥ १९। और तू अपनी मौसी और अपनी फूफू की नग्नता मत उघार क्योंकि उस ने अपने समीपी कुटुम्ब का उघारा है वे दोषी होंगे॥ २०। और यदि कोई अपनी चाची के साथ कुकर्म्म करे उस ने अपने चाचा की नग्नता को उघारा है वे अपने पाप को भोगेंगे वे निर्बंश मरेंगे॥ २१। और यदि मनुष्य अपने भाई की पत्नी को लेवे यह अशुद्ध कर्म्म है उस ने अपने भाई की नग्नता उघारी है वे निर्बंश होंगे॥ २२। सो तुम मेरी समस्त विधि को और मेरे न्यायों का पालन करो और उन पर चलो जिसतें जिस देश में मैं तुम्हें बसाने को ले जाता हूं सो तुम्हें उगल न देवे॥ २३। तुम उन लोगों के व्यवहारों पर जिन्हें मैं तुम्हारे आगे हांकता हूं मत चलो क्योंकि उन्हों ने ऐसे ही सब काम किये इसी लिये मैं ने उन से घिन किई॥ २४। परंतु मैं ने तुम्हें कहा कि तुम उन के देश के अधिकारी होओगे और मैं उस देश को तुम्हें दूंगा जहां दूध और मधु बहि रहा है मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें लोगों में से चुन लिया है॥ २५। सो तुम पवित्र और अपवित्र पशुन में और अपवित्र और पवित्र पक्षियों में ब्यौरा करो और तुम पशुन और पक्षियों और जीवधारी के कारण से जो भूमि पर रेंगता है जिन्हें मैं ने तुम्हारे लिये अपवित्र ठहराया है आप को अपवित्र न करो॥ २६। और मेरे लिये पवित्र हो जाओ क्योंकि मैं परमेश्वर पवित्र हूं और मैं ने तुम्हें लोगों में से चुन लिया है जिसतें तुम मेरे होओ॥ २७। और जो मनुष्य अथवा स्त्री ओझा अथवा टोन्हा हो सो निश्चय मार डाला जाय वे पत्थरवाह किये जायेंगे उन का लोहू उन्हीं पर होवे॥

२१ एक्कीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बाला कि हारून के बेटे याजकों से कह और
उन्हें बाल कि अपने लोगों की मृत्यु के कारण कोई अशुद्ध न होवे॥ २।
परंतु अपने समीपी कुटुम्ब के लिये अपनी माता अपने पिता अपने
पुत्र अपनी पुत्री और अपने भाई के लिये॥ ३। और अपनी कुंआरी
बहिन के लिये जो अनब्याही है उस के कारण वुह अशुद्ध होवे॥ ४।
जो अपने लोगों में प्रधान है सो आप को अशुद्ध न करे जिसतें आप को
हलुक करे॥ ५। वे अपने सिरों के बाल न मुड़ावें और अपनी दाढ़ी के
कोनों को न मुड़ावें और अपने मांस को न काटें॥ ६। वे अपने ईश्वर के
लिये पवित्र बनें और अपने ईश्वर के नाम को हलुक न करें क्योंकि वे
परमेश्वर के लिये आग की भेंट ईश्वर को भोग लगाते हैं सो वे पवित्र
होंगे॥ ७। वे वेश्या को अथवा तुच्छ को पत्नी न करें और न उस स्त्री
को जो पति से त्यागी गई है क्योंकि वे अपने ईश्वर के लिये पवित्र है॥
८। इस लिये तू उसे पवित्र कर क्योंकि वुह तेरे ईश्वर का भोजन
चढ़ाता है वुह तेरे लिये पवित्र होवे क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा शुद्धकर्त्ता
पवित्र हूं॥ ९। और यदि किसी याजक की पुत्री वेश्या का कर्म्म करके
आप को तुच्छ करे वुह अपने पिता को तुच्छ करती है वुह आग से जलाई
जायगी॥ १०। और वुह जो अपने भाइयों में प्रधान याजक है जिस
के सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया और जो स्थापित किया गया कि
वस्त्र पहिने सो अपना सिर नंगा न करे और अपने कपड़े न फाड़े॥ ११।
वुह किसी लोथ के पास न जाय और न अपने पिता और न अपनी माता
के लिये आप को अशुद्ध करे॥ १२। और कभी पवित्र स्थान से बाहर न
जाय और अपने ईश्वर के पवित्र स्थान को तुच्छ न करे क्योंकि उस के
ईश्वर के अभिषेक के तेल का मुकुट उस पर है मैं परमेश्वर हूं॥ १३। और
वुह कुंआरी को पत्नी करे॥ १४। विधवा अथवा त्यागी गई अथवा तुच्छ
अथवा वेश्या को न लेवे परंतु वुह अपने ही लोगों के बीच में की कुंआरी से
विवाह करे॥ १५। अपने वंश को अपने लोगों में तुच्छ न करे क्योंकि
मैं परमेश्वर उसे पवित्र करता हूं। १६। फिर परमेश्वर मूसा से कहके

बोला॥ १७। कि हारून से कह कि जो कोई तेरे बंश में से अपनी अपनी पीढ़ीयों में खोट होय सो अपने ईश्वर को नैवेद्य चढ़ाने को समीप न आवे॥ १८। क्योंकि वुह पुरुष जिस में कुछ खोट होवे सो समीप न आवे जैसे अंधा अथवा लंगड़ा अथवा वुह जिस की नाक चिपटी हो अथवा जिस पर कुछ उभड़ा है॥ १९। अथवा वुह जिसका पांव अथवा हाथ टूटा हो॥ २०। अथवा कुबड़ा अथवा बावना अथवा उस की आंख में कुछ खोट हो अथवा दाद अथवा खजुली अथवा अंड हट्ट हो॥ २१। हारून याजक के बंश में से कोई मनुष्य जिस में खोट है निकट न आवें कि परमेश्वर के होम की भेंट चढ़ावे उस में खोट है वुह अपने ईश्वर को नैवेद्य चढ़ाने को पास न आवे॥ २२। वुह अपने ईश्वर का नैवेद्य अति पावन और पवित्र खावे॥ २३। केवल वुह घूंघट के भीतर न जाय और बेदी के पास न आवे इस लिये कि उस में खोट है मेरे पवित्र स्थान को तुच्छ न करे क्योंकि मैं परमेश्वर उन्हें शुद्ध करता हूं॥ २४। तब मूसा ने हारून और उस के बेटे और समस्त इसराएल के संतानों को यह सब कहा॥

२२ बाईसवां पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि हारून और उस के बेटों से कह कि वे इसराएल के संतान की पवित्र बस्तुन से आप को अलग रक्खें और मेरे नाम की उन बस्तुन के कारण जिन्हें वे मेरे लिये पवित्र करते हैं निंदा न करें मैं परमेश्वर हूं॥ ३। उन्हें कह कि तुम्हारी पीढ़ियों में और तुम्हारे बंशों में जो कोई उन पवित्र बस्तुन के पास जो इसराएल के संतान परमेश्वर के लिये पवित्र करते हैं अपनी अपवित्रता रखके जाय वुह मनुष्य मेरे पास से काटा जायगा मैं परमेश्वर हूं॥ ४। जो कोई हारून के बंश में से कोढ़ी अथवा प्रमेही हो और जो मृतक के कारण से अपवित्र है और उसे जिस को प्रमेह है जब लों वुह पवित्र न हो ले तब लों पवित्र बस्तुन में से कुछ न खावे॥ ५। और जो कोई किसी रेंगवैया जंतु को छूवे जिस्से वुह अपवित्र होवे अथवा किसी मनुष्य को जिस्से वुह अपवित्र हो सके जो अपवित्रता उस में होवे॥ ६। वुह प्राणी

जिस ने ऐसा कुछ छूआ सांझ लों अपवित्र रहेगा और जब लों अपना शरीर
पानी से धो न ले पवित्र वस्तु में से कुछ न खाय॥ ७। और जब सूर्य्य
अस्त होवे तब वुह पवित्र होगा और उस के पीछे वुह पवित्र वस्तें खाय
क्योंकि यह उस का आहार है॥ ८। जो कुछ आप से मरे अथवा फाड़ा
जाय वुह उसे खाके आप को अशुद्ध न करे मैं परमेश्वर हूं॥ ९। इस लियें
वे मेरी व्यवस्थों का पालन करें ऐसा न होवे की उस के लिये पापी होवें
और मरें यदि वे उसे तुच्छ करें मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र करता हूं॥
१०। कोई परदेशी पवित्र वस्तु न खाय और न याजक का पाहुन और
न बनिहार पवित्र वस्तु को खाय॥ ११। परंतु जिसे याजक ने अपने
दाम से मोल लिया हो सो उसे खावे और वुह जो उस के घर में उत्पन्न
हुआ है सो उस के भोजन में से खावे॥ १२। यदि याजक की कन्या किसी
परदेशी से ब्याही जाय तो वुह भी चढ़ाई हुई पवित्र वस्तुन में से न
खाय॥ १३। पर यदि याजक की कन्या बिधवा हो जाय अथवा त्यक्त
होवे और निर्वंश हो और युवावस्था के समान अपने पिता के घर में फिर
आवे तो वुह अपने पिता के भोजन में से खाय परंतु परदेशी उसे न खाय॥
१४। और यदि पवित्र वस्तुन में से कोई अनजान खा जावे तो वुह उस के
पांचवें भाग को मिलावे और उसे उस पवित्र वस्तु सहित याजक को देवे॥
१५। और इसराएल के संतान की पवित्र वस्तुन को जो उन्हों ने परमेश्वर
के लिये चढ़ाया है वे निंदा न करें॥ १६। और आप पवित्र वस्तुन
के खाने से पाप का बोझ उन से न उठवावें क्योंकि मैं परमेश्वर उन्हें
पवित्र करता हूं॥ १७। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १८।
कि हारून को और उस के बेटों को और इसराएल के समस्त संतान को
कहके बोल कि इसराएल के घराने में से अथवा इसराएल के परदेशियों
में से जो कोई अपनी समस्त मनौती के लिये भेंट और अपनी समस्त मन
मंता की भेंट जो वे परमेश्वर के लिये होम की भेंट के लिये चढ़ावें॥ १९।
सो अपनी ग्राह्यता के लिये ढोरों में से अथवा भेड़ बकरी में से निष्खोट
नरख होवे॥ २०। और जिस पर दोष है उसे मत चढ़ाइयो क्योंकि
तुम्हारे लिये ग्राह्य न होगा॥ २१। और जो कोई अपनी मनौती पूरी
करने को अथवा बांछित भेंट ढोरों में से अथवा भेड़ में से कुशल की भेंट

परमेश्वर के लिये चढ़ावे सो ग्राह्य होने के लिये निर्दोष होवे उस में कुछ खोट न होवे॥ २२। अंधा अथवा टूटा अथवा लंगड़ा लूला अथवा जिस पर मसा अथवा दाद अथवा खुजली होवे परमेश्वर के लिये भेंट मत चढ़ाइयो उन में से होम की भेंटों को परमेश्वर की बेदी पर मत चढ़ाइयो॥ २३। बैल अथवा मेम्ना जिस का कोई अंग अधिक अथवा घटा होवे उसे बांछित भेंट के लिये चढ़ावे परंतु मनौती के कारण ग्राह्य न होगा॥ २४। कुचला हुआ अथवा दबा हुआ अथवा टुंडा अथवा काटा हुआ परमेश्वर के लिये मत चढ़ाइयो अपने देश में ऐसों को मत चढ़ाइयो॥ २५। और इन्हों में से अपने ईश्वर को नैवेद्य किसी परदेशी की ओर से मत चढ़ाइयो इस लिये कि उन की सड़ाहट उन में है वे खोटे हैं वे तुम्हारे लिये ग्राह्य न होंगे॥ २६। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २७॥ कि जब बैल अथवा भेड़ बकरी उत्पन्न होवे तब सात दिन लों अपनी माता के साथ रहे और आठवें दिन से और उस्से आगे परमेश्वर के होम की भेंट के लिये ग्राह्य होगा॥ २८। और गाय अथवा भेड़ को बच्चे समेत एक ही दिन मत मारियो॥ २९। और जब तुम परमेश्वर के लिये धन्यबाद के बलिदान भेंट चढ़ाओ तब अपनी ग्राह्यता के लिये उसे चढ़ाओ॥ ३०। उसी दिन खाया जाय तुम उस में से दूसरे दिन लों तनिक भी न छोड़ियो मैं परमेश्वर हूं॥ ३१। और मेरी आज्ञाओं को धारण करो और उन्हें पालन करो मैं परमेश्वर हूं॥ ३२। और मेरे पवित्र नाम को हलुक न करो परंतु मैं इसराएल के संतानों में पवित्र हूंगा मैं परमेश्वर तुम्हें पवित्र करता हूं॥ ३३। जो तुम्हें मिस्र की भूमि से निकाल लाया कि तुम्हारा ईश्वर होऊं मैं परमेश्वर हूं॥

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि परमेश्वर के पर्ब्ब जिन्हें तुम पवित्र बुलावा सभा के लिये प्रचारोगे ये मेरे पर्ब्ब हैं॥ ३। छः दिन काम काज किया जाय परंतु सातवां दिन जो बिश्राम का है उस में पवित्र सभा होगी कोई कार्य्य न करो यह तुम्हारे समस्त निवासों में परमेश्वर का बिश्राम का दिन है॥

४। ये परमेश्वर के पर्ब्ब और पवित्र सभा जिन्हें तुम उन के समय में
प्रचारोगे॥ ५। पहिले मास की चौदहवीं तिथि की सांझ को परमेश्वर
का फसह है॥ ६। और उसी मास की पंद्रवीं तिथि को परमेश्वर के
अख़मीरी रोटी का पर्ब्ब है सात दिन लों अवश्य अख़मीरी रोटी खाइयो॥
७। पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा उस दिन कोई संसारिक कार्य्य मत
करियो॥ ८। परंतु सात दिन लों परमेश्वर के लिये होम की भेंट
चढ़ाइयो और सातवें दिन पवित्र सभा है उस दिन कोई संसारिक कार्य्य
मत कीजियो॥ ९। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १०। कि
ईसराएल के संतानों से कहके बोल कि जब तुम उस देश में पहुंचो जो
मैं तुम्हें देता हूं और उस का अन्न लेओ तब तुम अपनी बालों में से एक
गट्ठा पहिले फल याजक पास लाओ॥ ११। वुह उसे परमेश्वर के
आगे हिलावे कि तुम्हारी ओर से ग्राह्य होवे और बिश्राम के दूसरे दिन
बिहान को याजक उसे हिलावे॥ १२। और उस दिन जिस समय
वुह गट्ठा हिलाया जाय पहिले बरस का एक निष्खोट मेम्ना होम की
भेंट परमेश्वर के लिये चढ़ाओ॥ १३। और उस की भेंट और भोजन
की भेंट दो दसवां भाग चोखा पिसान तेल मिलाके होम की भेंट परमेश्वर
के सुगंध के लिये होवे और उस के पीने की भेंट सेर भर दाखरस होवे॥
१४। और जिस दिन लों अपने ईश्वर के लिये भेंट चढ़ाओ रोटी
और भुना हुआ अन्न अथवा हरी बालें मत खाइयो तुम्हारी पीढ़ियों
में यह सनातन की बिधि है॥ १५। और बिश्राम दिन के बिहान से
जब से हिलाने की भेंट के लिये तुम ने गट्ठा चढ़ाया है सात अठवारे गिन
के पूरा करियो॥ १६। सातवें बिश्राम के दिन के पीछे बिहान से
पचास दिन गिन लो और परमेश्वर के लिये नये भोजन की भेंट चढ़ाओ॥
१७। अपने निवासों में से दो दसवें भाग की दो रोटी लाइयो ये चोखे
पिसान की होवें और वुह ख़मीर के साथ पकाया जाय और परमेश्वर के
लिये पहिला फल लाइयो॥ १८। और पहिले बरस के निष्खोट सात
मेम्ने और एक बछड़ा और दो मेढ़े उन के साथ चढ़ाइयो यह परमेश्वर
के होम की भेंट उन के भोजन की और पीने की भेंट सहित परमेश्वर के
सुगंध के लिये होम की भेंट है॥ १९। फिर पाप की भेंट के लिये

बकरी का एक मेम्ना और कुशल की भेट के लिये पहिले बरस के दो
मेम्ने बलि कीजियो॥ २०। और याजक उन्हें पहिले फल की रोटी के
संग परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये दो मेम्ना समेत हिलावे
याजकों के लिये वे परमेश्वर के आगे पवित्र होंगे॥ २१। और उसी
दिन प्रचारियो वुह तुम्हारे पवित्र बुलावा के लिये होवे कोई संसारिक
कार्य्य मत करियो यह तुम्हारे समस्त निवासें में तुम्हारी पीढ़ियों के अंत
लों बिधि होगी॥ २२। और जब अपने खेत लवो तब तू अपने खेत के
कोनों को भाड़ के मत काटियो और लवने के पीछे मत बीनियो तू उसे
कंगाल और परदेशी के लिये छोड़ियो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥
२३। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २४। कि इसराएल के
संतान से कह कि सातवें मास की पहिली तिथि तुम्हारे लिये एक बिश्राम
का दिन और नरसिंगे के शब्द से स्मारक पवित्र बुलावा है॥ २५।
कोई संसारिक कार्य्य मत कीजियो परंतु परमेश्वर के लिये होम की
भेंट चढ़ाइयो॥ २६। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २७।
सातवें मास की दसवीं तिथि प्रायश्चित्त देने का दिन है तुम्हारे लिये
पवित्र बुलावा होगा उस दिन अपने प्राण में शोकित होओ और परमेश्वर
के लिये होम की भेंट चढ़ाओ॥ २८। उसी दिन कोई काम मत
करियो क्योंकि वुह प्रायश्चित्त का दिन है तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के
आगे अपने लिये प्रायश्चित्त करो॥ २९। क्योंकि जो प्राणी उस दिन में
शोकित न होगा वुह अपने लोगों में से काटा जायगा॥ ३०। और जो
प्राणी उस दिन में कोई काम करेगा मैं उसी प्राणी को उस के लोगों
में से नाश करूंगा॥ ३१। किसी रीति का काम मत करना यह तुम्हारे
समस्त निवासें में तुम्हारी पीढ़ियों के अंत लों सनातन के लिये बिधि
होगी॥ ३२। यह तुम्हारे लिये एक बिश्राम का दिन होगा अपने प्राण को
शोकित करियो तुम उस मास की नवीं तिथि को सांझ से सांझ लों अपने
बिश्राम के लिये पालियो॥ ३३। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥
३४। इसराएल के संतानों से कह कि सातवें मास की पंद्रहवीं तिथि
से सात दिन लों परमेश्वर के तंबू का पर्ब्ब है॥ ३५। पहिले दिन पवित्र
बुलावा होवे उस दिन कोई संसारिक कार्य्य न करना॥ ३६। सात

दिन लों परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाओ आठवें दिन तुम्हारा पवित्र बुलावा है सो तुम परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाइयो यह सभा का दिन है उस में संसारिक कार्य्य मत कीजियो॥ ३७। परमेश्वर के ये पर्ब्ब हैं जिन में तुम पवित्र बुलावा प्रचारियो जिसतें परमेश्वर के लिये होम की भेंट आग से बनाई हुई और भोजन की भेंट एक बलिदान और पीने की भेंट हर एक वस्तु अपने दिन में चढ़ाइयो॥ ३८। सो परमेश्वर के बिश्राम के दिनों के और अपनी भेंटों से अधिक और तुम्हारी समस्त मनौती से अधिक और तुम्हारे समस्त मनमंता भेंटों से अधिक जिन्हें तुम परमेश्वर के लिये चढ़ाते हो॥ ३९। सातवें मास की पंद्रहवीं तिथि जब खेतों का अनाज एकट्ठा कर लो तब तुम सात दिन लों परमेश्वर के लिये पर्ब्ब मानियो पहिला दिन बिश्राम का होगा और आठवां दिन बिश्राम का होगा॥ ४०। सो तुम पहिले दिन सुंदर वृक्षों का फल और खजूर की डाली और घने वृक्षों की डालियां और नालियों का बेंत लीजियो और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे सात दिन लों आनंद कीजियो॥ ४१। और बरस में परमेश्वर के लिये सात दिन भर पर्ब्ब के लिये पालन करियो यह तुम्हारी पीढ़ियों में सनातन की बिधि होगी सातवें मास योंही स्मरण कीजियो॥ ४२। सात दिन लों डालियों की छान में रहियो जितने इसराएली हैं सब के सब डालियों की छान में रहें॥ ४३। जिसतें तुम्हारी पीढ़ी जाने कि जब मैं इसराएल के संतानों को मिस्र के देश से निकाल लाया मैं ने उन्हें डालियों की छान में बसाया मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ४४। सो मूसा ने इसराएल के संतानों से परमेश्वर के पर्ब्बों को कह सुनाया॥

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों को आज्ञा कर कि दीपक को नित जलाने के कारण कूटे हुए जलपाई का निर्म्मल तेल तुझ पास लावें॥ ३। हारून उसे मंडली के तंबू में साक्षी के ओट के बाहर सांझ से बिहान लों परमेश्वर के आगे रीति से रक्खे

तुम्हारी पीढ़ियों के लिये यह विधि सनातन की होगी॥ ४। वही
दीपकों को पवित्र दीअट पर परमेश्वर के आगे रीति से सदा रक्खा करे॥
५। और चोखे पिसान लेके उस्से बारह फुलके पका एक एक फुलका दो
दसवें अंश का होवे॥ ६। और तू उन्हें परमेश्वर के आगे पवित्र मंच पर
छः छः करके दो पांती में रख॥ ७। और हर एक पांती पर निराला
गंधरस रखना जिसतें वुह रोटी स्मरण के लिये होवे अर्थात् होम की भेंट
परमेश्वर के लिये॥ ८। यह सनातन की वाचा के लिये इसराएल
के संतान से लेके हर विश्राम दिन को परमेश्वर के आगे रीति से नित्य
रक्खा करे॥ ९। और वुह हारून की और उस के बेटों की होंगी वे
उन्हें पवित्र स्थान में खावें यह उस के लिये परमेश्वर के होम की भेंटों में
से अत्यंत पवित्र विधि नित्य के लिये है॥ १०। तब एक इसराएली स्त्री
का बेटा जिस का पिता मिस्त्री था निकल के इसराएलीयों में गया और
उस इसराएली स्त्री का बेटा और इसराएल का एक जन छावनी में
झगड़ रहेथे॥ ११। और इसराएली स्त्री के बेटे ने परमेश्वर के नाम
की अपनिंदा किई और धिक्कारा और उस की माता का नाम सलूमियत
था जो दिबरी के पुत्र दान के कुल से थी तब वे उसे मूसा पास लाये॥
१२। और वुह बंधन में रक्खा गया जिसतें उन पर प्रगट करे कि
परमेश्वर क्या आज्ञा करता है॥ १३। फिर परमेश्वर मूसा से कहके
बोला॥ १४। जिस ने अपनिंदा किई है उसे छावनी के बाहर निकाल
ले जा और जितनों ने सुना वे अपने हाथ उस के सिर पर रक्खें और
सारी मंडली उसे पत्थरवाह करे॥ १५। और इसराएल के संतानों से
कह कि जो कोई अपने ईश्वर की निंदा करेगा सो अपना पाप भोगेगा॥
१६। और जो परमेश्वर के नाम की अपनिंदा करे सो निश्चय प्राण से
मारा जायगा समस्त मंडली उसे निश्चय पत्थरवाह करे चाहे वुह परदेशी
होय चाहे देशी जब उस ने परमेश्वर के नाम की अपनिंदा किई वुह प्राण
से मारा जायगा॥

१७। और जो दूसरे को मार डालेगा सो निश्चय घात किया जायगा॥
१८। और जो कोई पशु को मार डाले सो उस की संती पशु देवे॥ १९।
और यदि कोई अपने परोसी को खोटा करे जैसा करेगा वैसा ही उस

पर किया जायगा॥ २०। तोड़ने की संती तोड़ना आंख की संती आंख
दांत की संती दांत जैसा उस ने मनुष्य को खाटा किया है उस्से वैसा ही
किया जावे॥ २१। और वुह जो पशु को मार डाले वुह उस का पलटा
देवे और वुह जो मनुष्य को मार डाले प्राण से मारा जाय॥ २२।
तुम्हारी एक ही रीति की व्यवस्था होवे जैसी परदेशी की वैसी ही देशी
के विषय में होवे क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ २३। तब
मूसा ने इसराएल के संतान से कहा कि उस जन को तंबू के बाहर
निकाल ले जावें और उस पर पत्थरवाह करें सो इसराएल के संतानों ने
जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही किया।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर सीना के पहाड़ पर मूसा से कहके बोला॥ २।
कि इसराएल के संतानों को कहके बोल कि जब तुम उस देश में जो
मैं तुम्हें देता हूं पहुंचो तब वुह भूमि परमेश्वर के लिये विश्राम दिन को
विश्राम करे॥ ३। छः बरस अपने खेतों को बोओ और छः बरस अपने
दाखों को सवांरे और उस का फल बटोरे॥ ४। परंतु सातवां बरस
देश के लिये चैन का विश्राम होगा परमेश्वर के लिये विश्राम न तो खेत
को बोना और न अपने दाखों को सवांरना॥ ५। जो कुछ आप से
आप उगे तू उसे मत लव और बिनसवांरी हुई लता के दाखों को मत
बटोर कि देश के लिये चैन का बरस है॥ ६। सो भूमि का विश्राम
तुम्हारे लिये और तुम्हारे सेवकों और तुम्हारे दास और दासी और
तुम्हारे बनिहार और तुम्हारे परदेशियों के लिये जो तुम्में टिकते हैं॥
७। और तुम्हारे ढोर और जो पशु तुम्हारे देश में है उस का सब प्राप्त
उन के खाने के लिये होगा॥

८। और तू सात विश्राम के बरसों को अपने लिये गिन सात गुने
सात बरस और सात बरसों के विश्राम के समय तुम्हारे लिये उंचास बरस
होंगे॥ ९। तब तू सातवें मास की दसवीं तिथि में आनंद का नरसिंगा
फुंकवा और प्रायश्चित्त के दिन अपने सारे देश में नरसिंगा फुंकवा॥
१०। सो तुम पचासवें बरस को पवित्र जानो और देश में उस के सारे

बासियों में मुक्ति प्रचारो यह तुम्हारे लिये आनंद है और तुम्में से हर एक मनुष्य अपने अपने अधिकार को और अपने घराने को फिर जाय॥ ११। पचासवां बरस तुम्हारे लिये आनंद है तुम कुछ मत बोइयो न उसे जो उस में आप से उगे काटियो बिनसवांरी ज़ई दाख की लता के दाखें को मत बटोरो॥ १२। क्योंकि यह आनंद है यह तुम्हारे लिये पवित्र होगा खेतों में जो बढ़े तुम उसे खाओ॥ १३। उस आनंद के बरस तुम्में से हर एक अपने अपने अधिकार को फिर जाय॥ १४। और यदि तू अपने परोसी के हाथ बेचे अथवा अपने परोसी से मोल ले तो एक दूसरे पर अंधेर मत कीजियो॥ १५। आनंद के बरसों के पीछे के समान गिन के अपने परोसी से मोल लेना और बरसों के प्राप्त की गिनती के समान तेरे हाथ बेचे॥ १६। बरसों की बज़ताई के समान उस का मोल बढ़ाइयो और बरसों की घटी के समान उस का मोल घटाइयो क्योंकि प्राप्त की गिनती के समान वुह तेरे हाथ बेंचता है॥ १७। इस लिये एक दूसरे पर अंधेर मत करो परंतु अपने ईश्वर से डरियो क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

सो तुम मेरी बिधि को मानो और मेरे न्याय को धारण और पालन करियो और देश में कुशल से बास करोगे॥ १९। और भूमि तुम्हें अपने फल देगी और तुम खाके तृप्त होओगे और उस पर कुशल से रहा करोगे॥ २०। और यदि तुम कहो कि हम सातवें बरस क्या खायेंगे क्योंकि न बोवेंगे न बटोरेंगे॥ २१। तब मैं छठवें बरस अपना आशीष तुम्हें देऊंगा और उस में तीन बरस का प्राप्त होगा॥ २२। आठवें बरस बोओ और नौवें बरस लों पुराना अनाज खाओ जब लों उस में अन्न फेर न होवे तब लों पुराना अन्न खाओ॥ २३। भूमि सदा के लिये बेंची न जावे क्योंकि भूमि मेरी है और तुम मेरे संग परदेशी और निवासी हो॥ २४। तुम अपने अधिकार की समस्त भूमि के लिये छुटकारा देना॥ २५। यदि तेरा भाई कंगाल होय और कुछ अपने अधिकार में से बेंचे और कोई उसे छुड़ाने आवे तब वुह अपने भाई की बेंचीज़ई छुड़ा ले॥ २६। यदि उस मनुष्य के छुड़ाने को कोई न होवे और आप से छुड़ा सके॥ २७। तब उस के बेचने के बरस गिने जावें और जिस

पास बेंचा है उस को बढ़ती फेर देवे जिसतें वुह अपने अधिकार पर
फिर जाय॥ २८। परंतु यदि वुह फेर देने पर खड़ा न हो तब जो
बेंचा हुआ है सो आनंद के बरस लों उसी के हाथ में रहे जिस ने उसे
मोल लिया और आनंद में वुह छूट जायगी तब वुह अपने अधिकार पर
फिर जावे॥ २९। और यदि कोई घर को जो भीत नगर में है बेंचने
के पीछे बरस भर में उसे छुड़ावे पूरे बरस में वुह उसे छुड़ावे॥ ३०।
और यदि बरस भर में छुड़ाया न जाय तो वुह घर जो भीत नगर में है
सो उस के लिये जिस ने मोल लिया है उस की समस्त पीढ़ियों में दृढ़ रहेगा
और वुह आनंद के बरस में बाहर न जायगा॥ ३१। परंतु गांव के घर
जिन के आस पास भीत न होवे देश के खेतों के समान गिने जावेंगे छुड़ा
सकें और आनंद में छूट जावेंगे॥ ३२। लावियों के नगर और उन के
अधिकार के नगरों के घर जब चाहें तब लावी छुड़ावें॥ ३३। और
यदि कोई मनुष्य लावियों से मोल लेवे तब जो घर बचा गया और उस के
अधिकार का नगर फिर आनंद के बरस में छूट जायगा क्योंकि लावियों
के नगर के घर इसराएल के संतानों में उन के अधिकार हैं॥ ३४।
परंतु वे खेत जो उन के नगरों के सिवाने में हैं बेंचे न जावें क्योंकि यह
उन के सनातन का अधिकार है॥ ३५। और यदि तुम्हारा भाई दुःखी
और कंगाल हो जावे तो तुम उस की सहाय करो चाहे वुह परदेशी होय
चाहे पाहुन जिसतें वुह तुम्हारे साथ जीवन काटे॥ ३६। तू उस्से ब्याज
और बढ़ती मत ले परंतु अपने ईश्वर से डर जिसतें तेरा भाई तेरे साथ
जीवन काटे॥ ३७। तू उसे ब्याज पर ऋण मत दे और बढ़ती के लिये
भोजन का ऋण मत दे॥ ३८। मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें
मिस्र के देश से निकाल लाया जिसतें तुम्हें कनआन का देश देऊं और
तुम्हारा ईश्वर होऊं॥ ३९। और यदि तेरा भाई तुझ पास कंगाल हो
जाय और तुझ पास बेंचा जाय तो तू उस्से दास की नाईं सेवा मत करवा॥
४०। परंतु वुह बनिहार और पाहुन की नाईं तेरे साथ रहे और आनंद
के बरस लों तेरी सेवा करे॥ ४१। और उस के पीछे वुह अपने लड़कों
समेत तुझ से अलग हो जायगा और अपने घराने और अपने पिता के
अधिकार को फिर जाय॥ ४२। इस लिये कि वे मेरे सेवक हैं जिन्हें मैं

मिस्र की भूमि से बाहर ले आया वे दासों की नाईं बेंचे न जावें॥ ४३।
तू कठोरता से उन से सेवा मत ले परंतु अपने ईश्वर से डर॥ ४४।
तुम्हारे दास और तुम्हारी दासियां जिन्हें तुम अन्य देशियों में से जो तुम्हारे
आस पास हैं रक्खोगे उन्हीं में से दास और दासियां मोल लेओ॥ ४५।
और उन परदेशियों के लड़कों में से भी जो तुम्में बास करते हैं और उन
के घराने में से जो तुम्हारी भूमि में उत्पन्न ऊए हैं मोल लीजियो वे तुम्हारे
अधिकार होंगे॥ ४६। और तुम उन्हें अपने पीछे अपने लड़कों के
लिये अधिकार में लेओ वे सदा लों तुम्हारे दास हैं परंतु तुम अपने
भाइयों पर जो इसराएल के संतान हैं एक दूसरे पर कठारता से सेवा
मत लेओ॥ ४७। और यदि कोई पाऊन अथवा परदेशी तेरे पास धनी
होवे और तेरा भाई जो उस के साथ है कंगाल हो जावे और उस परदेशी
अथवा पाऊन के हाथ जो तेरे साथ है अथवा उस के हाथ जो परदेशी
के घरानों में से होय किसी के हाथ आप को बेंच डाले॥ ४८। उस के
बेंचे जाने के पीछे वह फेर छुड़ाया जा सके उस के भाइयों में से उसे
छुड़ा सके॥ ४९। चाहे उस का चचा चाहे उस के चचा का पुत्र अथवा
जा कोई उस के घराने में उस का गोती हो उस को छुड़ा सके और यदि
उस्से हो सके तो वुह आप को छुड़ावे॥ ५०। और वुह अपने बेंचे जाने
के बरस से लेके आनंद के बरस लों गिने और उस के बेंचे जाने का मोल
बरसों की गिनती के समान होवे वुह बनिहार के समय के समान उस के
साथ रहेगा॥ ५१। यदि बऊत बरस रहे तो वुह अपने छुड़ाने को
उस मोल से जिस्से वुह बेंचा गया उन बरसों के समान फेर दे॥ ५२।
और यदि आनंद के थोड़े बरस रह जायें तो वुह लेखा करे और अपने
छुटकारे का मोल अपने बरसों के समान उसे फेर दे॥ ५३। और वुह
बरस बरस के बनिहार के समान उस के साथ रहे और उस पर कठोरता
से सेवा न करवावे॥ ५४। और यदि वुह इन में छुड़ाया न जावे तो
आनंद के बरस में वुह अपने लड़कों समेत छूट जायगा॥ ५५। क्योंकि
इसराएल के संतान मेरे सेवक हैं वे मेरे सेवक जिन्हें मैं मिस्र के देश से
निकाल लाया मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब।

अपने लिये मूर्त्ति अथवा खोदी ऊई प्रतिमा मत बनाइयो और पूजित मूर्त्ति मत खड़ी कीजियो और दंडवत करने के लिये पत्थर की मूर्त्ति अपनी भूमि में स्थापित मत करियो क्योंकि में परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ २। तुम मेरे विश्राम के दिनों का पालन करो और मेरे पवित्र स्थान को प्रतिष्ठा देओ मैं परमेश्वर हूं॥ ३। यदि तुम मेरी बिधि पर चलोगे और मेरी आज्ञाओं को धारण करके उन पर चलोगे॥ ४। तो मैं तुम्हारे लिये समय पर मेंह बरसाऊंगा और देश अपनी बढ़ती उगावेगा और खेत के वृक्ष अपने फल देंगे॥ ५। यहां लों कि अन्न झाड़ने का समय दाख तोड़ने के समय लों पऊंचेगा और दाख तोड़ने के समय लों बोने का समय पऊंचेगा और तुम खाके संतुष्ट होओगे और अपने देश में चैन से रहोगे॥ ६। और मैं देश में कुशल दूंगा और तुम लेट जाओगे और कोई तुम्हें न डरावेगा और मैं बुरे पशुओं को देश से दूर करूंगा और तुम्हारे देश में तलवार न चलेगी॥ ७। और तुम अपने बैरियों को खदेड़ोगे और वे तुम्हारे आगे तलवार से गिर जायेंगे॥ ८। और पांच तुम्ह से सैा को खदेड़ेंगे और सैा तुम्में से दस सहस्र को भगावेंगे और तुम्हारे बैरी तुम्हारे आगे तलवार से गिर जायेंगे॥ ९॥ मैं तुम्हारा पक्ष करूंगा और तुम्हें फलवंत करूंगा और मैं तुम्हें बढ़ाऊंगा और अपनी बाचा को तुम से पूरी करूंगा॥ १०। और तुम पुराना अन्न खाओगे और नये के कारण पुराना लाओगे॥ ११। और मैं अपना तंबू तुम्में खड़ा करूंगा और मैं तुम से घिन न करूंगा॥ १२। और मैं तुम्हों में फिरा करूंगा और तुम्हारा ईश्वर होऊंगा और तुम मेरे लोग होओगे॥ १३। मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र के देश से निकाल लाया जिसतें तुम उन के दास न बनो और मैं ने तुम्हारे कांधों के जूओं की लकड़ियों को तोड़ा और तुम्हें खड़ा चलाया॥ १४। परंतु यदि तुम मेरी न सुनोगे और उन सब आज्ञाओं को पालन न करोगे॥ १५। और मेरी बिधि की निंदा करोगे अथवा तुम्हारे मन मेरे न्यायों को घिन करें ऐसा कि तुम मेरी आज्ञाओं को पालन न करो

पर मेरी बाचा तोड़ दो॥ १६। तो मैं भी तुम से वैसाही करूंगा और भय और क्षय रोग और तप्त ज्वर जो तेरी आंखों को नाश करेगा और मन को उदास और तुम अपने बीज अकारथ बोओगे क्योंकि तुम्हारे बैरी उसे खायेंगे॥ १७। और मैं तेरा साम्ना करूंगा और तुम अपने बैरियों के साम्ने जूझ जाओगे जो तुम्हारे बैरी हैं सो तुम पर राज्य करेंगे और कोई तुम्हारा पीछा न करते ही तुम भागे जाओगे॥ १८। इन सभों पर भी यदि तुम मेरी न सुनोगे तो मैं तुम्हारे पापों के कारण सतगुण तुम्हें दंड देऊंगा॥ १९। और तुम्हारे घमंड के बल को तोड़ूंगा और तुम्हारा आकाश लोहा के समान और तुम्हारी पृथिवी पीतल की नाईं कर देऊंगा॥ २०। और तुम्हारा बल सेंत से जाता रहेगा क्योंकि तुम्हारी भूमि अपनी बढ़ती न देगी और देश के पेड़ फल न पहुंचावेंगे॥

२१। और यदि तुम मेरे बिपरीत चलोगे और मेरी न सुनोगे तो मैं तुम्हारे पापोंके समान तुम पर सतगुण मरी लाऊंगा॥ २२। और मैं बनैले पशु भी तुम्में भेजूंगा और वे तुम्हारे बंश को भक्षण करेंगे और तुम्हारे पशुन को नाश करेंगे और तुम्हें गिनती में घटा देंगे और तुम्हारे मार्ग सूने पड़े रहेंगे॥ २३। और यदि मेरी इन बातों से न सुधरोगे परंतु मुझ से बिपरीत चलोगे॥ २४। तो मैं भी तुम्हारे बिपरीत चलूंगा और तुम्हारे पापों के लिये तुम्हें सतगुण दंड देऊंगा॥ २५। और मैं तुम पर तलवार लाऊंगा जो मेरी बाचा के झगड़े का पलटा लेनेवाली है और जब तुम अपने नगरों में एकट्ठे होओगे मैं तुम्हों में मरी भेजूंगा और तुम बैरियों के हाथ में सौंपे जाओगे॥ २६। और जब मैं तुम्हारी रोटी की लाठी तोड़ डालूंगा तब दस स्त्री तुम्हारी रोटियां एक भट्ठी में पकावेंगी और तुम्हारी रोटियां तौल के तुम्हें देंगी और तुम खाओगे परंतु तृप्त न होओगे॥ २७। और यदि तुम उस पर भी न सुनोगे परंतु मुझ से बिपरीत चलोगे॥ २८। तो मैं भी कोप से तुम्हारे बिपरीत चलूंगा मैं हां मैं हीं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सतगुण ताड़ना करूंगा॥ २९। और तुम अपने बेटों का और अपनी बेटियों का मांस खाओगे॥ ३०। और मैं तुम्हारे ऊंचे स्थानों को ढा दूंगा

और तुम्हारी मूर्त्तियों को काट देऊंगा और तुम्हारी लोथ तुम्हारे मूर्त्तियों की लोथों पर फेंकूंगा और आप मैं तुम से घिन करूंगा॥ ३१। और तुम्हारे नगरों को उजाड़ करूंगा और तुम्हारे पवित्र स्थानों को सूना करूंगा और मैं तुम्हारे सुगंध को न सूंघूंगा॥ ३२। और मैं तुम्हारी भूमि को उजाड़ूंगा और तुम्हारे शत्रु उस के कारण आश्चर्य्य मानेंगे॥ ३३। और मैं तुम्हें अन्यदर्शियों में छिन्न भिन्न करूंगा और तुम्हारे पीछे से तलवार निकालूंगा और तुम्हारी भूमि उजाड़ होगी और तुम्हारे नगर उजड़ जायेंगे॥ ३४। देश अपने समस्त उजाड़ के दिनों में जब तुम अपने शत्रुन के देश में रहोगे बिश्राम का भोग करेंगे तब देश चैन करेगा और अपने बिश्रामों को भोग करेगा॥ ३५। जब लों वुह उजाड़ रहेगा तब लों चैन करेगा इस कारण कि जब तुम उस में बास करते थे तुम्हारे बिश्रामों में चैन न किया॥ ३६। और तुम्में जो बच रहे हैं मैं उन के बैरियों के देश में उन के मन में दुर्बलता डालूंगा और पात खड़कने का शब्द उन्हें खदेड़ेगा और वे एसे भागेंगे जैसे तलवार से भागते हैं और बिना किसी के पीछा करने से वे गिर पड़ेंगे॥ ३७। और वे ऐसे एक पर एक गिरेंगे जैसे तलवार के आगे और कोई उन का पीछा न करेगा और तुम अपने बैरी के आगे ठहर न सकोगे॥ ३८। और तुम अन्यदेशियों में नष्ट होओगे और तुम्हारे बैरियों का देश तुम्हें खा जायगा॥ ३९। और वे जो तुम्में से बच जायगे सो तुम्हारे बैरियों के देश में और अपने पाप में और अपने पितरों के पाप में क्षीण हो जायेंगे॥ ४०। यदि वुह अपने पापों को और अपने पितरों के पापों को अपने अपराधों के संग जो उन्हों ने मेरा अपराध किया और यह कि वे मेरे बिपरीत चले हैं मान लेंगे॥ ४१। और मैं भी उन के बिपरीत चला और उन के बैरियों के देश में उन्हें लाया यदि उन के अखतनः मन दीन हो जायंगे और अपने दंड को अपने अपराध के योग्य समझेंगे॥ ४२। तब मैं यअकूब के संग अपनी बाचा को स्मरण करूंगा और अपनी बाचा इज़हाक के साथ और अपनी बाचा अबिरहाम के साथ स्मरण करूंगा और उस को स्मरण करूंगा॥ ४३। वही देश उन से छोड़ा जायगा जब लों वुह उन दिनों में उजाड़ पड़ा रहा अपने बिश्रामों

को भाग करेगा और वे अपने पाप के दंड को मान लेंगे इसी कारण कि उन्हों ने मेरी आज्ञाओं को तुच्छ जाना और इसी कारण कि उन के अंतःकरणों ने मेरी बिधिन से घिन किया॥ ४४। और इन सभों से अधिक जब वे अपने बैरी के देश में होंगे मैं उन्हें दूर न करूंगा और मैं उन से घिन न करूंगा कि उन्हें सर्वथा नाश कर देऊं और उन से बाचा तोड़ डालूं क्योंकि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूं॥ ४५। परंतु उन के कारण मैं उन के पितरों की बाचा को जिन्हें मैं ने मिस्र के देश से अन्य देशियों के आगे निकाल लाया स्मरण करूंगा कि मैं उन का ईश्वर परमेश्वर हूं॥ ४६। ये बिधि और न्याय और व्यवस्था जो परमेश्वर ने सीना पहाड़ पर आप में और इसराएल के संतानों में मूसा की ओर से ठहराये॥

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों को कहके बोल जब मनुष्य बिशेष मनौती माने तेरे ठहराने के समान जन परमेश्वर के होंगे॥ ३। और तेरा मोल बीस बरस से साठ बरस लों पुरुष के लिये तेरा मोल पवित्र स्थान के शेकल के समान पचास शेकल रूपा होंगे॥ ४। और यदि स्त्री होवे तो तेरा मोल तीस शेकल होंगे॥ ५। और यदि पांच से बीस बरस की बय होय तो तेरा मोल पुरुष के लिये बीस शेकल और स्त्री के लिये दस शेकल॥ ६। और यदि एक मास से पांच बरस की बय होय तो तेरा मोल पुरुष के लिये चांदी के पांच शेकल और स्त्री के लिये तेरा मोल चांदी के तीन शेकल॥ ७। और यदि वुह साठ बरस से ऊपर का होय तो पुरुष के लिये तेरा मोल पंद्रह शेकल और स्त्री के लिये दस शेकल॥ ८। परंतु यदि तेरे मोल से वुह कंगाल ठहरे तो वुह याजक के आगे आवे और याजक उस का मोल उस की सामर्थ्य के समान ठहरावे जिसने मनौती किई है याजक उस का मोल ठहरावे॥ ९। और यदि पशु होवे जिसे मनुष्य परमेश्वर के लिये भेंट लाते हैं तो वुह सब जो परमेश्वर के लिये चढ़ाया गया सो पवित्र होगा॥ १०। वुह उसे न फेरे भले के लिये बुरा और बुरे के लिये भला न पलटे और यदि वुह किसी भांति से पशु की संती पशु दे तो वुह

और उस का पलटा पवित्र होंगे॥ ११। और यदि वुह अपवित्र पशु
होय जो परमेश्वर का बलिदान नहीं चढ़ाते तो वुह पशु को याजक के
आगे लावे॥ १२। और याजक उस का मोल करे चाहे भला होवे
चाहे बुरा जैसा याजक उस का मोल ठहरावे वैसा ही होवे॥ १३।
परंतु यदि वुह किसी भांति से उसे छुड़ावे तो वुह उस मोल में पांचवां
भाग मिलावे॥ १४। और जब मनुष्य अपने घर को परमेश्वर के
लिये पवित्र करे तो याजक उस का मोल ठहरावे चाहे भला होवे चाहे
बुरा याजक के ठहराने के समान उस का मोल होगा॥ १५। और
जिस ने उस घर को पवित्र किया है यदि वुह उसे छुड़ाया चाहे तो तेरे
मोल का पांचवां भाग उस में मिलाके देवे और घर उस का होगा॥ १६।
यदि कोई अपने अधिकार से कुछ खेत परमेश्वर के लिये पवित्र करे तो
तेरा मोल उस के अन्न के समान हो साढ़े छः मन जव का मोल पचास
शेकल चांदी होगा॥ १७। यदि वुह आनंद के बरस से अपना खेत
पवित्र करे तो तेरे मोल के समान ठहरेगा॥ १८। परंतु यदि वुह
आनंद के पीछे अपने खेत को पवित्र करे तो याजक उन बरसों के समान
जो आनंद के बरस लों बचे हैं मोल का लेखा करे और तेरे मोल से
उतना घटाया जाय॥ १९। और जिस ने खेत को पवित्र किया है
यदि वुह उसे किसी भांति से छुड़ाया चाहे तो वुह तेरे मोल का पांचवां
भाग उस में मिलावे तब वुह उस का हो जायगा॥ २०। और यदि
वुह उस खेत को न छुड़ावे अथवा यदि वुह उस खेत को दूसरे के पास
बेंचा हो तो वुह फिर कभी छुड़ाया न जायगा॥ २१। परंतु जब वुह
खेत आनंद के बरस में छूटे तब जैसा सम्पूर्ण किया गया खेत वैसा
परमेश्वर के लिये पावन होगा और वुह याजक का अधिकार होगा॥
२२। और कोई खेत जो उस ने मोल लिया है और उस के अधिकार
के खेतों में का नहीं है परमेश्वर के लिये पवित्र करे॥ २३। तो याजक
आनंद के बरसों के समान गिनके मोल ठहरावे और वुह तेरे ठहराने के
समान उस दिन उस का मोल परमेश्वर के लिये पवित्र वस्तु के समान
देवे॥ २४। और खेत आनंद के बरस में उस के पास फिर जायगा
जिस्से मोल लिया गया जिस का वुह भूमि का अधिकार था॥ २५।

और तेरा मोल पवित्र स्थान के शेकल के समान होगा बीस गिरह का एक शेकल होगा॥ २६। और केवल पशुन में का पहिलौंठा जो परमेश्वर का पहिलौंठा ज़ुआ चाहे उसे कोई पवित्र न करे चाहे वुह गाय बैल से होवे चाहे भेड़ से वुह तो परमेश्वर का है॥ २७। और यदि वुह अपावन पशु का होवे तो वुह तेरे मोल के समान उसे छुड़ावे और उस में पांचवां भाग मिलावे अथवा यदि वुह छुड़ाया न जावे तो वुह तेरे मोल के समान बेंचा जाय॥ २८। तिस पर भी कोई सम्पूर्ण किई ज़ुई बस्तु जिसे मनुष्य समस्त बस्तुन में से परमेश्वर के लिये सम्पूर्ण करता है मनुष्य का पशु का और अपने अधिकार के खेत का बेंचा अथवा छुड़ाया न जायगा हर एक सम्पूर्ण किई ज़ुई बस्तु परमेश्वर के लिये अत्यंत पवित्र है॥ २९। जो बस्तु मनुष्य सम्पूर्ण करता है सो छुड़ाई न जायगी निश्चय मार डाली जायगी॥ ३०। और देश का समस्त कर चाहे खेत का बीज चाहे पेड़ का फल परमेश्वर का वुह परमेश्वर के लिये पवित्र है॥ ३१। और यदि मनुष्य किसी भांति से अपने कर को छुड़ाया चाहे तो पांचवां भाग उस में मिलावे॥ ३२। लेहंड़े का अथवा झुंड का कर के बिषय में जो कुछ लट्ठा के नीचे जाता है सो परमेश्वर के लिये दसवां भाग पवित्र होगा॥ ३३। वुह उस की खोज न करे चाहे भला अथवा बुरा वुह उसे न पलटे और यदि वुह किसी भांति से उसे पलटे तो वुह और उस का पलटा दोनों के दोनों पवित्र हो जायेंगे और वह छुड़ाया न जायगा॥ ३४। वे आज्ञा जो परमेश्वर ने इसराएल के संतानों के लिये सीना के पहाड़ पर मूसा को किईं ये हैं।

मूसा की चौथी पुस्तक जो गिनती की कहाती है।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

मिस्र की भूमि से उन के निकलने के पीछे दूसरे बरस दूसरे मास की
पहिली तिथि को सीना के पहाड़ के बन में मंडली के तंबू में
परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। उन के पितरों के घराने के समान
इसराएल के संतानों की समस्त मंडली के घराने के समान हर एक पुरुष
के नामों का लेखा करे॥ ३। बीस बरस से ऊपर सब जो इसराएल में
लड़ाई के योग्य होवें तू और हारून उन की सेना सेना गिन॥ ४।
और हर एक गोष्ठी में से एक एक मनुष्य जो अपने अपने पितरों के घराने
का प्रधान है तुम्हारे साथ होवे॥ ५। और जो जन तुम्हारे साथ
खड़े होंगे उन के ये नाम हैं रूबिन में से शदेऊर के बेटे इलिसूर॥
६। शमऊन में से सूरिसद्दी का बेटा सलूमिएल॥ ७। यहूदाह में से
अम्मिनदब का बेटा नहशून॥ ८। इशकार में से सुग्र के बेटे नत-
निएल॥ ९। जबूलून में से हैलून के बेटे इलिअब॥ १०। यूसुफ़
के संतान इफ़रायम में से अम्मिहूद के बेटे इलिसमः और मुनस्सी में से
फ़िदाहसूर के बेटे जमलीएल॥ ११। बिनयमीन में से जिदःऊनी के बेटे
अबिदान॥ १२। दान में से अम्मिशद्दी के बेटे अखिअजर॥ १३।
यसर में से अक्रून के बेटे फ़जअिएल॥ १४। जद में से दऊएल के
बेटे इलयासफ़॥

१५। नफ़ताली में से ऐनान के बेटे अखिरअः॥ १६। अपने अपने
पितरों की गोष्ठियों के अध्यक्ष मंडली में ये नामी थे इसराएल में सहस्रों

के प्रधान ये थे॥ १७। सो मूसा और हारून ने उन मनुष्यों को लिया
जिन के नाम लिखे हैं॥ १८। और उन्हों ने दूसरे मास की पहिली तिथि
में सारी मंडली एकट्ठी किई और उन्हों ने अपने अपने पितरों के
घराने के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों अपनी अपनी पीढ़ी उन के
नामों की गिनती के समान लिखाया॥ १९। जैसा कि परमेश्वर ने
मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उन को सीना के बन में गिना॥ २०।
सो रूबिन के संतान में वुह जो इसराएल का पहिलौंठा बेटा था अपने
घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और
नामों की गिनती के समान हर एक पुरुष सब जो लड़ाई के योग्य थे॥
२१। जो रूबिन की गोष्ठी में से गिने गये छियालीस सहस्र पांच सौ थे॥
२२। और समऊन के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने
के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान हर एक
पुरुष बीस बरस से ऊपर लों जो सब लड़ाई के योग्य थे॥ २३। जो
समऊन की गोष्ठी में से गिने गये सो उनहत्तर सहस्र तीन सौ थे॥
२४। और जद के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने
के समान उन की पीढ़ियों में और नामों के समान बीस बरस से ऊपर
लों जो लड़ाई के योग्य थे॥ २५। जो जद की गोष्ठी में से गिने गये
सो पैंतालीस सहस्र छः सौ पचास थे॥ २६। और यहूदाह के संतान
अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में
और नामों की गिनती के समान बीस बरस से ऊपर लों सब जो लड़ाई
के योग्य थे॥ २७। जो यहूदाह के घराने में से गिने गये सो चौहत्तर
सहस्र छः सौ थे॥ २८। और इशकार के संतान अपने घराने और अपने
पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती
के समान बीस बरस से ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे॥ २९। जो
इशकार की गोष्ठी में से गिने गये सो चौवन सहस्र चार सौ थे॥ ३०।
और ज़बुलून के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के
समान उन की पीढ़ियों में की गिनती के समान बीस बरस से ऊपर लों
सब जो लड़ाई के योग्य थे॥ ३१। जो ज़बुलून की गोष्ठी में से गिने
गये सत्तावन सहस्र चार सौ थे॥ ३२। यूसुफ़ के संतान में से इफ़रायम

के संतान में से अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। ३३। जो इफ़रायम की गोष्ठी में से गिने गये सो चालीस सहस्र पांच सौ थे। ३४। और मुनस्सी के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। ३५। जो मुनस्सी की गोष्ठी में से गिने गये बत्तीस सहस्र दो सौ थे। ३६। और बिनयमीन के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। ३७। जो बिनयमीन की गोष्ठी में से गिने गये पैंतीस सहस्र चार सौ थे। ३८। और दान के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे॥ ३९। जो दान की गोष्ठी में से गिने गये बासठ सहस्र सात सौ थे॥ ४०। और यसर के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे॥ ४१। जो यसर की गोष्ठी में से गिने गये एकतालीस सहस्र पांच सौ थे॥ ४२। नफ़ताली के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे॥ ४३। जो नफ़ताली की गोष्ठी में से गिने गये तिरपन सहस्र चार सौ थे॥ ४४। सो सब जो गिने गये थे जिन्हें मूसा और हारून ने गिना थे हैं और इसराएल के संतानों के प्रधान हर एक अपने अपने पितरों के घरानों में प्रधान था बारह थे॥ ४५। सो वे सब जो इसराएल के संतानों में से अपने पितरों के घरानों में से बीस बरस से लेके ऊपर लों गिने गये सब जो इसराएल में लड़ाई के योग्य थे॥ ४६। अर्थात् सब जो गिने गये थे सो छः लाख तीन सहस्र पांच सौ थे॥ ४७। परंतु लावी अपने पितरों की गोष्ठी के समान उन्हों में गिने नहीं गये॥ ४८। और परमेश्वर मूसा से

कहके बोला॥ ४९। केवल लावी की गोष्ठी को मत गिन और उन्हें इसराएल के संतानों की गिनती में मत मिला॥ ५०। परंतु लावियों को साक्षी के तंबू और उस की समस्त बस्तु पर ठहरा वे तंबू को और उस के पात्रों को उठाया करें और उन की सेवा करें और तंबू के आस पास छावनी करें॥ ५१। और जब तंबू आगे बढ़े तब लावी उसे गिरावें और जब तंबू को खड़ा करना हो तब लावी उसे खड़ा करें और जो परदेशी उस के पास आवे सो प्राण से मारा जाय॥ ५२। और इसराएल के संतानों में हर एक अपनी अपनी छावनी में हर एक मनुष्य अपनी समस्त सेना में अपने ही झंडे के पास अपना अपना तंबू खड़ा करे॥ ५३। परंतु लावी साक्षी के तंबू के आस पास डेरा करें जिसतें इसराएल के संतानों की मंडली पर कोप न पड़े और लावी साक्षी के तंबू की रखवाली करें॥ ५४। सो जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी इसराएल के संतानों ने उन सभों के समान किया।

२ दूसरा पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों में से हर एक जन अपना झंडा और अपने पितरों के घराने की ध्वजा के संग मंडली के तंबू के आस पास दूर डेरा करे॥ ३। पूर्ब दिशा में सूर्य्य के उदय की ओर यहूदाह की छावनी अपनी समस्त सेना में झंडा गाड़े और अम्मिनदब का बेटा नहशून यहूदाह के संतान का प्रधान होवे॥ ४। और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो चौहत्तर सहस्र छः सौ थे॥ ५। और उन के पास इशकार की गोष्ठी डेरा करे और सुग्र का बेटा नतनिएल इशकार के संतान का प्रधान होवे॥ ६। और उस की सेना और वे जो उन में गिने गये सो चौवन सहस्र चार सौ थे॥ ७। फिर ज़बुलून की गोष्ठी और हैलून का पुत्र अलीयाब ज़बुलून के संतान का प्रधान होवे॥ ८। और उस की सेना और सब जो उन में गिने गये सो सत्तावन सहस्र चार सौ थे॥ ९। सो सब जो यहूदाह की छावनी में गिने गये उन की समस्त सेनों में एक लाख छियासी सहस्र चार सौ थे ये पहिले बढ़े॥ १०। और दक्खिन दिशा की

ओर रूबिन की छावनी के झंडे उन की सेना के समान होवें ओर शदेऊर का पुत्र इलिसूर रूबिन के संतान का प्रधान होवे॥ ११। ओर उस की सेना ओर जो उन में गिने गये सो छियालीस सहस्र पांच सौ थे॥ १२। ओर उस के पास समऊन के संतान की गोष्ठी डेरा करे ओर सूरिशद्दी का बेटा सलूमिएल समऊन के संतान का प्रधान होवे॥ १३। ओर उस की सेना ओर जो उन में गिने गये सो उनसठ सहस्र तीन सौ थे॥ १४। फिर जद की गोष्ठी ओर रऊएल का बेटा इलियासफ् जद के संतान का प्रधान होवे॥ १५। ओर उस की सेना ओर सब जो उन में गिने गये सो पैंतालीस सहस्र छः सौ पचास थे॥ १६। सो सब जो रूबिन की छावनी में गिने गये उन की समस्त सेनाओं में एक लाख एकावन सहस्र चार सौ पचास थे वे दूसरी पांती में बढ़े॥ १७। तब मंडली के तंबू लावी की छावनी के मध्य में आगे बढ़े जैसा वे डेरा करें वैसा आगे बढ़ें हर एक मनुष्य अपने स्थान में अपने अपने झंडे के पास॥ १८। पश्चिम दिशा में इफ़रायम की छावनी उन की सेनों के समान झंडा खड़ा होवे ओर अम्मिहूद का बेटा इलिसमः इफ़रायम के बेटों का प्रधान होवे॥ १९। ओर उस की सेना ओर जो उन में गिने गये सो चालीस सहस्र पांच सौ थे॥ २०। ओर उस के पास मुनस्सी की गोष्ठी ओर फिदाहसूर का बेटा जमलीएल मुनस्सी के संतान का प्रधान होवे॥ २१। ओर उस की सेना ओर जो उन में गिने गये सो बत्तीस सहस्र दो सौ थे॥ २२। फिर बिनयमीन की गोष्ठी ओर जिद्ःऊनी का बेटा अबिदान बिनयमीन के संतान का प्रधान होवे॥ २३। ओर उस की सेना ओर जो उन में गिने गये सो पैंतीस सहस्र चार सौ थे॥ २४। सो सब जो इफरायम की छावनी में गिने गये उन की समस्त सेनाओं में एक लाख आठ सहस्र एक सौ थे ओर वे तीसरी पांती में बढ़े॥ २५। ओर दान की छावनी का झंडा उन की सेना की उत्तर दिशा में होवे ओर अम्मिशद्दी का बेटा अखिअ़जर दान के संतान का प्रधान होवे॥ २६। ओर उस की सेना ओर जो उन में गिने गये सो बासठ सहस्र सात सौ थे॥ २७। ओर उस के पास यसर की गोष्ठी डेरा करे ओर अकरान का बेटा फ़जिअ़एल यसर के संतान का प्रधान होवे।

२८। और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो एकतालीस
सहस्र पांच सौ थे॥ २९। फिर नफ़ताली की गोष्ठी और ऐनान का
बेटा अख़िरअः नफ़ताली के संतान का प्रधान होवे॥ ३०। और उस
की सेना और जो उन में गिने गये सो तिरपन सहस्र चार सौ थे॥ ३१।
सो सब जो दान की छावनी में गिने गये सो एक लाख सत्तावन सहस्र छः
सौ थे वे अपने झंडों को लेके पीछे पीछे बढ़ें॥ ३२। इसराएल के
संतानों में जो उन के पितरों के घरानों में गिने गये थे ये हैं वे सब जो
तंबू में उन की छावनियों की समस्त सेनों में जो गिने गये थे छः लाख
तीन सहस्र पांच सौ पचास थे॥ ३३। परंतु जैसा परमेश्वर ने मूसा को
आज्ञा किई थी लावी इसराएल के संतानों में न गिने गये॥ ३४।
और इसराएल के संतानों ने उन सब आज्ञाओं को जो परमेश्वर ने मूसा
से कही थीं वैसा ही किया हर एक अपने कुल के समान और अपने
पितरों के घरानों के समान उन्हों ने अपने अपने झंडों के पास डेरा
किया और वैसा ही आगे बढ़े।

३ तीसरा पर्ब्ब।

जिस दिन परमेश्वर ने सीना पहाड़ पर मूसा से बातें किईं हारून और
मूसा की पीढ़ी ये हैं॥ २। और हारून के बेटों के ये नाम हैं नदब
पहिलौंठा और अबिहू और इलिअज़र और ईतमर॥ ३। हारून
याजक के बेटों के ये नाम हैं जिन्हें उस ने याजक के पद की सेवा के लिये
स्थापा और अभिषेक किया॥ ४। और नदब और अबिहू जब उन्हों
ने सीना के अरण्य में परमेश्वर के आगे उपरी आग चढ़ाई तब परमेश्वर
के आगे निर्बंश मर गये और इलिअज़र और ईतमर अपने पिता
हारून के समीप याजक के पद में सेवा करते थे॥ ५। फिर परमेश्वर
मूसा से कहके बोला॥ ६। कि लावी की गोष्ठी को समीप ला और उन्हें
हारून याजक के आगे कर जिसतें वे उस की सेवा करें॥ ७। और वे
उस की आज्ञा की और मंडली के तंबू के आगे समस्त मंडली की रक्षा
करें जिसतें तंबू की सेवा करें॥ ८। और वे मंडली के तंबू के सब पात्र
और इसराएल के संतानों का पालन करें जिसतें तंबू की सेवा करें॥ ९।

और तू लावियों को हारून और हारून के बेटों को सौंप दे इसराएल के संतानों में से ये उसे सर्ब्बथा दिये जायें॥ १०। और हारून को और उस के बेटों को ठहरा कि याजक के पद में सिद्ध रहें और जो अन्यदेशी पास आवे सो मार डाला जाय॥ ११। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १२। देख मैं ने इसराएल के संतानों में से उन सब पहिलौंठों की संती जो इसराएल के संतानों में उत्पन्न होते हैं लावियों को ले लिया सो इस लिये लावी मेरे लिये होंगे॥ १३। इस लिये सारे लावी मेरे हैं कि जिस दिन मैं ने मिस्र की भूमि में सारे पहिलौंठे मारे मैं ने इसराएल के संतानों के सब पहिलौंठे क्या मनुष्य के क्या पशु के अपने लिये पवित्र किये वे मेरे होंगे मैं परमेश्वर हूं॥ १४। फिर परमेश्वर सीना के अरण्य में मूसा से कहके बोला॥ १५। कि लावी के संतानों को उन के पितरों के घराने और उन के कुल में गिन हर एक पुरुष एक मास से लेके ऊपर लों गिन॥ १६। सो परमेश्वर के वचन के समान जैसा उस ने आज्ञा किई थी मूसा ने उन्हें गिना॥ १७। सो लावी के पुत्रों के नाम ये हैं जैरसुन और क़िहात और मिरारी॥ १८। जैरसुन के बेटों के नाम उन के कुल में ये हैं लिबनी और शमई॥ १९। और क़िहात के बेटे अपने घराने में अमराम और इज़हार और हबरून और उज्जिएेल हैं॥ २०। और मिरारी अपने घराने में मुहली और मूसी हैं सो लावी के कुल उन के पितरों के घरानों के समान ये हैं॥ २१। जैरसुन से लिबनी का घराना और शमई का घराना ये जैरसुनियों के घराने हैं॥ २२। जैसा सारे पुरुषों के गिनने के समान जो उन से गिने गये एक मास से लेके ऊपर लों सात सहस्र पांच सौ थे॥ २३। जैरसुनियों के घराने तंबू के पीछे पश्चिम दिशा में अपना डेरा खड़ा करें॥ २४। और लएेल का बेटा इलियासफ जैरसुनियों के पितरों के घराने का प्रधान होवे॥ २५। और मंडली के तंबू में जैरसुन के बेटों की रखवाली में तंबू और उस के ओझल और मंडली के तंबू के द्वार के ओझल॥ २६। और आंगन के ओझल और उस के द्वार के ओझल जो तंबू और यज्ञवेदी की चारों ओर है और उस की रस्सी और उस की सब सेवा उन की होगी॥ २७। और क़िहात से अमरामियों का घराना और इसहारियों का घराना

ओर हबरूनियों का घराना ओर अजिएलियों का घराना ये सब किहा-
तियों के घराने हैं॥ २८। उन के सारे पुरुष अपनी गिनती के समान
एक मास से लेके ऊपर लों सब आठ सहस्र छः सा थे पवित्र स्थान की
रखवाली करते थे॥ २९। किहात के बेटों के घराने तंबू की दक्खिन
दिशा में डेरा खड़ा करें॥ ३०। और अजिएल का बेटा इलिसफन
किहात के घरानों का प्रधान हो॥ ३१। और मंजूषा और मंच और
दीअट और बेदी और पवित्र स्थान के पात्र जिन से सेवा करते हैं ओझल
और उन की समस्त सेवा की सामग्री उन की रखवाली में रहें॥ ३२।
और हारून याजक का बेटा इलिअजर लावी के प्रधानों का प्रधान जो
पवित्र स्थान की रखवाली करे॥ ३३। मिरारी से मुहलियों का घराना
और मूरसियों का घराना ये मिरारी के घराने हैं॥ ३४। उन के पुरुषों
की जो गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर लों सब जो गिने गये थे
छः सहस्र दो सा थे॥ ३५। और अबिखैल का पुत्र सूरिएल मिरारियों
के घराने का प्रधान हो और ये तंबू की उत्तर दिशा में डेरा खड़ा करें॥
३६। और तंबू का पाट और उस के अड़ंगे और उस के खंभे और उस की
चुरगहनी और सब जो उस की सेवा में लगते हैं मिरारी के बेटों की
रखवाली में होवे॥ ३७। और आंगन की चारों ओर के खंभे और उन
की चुरगहनी और उन के खूंटे और उन की डोरियां॥ ३८। परंतु वे
जो तंबू की पूर्व ओर मंडली के तंबू के आगे पूर्व दिशा को मूसा और
हारून और उस के बेटे जो पवित्र स्थान की और इसराएल के संतानों
की रखवाली करें और जो परदेशी पास आवे सो मार डाला जाय॥
३९। सो लावियों में से सब जो गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने
परमेश्वर की आज्ञा से उन के घराने में गिना सब पुरुष एक मास से लेके
ऊपर लों बाईस सहस्र थे॥ ४०। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि
इसराएल के संतानों के सारे पहिलौंठे पुत्रों को एक मास से लेके ऊपर
लों गिने और उन के नामों की गिनती ले॥ ४१। और मेरे लिये जो
परमेश्वर हूं लावियों को इसराएल के संतानों के सब पहिलौंठे बेटों की
संती और लावियों के पशुओं को इसराएल के संतानों के सब पशुओं की
संती जो पहिले उत्पन्न हुए हों ले॥ ४२। और जैसा परमेश्वर ने उसे

आज्ञा किई थी मूसा ने इसराएल के संतानों के समस्त पहिलौंठों को
गिना॥ ४३। सो सारे पहिलौंठे पुरुष बर्ग उन के नामों की गिनती
के समान एक मास से लेके ऊपर जो जो गिने गये बाईस सहस्र दो
सौ तिहत्तर थे॥ ४४। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ४५।
कि इसराएल के संतानों के सारे पहिलौंठों की संती लावियों को और
उन के पशुओं की संती लावियों के पशुओं को ले और लावी मेरे होंगे
मैं परमेश्वर हूं॥ ४६। और दो सौ बहत्तर इसराएल के संतानों के
पहिलौंठे जो छुड़ाया जाना है लावियों से अधिक हैं॥ ४७। पवित्र
स्थान के शेकल के समान मनुष्य पीछे पांच शेकल ले एक शेकल बीस
गिरह है॥ ४८। और तू उस का मोल जो गिनती से ऊपर छुड़ाया
जाना है हारून और उस के बेटों को दे॥ ४९। सो मूसा ने उन के
छुड़ाने का रोकड़ लिया जो लावियों से छुड़ाये जाने से उबरा था॥ ५०।
इसराएल के संतानों के पहिलौंठे में से एक सहस्र तीन सौ पैंसठ पवित्र
स्थान के शेकल से रोकड़ लिया॥ ५१। और मूसा ने उन के रोकड़ के
जो छुड़ाये गये थे परमेश्वर की आज्ञा से हारून और उस के बेटों
को दिया॥

४ चौथा पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २। क़िहात के बेटों
को लावी के बेटों में उन के पितरों के घराने की और उन के कुल की
गिनती ले॥ ३। तीस बरस से लेके पचास बरस लों सब जो सेना में पैठते
हैं कि मंडली के तंबू में सेवा करें॥ ४। मंडली के तंबू में और उन
वस्तुन में जो अति पवित्र हैं क़िहात के बेटों की सेवा यह है॥ ५।
और जब छावनी आगे बढ़े तब हारून और उस के बेटे आवें और ढांपने
के घटाटोप उतारें और उस्से साक्षी की मंजूषा को ढांपें॥ ६। और
उस पर नीली खालों का घटाटोप डालें और उस के ऊपर नीला कपड़ा
बिछावें और उस का बहंगर उस में डालें॥ ७। भेंट की रोटी के मंच
पर नीला कपड़ा बिछा और उस पर पात्र और करछुल और कटोरा
और ढांपने के लिये ढपने उस पर रक्खें और नित्य की रोटी उस पर

होवे॥ ८। और उन पर लाल कपड़ा बिछावें और उसे नीली खालों से ढांपें और उस में बहंगर डालें॥ ९। फिर नीला कपड़ा लेके प्रकाश की दीअट और उस के दीपकों को और उस के फूल कतरनियों और उस के पात्र और उस के सब तेल के पात्रों पर जिस्से सेवा करते हैं ढांपें॥ १०। और उसे और उस के सब पात्रों को नीली खालों के आड़ में रक्खें और उसे अड़ंगा पर रक्खें॥ ११। और सोनैाली यज्ञबेदी पर नीला वस्त्र बिछावें और उसे नीली खालों के ढपने से ढांपें और उस में बहंगर डालें॥ १२। और समस्त पात्रों को जो पवित्र स्थान की सेवा में आते हैं लेके नीले कपड़ों में लपेटें और उन्हें नीली खालों से ढांपें और बहंगर पर रक्खें॥ १३। और बेदी में से राख निकाल फेंकें और लाल कपड़ा उस पर बिछावें॥ १४। और उस के सारे पात्र जिस्से वे उस की सेवा करते हैं अर्थात् धूपावरी और मांस के कांटे और फावड़ियां और कटोरे और बेदी के समस्त पात्र उस पर रक्खें और उन्हें नीली खालों से ढांपें और उस में बहंगर डालें॥ १५। और जब हारून और उस के बेटे पवित्र स्थान को और उस की सामग्री को ढांप चुकें तब छावनी के आगे बढ़ने के समय में किहात के संतान उस के उठाने के लिये आवें परंतु वे पवित्र बस्तु को न छूवें न हो कि मर जावें मंडली के तंबू की बस्तें किहात के संतानों को उठाने पड़ेंगी॥ १६। और दीपकों के लिये तेल और सुगंध धूप और समस्त तंबू और सब जो उस में है और उस के पात्र हारून याजक का बेटा इलिअज़र देखा करे॥ १७। फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ १८। कि लावियों में से किहात के घराने की गोष्ठी को काट न डालियो॥ १९। परंतु उन से ऐसा करो कि वे जीवें और अति पवित्र वस्तुन के समीप आने से न मरें हारून और उस के बेटे भीतर जायें और उन में से हर एक को उस की सेवा पर और बोझ उठाने पर ठहरावें॥ २०। परंतु जब कि पवित्र बस्तें ढांपी जावें तो वे उन्हें देखने न आवें जिसतें मर न जावें॥ २१। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २२। कि जैरसुन के बेटों को भी उन के पितरों के समस्त घराने उन के कुल कुल के समान गिनती करो॥ २३। तीस बरस से लेके पचास बरस लों सब जो सेवा के लिये भीतर जाते हैं कि

मंडली के तंबू की सेवा करें उन की गिनती करो॥ २४। जैरसुनियों
के कुल की सेवा और बोझ उठाने के लिये यही कार्य्य है॥ २५। और
वे तंबू के ओझल और उस का घटाटोप और नीली खालों का घटाटोप
जो उस पर है और मंडली के तंबू के द्वार का ओट उठावें॥ २६। और
आंगन के ओट और आंगन के द्वार का ओट जो तंबू और बेदी के चारों
ओर हैं और उन की रस्सियां और सब पात्र जो उन की सेवा के कारण
हैं और सब काम जो उन के कारण अवश्य हैं वे करें॥ २७। जैरसुन के
बेटों की सारी सेवा बोझ उठाने में और सब काम करने में हारून और
उस के बेटों की आज्ञा के समान होवे और तुम उन में से हर एक का
बोझ ठहरा दीजियो॥ २८। जैरसुन के संतान के कुल की सेवा मंडली
के तंबू में यह है और वे हारून याजक के बेटे ईतमर की आज्ञा में हैं॥
२९। मिरारी के बेटे उन के पितरों के घरानों और उन के कुल के
समान उन की गिनती करो॥ ३०। बीस बरस से लेके पचास बरस लों उन
सब को जो सेवा में पहुंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें
गिन॥ ३१। और उस सेना के समान जो मंडली के तंबू में उन के लिये
है उन के बोझ ये ठहरें तंबू के पाट और उस के अड़ंगे और उस के खंभे
और उस की चुरगहनी॥ ३२। और आंगन के खंभे जो चारों ओर हैं
और उन की चुरगहनी और उन के खूंटे और उन की रस्सियां और
उन की समस्त सामग्री सेवा समेत और उन की सामग्री के बोझे का नाम
ले लेके गिन॥ ३३। सो मिरारी के बेटे के कुल की सेवा जो मंडली के
तंबू की समस्त सेवा के समान यह है वे हारून याजक के बेटे ईतमर के
अधीन रहें॥ ३४। सो मूसा और हारून और मंडली के प्रधानों ने
क़िहातियों के बेटों को उन के पितरों के घरानों के और उन के कुल के
समान गिना॥ ३५। तीस बरस से लेके पचास बरस लों उन सब को
जो सेवा के लिये पहुंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें एक एक
करके गिना॥ ३६। सो वे जो अपने घराने के समान गिने गये दो
सहस्र सात सौ पचास थे॥ ३७। वे सब ये हैं जो क़िहात के घरानों में
से मंडली के तंबू की सेवा के लिये गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने
परमेश्वर की आज्ञा के समान जो मूसा की ओर से कही थी गिना।

३८। और जैरसुन के बेटे जो अपने पितरों के घरानों के समस्त कुल के समान गिने गये॥ ३९। तीस बरससे लेके पचासबरस लों सब जो सेवा के लिये पड़ंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें॥ ४०। वे सब जो उन के पितरों के घरानों और उनके समस्त कुल के समान गिने गये दो सहस्र छः सौ तीस ड़ए॥ ४१। वे सब ये हैं जो जैरसुन के बेटों के घरानों में से मंडली के तंबू की सेवा के लिये गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा से गिना॥ ४२। और मिरारी के बेटे के पितरों के घराने और उन के समस्त कुल जो गिने गये थे॥ ४३। तीस बरस से लेके पचास बरस लों हर एक जो सेवा के लिये पड़ंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें॥ ४४। अर्थात् वे जो उन के कुल में गिने गये थे तीन सहस्र दो सौ थे॥ ४५। वे सब ये हैं जो मिरारी के बेटे के कुल में से जो गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा के समान जो मूसा की ओर से कही थी गिना॥ ४६। सब जो लावियों में से गिने गये थे जिन्हें मूसा और हारून और इसराएल के प्रधानों ने उन के पितरों के घराने और उन के कुल के समान गिना॥ ४७। तीस बरस से लेके पचास बरस लों गिना जो सेवा के लिये पड़ंचते हैं जिस में मंडली के तंबू की सेवा करें और बोझ उठावें॥ ४८। अर्थात् वे जो उन में गिने गये थे आठ सहस्र पांच सौ अस्सी थे॥ ४९। मूसा की ओर से परमेश्वर की आज्ञा के समान वे गिने गये हर एक अपनी सेवा और बोझ उठाने के समान जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही वे मूसा से गिने गये॥

५ पांचवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतान को आज्ञा कर कि हर एक कोढ़ी और प्रमेही को और जो मृत्यु से अशुद्ध है उन को छावनी से बाहर कर देवें॥ ३। क्या स्त्री और क्या पुरुष तुम उन्हें छावनी से बाहर करो जिसतें अपनी छावनियों को जिन के मध्य में मैं रहता हूं वे अशुद्ध न करें॥ ४। सो इसराएल के संतानों ने ऐसा ही किया और उन्हें छावनी से बाहर कर दिया जैसा

परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही इसराएल के संतानों ने किया ॥ ५ । फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला ॥ ६ । कि इसराएल के संतानों को कह कि जब कोई पुरुष अथवा स्त्री परमेश्वर से बिरुद्ध होके ऐसा कोई पाप करे जो मनुष्य करते हैं और दोषी हो जाय ॥ ७ । तब अपने पाप को जो उन्हों ने किया है मान लेवें और वुह मूल के संग पांचवां अंश मिलावे और अपने अपराध के पलटा के लिये उसे देवे जिस का उस ने अपराध किया है ॥ ८ । परंतु यदि अपराध के पलटा देने को उस मनुष्य का कोई कुटुम्ब न होवे तो वुह प्रायश्चित्त के मेढ़े से अधिक जिस्से उस के लिये प्रायश्चित्त होवे ॥ ९ । उस अपराध की संती परमेश्वर के लिये याजक को देवे और इसराएल के संतानों की सारी पवित्र बस्तुन की सब भेंटें जो वे चढ़ाते हैं याजक की होंगी ॥ १० । और हर एक मनुष्य की पवित्र बस्तें उस की होंगी जो कुछ याजक को देगा उस की होगी ॥ ११ । फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला ॥ १२ । कि इसराएल के संतानों को कहके बोल कि यदि किसी की पत्नी अलग होके उस के बिरुद्ध कोई अपराध करे ॥ १३ । और कोई उस्से व्यभिचार करे और यह उस के पति से छिपा हो और ढंपा हो और वुह अशुद्ध हो जाय और उस पर साक्षी न होवे और वुह पकड़ी न जाय ॥ १४ । और उस के पति के मन में झल आवे और वुह अपनी पत्नी से झल रक्खे और वुह अशुद्ध हो अथवा यदि उस के पति के मन में झल आवे और वुह अपनी पत्नी से झल रक्खे और वुह स्त्री अशुद्ध न होय ॥ १५ । तब वुह मनुष्य अपनी पत्नी को याजक पास लावे और वुह उस के लिये एक ईफा का दसवां भाग जव का पिसान उस की भेंट के लिये लावे और वुह उस पर तेल और लुबान न डाले क्योंकि वुह झल की भेंट पाप को चेत में लाने के लिये स्मरण की भेंट है ॥ १६ । तब याजक उस स्त्री को पास बुलावे और परमेश्वर के आगे उसे खड़ी करे ॥ १७ । और याजक मट्टी के एक पात्र में शुद्ध जल लेवे और तंबू के आंगन की धूल लेके उस पानी में मिलावे ॥ १८ । फिर याजक उस स्त्री को परमेश्वर के आगे खड़ी करे और उस का सिर उघारे और स्मरण की भेंट जो झल की भेंट है उस के हाथों पर रक्खे

श्रीर याजक उस कड़वे पानी को जो धिक्कार के लिये है अपने हाथ में
लेवे॥ १९। श्रीर उस स्त्री को किरिया देके कहे कि यदि किसी ने
तुझ से कुकर्म्म नहीं किया श्रीर तू केवल अपने पति को छोड़ अशुद्ध मार्ग
में नहीं गई तो तू इस कड़वे पानी के गुण से जो धिक्कार के लिये है
बची रहे॥ २०। परंतु यदि तू अपने पति को छोड़के भटक गई हो
श्रीर अशुद्ध ऊई हो श्रीर अपने पति को छोड़ किसी दूसरे से कुकर्म्म
किया हो॥ २१। श्रीर याजक उस स्त्री को स्राप की किरिया देवे श्रीर
उसे कहे कि परमेश्वर तेरे लोगों के मध्य में तुझे स्राप देवे कि परमेश्वर
तेरी जांघ को सड़ावे श्रीर तेरे पेट को फुलावे॥ २२। श्रीर यह पानी
जो स्राप के कारण होता है तेरी अतड़ियों में जाके तेरा पेट फुलावे
श्रीर तेरी जांघ को सड़ावे श्रीर वुह स्त्री कहे कि आमीन आमीन॥
२३। फिर याजक उन धिक्कारों को एक पुस्तक में लिखे श्रीर कड़वे
पानी से उसे मिटा दे॥ २४। श्रीर याजक वुह कड़वा पानी जो स्राप
के कारण होता है उस स्त्री को पिलावे तब वुह पानी जो स्राप के
कारण होता है उस में कड़वा पैठेगा॥ २५। फिर याजक उस स्त्री के
हाथ से झल की भेंट लेके परमेश्वर के आगे उसे हिलावे श्रीर यज्ञबेदी
पर चढ़ावे॥ २६। श्रीर उस भेंट के स्मरण के लिये एक मुट्ठी लेके
याजक बेदी पर जलावे उस के पीछे वुह पानी उस स्त्री को पिलावे॥
२७। श्रीर जब वुह पानी उसे पिलावेगा तब ऐसा होगा कि यदि वुह
अशुद्ध होवे श्रीर वुह अपने पति के बिरुद्ध कुछ अपराध किया हो तो
वुह पानी जो स्राप के कारण होता है उस के शरीर में पऊंचके कड़वा
हो जायगा श्रीर उस का पेट फूलेगा श्रीर उस की जांघ सड़ जायगी श्रीर
वुह स्त्री अपने लोगों में धिक्कारित होगी॥ २८। परंतु यदि वुह अशुद्ध
न हो परंतु शुद्ध होवे तो वुह निर्दोष होगी श्रीर गर्भिणी होगी॥ २९।
उस स्त्री के कारण जो अपने पति को छोड़के भटकती है श्रीर अशुद्ध
है झल के लिये यह ब्यवस्था है॥ ३०। अथवा जब पुरुष के मन में
झल आवे श्रीर वुह अपनी पत्नी से संदेह रक्खे श्रीर स्त्री को परमेश्वर के
आगे खड़ी करे श्रीर याजक उस पर ये सब ब्यवस्था पूरी करे॥ ३१।
तो पुरुष पाप से पवित्र होगा श्रीर वुह स्त्री अपना पाप भोगेगी॥

६ छठवां पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला ॥ २। कि इसराएल के संतानों को कहके बोल कि जब कोई पुरुष अथवा स्त्री आप को अलग करने के लिये नसरानी की मनौती ईश्वर के लिये माने ॥ ३। तो वुह दाखरस से और तीक्ष्ण मदिरा से अलग रहे दाखरस का सिरका अथवा तीक्ष्ण मदिरा का सिरका न पीये और अंगूर का कोई रस न पीये और न भींगा अथवा सूखा अंगूर खावे ॥ ४। और अपने अलग होने के सब दिनों में कोई वस्तु जो दाखों से उत्पन्न होती है बीज से लेके उस के छिलके लों न खावे ॥ ५। और अपने अलग होने की मनौती के सब दिनों में सिर पर छुरा न फिरावे जब लों उस के अलग किये गये दिन बीत न जावें वुह ईश्वर के लिये पवित्र है अपने सिर के बालों को बढ़ने देवे ॥ ६। वुह परमेश्वर के लिये अपने सारे अलग होने के दिनों में लोथ के पास न जाये ॥ ७। वुह अपने माता पिता अथवा अपने भाई बहिन के लिये जब वे मर जावें आप को अशुद्ध न करे क्योंकि उस के ईश्वर की स्थापना उस के सिर पर है ॥ ८। वुह अपने अलग होने के सब दिनों में परमेश्वर के लिये पवित्र है ॥ ९। और यदि कोई मनुष्य अकस्मात् उस के पास मर जाय और उस के सिर के स्थापित को अपवित्र करे तो वुह अपने पवित्र होने के दिन अपना सिर मुड़ावे सातवें दिन सिर मुड़ावे ॥ १०। और आठवें दिन दो पिण्डुकी अथवा कपोत के दो बच्चे मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावे ॥ ११। और याजक एक को पाप की भेंट के कारण और दूसरे को होम की भेंट के लिये चढ़ावे और उस अपराध का जो मृतक के कारण से हुआ प्रायश्चित्त देवे और अपने सिर को उसी दिन पवित्र करे ॥ १२। फिर अपने अलग होने के दिनों को परमेश्वर के लिये स्थापित करे और पहिले बरस का एक मेम्ना पाप की भेंट के लिये लावे परंतु उस के आगे के दिन गिने न जायेंगे क्योंकि उस की भेंट अपवित्र हो गई ॥ १३। नसरानी होने के लिये यह व्यवस्था है जब उस के अलग होने के दिन पूरे हों तब वुह मंडली के तंबू के द्वार पर लाया जावे ॥ १४। और वुह परमेश्वर के लिये अपनी भेंट पहिले

बरस का एक निर्दोष मेम्ना होम की भेंट के लिये और पाप की भेंट के
लिये पहिले बरस की एक भेड़ी और कुशल की भेंट के लिये एक निर्दोष
मेढ़ा॥ १५। और एक टोकरी अखमीरी रोटियां और चोखे पिसान
की पूरी और अखमीरी लिट्टी तेल में चुपड़ीं ऊई उन के खाने की और
उन के पीने की भेंट॥ १६। और याजक उन्हें परमेश्वर के आगे लाके
उस के पाप की भेंट को और उस के होम की भेंट को चढ़ावे॥ १७।
और परमेश्वर के कारण एक टोकरा अखमीरी रोटी के साथ उस मेढ़े
को चढ़ावे और याजक उस के खाने की और पीने की भेंट भी चढ़ावे॥
१८। फिर वुह नसरानी मंडली के तंबू के द्वार पर अपने अलग होने के
लिये सिर मुड़ावे और उस के अलग होने के सिर के बालों को लेवे और
उस आग में जो कुशल की भेंट के बलिदान के तले है डाल देवे॥ १९।
जब अलग होने के लिये मुड़ाया जावे तब याजक उस मेंढ़े का सिझाया
ऊआ कांधा और टोकरी में से एक अखमीरी फुलका और एक अखमीरी
लिट्टी लेके उस नसरानी के हाथों पर रक्खे॥ २०। फिर याजक उन्हें
हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे हिलावे यह हिलाने की छाती
और उठाने का कांधा याजक के लिये पवित्र है उस के पीछे नसरानी
द्राक्षारस पी सके॥ २१। नसरानी की मनौती की व्यवस्था परमेश्वर के
लिये उस के अलग होने की भेंट जो उस के हाथ पऊंचने से अधिक
उस की मनौती के समान अपने अलग होने की व्यवस्था के पीछे अवश्य यों
करे॥ २२। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २३। कि हारून
को और उस के बेटों को कह कि इसराएल के संतानों को यों आशीष
देके उन्हें कहियो॥ २४। कि परमेश्वर तुझे आशीष देवे और तेरी
रक्षा करे॥ २५। परमेश्वर अपना रूप तुझ पर प्रकाश करे और तुझ
पर अनुग्रह करे॥ २६। परमेश्वर अपना रूप तुझ पर प्रकाश करे
और तुझे कुशल देवे॥ २७। और वे मेरा नाम इसराएल के संतानों
पर रक्खें और मैं उन्हें आशीष देऊंगा॥

७ सातवां पर्ब्ब॥

और ऐसा हुआ कि जिस दिन मूसा तंबू खड़ा कर चुका और उसे
और उस की समस्त सामग्री को अभिषेक करके पवित्र किया
बेदी को उस के समस्त पात्र सहित अभिषेक करके पवित्र किया॥ २।
तब इसराएल के अध्यक्ष जो अपने पितरों के घरानों में प्रधान और
गोष्ठियों के अध्यक्ष और उन में जो गिने गये उन के ऊपर थे भेंट लाये॥
३। और ढांपी हुई छः गाड़ियां और बारह बधिया बैल अपनी भेंट
परमेश्वर के आगे लाये दो दो अध्यक्षों के लिये एक एक गाड़ी और हर
एक की ओर से एक एक बैल सो वे उन्हें तंबू के आगे लाये॥ ४। तब
परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ ५। कि यह उन से ले जिसतें वे मंडली के
तंबू की सेवा में आवें और उन्हें लावियों को दे हर एक को उस की
सेवा के समान॥ ६। सो मूसा ने गाड़ियां और बैल लेके लावियों को
दिये॥ ७। दो गाड़ियां और चार बैल उस ने जैरसुन के बेटों को
उन की सेवा के समान दिये॥ ८। और चार गाड़ियां और आठ बैल
मिरारी के संतान को जो हारून याजक के पुत्र ईतमर के अधीन थे
उन की सेवा के समान दिये॥ ९। परंतु उस ने किहात के बेटों को
कुछ न दिया इस लिये कि पवित्र स्थान की सेवा जो उन के लिये ठहराई
गई यह थी कि वे अपने कांधों पर उठाके ले चलें॥ १०। और जिस
दिन कि बेदी अभिषेक किई गई अध्यक्षों ने उस के स्थापित के लिये
चढ़ाई अर्थात् अध्यक्षों ने बेदी के आगे भेंट चढ़ाई॥ ११। तब
परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हर एक अध्यक्ष बेदी को स्थापित करने के
लिये एक एक दिन अपनी अपनी भेंट चढ़ावे॥ १२। सो पहिले दिन
यहूदाह की गोष्ठी में से अम्मिनदब के पुत्र नहशून ने अपनी भेंट चढ़ाई॥
१३। और उस की भेंट ये थीं एक चांदी का थाल जिस की तौल पौने
तीन सेर थी और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र
स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से
मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ १४। एक करछुल एक सौ
सवा पचत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ १५। होम की भेंट के लिये

एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ १६। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना॥ १७। और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने ये अम्मिनदब के बेटे नहशून की भेंट॥ १८। दूसरे दिन सुग़ के बेटे नतनिएल ने जो इशकार का अध्यक्ष था अपनी भेंट चढ़ाई॥ १९। और उस की भेंट यह थी पौने तीन सेर भर चांदी का एक थाल और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ २०। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पचत्तर भर धूप से भरी हुई॥ २१। एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना होम की भेंट के लिये॥ २२। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ २३। और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने सुग़ के बेटे नतनिएल की भेंट थी॥ २४। तीसरे दिन हेलून के पुत्र इलिअब ने चढ़ाई जो ज़बुलून के बंश का अध्यक्ष था॥ २५। उस की भेंट यह थी पौने तीन सेर चांदी का एक थाल और एक सेर डेढ़ पाव का चांदी का कटोरा पवित्र स्थान की तौल से दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ २६। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पचत्तर भर धूप से भरी हुई॥ २७। एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना होम की भेंट के लिये॥ २८॥ बकरी का एक मेम्ना पाप की भेंट के लिये॥ २९। और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने हेलून के पुत्र इलिअब की भेंट थी॥ ३०। चौथे दिन शदेऊर के बेटे इलिसूर ने चढ़ाई जो रूबिन के बंश का अध्यक्ष था॥ ३१। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ३२। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पचत्तर भर धूप से भरी हुई॥ ३३। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले

बरस का एक मेम्ना॥ ३४। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ ३५। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने शदेऊर के बेटे इलिसूर की भेंट थी॥ ३६। और पांचवें दिन सूरिसद्दी के बेटे सलूमिएल ने जो शमऊन के वंश का अध्यक्ष था अपनी भेंट चढ़ाई॥ ३७। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ३८। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पछत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ३९। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ४०। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ ४१। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने सूरिसद्दी के बेटे सलूमिएल की भेंट थी॥ ४२। छठवें दिन दऊएल के बेटे इलयासफ ने चढ़ाई जो जद के वंश का अध्यक्ष था॥ ४३। उस की भेंट चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ४४। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पछत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ४५। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ४६। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ ४७। और कुशल की भेंट के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने दऊएल के बेटे इलियासफ की भेंट थी॥ ४८। और सातवें दिन अम्मिहूद के बेटे इलिसमः ने जो इफ्रायम के वंश का अध्यक्ष था॥ ४९। उस की भेंट यह थी कि चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ५०। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पछत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ५१। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा

पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ५२। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना॥ ५३। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अम्मिहूद के बेटे इलिसमः की भेंट थी॥ ५४। आठवें दिन फिदाहसूर के बेटे जमलीएल ने जो मुनस्सी के बंश का अध्यक्ष था॥ ५५। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ५६। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पछत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ५७। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ५८। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ ५९। और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने फिदाहसूर के बेटे जमलीएल की भेंट थी॥ ६०। नौवें दिन जिदःऊनी के बेटे अबिदान ने जो बिनयमीन के बंश का अध्यक्ष था॥ ६१। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ६२। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पछत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ६३। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ६४। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना॥ ६५। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने जिदःऊनी के बेटे अबिदान की भेंट थी॥ ६६। दसवें दिन अम्मिसद्दा के बेटे अखिअजर ने जो दान के बंश का अध्यक्ष था॥ ६७। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ६८। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पछत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ६९। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ७०। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का

मेम्ना॥ ७१। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अम्मिसद्दा के बेटे अखिअज़र की भेंट थी॥ ७२। ग्यारहवें दिन अकरून के बेटे फ़जअिऐल ने जो यसर के बंश का अध्यक्ष था॥ ७३। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ७४। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पछत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ७५। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ७६। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना॥ ७७। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अकरून के बेटे फ़जअिऐल की भेंट थी॥

७८। बारहवें दिन ऐनान के बेटे अखिरअः ने जो नफ़ताली के संतान के बंश का अध्यक्ष था॥ ७९। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ८०। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पछत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ८१। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ८२। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना॥ ८३। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने ऐनान के बेटे अखिरअः की भेंट थी॥ ८४। जिस दिन बेदी इसराएल के अध्यक्षों से अभिषेक किई गई उस की स्थापित यह चांदी के बारह थाल और चांदी के बारह कटोरे और सोने की बारह करछुल थीं॥ ८५। चांदी का हर एक थाल तौल में पौने तीन सेर का और हर एक कटोरा डेढ़ पाव सेर भर का सब चांदी के पात्र पवित्र स्थान की तौल से पैंतीस सेर के थे॥ ८६। सोने की बारह करछुल धूप से भरी हुई एक करछुल एक सौ सवा पछत्तर भर की पवित्र स्थान की तौल से करछुलों का सब सोना एक सौ बीस

शेकल था॥ ८७। हाम की भेंट के लिये बारह बैल बारह मेंढ़े पहिले
बरस के बारह मेम्ने उन की भोजन की भेंट सहित और पाप की भेंट के
लिये बकरी के बारह मेम्ने॥ ८८। और कुशल की भेंटों के बलिदान
के लिये चैाबीस बैल साठ मेंढे साठ बकरियां पहिले बरस के साठ मेम्ने
बेदी के अभिषेक करने के पीछे उस के स्थापित के लिये यह था॥
८९। और जब मूसा ने उस्से बात करने के लिये मंडली के तंबू में
प्रवेश किया तब उस ने दया के आसन पर से जो साक्षी की मंजूषा पर
था दोनों करोबियों के मध्य से किसी का शब्द सुना जो उस्से
कहता था॥

८ आठवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ २। हारून से कह और उसे बोल
जब तू दीपकों को बारे तो सातों दीपक का उंजियाला दीअट के
झाड़ के सन्मुख होवे॥ ३। सो हारून ने ऐसा ही किया उस ने दीअट
के झाड़ के सन्मुख दीपकों को बारा जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
किई थी॥ ४। और दीअट के झाड़ की बनावट पीटे हुए सोने से
थी उस के खंभे से उस के फूलों पीटे हुए सोने का था उस के समान
जो परमेश्वर ने मूसा को दिखाया था उस ने वैसा ही झाड़ बनाया॥
५। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ ६। कि लावियों को इसराएल के
संतानों में से अलग कर और उन्हें पवित्र कर॥ ७। और उन्हें पवित्र
करने के लिये तू उन से मोल कीजिये की शुद्ध करने का जल उन पर
छिड़क और वे अपने समस्त देह को मुड़ावें और अपने कपड़े धोवें और
आप को पावन करें॥ ८। तब वे एक बछड़ा उस के मांस की भेंट के
साथ तेल से मिला हुआ चोखा पिसान लेवें और तू पाप की भेंट के लिये
एक बछड़ा लीजियो॥ ९। और लावियों को मंडली के तंबू के आगे
लाइयो और इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को एकट्ठी करियो॥
१०। और लावियों को परमेश्वर के आगे लाना और इसराएल के
संतान अपने हाथ लावियों पर रक्खें॥ ११। और हारून लावियों को
इसराएल के संतानों की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे चढ़ावे जिस में वे

परमेश्वर की सेवा करें॥ १२। और लावी अपने हाथ बैलों के सिरों
पर रक्खें और तू एक को पाप की भेंट और दूसरे को होम की भेंट के
लिये जिसतें लावियों के लिये प्रायश्चित्त होवे परमेश्वर के लिये चढ़ाइयो॥
१३। फिर तू लावियों को हारून और उस के बेटों के आगे खड़ा कर
दीजियो और उन्हें परमेश्वर की भेंट के लिये चढ़ाइयो॥ १४। और
तू लावियों को इसराएल के संतानों में से अलग करियो और लावी मेरे
होंगे॥ १५। उस के पीछे लावी मंडली के तंबू में सेवा के निमित्त पहुंचे
तू उन्हें पवित्र करियो और उन्हें भेंट के लिये चढ़ाइयो॥ १६। क्योंकि वे
सब के सब इसराएल के संतानों में से मुझे दिये गये हर एक जो उत्पन्न
होता है इसराएल के संतानों के सब पहिलौंठों की संती उन्हें ले लिया
है॥ १७। क्योंकि इसराएल के संतानों के सारे पहिलौंठे क्या मनुष्य
के क्या पशु के मेरे हैं जिस दिन मिस्र देश के हर एक पहिलौंठे को
मारा मैं ने उन को अपने लिये पवित्र किया॥ १८। और इसराएल के
संतानों के सारे पहिलौंठों की संती मैं ने लावियों को ले लिया है॥
१९। और मैं ने इसराएल के संतानों में से सब लावियों को हारून
और उस के बेटों को दिया जिसतें मंडली के तंबू में इसराएल के संतानों
की संती सेवा करें और इसराएल के संतानों के लिये प्रायश्चित्त देवे
जिसतें इसराएल के संतानों पर जब वे पवित्र स्थान के पास आवें मरी
न पड़े॥ २०। सो जैसा कि परमेश्वर ने लावियों के विषय में मूसा को
आज्ञा किई थी मूसा और हारून और इसराएल के संतानों की सारी
मंडली ने लावियों से वैसा ही किया सो इसराएल के संतानों ने उन से
वैसा ही किया॥ २१। और लावी पवित्र किये गये और उन्हों ने
अपने कपड़े धोये और हारून ने उन्हें भेंट के लिये परमेश्वर के आगे
चढ़ाया और हारून ने उन के लिये प्रायश्चित्त दिया जिसतें उन्हें पवित्र
करे॥ २२। उस के पीछे लावी अपनी सेवा करने को हारून और
उस के संतानों के आगे मंडली के तंबू में गये जैसा कि परमेश्वर ने
लावियों के विषय में मूसा को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा ही उन से
किया॥ २३। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २४। लावियों
का व्यवहार यह रहे कि वे पचीस बरस से लेकर ऊपर लों मंडली के

तंबू में जाके सेवा में रहें॥ २५। और जब पचास बरस के हों तो सेवकाई से रहि जायें और फिर सेवा न करें॥ २६। परंतु मंडली के तंबू में अपने भाइयों के साथ रखवाली किया करें और सेवा न करें तू लावियों से रक्षा के विषय में योंहीं कीजियो॥

९ नौवां पर्ब्ब।

मिस्र के देश से निकलने के दूसरे बरस के पहिले मास में परमेश्वर ने सीना के अरण्य में मूसा से कहा॥ २। कि इसराएल के संतान उस के ठहराये हुए समय में पार जाने का पर्ब्ब रक्खें॥ ३। इस मास के चौदहवीं तिथि की सांझ के ठहराये हुए समय में उसे करियो उस की बिधि और आचार के समान पर्ब्ब रखियो॥ ४। सो मूसा ने इसराएल के संतानों को कहा कि वे पार जाने का पर्ब्ब रक्खें॥ ५। और उन्हों ने पहिले मास की चौदहवीं तिथि की सांझ को सीना के अरण्य में पार जाने का पर्ब्ब रक्खा जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी इसराएल के संतानों ने वैसा ही किया॥ ६। वहां कितने जन थे जो किसी मनुष्य की लोथ के कारण से अपवित्र हुए थे वे उस दिन पार जाने का पर्ब्ब न रख सके और वे मूसा और हारून के समीप आये॥ ७। और उन्हों ने उस्से कहा कि हम मनुष्य के लोथ के कारण से अपवित्र हैं किस लिये हम रोके गये कि इसराएल के संतानों में ठहराये हुए समय में परमेश्वर के लिये भेंट लावें॥ ८। मूसा ने उन्हें कहा कि ठहर जाओ और मैं सुनूंगा कि परमेश्वर तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा करता है॥ ९। तब परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १०। कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि यदि कोई तुम्मे से अथवा तुम्हारे बंश में से किसी लोथ के कारण से अशुद्ध होवे अथवा यात्रा में दूर होवे तथापि वुह परमेश्वर के लिये पार जाने का पर्ब्ब रक्खे॥ ११। दूसरे मास की चौदहवीं तिथि की सांझ को वे पर्ब्ब रक्खें और अखमीरी रोटी कड़वी तरकारी के साथ खावें॥ १२। वे बिहान लों उस में से कुछ न छोड़ें और न उस की कोई हड्डी तोड़ी जाय पार जाने की समस्त बिधि के समान उसे करें॥ १३। परंतु जो मनुष्य शुद्ध है और यात्रा

में नहीं है और यदि पार जाने का पर्ब्ब नहीं रक्खे वही प्राणी अपने
लोगों में से काट डाला जायगा क्योंकि वुह ठहराये हुए समय में
परमेश्वर की भेंट न लाया वुह अपना पाप भोगेगा॥ १४। और यदि कोई
परदेशी तुम्में टिके और पार जाने का पर्ब्ब परमेश्वर के लिये रक्खा चाहे
तो वुह पार जाने के पर्ब्ब को उस की रीति और बिधि के समान रक्खे
तुम्हारे लिये क्या परदेशी और क्या देशी की एक ही विधि होगी॥
१५। और जिस दिन तंबू खड़ा किया गया मेघ ने साक्षी के तंबू को
ढांप लिया और सांझ से लेके बिहान लों तंबू पर आग सी दिखाई देती
थी॥ १६। सो सदा ऐसा ही था कि मेघ उसे ढांपता था और रात को
आग सी दिखाई देती थी॥ १७। और जब तंबू पर से मेघ उठाया जाता
था तब इसराएल के संतान कूच करते थे और जहां मेघ आके ठहरता
था तहां इसराएल के संतान डेरा करते थे॥ १८। इसराएल के संतान
परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे और परमेश्वर की आज्ञा से डेरा
करते थे जब लों तंबू पर मेघ रहता था वे डेरे में चैन करते थे॥ १९।
और जब बहुत दिन लों तंबू पर मेघ ठहरता था इसराएल के संतान
परमेश्वर की आज्ञा मानते और कूच न करते थे॥ २०। और ऐसे ही जब
मेघ थोड़े दिन लों तंबू पर ठहरता था वे परमेश्वर की आज्ञा के समान
अपने डेरे में रहते थे और परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे॥
२१। और यों होता था कि जब सांझ से बिहान लों मेघ ठहरता था
और बिहान को उठाया जाता था तब वे कूच करते थे चाहे दिन चाहे
रात जब मेघ उठाया जाता था वे कूच करते थे॥ २२। अथवा दो
दिन अथवा एक मास अथवा एक बरस मेघ तंबू पर रहता था तब
इसराएल के संतान अपने डेरों में रहते थे और कूच न करते थे परंतु
जब वुह ऊपर उठाया जाता था तब वे कूच करते थे॥ २३। परमेश्वर
की आज्ञा से वे तंबू में चैन करते थ और परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते
थे परमेश्वर की आज्ञा जो मूसा की ओर से होती थी वे परमेश्वर की
आज्ञा को पालन करते थे।

१० दसवां पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि अपने लिये चांदी के
दो नरसिंगे एक ही टुकड़े से बना कि मंडली के बुलाने के और
छावनी के कूच करने के कार्य्य के लिये होवें॥ ३। और जब वे उन्हें
फूंकें तब सारी मंडली तेरे पास मंडली के तंबू के द्वार पर आप को एकट्ठी
करे॥ ४। और यदि एक ही फूंका जावे तब अध्यक्ष जो इसराएलियों
के सहस्रों के प्रधान हैं तेरे पास एकट्ठे होवें॥ ५। और जब तुम छोटे
बड़े शब्द से फूंको तो पूर्ब्ब दिशा की छावनी आगे बढ़े॥ ६। जब तुम
दूसरी बेर छोटे बड़े शब्द से फूंको तो दक्खिन दिशा की छावनी कूच करे
वे अपने कूच के लिये छोटे बड़े शब्द से फूंकें॥ ७। परंतु जब कि मंडली
को एकट्ठी करना होवे तब फूंको परंतु छोटे बड़े शब्द मत करो॥ ८।
और हारून याजक के बेटे नरसिंगे फूंका करें और तुम्हारे लिये तुम्हारे
समस्त बंशों में यह बिधि सनातन लों रहे॥ ९। और यदि तुम बैरियों
से जो तुम्हें सताते हैं अपने देश से लड़ने को निकलो तो तुम नरसिंगे से
छोटे बड़े शब्द फूंको और अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे स्मरण किये
जाओगे और तुम अपने शत्रुन से बच जाओगे॥ १०। और अपने आनंद
के दिन और अपने पर्ब्बों के दिन अपने मासों के आरंभों में अपनी होम
की भेंट और अपने कुशल की भेंटों के बलिदानों पर नरसिंगे फूंको
जिसतें तुम्हारे कारण ईश्वर के आगे तुम्हारे स्मरण के लिये होवे मैं
परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ११। फिर यों हुआ कि दूसरे बरस
के दूसरे मास की बीसवीं तिथि को मेघ साक्षी के तंबू से ऊपर उठाया
गया॥ १२। इसराएल के संतान सीना के अरण्य से कूच किये
और फ़ारान के अरण्य में मेघ ठहर गया॥ १३। सो मूसा की
ओर से परमेश्वर की आज्ञा के समान उन्हों ने यात्रा किई॥ १४।
पहिले यहूदाह के संतान की छावनी के झंडे उन के कटकों के
समान चले उन पर अम्मिनदब का बेटा नहसून था॥ १५। और
इश्शकार के संतान की गोष्ठी की सेना पर सुग्र का बेटा नतनिएल था॥
१६। और ज़बुलून के संतान की गोष्ठी की सेना पर हेलून का बेटा

इलिअब था॥ १७। फिर तंबू उतारा गया तब जैरसुन के बेटे और मिरारी
के बेटों ने तंबू को उठाके यात्रा किई॥ १८। फिर रूबिन का झंडा उन
की सेनों के समान आगे बढ़ा शदेजर का बेटा इलिसूर उस के कटक का
प्रधान था॥ १९। और समऊन के बंश की गोष्ठी की सेना पर सूरिशद्दी
का बेटा सलमिएल था॥ २०। जद के बंश की गोष्ठी की सेना पर दऊएल
का बेटा इलयासफ था॥ २१। फिर किहातियों ने पवित्र स्थान उठाके
यात्रा किई और उन के पहुंचने लों तंबू खड़ा किया जाता था॥ २२।
फिर इफ़रायम की छावनी का झंडा उन की सेनों के समान आगे बढ़ा
अम्मिहूद का बेटा इलिसमः उस के कटक का प्रधान था॥ २३। और
मुनस्सी के बंश की गोष्ठी की सेनों पर फिदाहसूर का बेटा जमलीएल
था॥ २४। और बिनयमीन के बंश की गोष्ठी की सेनों पर जिदःऊनी
का बेटा अबिदान था॥ २५। सब छावनी के पीछे दान के संतान की
छावनी का झंडा उन की सेनों के समान आगे बढ़ा उन की सेना पर
अम्मिशद्दी का बेटा अखिअजर था॥ २६। और यसर के बंश की गोष्ठी
की सेनों पर अकरान का बेटा फ़जइएल था॥ २७। और नफ़ताली
के बंश की गोष्ठी की सेनों पर ऐनान का बेटा अखिरअः था॥ २८।
सो इसराएल के संतान की यात्रा जब वे आगे बढ़ते थे अपनी सेनाओं के
समान ऐसी ही थी।

२९। तब मूसा ने मिदयानी रऊएल के बेटे ऊबाब को जो मूसा का ससुर
था कहा कि हम उस स्थान को जाते हैं जिस के बिषय में परमेश्वर ने कहा
है कि मैं तुम्हें देऊंगा सो तू हमारे साथ आ हम तुझ से भलाई करेंगे
क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल के बिषय में अच्छा कहा है॥ ३०। उस ने
उसे कहा कि मैं न जाऊंगा परंतु मैं अपने देश को और अपने कुटुम्बों में
जाऊंगा॥ ३१। तब उस ने कहा कि हमें न छोड़िये क्योंकि आप
जानते हैं कि अरण्य में हमें क्योंकर डेरा किया चाहिये सो आप हमारी
आंखों की संती होंगे॥ ३२। और यों होगा कि यदि आप हमारे
साथ चलें तो जो भलाई परमेश्वर हम से करेगा सो हम आप से करेंगे॥
३३। फिर उन्हों ने परमेश्वर के पहाड़ से तीन दिन की यात्रा किई
और परमेश्वर की बाचा की मंजूषा उन तीन दिन के मार्ग से आगे गई

जिसतें उन के लिये बिश्राम का स्थान ढूंढे॥ ३४। और जब वे छावनी से बाहर जाते थे तब परमेश्वर का मेघ दिन को ऊपर ठहरता था॥ ३५। और जब मंजूषा आगे बढ़ती थी तब यों होता था कि मूसा कहता था कि उठ हे परमेश्वर तेरे शत्रु छिन्न भिन्न होवें और जो तुझ से बैर रखता है सो तेरे आगे से भागे और जब वुह ठहरता था वुह कहता था कि हे परमेश्वर सहस्रों इसराएलियों में फिर आ।

११ ग्यारहवां पर्व्व।

और जब लोग कुड़कुड़ाने लगे तो परमेश्वर उदास हुआ और सुना और उस का क्रोध भड़का और परमेश्वर की आग उन में फूट निकली और छावनी के अंत्य को भस्म किया॥ २। तब लोग मूसा के पास चिल्लाये और जब मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना किई तब आग बुझ गई॥ ३। इस लिये कि परमेश्वर की आग उन में भड़की उस ने उस स्थान का नाम ज्वलन रक्खा॥ ४। और मिली जुली मंडली जो उन में थी कुइच्छा करने लगी और इसराएल के संतान भी बिलाप करके कहने लगे कि कौन हमें मांस का भोजन देगा॥ ५। हमें वुह मछली की सुधि आती है जो हम सेंत से मिस्र में खाते थे और खीरे और खरबूज और गंदना और पियाज़ और लहसुन॥ ६। परंतु अब तो हमारा प्राण सूख गया यहां तो हम मन्न को छोड़ कुछ भी नहीं देखते॥ ७। और मन्न धनिये की नाईं और उस का रंग मोती का सा था॥ ८। लोग इधर उधर जाके उसे एकट्ठा करते थे और चक्की में पीसते थे अथवा उखली में कूटते थे और फुलका बनाके तवे पर पकाते थे उस का स्वाद टटके तेल की नाईं था॥ ९। और रात को जब छावनी पर ओस पड़ती थी तब मन्न उस पर पड़ता था॥ १०। तब मूसा ने सुना कि लोगों के हर एक घराने का हर एक मनुष्य अपने अपने तंबू के द्वार पर बिलाप कर रहा है तो परमेश्वर का क्रोध अत्यंत भड़का और मूसा भी उदास हुआ॥ ११। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि तू अपने दास को क्यों दुःख दे रहा है और तेरी दृष्टि में मैं ने क्यों नहीं अनुग्रह पाया कि तू ने इन सब लोगों का बोझ मुझ पर डाला है॥ १२। क्या मैं ने

इन सारे लोगों को गर्भ में रक्खा क्या मैं ने उन्हें जना है कि तू मुझे
कहता है कि उन्हें उस देश में जिस की तू ने उन के पितरों से किरिया
खाई है अपनी गोद में ले जिस रीति से पिता दूध पीवक बालक को
गोद में लेता है॥ १३। मैं कहां से मांस लाऊं कि उन सब लोगों
को देऊं वे मुझे रो रोके कहते हैं कि हमें खाने को मांस दे॥ १४।
मैं अकेला इन सब लोगों का भार उठा नहीं सक्ता इस कारण कि मेरे
लिये बड़त बोझ है॥ १५। यदि तू मुझ से यों हीं करता है तो मुझे
मार के अलग कर और यदि मैं तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाये हूं तो मैं
अपनी बिपत्ति न देखूं॥ १६। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि
इसराएल के प्राचीनों में से सत्तर पुरुष जिन्हें तू प्राचीन और प्रधान
जानता है मेरे लिये बटोर और उन्हें मंडली के तंबू पास ला वे तेरे
संग वहां खड़े रहें॥ १७। मैं उतरूंगा और तेरे साथ बातें करूंगा
और मैं उस आत्मा में से जो तुझ पर है कुछ लेकर उन पर डालूंगा कि
तेरे साथ लोगों का बोझ उठावें जिसतें तू अकेला उसे न उठावे॥ १८।
और लोगों से कह कि कल आप को पवित्र करो और तुम मांस खाओगे
क्योंकि रो रोके तुम्हारा यह कहना परमेश्वर के कानों में पड़ंचा कि
कौन हमें मांस खाने को देगा क्योंकि हम तो मिस्र ही में भले थे सो
परमेश्वर तुम्हें मांस देगा और तुम खाओगे॥ १९। और तुम एक ही
दिन न खाओगे न दो दिन न पांच दिन न दस दिन न बीस दिन॥
२०। परंतु एक मास भर खाओगे जब लों कि वुह तुम्हारे नथुनों से
न निकले और तुम उस्से घिन न करो क्योंकि तुम ने ईश्वर की निंदा
किई जो तुम्हों में है और उस के आगे यों कहके रोये कि हम मिस्र
से क्यों बाहर आये॥ २१। तब मूसा ने कहा कि ये लोग जिन में मैं हूं
छः लाख पगयत हैं और तू ने कहा है कि मैं उन्हें इतना मांस देऊंगा
कि वे एक मास भर खावें॥ २२। क्या झुंड और लेहंड़े उन्हें तृप्त करने
के लिये बधन किये जायेंगे अथवा समुद्र की सारी मछलियां उन के
लिये एकट्ठी किई जायेंगी जिसतें वे तृप्त होवें॥ २३। परमेश्वर ने मूसा
से कहा कि क्या परमेश्वर का हाथ घट गया अब तू देखेगा कि मैं बचन
का पूरा हूं कि नहीं॥ २४। तब मूसा ने बाहर जाके परमेश्वर

की बातें लोगों से कहीं और लोगों के प्राचीनों में से सत्तर मनुष्य एकट्ठे किये और उन्हें तंबू के आस पास खड़े किये॥ २५। तब परमेश्वर मेघ में उतरा और उस्से बोला और उस के आत्मा में से कुछ लेके उन सत्तर प्राचीनों को दिया और जब आत्मा उन पर ठहरा वे भविष्य कहने लगे और न थमे॥ २६। परंतु दो मनुष्य छावनी में रह गये थे जिन में से एक का नाम इल्दाद और दूसरे का मेदाद सो आत्मा उन पर ठहरा और वे उन में लिखे गये थे परंतु तंबू के पास बाहर नहीं गये और वे तंबू ही में भविष्य कहने लगे॥ २७। तब एक तरुण ने दौड़के मूसा को संदेश दिया कि इल्दाद और मेदाद तंबू में भविष्य कहते हैं॥ २८। सो मूसा के सेवक नून के बेटे यहूसूअ ने जो उस के तरुणों में से था मूसा से कहा कि हे मेरे स्वामी मूसा उन्हें बरज दे॥ २९। मूसा ने उसे कहा कि क्या तू मेरे कारण डाह रखता है हाय कि परमेश्वर के सारे लोग भविष्य बक्ता होते और परमेश्वर अपना आत्मा उन सभों पर डालता॥ ३०। और मूसा और इसराएल के प्राचीन छावनी में गये॥ ३१। तब परमेश्वर की ओर से एक पवन निकला और बटेर को समुद्र से लाया और छावनी पर ऐसा गिराया जैसा कि एक दिन के मार्ग इधर उधर छावनी की चारों ओर और जैसा कि दो हाथ भूमि के ऊपर॥ ३२। और लोग उस दिन और रात भर और उस के दूसरे दिन भी खड़े रहे और बटेर बटोरे जिस ने थोड़े से थोड़ा बटोरा उस ने आधमन के अटकल बटोरा और उन्हों ने अपने लिये तंबू के आस पास फैलाये॥ ३३। और जब लों उन के दांत तले मांस था चाबने से पहिले परमेश्वर का क्रोध लोगों पर भड़का और परमेश्वर ने उन लोगों को बड़ी मरी से मारा॥ ३४। और उस ने उस स्थान का नाम कुइच्छा का समाधि रक्खा क्योंकि उन्हों ने उन लोगों को जिन्हों ने कुइच्छा किई थी वहीं गाड़ा फिर उन लोगों ने कुइच्छा समाधि से हसीरात को यात्रा किई सो वे हसीरात में रहे॥

१२ बारहवां पर्ब्ब।

मूसा की उस हबशी स्त्री से ब्याह करने के कारण मिरयम और हारून ने उस पर अपवाद किया क्योंकि उस ने एक हबशी स्त्री से ब्याह किया था॥ २। और बोले क्या परमेश्वर ने केवल मूसा ही से बातें किईं हैं क्या उस ने हम से भी बातें न किईं और परमेश्वर ने सुना। ३। मूसा समस्त लोगों से जो पृथिवी पर थे अधिक कोमल था॥ ४। सो परमेश्वर ने तत्काल मूसा और हारून और मिरयम को कहा कि तुम तीनों मंडली के तंबू पास आओ सो वे तीनों आये॥ ५। तब परमेश्वर मेघ के खंभे में उतरा और तंबू के द्वार पर खड़ा हुआ और हारून और मिरयम को बुलाया वे दोनों आये॥ ६। तब उस ने कहा कि मेरी बातें सुनो यदि तुम्में कोई भविष्यद्वक्ता होवे तो मैं परमेश्वर आप को दर्शन में उस पर प्रगट करूंगा और उस्से स्वप्न में बातें करूंगा॥ ७। मेरा दास मूसा ऐसा नहीं वुह मेरे सारे घर में विश्वासी है॥ ८। मैं उस्से आम्ने साम्ने अर्थात् प्रत्यक्ष बातें करूंगा और गुप्त बातों से नहीं और वुह परमेश्वर के आकार को देखेगा सो तुम मेरे सेवक मूसा पर अपवाद करते हुए क्यों न डरे॥ ९। और परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का और चला गया॥ १०। तब मेघ तंबू पर से जाता रहा और क्या देखाता है कि मिरयम हिम की नाईं कोढ़ी हो गई और हारून ने मिरयम की ओर दृष्टि किई तो वह कोढ़ी थी॥ ११। तब हारून ने मूसा से कहा कि हे मेरे स्वामी मैं तेरी बिनती करता हूं यह पाप हम पर मत लगा इस में हम ने मूर्खता किई और पापी हुए॥ १२। वुह उस मृतक के समान न हो जिस का आधा मांस अपनी माता के गर्भ से उत्पन्न होते ही गल जाय॥ १३। तब मूसा ने परमेश्वर के आगे बिनती करके कहा कि हे ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं अब उसे चंगा कर॥

१४। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि यदि उस का पिता उस के मुंह पर थूकता तो क्या वुह सात दिन लों लज्जित न रहती सो सात दिन लों उसे छावनी से बाहर बंद कर उस के पीछे उसे मिला ले॥ १५। सो मिरयम छावनी के बाहर सात दिन लों बंद हुई और जब लों

मिरयम बाहर रही लोगों ने यात्रा न किई॥ १६। उस के पीछे लोगों ने हसीरात से यात्रा किई और फ़ारान के अरण्य में डेरा किया।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा को वचन कहा॥ २। कि लोगों को भेज जिसतें वे कनआन के देश का भेद लेवें जो मैं इसराएल के संतानों को देता हूं एक एक मनुष्य उन के पितरों की हर एक गोष्ठी में से भेज उन में से हर एक प्रधान होवे॥ ३। और परमेश्वर की आज्ञा से मूसा ने फ़ारान के अरण्य से उन्हें भेजा वे सारे मनुष्य इसराएल के संतानों के प्रधान थे॥ ४। उन के ये नाम रूबिन की गोष्ठी में से ज़कूर का बेटा शमूअ॥ ५। और समअून की गोष्ठी में से हूरी का बेटा सफ़ात॥ ६। और यहूदाह की गोष्ठी में से यफ़ुन्नः का बेटा कालिब॥ ७। और इशकार की गोष्ठी में से यूसुफ़ का बेटा इजाल॥ ८। और इफ़रायम की गोष्ठी में से नून का बेटा हूसीअ॥ ९। और बिनयमीन की गोष्ठी में से रफ़ू का बेटा फ़िलती॥ १०। और ज़बुलून की गोष्ठी में से सूदी का बेटा जदिएल॥ ११। और यूसुफ़ की गोष्ठी में से अर्थात् मुनस्सी की गोष्ठी में से सूसी का बेटा जद्दी॥ १२। दान की गोष्ठी में से जमली का बेटा अमिएल॥ १३। और यसर की गोष्ठी में से मीकाएल का बेटा शितूर॥ १४। और नफ़ताली की गोष्ठी में से बफ़सी का बेटा नख़बी॥ १५। जद्द की गोष्ठी में से माकी का बेटा जियूएल॥ १६। सो उन के नाम जिन्हें मूसा ने देश के भेद लेने के लिये भेजा ये हैं और मूसा ने नून के बेटे हूसीअ का नाम यहूशूअ रक्खा।

१७। और मूसा ने उन्हें भेजा कि कनआन के देश का भेद लेवें और उन्हें कहा कि तुम दक्षिण दिशा से चढ़ जाओ और पहाड़ के ऊपर चले जाओ॥ १८। और देश को और उन लोगों को जो उस में बसते हैं देखियो कि वे कैसे हैं प्रबल अथवा निर्बल थोड़े हैं अथवा बहुत॥ १९। और वुह देश जिस में वे रहते हैं कैसा है भला अथवा बुरा और कैसे कैसे नगर जिन में वे बसते हैं तंबूओं में हैं अथवा गढ़ों में॥ २०। और देश कैसा है फलवंत है अथवा निष्फल उस में पेड़ है अथवा नहीं तुम हियाव

करो श्रीर उस देश का कुछ फल ले आश्रो श्रीर वुह समय दाख के पहिले फलें का था॥ २१। सो वे चढ़ गये श्रीर भूमि के भेद को सीन के अरण्य में से रहूब लें जो हमात के मार्ग में है लिया॥ २२। श्रीर वे दक्षिण की श्रोर से चढ़े श्रीर हबरून को आये जहां अनाक़ के बंश अखिमान श्रीर सीसी श्रीर तलमी थे श्रीर मिस्र का ज़ुअन हबरून से सात बरस आगे बना था॥ २३। सो वे इस-काल की नाली में आये वहां से उन्हों ने दाख का एक गुच्छा काटा श्रीर उसे एक लट्ठ पर रख कर दो मनुष्यों ने उठाया श्रीर कुछ अनार श्रीर गूलर भी लिये॥ २४। उस स्थान का नाम उस गुच्छे के लिये जिसे इसराएल के संतान वहां से काटलाये थे नाली इसकाल रक्खा॥ २५। सो वे चालीस दिन के पीछे देश का भेद लेके फिर आये॥ २६। श्रीर फिर के मूसा श्रीर हारून श्रीर इसराएल के संतानों की सारी मंडली के पास फ़ारान के अरण्य में क़ादिस में आये श्रीर उन्हें श्रीर सारी मंडली के आगे संदेश दिया श्रीर उस भूमि का फल उन्हें दिखाया॥ २७। श्रीर उसे यह कहके बर्णन किया कि हम उस देश में जिधर तू ने हमें भेजा था गये उस में सच मुच दूध श्रीर मधु बहता है श्रीर यह वहां का फल है॥ २८। तथापि उस देश के बासी बलवंत हैं श्रीर उन के नगरें की भीतें अति ऊंची हैं श्रीर हम ने अनाक़ के संतान को भी वहां देखा॥ २९। श्रीर उस भूमि में दक्षिण की श्रोर अमालीक़ बसते हैं श्रीर हत्ती श्रीर यबूसी श्रीर अमूरी पहाड़ों पर रहते हैं श्रीर समुद्र के तीर श्रीर यरदन के तीर पर कनआनी रहते हैं॥ ३०। तब कालिब ने मूसा के आगे लोगों को धीमा करके कहा कि आश्रो एक साथ चढ़ जायें श्रीर बश में करें क्योंकि उस पर प्रबल होने में हम में शक्ति है॥ ३१। परंतु उस के संगियों ने कहा कि हम उन लोगों का साम्ना करने में दुर्बल हैं क्योंकि वे हम से अधिक बलवंत हैं॥ ३२। श्रीर वे इसराएल के सतानों के पास उस भूमि का जिस का भेद लेने को गये थे बुरा संदेश लाये श्रीर बोले कि वुह भूमि जिस का भेद लेने हम गये थे ऐसी भूमि है जो अपने बासियों को खा जाती है

और सब लोग जिन्हें हम ने देखा है बड़े डौल के हैं॥ ३३। और हम ने
वहां दानव अनाक के बेटे दानवों को देखा और हम अपनी और उन
की दृष्टि में फनगे की नाईं थे॥

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

तब सारी मंडली चिल्ला के रोई और लोग उस रात भर रोया
किये॥ २। फिर सारे इसराएल के संतान मूसा और हारून
पर कुड़कुड़ाये और समस्त मंडली ने उन्हें कहा हाय कि हम मिस्र में
मर जाते और हाय कि हम इसी अरण्य में नष्ट होते॥ ३। हमें किस
लिये परमेश्वर इस देश में लाया कि खड्ग से मारे जायें और हमारी
स्त्रियां और हमारे बालक पकड़े जावें क्या हमारे लिये अच्छा नहीं
कि मिस्र को फिर जावें॥ ४। तब उन्हों ने आपुस में कहा कि आओ
एक को अपना प्रधान बनावें और मिस्र को फिर चलें॥ ५। तब
मूसा और हारून इसराएल के संतानों की सारी मंडली के साम्ने औंधे
मुंह गिरे॥ ६। और नून के बेटे यहूशूअ और यफुन्नः के बेटे कालिब ने
जो उन में थे जो देश के भेद लेने गये थे अपने कपड़े फाड़े॥ ७। और
उन्हों ने इसराएल के संतानों की सारी मंडली से कहा कि जिस देश के
भेद लेने को हम आरंपार गये अति अच्छी भूमि है॥ ८। यदि ईश्वर
हम से प्रसन्न होवे तो हमें उस देश में ले जायगा और वुह भूमि जिस पर
दूध मधु बह रहा है हमें देगा॥ ९। अब तुम केवल ईश्वर से छल न करो
और उस देश के लोगों से मत डरो क्योंकि वे तो हमारे लिये भोजन हैं
उन के आड़ उन से जा चुके हैं और परमेश्वर हमारे साथ है उन की
भय मत करो॥ १०। परंतु सारी मंडली ने कहा कि उन पर
पत्थरवाह करो उस समय मंडली के तंबू में सारे इसराएल के संतानों के
साम्ने परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई॥ ११। और परमेश्वर ने मूसा
से कहा कि ये लोग कब लों मुझे खिझावेंगे और उन आश्चर्य्यों के कारण
जो मैं ने उन में दिखाये हैं वे कब लों मुझ पर बिश्वास न करेंगे॥ १२
मैं उन्हें मारूंगा और उन्हें अधिकार रहित करूंगा और तुझे इन
से एक बड़ी और बलवंत जाति बनाऊंगा॥ १३। मूसा ने परमेश्वर से

कहा कि मिस्र के लोग सुनेंगे क्योंकि तू अपनी सामर्थ्य से इन लोगों को उन
के मध्य से निकाल लाया॥ १४। और वे इस देश के बासी से कहेंगे क्योंकि
उन्हों ने तो सुना है कि तू परमेश्वर इन लोगों के बीच है कि तू हे परमेश्वर
आम्ने साम्ने देखा जाता है और कि तेरा मेघ उन पर रहता है और कि तू
दिन को मेघ के खंभे में और रात को आग के खंभे में उन के आगे आगे
चलता है॥ १५। सो यदि तू इन लोगों को एक मनुष्य के समान मार
डाले तब जातिगण जिन्हों ने तेरी कीर्त्ति सुनी हैं कहेंगे॥ १६। इस
कारण कि परमेश्वर इन लोगों को उस देश में पहुंचा न सका जिसके बिषय
में उन से किरिया खाई थी इस लिये उस ने इन्हें अरण्य में घात किया॥
१७। सो मैं तेरी बिनती करता हूं हे मेरे प्रभु अपनी सामर्थ्य को प्रगट कर
जैसा तूने कहा है॥ १८। कि परमेश्वर बड़ा धीर और महा दयाल है पापों
और अपराधों को क्षमा करता है जो किसी भांति से न छोड़ेगा पितरों के
पापों को उन के लड़कों से जो उन की तीसरी और चौथी पीढ़ी है
प्रतिफल देता है॥ १९। अब तू अपनी दया की अधिकाई से इन लोगों
का पाप क्षमा कर जैसा तू मिस्र से लेके यहां लों क्षमा करता आया है॥
२०। परमेश्वर ने कहा कि मैं ने तेरे कहेके समान क्षमा किया॥ २१।
परंतु अपने जीवन सों समस्त पृथिवी परमेश्वर की महिमा से भर
जायगी॥ २२। क्योंकि उन सब लोगों ने जिन्हों ने मेरा बिभव और
मेरा आश्चर्य जो मैं ने मिस्र में और उस अरण्य में प्रगट किया
देखा अबलों मुझे दसबार परखा और मेरा शब्द न माना॥ २३।
सो वे उस देश को जिस के कारण मैं ने उन के पितरों से किरिया
खाई थी न देखेंगे और जितनों ने मुझे खिझाया उन में से कोई
उसे न देखेगा॥ २४। परंतु मेरा दास कालिब क्योंकि और ही
आत्मा उस के साथ था और उस ने मेरी बात पूरी मानी है मैं उसे
उस देश में जहां वुह गया था ले जाऊंगा और वे जो उस के बंश से
होंगे उस के अधिकारी बनेंगे॥ २५। अब अमालकी और कनआनी
तराई में बास करते थे सो कल फिरो और लाल समुद्र के मार्ग से
अरण्य में जाओ॥

२६। फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २७।

कि मैं कब लों उस दुष्ट मंडली की कुड़कुड़ाहट सहूं इसराएल के
संतान जो मुझ पर कुड़कुड़ाते हैं मैं ने उन का कुड़कुड़ाना सुना॥
२८। उन से कह कि परमेश्वर कहता है मुझे अपने जीवन सों जैसा
तुम ने मुझे सुना के कहा है मैं तुम से वैसा ही करूंगा॥ २९। तुम्हारी
और उन सभों की लोथ तुम्हारी समस्त गिनतियों के समान बीस बरस
से ले के ऊपर लों जो मुझ पर कुड़कुड़ाये इस अरण्य में गिरेंगी॥
३०। यफुन्नः के बेटे कालिब और नून के बेटे यहूसूअ को छोड़ तुम
निःसंदेह उस देश में न पहुंचोगे जिस में मैं ने तुम्हें बसाने की किरिया
खाई है कि तुम्हें वहां बसाऊंगा॥ ३१। परंतु तुम्हारे बालकों को
जिन के विषय में तुम ने कहा है कि वे लुट जायेंगे मैं उन्हें पहुंचाऊंगा
जिन्हें तुम ने तुच्छ जाना वे उस देश को जानेंगे॥ ३२। पर तुम्हारी
लोथें इस ही बन में गिरेंगी॥ ३३। और तुम्हारे लड़के उस अरण्य
में चालीस बरस लों भ्रमते फिरेंगे और अपने व्यभिचारों को उठाया
करेंगे जब लों कि तुम्हारी लोथें इस बन में क्षीण न होवें॥ ३४।
उन दिनों की गिनती के समान जिन में तुम उस भूमि का भेद
लेते थे जो चालीस दिन हैं दिन पीछे एक बरस सो तुम चालीस बरस
लों अपने पाप को भोगा करोगे तब तुम मेरे बिरोध को जानोंगे॥
३५। मैं परमेश्वर ने कहा है और इस दुष्ट मंडली के लिये जो मेरे
बिरुद्ध में एकट्ठी है निश्चय पूरा करूंगा इसी बन में नष्ट किई जायगी
और यहीं मरेगी॥ ३६। और जिन मनुष्यों को मूसा ने देश के भेद
लेने को भेजा था जिन्हों ने उस देश पर बात बना बना के कहा है और
सारी मंडलियों को उस पर कुड़कुड़वाया है॥ ३७। हां वे मनुष्य
जो उस देश का बुरा संदेश लाये हैं परमेश्वर के आगे मरी से मरेंगे॥
३८। पर नून का बेटा यहूसूअ और यफुन्नः का बेटा कालिब उन में
से जो देश का भेद लेने गये थे जीते रहे॥ ३९। सो मूसा ने इन
बातों को इसराएल के समस्त संतानों को सुनाया और लोग बहुत
बिलाप करने लगे॥ ४०। और बिहान को तड़के वे उठे और यह
कहते हुए पहाड़ पर चढ़ गये देख हम उस स्थान पर चढ़ जायेंगे जिस
की परमेश्वर ने बाचा दिई है क्योंकि हम ने पाप किया है॥ ४१।

मूसा ने कहा सो अब तुम लोग क्यों परमेश्वर की आज्ञा का भंग करते हो
शुभ न होगा॥ ४२। ऊपर मत जाओ क्योंकि परमेश्वर तुम्हों में
नहीं जिसतें तुम अपने बैरियों के आगे मारे न पड़ो॥ ४३। क्योंकि
अमालिकी और कनआनी तुम्हारे आगे हैं और तुम तलवार से बिछ
जाओगे क्योंकि तुम परमेश्वर से फिर गये हो सो परमेश्वर तुम्हारे
साथ न होगा॥ ४४। परंतु वे ढिठाई से पहाड़ पर चढ़ गये तथापि
परमेश्वर के बाचा की मंजूषा और मूसा छावनी के बाहर न गये तब
अमालिकी और कनआनी जो उस पहाड़ पर रहते थे उतरे और उन्हें
ज्ञरमः लों मारते गये॥

१५ पंद्रहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों
को कहके बोल कि जब तुम अपने निवास के देश में जो मैं तुम्हें
देऊंगा पहुंचो॥ ३। और आग से परमेश्वर के लिये होम की
भेंट चढ़ाओ अथवा मनैाती पूरी करने का बलिदान अथवा वांछित भेंट
अथवा ठहराये ज्ञए पर्ब्ब की भेंट परमेश्वर के लिये आनंद का सुगंध
लेहंड़े अथवा झुंड से चढ़ाओ॥ ४। तब वुह जो अपनी भेंट परमेश्वर
के लिये चढ़ाता है भोजन की भेंट पिसान का दसवां भाग सवा सेर
तेल से मिला ज्ञआ भेंट का बलिदान लावे॥ ५। एक मेम्ना के कारण
होम की भेंट अथवा बलिदान पीने की भेंट के लिये सवा सेर द्राचारस
सिद्ध कीजियो॥ ६। अथवा मेढ़े के लिये मांस की भेंट को दो दसवां
भाग पिसान पैाने दो सेर तेल से मिला ज्ञआ सिद्ध कीजियो॥ ७।
और पीने की भेंट के लिये पैाने दो सेर द्राचारस परमेश्वर के सुगंध के
लिये चढ़ाइयो॥ ८। और जब तू होम की भेंट के लिये अथवा मनैाती
पूरी करने का बलिदान के लिये अथवा कुशल की भेंट परमेश्वर के
लिये बैल सिद्ध करो॥ ९। तब वुह बैल के साथ भोजन की भेंट तीन
दसवां भाग पिसान अढ़ाई सेर तेल से मिला ज्ञआ लावे॥ १०। और
पीने की भेंट के लिये द्राचारस अढ़ाई सेर आग से परमेश्वर के
आनंद की सुगंध के लिये लाइयो॥ ११। एक एक बैल अथवा एक

एक मेंढ़ा अथवा एक एक मेम्ना अथवा एक एक बकरी का मेम्ना यांही किया जावे॥ १२। गिनती के समान सिद्ध कीजिया हर एक उन की गिनती के समान ऐसा ही कीजियो॥ १३। सब जिन का जन्म देश में ज़ुआ आग से परमेश्वर के आनंद के सुगंध के लिये भेंट चढ़ावें ता उसी रीति से इन बातों का मानें॥ १४। और यदि परदेशी तुम्में बास करे अथवा वुह जो तुम्हारी पीढ़ियों से होवे परमेश्वर के आगे सुगंध के लिये आग से भेंट चढ़ावे ता जिस रीति से तुम करते हो वैसा वुह भी करे॥ १५। मंडली के लिये और उस परदेशी के लिये जो तुम्में बास करता है तुम्हारी पीढ़ियों में सदा एक ही बिधि होवे परमेश्वर के आगे जैसे तुम वैसे परदेशी भी हैं॥ १६। तुम्हारे और परदेशियों के लिये जो तुम्में रहते हैं एक ही व्यवस्था और एक ही रीति होवे॥ १७। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १८। कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि जब तुम उस देश में पज़ंचा जहां तुम्हें ले जाता हूं॥ १९। तब ऐसा होगा कि जब तुम उस भूमि पर की रोटी खाओ ता परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट चढ़ाइयो॥ २०। तुम अपने पहिले गूंदे ज़ुए आटे से एक फुलका उठाने की भेंट के लिये लेओ जैसी खलिहान की भेंट का उठाते हो वैसाही उसे उठाइयो॥ २१। तुम अपने गूंदे ज़ुए पिसान से पहिले अपनी पीढ़ियों में परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट चढ़ाइयो॥

२२। और यदि तुम चूक किये हो और उन सब आज्ञाओं का जो परमेश्वर ने मूसा से कहीं पालन न करो॥ २३। जिस दिन से परमेश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई है और अब से आगे लों अपनी पीढ़ियों में समस्त आज्ञा जिन्हें परमेश्वर ने मूसा की ओर से तुम्हें दिई है॥ २४। तब यों होगा कि यदि कुछ अज्ञानता हो जाय और मंडली न जाने तब समस्त मंडली होम की भेंट के लिये परमेश्वर के सुगंध के लिये एक बछड़ा चढ़ावे उस के भोजन की और पीने की भेंट के साथ रीति के समान और अपराध की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ २५। और याजक इसराएल के संतानों की सारी मंडली के लिये प्रायश्चित्त देवे और वुह क्षमा किया जायगा क्योंकि अज्ञानता है

और वे परमेश्वर के लिये अपनी भेंट आग के बलिदान से लावें और
अपने अज्ञानता के लिये अपने पाप की भेंट परमेश्वर के आगे लावें॥
२६। और इसराएल के संतानों की सारी मंडली और परदेशी जो
उन में रहते हैं क्षमा किये जायेंगे इस लिये कि सारे लोग अज्ञानता
में थे॥

२७। और यदि कोई प्राणी अज्ञानता से पाप करे तो वुह पाप की
भेंट के लिये पहिले बरस की एक बकरी लावे॥ २८। और उस प्राणी
के लिये जो अज्ञानता से परमेश्वर के आगे पाप करे उस के लिये याजक
प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा किया जायगा॥ २९। तुम अज्ञानता
की अपराध के कारण उस के लिये जो इसराएल के संतानों में उत्पन्न
हुआ हो और परदेशी के लिये जो उन में रहता हो एक ही ब्यवस्था
रक्खो॥ ३०। परंतु जो प्राणी ढिठाई करे चाहे देशी चाहे परदेशी
होय वही परमेश्वर की निंदा करता है और वही प्राणी अपने लोगों
में से कट जायेगा॥ ३१। क्योंकि उस ने परमेश्वर के बचन की निंदा
किई और उस की आज्ञा को भंग किया वही प्राणी सर्व्वथा कट जायगा
उस का पाप उसी पर होगा॥ ३२। और जब इसराएल के संतान
बन में थे उन्हों ने एक मनुष्य को बिश्राम के दिन लकड़ियां बटोरते
पाया॥ ३३। और जिन्हों ने उसे लकड़ियां एकट्ठी करते पाया वे
उसे मूसा और हारून और सारी मंडली के पास लाये॥ ३४। उन्हों ने
उसे बंद रक्खा इस कारण कि प्रगट न हुआ था कि उस्से क्या किया
जावे॥ ३५। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वुह मनुष्य निश्चय
मारा जायगा सारी मंडली छावनी के बाहर उस पर पत्थरवाह करे॥
३६। जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी सारी मंडली उसे
तंबू के बाहर ले गई उन्हों ने उस पर पत्थरवाह करके मार डाला॥
३७। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ३८। कि इसराएल
के संतानों से कह और उन्हें आज्ञा कर कि वे अपनी समस्त पीढ़ियों में
अपने बस्त्रों के खूंट की झालर पर नीली चेवली लगावें॥ ३९। यह
तुम्हारे लिये झालर होगी जिसतें तुम उसे देख के परमेश्वर की सारी
आज्ञाओं को स्मरण करो और उन्हें पालन करो और जिसतें तुम अपने

मन का श्रीर श्रांखों का पीछा न करो जैसे तुम श्रागे व्यभिचार करते थे॥
४०। जिसतें तुम मेरी सब श्राज्ञाश्रों को स्मरण करो श्रीर उन का
पालन करो श्रीर श्रपने ईश्वर के लिये पवित्र होश्रो॥ ४१। मैं परमेश्वर
तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र की भूमि से बाहर लाया कि तुम्हारा
ईश्वर होऊं मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

श्रीर लावी के बेटे कुहास के बेटे इज़हार के बेटे क़िहात क़ुरह
श्रीर रूबिन के बेटे दातन श्रीर श्रबिराम इलिश्रब के बेटे श्रीर
फ़लत के बेटे श्रोन ने लोगों को गांठा॥ २। वे इसराएल के संतानों
में से श्रढ़ाई सो सभा के प्रधान जो मंडली में नामी श्रीर लोगों में
कीर्त्तिमान थे उन्हें लेके मूसा के सन्मुख खड़े हुये॥ ३। तब मूसा श्रीर
हारून के बिरोध में एकट्ठे होके उन्हें बोले कि श्राप को बहुत बढ़ाते हो
मंडली में तो हर एक मनुष्य पवित्र है श्रीर परमेश्वर उन में है सो किस
लिये परमेश्वर की मंडली से श्राप को बढ़ाते हो॥ ४। मूसा यह सुन के
श्रोंधे मूंह गिरा॥ ५। फिर उस ने क़ुरह श्रीर उस की सारी जथा को
कहा कि कल ही परमेश्वर दिखावेगा कि कैान उस का है श्रीर कैान
पवित्र है श्रीर श्रपने पास पहुंचावेगा श्रर्थात् उसी को जिसे उस ने चुन
लिया है श्रपने पास पहुंचावेगा॥ ६। सो हे क़ुरह श्रीर उस की सारी
जथा तुम यह करो श्रपनी श्रपनी धूपावरी लेश्रो॥ ७। श्रीर उन में
श्राग राक्खो श्रीर कल परमेश्वर के श्रागे उन में धूप जलाश्रो श्रीर यों
होगा कि जिस मनुष्य को परमेश्वर चुनता है वही पवित्र होगा हे लावी
के बेटो तुम श्राप को बढ़ाते हो॥ ८। फिर मूसा ने क़ुरह से कहा कि हे
लावी के बेटो सुन रक्खो॥ ९। तुम क्या उसे छोटा जानते हो कि
इसराएल के ईश्वर ने तुम्हें इसराएल की मंडली में से श्रलग किया कि
श्रपने पास लाके परमेश्वर के तंबू की सेवा करावे श्रीर मंडली की सेवा के
लिये खड़े रहो॥ १०। श्रीर उस ने तुझे तेरे समस्त भाई लावी के बेटे
तेरे संग श्रपने पास किया श्रब तुम याजकता भी ढूंढ़ते हो॥ ११। इस
कारण तू श्रीर तेरी सारी जथा परमेश्वर के बिरोध पर एकट्ठी हुई है श्रीर

हारून कौन है जो तुम उस के बिरोध में कुड़कुड़ाते हो॥ १२। फिर
मूसा ने इलिअब के बेटे दातन और अबिराम को बुलवाया वे बोले कि हम
न आवेंगे॥ १३। क्या यह छोटी बात है कि तू हमें उस भूमि में से
जिस में दूध और मधु बहता है चढ़ा लाया कि हमें अरण्य में नाश करे और
अब आप को हमारे ऊपर सर्वथा अध्यक्ष बनाता है॥ १४। और तू
हमें ऐसी भूमि में न लाया जहां दूध और मधु बहे तू ने हमें खेत और
दाख की बारी का अधिकारी नहीं कर दिया क्या तू इन लोगों की आंखें
निकाल डालेगा हम तो न आवेंगे॥ १५। तब मूसा का क्रोध भड़का
और परमेश्वर से यों बोला कि तू उन की भेंट की ओर मत ताक मैं ने
उन से एक गधा भी नहीं लिया न उन में से किसी को दुःख दिया॥
१६। फिर मूसा ने कुरह से कहा कि तू और तेरी सारी जथा और हारून
सहित परमेश्वर के आगे कल के दिन आओ॥ १७। और हर एक
मनुष्य अपनी अपनी धूपावरी लेवे और उस में धूप डाले और तुम्म से
हर एक अपनी अपनी धूपावरी परमेश्वर के आगे लावे सब अढ़ाई सौ
धूपावरी होवें तू और हारून अपनी धूपावरी लावे॥ १८। सो हर एक
ने अपनी अपनी धूपावरी लिई और उस में आग रक्खी और धूप डाला
और मंडली के तंबू के द्वार पर मूसा और हारून सहित आ खड़े हुए॥ १९।
और कुरह ने सारी मंडली को मंडली के तंबू के द्वार पर उन के बिरोध
पर एकट्ठी किया तब परमेश्वर की महिमा सारी मंडली के साम्ने प्रगट हुई॥
२०। और परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २१। कि इस
मंडली में से आप को अलग करो कि मैं उन्हें पल भर में नाश करूं॥ २२।
तब वे औंधे मूंह गिरे और बोले कि हे ईश्वर सारे शरीरों के आत्मा का
ईश्वर पाप एक करे और क्या तू सारी मंडली पर क्रुद्ध होवे॥ २३। तब
परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २४। कि तू मंडली से कह कि कुरह
और दातन और अबिराम के तंबुओं में से निकल आओ॥ २५।
सो मूसा उठा और दातन और अबिराम के यहां गया और इसराएल
के प्राचीन उस के पीछे हो लिये॥ २६। और उस ने मंडली से कहा कि
उन दुष्टों के तंबुओं से निकल जाओ और उन की किसी बस्तु को मत
छुओ न होवे कि तुम भी उन के सब पापों में नाश हो जाओ॥ २७। सो

वे कूरह और दातन और अबिराम के तंबुओं में से निकल गये और
दातन और अबिराम और उन की पत्नियां और बेटे और लड़के निकल
के अपने तंबुओं के द्वार पर खड़े हुए॥ २८। तब मूसा ने कहा कि तुम
इस में जानोगे कि परमेश्वर ने यह कार्य्य करने को मुझे भेजा है और मैं
ने कुछ अपनी इच्छा से नहीं किया॥ २९। यदि ये मनुष्य उस मृत्यु से मरें
जिस मृत्यु से सब मरते हैं अथवा उन पर कोई बिपत्ति ऐसी होवे जो सब
पर होती है तो मैं ईश्वर का भेजा हुआ नहीं॥ ३०। पर यदि परमेश्वर
कोई नई बात करे और पृथिवी अपना मूंह फैलावे और उन्हें सब समेत
निंगल जावे और वे जीते जी नरक में जा पड़ें तो तुम जानियो कि उन
लोगों ने परमेश्वर को खिझाया है॥ ३१। और यों हुआ कि ज्योंहीं
वुह ये सब बातें कह चुका तो उन के नीचे की भूमि फटगई॥ ३२। फिर
पृथिवी ने अपना मूंह खोला और उन्हें और उन के घर और उन सब
मनुष्यों को जो कूरह के थे और उन की सब संपत्ति को निगल गई॥
३३। सो वे और सब जो उन के थे जीते जी नरक में गये और भूमि ने
उन्हें छिपा लिया और मंडली के मध्य से नष्ट हो गये॥ ३४। और सारे
इसराएल जो उन के आस पास थे उन का चिल्लाना सुन के भागे क्योंकि
उन्हों ने कहा न हो कि भूमि हमें भी निंगल जाय॥ ३५। फिर परमेश्वर
के आगे से एक आग निकली और उन अढ़ाई सौ को जिन्हों ने धूप
जलाया था खा गई॥ ३६। और परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ३७।
कि हारून याजक के बेटे इलिअज़र से कह कि धूपावरी को आग में
से उठा और आग वहीं बखेर दे क्योंकि वे तो पवित्र हैं॥ ३८। और
जिन्हों ने अपने प्राण के बिरोध पाप किया उन की धूपावरियों से चौड़े
चौड़े पत्र बेदी के ढांपने के लिये बना क्योंकि उन्हों ने उन्हें परमेश्वर के
आगे चढ़ाया इस लिये वे पवित्र हैं और वे इसराएल के संतानों के लिये
एक चिह्न होंगे॥ ३९। उन पीतल की धूपावरियों को जिन्हों ने
जलाया था जो जल गये थे तब इलिअज़र याजक ने उन्हें लिया और
बेदी के लिये चौड़े पत्र ढांपने के लिये बनाये॥ ४०। कि इसराएल
के संतानों के लिये चेत होवे कि कोई परदेशी जो हारून के बंश से नहीं
परमेश्वर के आगे धूप जलाने को पास न आवे जिसतें कूरह और उस

की जथा के समान न होवे जैसा परमेश्वर ने मूसा के द्वारा से उसे कहा था।

४१। परंतु बिहान को इसराएल के संतानों की सारी मंडली मूसा और हारून के बिरोध में कुड़कुड़ाके बोली कि तुम ने परमेश्वर के लोगों को मार डाला॥ ४२। और यों हुआ कि जब मूसा और हारून के बिरोध में मंडली एकट्ठी हुई तब उन्हों ने मंडली के तंबू की ओर ताका और क्या देखते हैं कि मेघ ने उसे ढांप लिया और परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई॥ ४३। तब मूसा और हारून मंडली के तंबू के आगे आये॥ ४४। और परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ४५। कि तुम इस मंडली में से अलग होओ जिसतें मैं उन्हें एक पल में नाश कर डालूं तब वे औंधे मूंह गिर पड़े॥ ४६। और मूसा ने हारून से कहा कि धूपावरी ले और उस में बेदी पर की आग रख और धूप डाल और मंडली में शीघ्र जाके उन के लिये प्रायश्चित्त दे क्योंकि परमेश्वर के आगे से कोप निकला और मरी आरंभ हुई॥ ४७। तब जैसी मूसा ने आज्ञा किई थी हारून मंडली के मध्य में दौड़ गया और क्या देखता है कि मरी लोगों में आरंभ हुई सो उस ने धूप रख के उन लोगों के लिये प्रायश्चित्त किया॥ ४८। वुह जीवतों और मृतकों के बीच में खड़ा हुआ तब मरी थम गई॥ ४९। सो जितने उस मरी से मरे उन्हें छोड़के जो कुरह के विषय में नष्ट हुए चौदह सहस्र सात सौ थे॥ ५०। फिर हारून मंडली के तंबू के द्वार पर मूसा पास फिर आया और मरी थम गई।

१७ सत्तरहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों से कह और उन में से उन के पितरों के घराने के समान हर घराने पीछे उन के सब प्रधानों से एक एक छड़ी ले और उन के पितरों के समान बारह छड़ी और हर एक का नाम उस की छड़ी पर लिख॥ ३। और लावी की छड़ी पर हारून का नाम लिख क्योंकि हर एक प्रधान के कारण उन के पितरों के घरानों के लिये एक एक छड़ी होगी॥ ४। और उन्हें मंडली के तंबू में साक्षी के आगे रख दे जहां मैं तुम से भेंट

करूंगा॥ ५। और यों होगा कि जिसे मैं चुनूंगा उस की छड़ी में फल लगेगा और मैं इसराएल के संतानों का कुड़कुड़ाना जो वे बिरोध से कुड़कुड़ाते हैं दूर करूंगा॥ ६। सो मूसा ने इसराएल के संतानों से कहा और हर एक ने उन के प्रधानों में से एक एक प्रधान के लिये उन के पितरों के घरानों के समान एक एक छड़ी अर्थात् बारह छड़ी दिई और हारून की छड़ी उन की छड़ियों में थी॥ ७। और मूसा ने उन छड़ियों को साक्षी के तंबू में परमेश्वर के आगे रक्खा॥ ८। और ऐसा हुआ कि बिहान को मूसा साक्षी के तंबू में गया तो क्या देखता है कि लावी के घराने के लिये हारून की छड़ी में कली लगीं और कली निकलीं और फूल फूले और बादाम लगे॥ ९। तब मूसा सब छड़ियों को परमेश्वर के आगे से सब इसराएल के संतानों के पास निकाल लाया उन्हों ने देखा और हर एक ने अपनी अपनी छड़ी फेर लिई॥ १०। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून की छड़ी साक्षी के आगे रख कि दंगइत के बिरोध के लिये एक चिह्न रहे और तू उन का कुड़कुड़ाना मुझ से दूर करे जिसतें वे मर न जावें॥ ११। और मूसा ने ऐसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे कहा वैसा ही उस ने किया॥ १२। तब इसराएल के संतानों ने मूसा से कहा कि हम मरे हम नाश हुए हम सब के सब बिनाश हुए॥ १३। जो कोई परमेश्वर के तंबू पास आवेगा सो मरेगा क्या हम सब मर मरके मिट जायेंगे।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि पवित्र स्थान का पाप तुझ पर और तेरे बेटों और तेरे संग तेरे पिता के घराने पर होगा और तेरे संग तेरे बेटे तुम्हारी याजकता का पाप भोगेंगे॥ २। और तेरे भाई की गोष्ठी जो तेरे पिता की गोष्ठी है अपने साथ ला जिसतें वे तेरे साथ मिलाये जावें और तेरी सेवा करें पर तू अपने बेटों समेत साक्षी के तंबू के आगे रह॥ ३। और वे तेरी और सारे तंबू की रक्षा करें केवल वे पवित्र पात्रों और बेदी के पास न जावें न होवे कि वे भी और तुम भी नाश हो जाओ॥ ४। और तंबू की सारी सेवा के लिये तेरे संग

होके मंडली के तंबू की रक्षा कर और कोई परदेशी तुम्हारे पास
आने न पावे॥ ५। और तुम पवित्र स्थान को और बेदी को अगोर
रक्खो जिसतें आगे को फिर इसराएल के संतानों पर कोप न पड़े॥
६। और देखो मैं ने तुम्हारे भाई लावियों को इसराएल के संतानों
में से लेके परमेश्वर की भेंट के लिये तुम्हें दिया जिसतें मंडली के
तंबू की सेवा करें॥ ७। सो तू और तेरे संग तेरे बेटे बेदी की हर एक
बात के और घूंघट के भीतर की सेवा के लिये अपने याजक के पद को
पालन करो और सेवा करो मैं ने याजक के पद में तुम्हें भेंट की सेवा
दिई और जो परदेशी पास आवे सो मारा जायगा॥ ८। फिर
परमेश्वर ने हारून से कहा कि देख मैं ने इसराएल के संतानों की समस्त
पवित्र किई ऊई उठाने की भेंटों की रक्षा करना तुझे दिया मैं ने
उन्हें तेरे अभिषिक्त होने के कारण तुझे और तेरे बेटों को सदा की
बिधि के निमित्त दिया॥ ९। उन पवित्र बस्तुन में से जो आग से
बच रही हैं ये तेरे लिये होंगी उन के सब बलिदान और उन के हर एक
भोजन की भेंट और उन के हर एक पाप की भेंट और उन के हर एक
अपराध की भेंट जो वे मेरे लिये चढ़ावेंगे तेरे और तेरे पुत्रों के लिये
अत्यंत पवित्र होंगी॥ १०। तू उसे अत्यंत पवित्र स्थान में खाइयो
हर एक पुरुष उसे खाय यह तेरे लिये पवित्र है॥ ११। और यह
तेरी है इसराएल के संतानों की भेंट के उठाने के बलिदान उन के सब
हिलाये ऊए बलिदान सहित मैं ने तुझे और तेरे संग तेरे बेटों को
और तेरी बेटियों को सदा के ब्यवहार के लिये दिया जो कोई तेरे
घर में पवित्र होवे सो उसे खावे॥ १२। सब अच्छे से अच्छा तेल
और अच्छे से अच्छा दाखरस और गोहूं का और इन सभों का पहिला
फल जिन्हें वे परमेश्वर की भेंट के लिये लावेंगे मैं ने तुझे दिया॥ १३।
देश में जो पहिले पकता है जिन्हें वे परमेश्वर के आगे लावें तेरे होंगे
तेरे घर में जो कोई पवित्र होवे सो उसे खावे॥ १४। इसराएल के
संतानों के हर एक नैवेद्य की बस्तु तेरी होगी॥ १५। समस्त प्राणी
में से हर एक जो गर्भ खोलता है चाहे मनुष्य होय चाहे पशु जिसे
वे परमेश्वर के लिये लाते हैं तेरा होगा तथापि तू मनुष्यों के और

अपवित्र पशुन के पहिलौंठों को निश्चय छुड़ाइयो॥ १६। और जो
एक मास के बय से छुड़ाये जाने का होय पांच शेकल दाम जो पवित्र स्थान
के शेकल के समान होवे जो बीस गिरह है अपने ठहराने के समान उसे
छुड़ाइयो॥ १७। परंतु गाय के पहिलौंठे अथवा भेड़ के पहिलौंठे अथवा
बकरी के पहिलौंठे को मत छुड़ाना वे पवित्र हैं तू उन का लोहू बेदी
पर छिड़कियो और उन की चिकनाई आग से परमेश्वर की सुगंध की भेंट
के लिये जलाइयो॥ १८। जैसे हिलाई हुई छाती और दहिना कांधा
तेरे हैं वैसा उन का मांस तेरा होगा॥ १९। पवित्र बस्तुन के हिलाने के
बलिदान जिन्हें इसराएल के संतान परमेश्वर के लिये चढ़ाते हैं मैं ने
तुझे और तेरे संग तेरे बेटों को और तेरी बेटियों को सदा की बिधि के
लिये दिया परमेश्वर के आगे तेरे और तेरे संग तेरे बंश के लिये नून की
वाचा सदा के लिये है॥ २०। फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि
तू उन के देश में कुछ अधिकार न रखना और उन में कुछ भाग न
रखना इसराएल के संतानों में तेरा भाग और तेरा अधिकार मैं हूं॥
२१। देख मैं ने लावी के संतान को उन की सेवा के लिये जो वे सेवा
करते हैं अर्थात् मंडली के तंबू की सेवा के लिये इसराएल में सारा दसवां
भाग दिया॥ २२। और आगे को इसराएल के संतान मंडली के
तंबू के पास न आवें न हो कि वे पापी होवें और मर जावें॥ २३।
परंतु लावी मंडली के तंबू की सेवा करें और वे अपने पाप भोगेंगे
तुम्हारी पीढ़ियों में यह सदा की बिधि होगी कि वे इसराएल के संतानों
में अधिकार नहीं रखते हैं॥ २४। परंतु इसराएल के संतान का
दसवां भाग जिन्हें वे परमेश्वर के लिये हिलाने की भेंट के लिये चढ़ावें
मैं ने लावियों के अधिकार में दिया इस कारण मैं ने उन्हें कहा कि
इसराएल के संतानों में वे अधिकार न पावेंगे॥ २५। फिर परमेश्वर
मूसा से कहके बोला॥ २६। कि लावियों को यों कह और उन्हें
बोल कि जब तुम इसराएल के संतानों से दसवां भाग लेओ जो मैं ने
उन से तुम्हारे अधिकार के लिये तुम्हें दिया है तुम दहेकी का दसवां
भाग उठाने के बलिदान के कारण परमेश्वर के आगे चढ़ाइयो॥ २७।
जैसा कि खलिहान का अन्न और कोल्हू की भरपूरी तुम्हारे उठाने की

भेंटें गिनी जायेंगी॥ २८। इस भांति से तुम भी उठाने की भेंट परमेश्वर के लिये अपने सारे दसवें भागों से चढ़ाओ जिन्हें तुम इसराएल के संतानों से पाओगे और तुम उस में से परमेश्वर की उठाने की भेंटें हारून याजक को दीजियो॥ २९। अपनी समस्त भेंटों में से उस अच्छे से अच्छे अर्थात् उस में का पवित्र किया हुआ भाग परमेश्वर के हिलाने की भेंट चढ़ाइयो॥ ३०। इस लिये उन्हें कहो की जब तुम उन में से अच्छे से अच्छे को उठाओ तब लावियों के लिये खलिहान की बढ़ती और कोल्हू की बढ़ती की नाईं गिना जायगा॥ ३१। और तुम और तुम्हारा घराना हर एक स्थान में खावे क्योंकि यह तुम्हारी उस सेवा का प्रतिफल है जो तुम मंडली के तंबू में करते हो॥ ३२। और जब तुम उस में से अच्छे से अच्छा उठाओगे तब तुम उस के कारण पापी न ठहरोगे और इसराएल के संतानों की पवित्र वस्तुन को अशुद्ध न करोगे और नाश न होओगे॥

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २। यह व्यवस्था की रीति है जो परमेश्वर ने आज्ञा कर के कहा कि इसराएल के संतानों से कह कि एक निष्खोट और निर्दोष लाल कलोर जिस पर कभी जूआ न रक्खा गया हो तुझ पास लावें॥ ३। और तुम उसे इलिअज़र याजक को देओ कि उसे छावनी से बाहर ले जावे और वुह उस के आगे बलि किई जावे॥ ४। और इलिअज़र याजक अपनी अंगुली पर उस का लोहू लेके मंडली के तंब के आगे सात बार छिड़के॥ ५। फिर उस के आगे कलोर जलाई जावे उस की खाल और उस का मांस और उस का लोहू और उस के गोबर सहित सब जलाये जायें॥ ६। फिर याजक देवदारु की लकड़ी और जूफा और लाल लेके उस जलती हुई कलोर के ऊपर डाल देवे॥ ७। तब याजक अपने कपड़े धोवे और पानी में स्नान करे उस के पीछे छावनी में प्रवेश करे और याजक सांझ लों अशुद्ध रहेगा॥ ८। और वुह जो उसे जलाता है अपने कपड़े पानी से धोवे और अपना अंग धोवे और सांझ लों अपवित्र

रहेगा॥ ९। और कोई पावन मनुष्य उस कलोर की राख को एकट्ठी करे और छावनी के बाहर पवित्र स्थान पर उठा रक्खे और वुह इसराएल के संतानों की मंडली के लिये अलग करने के पानी के लिये होवे यह पाप की पवित्रता के लिये है॥ १०। और जो उस कलोर की राख को समेटता है सो अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा और यह इसराएल के संतानों के और उन परदेशियों के लिये जो उन में बसते हैं एक बिधि सदा के लिये होवे॥

११। जो कोई मनुष्य की लोथ को छूये सो सात दिन लों अपवित्र रहेगा॥ १२। वुह आप को तीसरे दिन उस्से पवित्र करे और सातवें दिन पवित्र होगा पर यदि वुह आप को तीसरे दिन पवित्र न करे तो सातवें दिन पवित्र न होगा॥ १३। जो कोई किसी मनुष्य की लोथ को छूये और आप को पवित्र न करे उस ने परमेश्वर के तंबू को अशुद्ध किया वुह प्राणी इसराएल के संतानों में से कट जायगा इस कारण कि अलग करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया वुह अपवित्र है उस की अपवित्रता अब लों उस पर है॥ १४। जब मनुष्य तंबू में मरे तब उस की यही व्यवस्था है सब जो तंबू में आवें और सब जो तंबू में हैं सात दिन लों अशुद्ध होंगे॥ १५। और हर एक खुला पात्र जिस पर ढंपना बंधा न होवे अशुद्ध॥ १६। और जो कोई तलवार से अरण्य में मारे हुए को अथवा लोथ को अथवा मनुष्य के हाड़ को अथवा समाधि को छूवे सो सात दिन लों अशुद्ध होयगा॥ १७। और अशुद्ध को पाप से पवित्र करने के लिये जली हुई कलोर की राख लेवे और एक बासन में बहता हुआ पानी उस पर डाले॥ १८। और एक पवित्र मनुष्य जूफा लेवे और पानी में डुबो के तंबू पर और सारे पात्रों पर और उन मनुष्यों पर जो वहां थे और उस पर जिस ने हाड़ को अथवा जूझे हुए को अथवा मृतक को अथवा समाधि को छूआ हो छिड़के॥ १९। और पवित्र जन तीसरे दिन और सातवें दिन अपवित्र पर छिड़के और फिर सातवें दिन अपने को पवित्र करे और अपने कपड़े धोवे और पानी में नहावे तब सांझ को पवित्र होगा॥ २०। परंतु वुह मनुष्य जो अपवित्र होय और आप को पवित्र न करे वही मनुष्य मंडली में से

कट जायगा इस कारण कि उस ने परमेश्वर के पवित्र स्थान को अशुद्ध
किया इस लिये कि अलग करने का पानी उस पर छिड़का न गया वुह
अशुद्ध है॥ २१। और यह उन के लिये नित्य की बिधि होगी जो
कोई अलग करने के पानी को छिड़के सो अपने कपड़े धोवे और जो
कोई अलग करने के पानी को छूवे सो सांझ लों अशुद्ध रहेगा॥ २२।
और जो कुछ अपवित्र मनुष्य छूवे सो अपवित्र होगा और जो प्राणी
उसे छूवेगा सो सांझ लों अशुद्ध होगा॥

२० बीसवां पर्ब्ब।

उस के पीछे इसराएल के संतानों की सारी मंडली पहिले मास
सीना के अरण्य में आई और क़ादिस में उतर पड़ी और मिरयम
वहां मर गई और गाड़ी गई॥ २। वहां मंडली के लिये पानी न था
तब वे मूसा और हारून के बिरोध पर एकट्ठे हुए॥ ३। और लोगों ने
मूसा से झगड़ के कहा हाय कि जब हमारे भाई परमेश्वर के आगे
मर गये हम भी मर जाते॥ ४। तुम परमेश्वर की मंडली को इस अरण्य
में क्यों लाये कि हम और हमारे ढोर मर जायं॥ ५। और तुम हमें
मिस्र से इस बुरे स्थान में क्यों चढ़ा लाये यहां तो खेत और गूलर और
दाख और अनार नहीं हैं और पीने को पानी नहीं॥ ६। तब मूसा
और हारून सभा के आगे से मंडली के तंबू के द्वार पर गये और
औंधे मूंह गिरे तब परमेश्वर की महिमा उन पर प्रगट हुई॥
७। और परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ८। कि छड़ी ले
और तू और तेरा भाई हारून मंडली को एकट्ठी करो और उन की
आंखों के आगे पर्ब्बत को कहो और वुह अपना पानी देगा तू उन के लिये
पर्ब्बत से पानी निकाल और उस्से तू मंडली को और उन के पशुन को
पिला॥ ९। सो मूसा ने छड़ी को परमेश्वर के आगे से लिया जैसी उस ने
उसे आज्ञा किई थी॥ १०। और मूसा और हारून ने मंडली को उस
पर्ब्बत के आगे एकट्ठी किया और उस ने उन्हें कहा कि सुनो हे दंगइतो
क्या हम तुम्हारे लिये इस पर्ब्बत से पानी निकालें॥ ११। तब मूसा ने
अपना हाथ उठाया और उस पर्ब्बत को दोबार अपनी छड़ी से मारा

तब बज़ताई से पानी निकला और मंडली और उन के पशुन ने पीया॥
१२। तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को इस कारण कहा कि तुम ने
मेरी प्रतीति न किई कि इसराएल के संतानों की दृष्टि में मुझे पवित्र करो
इस लिये तुम इस मंडली को उस देश में जो मैं ने उन्हें दिया है न
लाओगे॥ १३। यह झगड़े का पानी है क्योंकि इसराएल के संतानों ने
परमेश्वर से झगड़ा किया और उस ने उन के मध्य आप को पवित्र किया॥
१४। और कादिस से मूसा ने अदूम के राजा के पास दूतों को भेजा कि
तेरा भाई इसराएल कहता है कि जो जो दुःख हम पर बीता है तू
जानता है॥ १५। कि किस भांति से हमारे पितर मिस्र में उतर गये
और हम मिस्र में बज़त दिन रहे और मिस्रियों ने हमें और हमारे
पितरों को दुःख दिया॥ १६। और जब हम परमेश्वर के आगे चिल्लाये
तब उस ने हमारा शब्द सुना और एक दूत को भेज के हमें मिस्र में से
निकाल लाया और देख हम तेरे अत्यंत सिवाने के नगर कादिस में हैं॥
१७। सो हमें अपने देश में होके जाने दीजिये कि हम खेतों और दाखों
की बाटिकों में न जायेंगे और न कूओं का पानी पीवेंगे हम राज मार्ग से
होके निकले चले जायेंगे हम दहिने अथवा बायें हाथ न मुड़ेंगे जब लों
कि तेरे सिवानों से बाहर न निकल जायें॥ १८। तब अदूम ने उसे
कहा कि तुम मेरे सिवाने में होके न जाना नहीं तो मैं तलवार से
तुझ पर निकलूंगा॥ १९। फिर इसराएल के संतानों ने उसे कहा कि
हम राज मार्ग से होके चले जायेंगे और यदि मैं अथवा मेरे ढोर तेरा
पानी पीयें तो मैं उस का दाम देऊंगा कुछ न करूंगा केवल मैं अपने
पाओं से चला जाऊंगा॥ २०। उस ने कहा कि तू कधी जाने न पावेगा
तब अदूम बड़े बल से और बज़त लोगों के साथ उस पर चढ़ आया॥
२१। सो अदूम ने इसराएल को अपने सिवाने में से जाने न दिया इस
कारण इसराएल उस्से फिर गये॥

२२। और इसराएल के संतानों की सारी मंडली कादिस से कूच करके
हूर पहाड़ पर आई॥ २३। और परमेश्वर ने अदूम देश के सिवाने के
लग हूर पहाड़ पर मूसा और हारून से कहा॥ २४। कि हारून अपने
लोगों में एकट्ठा किया जायगा क्योंकि वुह उस देश में जिसे मैं ने

इसराएल के संतानों को दिया है न पहुंचेगा इस लिये कि तुम झगड़े के पानी पर मेरे बचन से फिर गये॥ २५। हारून और उस के बेटे इलिअज़र को ले और उन्हें हूर पहाड़ पर ला॥ २६। हारून के बस्त्र उतार और उन्हें उस के बेटे इलिअज़र को पहिना कि हारून समेटा जायगा और वहां मर जायगा॥ २७। सो जैसा परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा ने वैसा ही किया और वे मंडली के आगे हूर पहाड़ पर चढ़ गये॥ २८। और मूसा ने हारून के बस्त्र उतारे और उन्हें उस के बेटे इलिअज़र को पहिनाया और हारून पहाड़ की चोटी पर मर गया और मूसा और इलिअज़र पहाड़ से उतर आये॥ २९। और जब सारी मंडली ने देखा कि हारून मर गया तब इसराएल के सारे घराने ने हारून के कारण तीस दिन लों बिलाप किया॥

२१ एक्कीसवां पर्ब्ब।

और जब राजा अराद कनआनी ने जो दक्षिण में बास करता था सुना कि इसराएल भेदियों के मार्ग से आये तो इसराएल से लड़ा और उन में से बंधुआई किया॥ २। तब इसराएल ने परमेश्वर की मनौती मानी और बोला कि यदि तू सच मुच इन लोगों को मेरे बश में कर देगा तो मैं उन के नगरों को सर्बथा नाश कर देऊंगा॥ ३। सो परमेश्वर ने इसराएल का शब्द सुना और कनआनियों को उन के हाथ में सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें और उन के नगरों को सर्बथा नष्ट कर दिया और उस ने उस स्थान का नाम हुरमः रक्खा॥ ४। फिर उन्हों ने हूर पहाड़ से लाल समुद्र की ओर कूंच किया जिसतें अदूम के देश को घेर लेवें परंतु मार्ग के कारण लोगों का प्राण बहुत उदास हुआ॥ ५। और लोग ईश्वर के और मूसा के बिरोध में बोले कि तुम क्यों हमें मिस्र से चढ़ा लाये कि हम अरण्य में मरें क्योंकि अन्न जल कुछ नहीं है हमें तो इस हलकी रोटी से घिन आती है॥ ६। तब परमेश्वर ने उन लोगों में अग्नि सर्प भेजे जिन्हों ने उन्हें काटा और इसराएल के बहुत लोग मर गये॥ ७। इस लिये लोग मूसा पास आये और बोले कि हम ने पाप किया है क्योंकि हम ने

परमेश्वर के और तेरे बिरोध में कहा है सो तू परमेश्वर से प्रार्थना कर
कि हम्में से उन सांपों को उठा लेवे सो मूसा ने लोगों के लिये प्रार्थना
किई॥ ८। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने लिये एक आग का
सर्प बना और एक लट्ठ पर लटका और यों होगा कि हर एक डंसा हुआ
जब उस पर दृष्टि करेगा जीयेगा॥ ९। सो मूसा ने पीतल का एक
सर्प बना के लट्ठ पर रक्खा और यों हुआ कि यदि सर्प किसी को डंसा
तो जब उस ने उस पीतल के सर्प पर दृष्टि किई वुह जीया॥ १०। तब
इसराएल के संतान आगे बढ़े और ओबात में डेरा किया॥ ११।
फिर ओबात से कूंच किया और अजीअबरीम के बन में जो मोअब के
आगे पूर्ब ओर है डेरा किया॥ १२। वहां से कूंच करके जरद की
तराई में डेरा किया॥ १३। वहां से जो चले तो अर्नून के पार उस
बन में जो अमूरियों के सिवाने का अंत्य है आके डेरा किया क्योंकि
अर्नून मोअब का सिवाना है मोअब और अमूरियों के मध्य॥ १४।
इसी लिये परमेश्वर के संग्राम की पुस्तक में लिखा है कि उस ने लाल
समुद्र में और अर्नून के नालों में क्या क्या कुछ किया॥ १५। और
नालों के धारे के पास जो आर की बस्तियों के नीचे जाता है और
मोअबियों के सिवानों पर है॥ १६। और वहां से बिअरः को जो
कूआं है जिस के कारण परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों को एकट्ठे
कर कि मैं उन्हें पानी देऊंगा॥

१७। उस समय इसराएल ने यह भजन गाया कि हे कूओं उबलो
उस का जस देओ॥ १८। अध्यक्षों ने उसे खोदा लोगों के महानों ने
उसे खोदा व्यवस्थादायक के समान अपनी लाठियों से और बन से मत्तनः
को गये॥ १९। और मत्तनः से नहलिएल को और नहलिएल से
बामात को॥ २०। और बामात की तराई से जो मोअब के देश में है
पिसगः की चोटी लों जहां से जसमन का ओर देखाता था॥ २१।
और इसराएल ने अमूरियों के राजा सैहून के पास यह कहके दूत
भेजे॥ २२। कि हमें अपने देश से निकल जाने दे हम खेतों और
दाखों की बारियों में न पैठेंगे न हम कूओं का पानी पीवेंगे परंतु
राजमार्ग से चले जायेंगे यहां लों कि तेरे सिवानों से बाहर हो जायें॥

२३। पर सैहून ने इसराएल को अपने सिवानों से जाने न दिया परंतु
अपनेलोगों को एकट्टे करके इसराएल का साम्ना करने को अरण्य में
निकला और जहाज में पऊंचके इसराएल से संग्राम किया॥ २४।
और इसराएल ने उन्हें खड्ग की धार से मार लिया और उन के देश
पर अर्नून से लेके यबूक लों अर्थात् अम्मून के संतान लों बश में
किया क्योंकि अम्मून के संतानों का सिवाना दृढ़ था॥ २५। सो
इसराएल ने ये सब नगर ले लिये और अमूरियों के सब नगरों
में और हसबून में और उस के सारे गांओं में बास किया॥
२६। क्योंकि हसबून अमूरियों के राजा सैहून का नगर था जो मोअब
के अगले राजा से लड़ा और उस का समस्त देश अर्नून लों उस के
हाथ से ले लिया॥ २७। इसी लिये दृष्टांतवक्तों ने कहा है कि हसबून
में आओ सैहून का नगर बस जाय सिद्ध होय॥ २८। क्योंकि आग
हसबून से निकली लवर सैहून के नगर से जिस ने मोअब के आर को
और अर्नून के ऊंचे स्थान के प्रधानों को भस्म किया॥ २९। हे मोअब
तुझ पर संताप हे कमूस के लोगो तुम नाश ऊए उस ने अपने बचे ऊए
बेटों को दे दिया और अपनी बेटियां अमूरियों के राजा सैहून के
बंधुआई में कर दिईं॥ ३०। उन का दीया हसबून से लेके दैबून लों
बुझ गया और नफ़ह लों जो मेदिबा के पास है उजाड़ दिया॥ ३१।
यों इसराएलियों ने अमूरियों के देश में बास किया॥ ३२। फिर मूसा
ने यअ़ज़ीर का भेद लेने को भेजा उन्हों ने उस के गांओं को लिया और
अमूरियों को जो वहां थे हांक दिया॥ ३३। तब वे फिरे और बसन
की ओर चढ़े और बसन के राजा ऊज ने अपने सब लोग लेके युद्ध के
लिये अद्रिअई में संग्राम के लिये उन का साम्ना किया॥ ३४। तब
परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उस से मत डर क्योंकि मैं ने उसे और उस के
समस्त लोगों को और उस के देश को तेरे हाथ में सौंप दिया सो तू उन
से वैसा कर जैसा तू ने अमूरियों के राजा सैहून से किया जो हसबून में
रहता था॥ ३५। सो उन्हों ने उसे और उस के बेटों और सारे लोगों
को यहां लों मारा कि कोई जीता न छूटा और उस के देश में बास
किया।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

फिर इसराएल के संतान आगे बढ़े और यरीहू के लग यरदन के इसी पार मोअब के चैागानें में डेरा किया॥ २। और जब सफूर के बेटे बलक ने सब देखा जो इसराएल ने अमूरियों से किया॥ ३। तो मोअब उन लोगों से निपट डरा इस कारण कि वे बहुत थे और मोअब इसराएल के संतानें के कारण से दुःखित हुआ॥ ४। तब मोअब ने मिद्यान के प्राचीनें से कहा कि अब ये जथा उन सब को जो हमारे आस पास हैं यों चाट जायेंगी जैसे कि बैल चैागान की घास को चट कर लेता है और सफूर का बेटा बलक मोअबियों का राजा था॥ ५। सो उस ने बऊर के बेटे बलआम पास फतूरः को जो उस के लोगों के संतान के देश की नदी पास थे दूत भेजे जिसतें उसे यह कहके बुला लावें कि देख लोग मिस्र से बाहर आये हैं देख उन से पृथिवी छिप गई है और मेरे साम्ने ठहरे हैं॥ ६। सो अब आइये और मेरे लिये उन्हें स्राप दीजिये क्योंकि वे मुझ से अत्यंत बली हैं क्या जानें मैं उन्हें मार सकूं और उन्हें इस देश में से खदेड़ देऊं क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि जिसे तू आशीष देता है सो आशीष प्राप्त करता है और जिसे तू स्राप देता है वुह स्रापित है॥ ७। मोअब और मिद्यान के प्राचीन टोने का प्रतिफल हाथ में लेके चले और बलआम पास आये और बलक का बचन उसे कहा॥ ८। उस ने उन्हें कहा कि आज रात यहां रहो और जैसा परमेश्वर मुझे कहेगा मैं तुम्हें कहूंगा सो मोअब के प्रधान बलआम के संग रहे॥ ९। तब ईश्वर बलआम पास आया और उसे कहा कि तेरे संग ये कौन मनुष्य॥ १०। बलआम ने ईश्वर से कहा कि मोअब के राजा सफूर के बेटे बलक ने उन्हें मुझ पास भेजा और कहा॥ ११। कि देख लोग मिस्र से निकल आये हैं जो पृथिवी को ढांप रहे हैं सो आ मेरे कारण उन्हें स्राप दे क्या जाने मैं उन से जय पाऊं और उन्हें खदेड़ देऊं॥ १२। तब ईश्वर ने बलआम से कहा कि तू उन के साथ मत जा तू उन्हें स्राप मत दे क्योंकि वे आशीष प्राप्त किये हैं॥ १३। और बलआम ने बिहान को उठके बलक के अध्यक्षों से कहा कि अपने देश को जाओ

क्योंकि परमेश्वर मुझे तुम्हारे साथ जाने नहीं देता॥ १४। सो मोअब के
अध्यक्ष उठे और बलक पास गये और बोले कि बलआम ने हमारे साथ
आने को नाह किया है॥ १५। तब बलक ने उन से अधिक और
प्रतिष्ठित अध्यक्षों को फिर भेजा॥ १६। और उन्हों ने आके बलआम से
कहा कि सफूर के बेटे बलक ने यों कहा है कि मुझ पास आने में आप
को कोई रोकने न पावे॥ १७। क्योंकि मैं आप की अति बड़ी प्रतिष्ठा
करूंगा और जो कुछ आप मुझे कहेंगे मैं करूंगा मैं आप की बिनती
करता हूं कि आइये उन लोगों को मेरे निमित्त स्राप दीजिये॥ १८।
तब बलआम ने बलक के सेवकों से उत्तर देके कहा कि यदि बलक अपना
घर भर के चांदी सोना देवे तो मैं परमेश्वर अपने ईश्वर के बचन को
उल्लंघन करके घट बढ़ नहीं कर सक्ता॥ १९। सो अब तुम लोग भी
यहां रात भर रहो जिसतें मैं देखूं कि परमेश्वर मुझे अधिक क्या
कहेगा॥ २०। फिर ईश्वर रात को बलआम के पास आया और उसे
कहा कि यदि ये मनुष्य तुझे बुलाने आवें तो उठ के उन के साथ
जा पर जो बचन मैं तुझे कहूं सोई करियो॥ २१। सो बलआम
बिहान को उठा और अपनी गदही पर काठी रक्खी और मोअब के
प्रधानों के साथ गया॥ २२। और उस के जाने के कारण ईश्वर का
क्रोध भड़का और परमेश्वर का दूत बैर लेने को उस के सन्मुख मार्ग में
खड़ा हुआ सो वुह अपनी गदही पर चढ़ा हुआ जाता था और उस के
दो सेवक उस के साथ थे॥ २३। सो गदही ने परमेश्वर के दूत को
अपने हाथ में तलवार खींचे हुए मार्ग में खड़ा देखा तब गदही मार्ग से
अलग खेत में फिर गई तब उसे मार्ग में फिरने के लिये बलआम ने गदही
को मारा॥ २४। तब परमेश्वर का दूत दाख की बारियों के पथ में
खड़ा हुआ था जिस के इधर उधर भीत थी॥ २५। और जब परमेश्वर
के दूत को गदही ने देखा उस ने भीत में जा रगड़ा और बलआम का
पांव भीत से दबाया और उस ने उसे फिर मारा॥ २६। तब परमेश्वर
का दूत आगे बढ़के एक संकेत स्थान में खड़ा हुआ जहां दहिने बायें
फिरने का मार्ग न था॥ २७। और गदही परमेश्वर के दूत को देख के
बलआम के नीचे बैठ गई तब बलआम का क्रोध भड़का और उस ने

गद्हो को लाठी से मारा॥ २८। तब परमेश्वर ने गद्हो का मुंह खोला और उस ने बलआम से कहा कि मैं ने तेरा क्या किया है कि तू ने मुझे अब तीन बार मारा॥ २९। और बलआम ने गद्हो से कहा कि तू ने मुझे बौड़हा बनाया मैं चाहता कि मेरे हाथ में तलवार होती तो तुझे मार डालता॥ ३०। पर गद्हो ने बलआम से कहा कि क्या मैं तेरी गद्हो नहीं हूं जिस पर तू आज के दिन लों चढ़ता है क्या मैं ऐसा कधी करती आई हूं वुह बोला कि नहीं॥ ३१। तब परमेश्वर ने बलआम की आंखें खोलीं और उस ने परमेश्वर के दूत को मार्ग में खड़े हुए देखा और उस के हाथ में खींची हुई तलवार है उस ने अपना सिर झुकाया और औंधा गिरा। ३२। तब परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि तू ने अपनी ग हो को तीन बार क्यों मारा देख मैं तेरे बिरुद्ध में निकला हूं इस लिये कि तेरी चाल मेरे आगे हठीली है॥ ३३। और गद्हो मुझे देख के तीन बार मुझ से फिर गई यदि वुह मुझ से न फिरती तो निश्चय मैं तुझे मार ही डालता और उसे जीती छोड़ता॥ ३४। तब बलआम ने परमेश्वर के दूत से कहा कि मुझ से पाप हुआ क्योंकि मैं ने न जाना कि तू मेरे बिरुद्ध मार्ग में खड़ा है सो अब यदि तू अप्रसन्न है तो मैं फिर जाऊंगा॥ ३५। पर परमेश्वर के दूत ने बलआम से कहा कि मनुष्यों के साथ जा परंतु केवल जो बचन मैं तुझे कहूं सोई कहियो सो बलआम बलक के प्रधानों के साथ गय॥ ३६। जब बलक ने सुना कि बलआम पहुंचा तो उस ने अत्यंत तौर को अर्नून के सिवानेमें मोअब के एक नगर लों उस की अगुआई को निकला॥ ३७। तब बलक ने बलआम से कहा कि क्या मैं ने बड़ी बिनती करके तुझे नहीं बुलाया तू मुझ पास क्यों चला न आया क्या निश्चय मैं तेरी महात्मय नहीं बढ़ा सक्ता॥ ३८। बलआम ने बलक से कहा देख मैं तेरे पास आया क्या मुझ में कुछ शक्ति है कि मैं कहूं जो बात ईश्वर मेरे मुंह में डालेगा सोई कहूंगा॥ ३९। और बलआम और बलक साथ साथ गये और करियासहूस में पहुंचे॥ ४०। तब बलक ने बैल और भेड़ चढ़ाये और बलआम के और उन अध्यक्षों के पास जो उस के साथ थे भेजे॥ ४१। और बिहान को यों हुआ कि बलक ने बलआम को साथ लिया और उसे बआल के ऊंचे स्थानों में लाया जिसतें वुह वहां से लोगों को बाहर बाहर देखे॥

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

तब बलआम ने बलक् से कहा कि मेरे लिये यहां सात बेदी बना
और मेरे लिये यहां सात बैल और सात मेंढ़े सिद्ध कर॥ २।
जैसा बलआम ने कहा था बलक् ने वैसा किया और बलक् और बलआम
ने हर बेदी पर एक बैल और एक मेंढ़ा चढ़ाया॥ ३। फिर बलआम
ने बलक् से कहा कि अपने होम की भेंट के पास खड़ा रह और मैं
जाऊंगा कदाचित् परमेश्वर मुझ से भेंट करे जो कुछ वुह मुझे दिखायेगा
मैं तुझे कहूंगा सो वुह ऊंचे स्थान को चला॥ ४। और ईश्वर
बलआम को मिला और उस ने उसे कहा कि मैं ने सात बेदी सिद्ध किया
और एक एक बैल और एक एक मेंढ़ा हर एक पर चढ़ाया॥ ५। तब
परमेश्वर ने बलआम के मूंह में बचन डाला और उसे कहा कि बलक् पास
फिर जा और उसे यों कह॥ ६। सो वुह उस पास फिर आया और
क्या देखता है कि वुह अपने होम के बलिदान के पास मोअब के सब
प्रधानों समेत खड़ा है॥ ७। तब उस ने अपने दृष्टांत में कहा कि
पूर्ब के पहाड़ों से अराम से मोअब के राजा बलक् ने मुझे बुलाया कि मेरे
निमित्त यअक़ूब को स्राप दीजिये और इसराएल को धिक्कारिये॥ ८।
मैं उसे क्योंकर स्रापों जिसे ईश्वर ने नहीं स्रापा अथवा उसे धिक्कारूं
जिसे ईश्वर ने नहीं धिक्कारा॥ ९। क्योंकि पहाड़ की चोटी पर से
मैं उसे देखता हूं और पहाड़ों पर से उसे ताकता हूं देखो ये लोग अकेले
रहेंगे और लोगों के मध्य गिने न जायेंगे॥ १०। यअक़ूब की धूल को
कौन गिन सक्ता है और इसराएल की चौथाई का लेखा कौन ले सक्ता
है हाय कि मैं धर्मी की मृत्यु मरूं और मेरा अंत्य उन का सा हो॥ ११।
तब बलक् ने बलआम से कहा कि तू ने मुझ से क्या किया मैं ने तुझे अपने
शत्रुन को स्राप देने को लिया और देख तू ने उन्हें सर्बथा आशीष
दिया॥ १२। उस ने उत्तर देके कहा कि क्या मुझे उचित नहीं कि वही
बात कहूं जो परमेश्वर ने मेरे मूंह में डाली है॥ १३। फिर बलक् ने उसे
कहा कि अब मेरे साथ और ही स्थान पर चलिये वहां से आप उन्हें
देखिये आप केवल उन को बाहर बाहर देखियेगा और उन्हें सब के सब

न देखियेगा मेरे लिये वहां से उन पर स्राप दीजिये॥ १४॥ श्रीर वुह
उसे वहां से सफोईम के खेत में पिसगः की चाेटी पर ले गया श्रीर सात
बेदी बनाई हर बेदी पर एक बैल श्रीर एक मेंढ़ा चढ़ाया॥ १५। तब
उस ने बलक् से कहा कि जबलों मैं वहां जाऊं श्रीर ईश्वर से मिल
आऊं तू यहां अपने होम के बलिदान पास खड़ा रह॥ १६॥ सो परमेश्वर
बलश्राम को मिला श्रीर उस के मुंह में वचन डाला श्रीर कहा कि बलक्
पास फिर जा श्रीर यों कह॥ १७। श्रीर जब वुह उस पास पहुंचा तो
क्या देखता है कि वुह अपने होम के बलिदान के पास मोअब के प्रधानों
समेत खड़ा है तब बलक् ने उससे पूछा कि परमेश्वर ने क्या कहा है॥
१८॥ तब उस ने अपने दृष्टांत उठाके कहा कि उठ हे बलक् श्रीर सुन
हे सफूर के बेटे मेरी श्रीर कान धर॥ १९। ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ
बोले न मनुष्य का पुत्र कि वुह पछतावे क्या वुह कहे श्रीर न करे अथवा
बोले श्रीर उसे पूरा न करे॥ २०। देख मैं ने आशीष के निमित्त पाया
है उस ने आशीष दिया है मैं उसे पलट नहीं सक्ता॥ २१। उस ने
यअकूब में बुराई नहीं देखी न उस ने इसराएल में हठ देखा परमेश्वर
उस का ईश्वर उस के साथ है श्रीर एक राजा का ललकार उन के मध्य
में है॥ २२। ईश्वर उन्हें मिस्र से निकाल लाया वुह गैंड़े का सा बल
रखता है॥ २३। निश्चय यअकूब के बिरोध टोना नहीं श्रीर इसराएल
के बिरुद्ध कोई प्रश्न नहीं इस समय के समान यअकूब के श्रीर इसराएल
के बिषय में कहा जायगा कि ईश्वर ने क्या किया॥ २४। देखो ये लोग
महा सिंह की नाईं उठेंगे श्रीर आप को युबा सिंह के समान उठावेंगे
वुह न सोवेगा जब लों अहेर न खा ले श्रीर जबलों जूझे का लोहू न पी ले॥
२५। तब बलक् ने बलश्राम से कहा कि न तो उन्हें स्राप न आशीष
दीजिये॥ २६। परंतु बलश्राम ने उत्तर दिया श्रीर बलक् से कहा
क्या मैं ने तुझे नहीं कहा कि जो कुछ परमेश्वर कहेगा मैं अवश्य
करूंगा॥

२७। तब बलक् ने बलश्राम से कहा कि आइये मैं आप को श्रीर
स्थान पर ले जाऊं कदाचित् ईश्वर की इच्छा होवे कि वहां से आप मेरे
लिये उन्हें स्राप दीजिये॥ २८। तब बलक् बलश्राम को फ़गूर की

चोटी पर जो जशमन के सन्मुख है लाया॥ २९। वहां बलआम ने बलक
से कहा कि मेरे लिये यहां सात बेदी बना और मेरे लिये सात बैल
और सात मेंढ़े सिद्ध कर॥ ३०। जैसा बलआम ने कहा था बलक ने
वैसा किया और हर एक बेदी पर एक बैल और एक मेंढ़ा चढ़ाया।

२४ चौवीसवां पर्ब्ब।

जब बलआम ने देखा कि इसराएल को आशीष देना ईश्वर को अच्छा
लगा तब वुह अब की आगे की नाईं नहीं गया कि टोना करे परंतु
उस ने अपने मूंह को बन की ओर किया॥ २। और बलआम ने अपनी
आंखें उठाईं और इसराएल को देखा कि अपनी अपनी गोष्ठियों के समान
बसे हैं तब ईश्वर का आत्मा उस पर उतरा॥ ३। उस ने अपने दृष्टांत
उठाके कहा कि बऊर के बेटे बलआम ने कहा है और वुह मनुष्य
जिस की आंखें खुली हैं बोला है॥ ४। जिस ने ईश्वर के बचन को सुना
है और सर्बशक्तिमान ईश्वर का दर्शन पाया है सो पड़ा है परंतु आंखें
खुली हैं उस ने कहा है॥ ५। क्या ही सुंदर हैं तेरे तंबू हे यअक़ूब और
तेरे निवास स्थान हे इसराएल वे तराई की नाईं और नदी के निकट
की बारियों की नाईं और जैसे अगर के वृक्ष जिसे परमेश्वर ने लगाया
है और जैसे पानी के निकट के आरज वृक्ष होवें फैले ज़ए हैं॥ ७। वुह
अपनी मोट से पानी बहावेगा और उस का बीज बज़त से पानियों में
होगा उस का राजा अगाग से बड़ा होगा और उस का राज्य बढ़ जायेगा॥
८। ईश्वर उसे मिस्र से बाहर निकाल लाया उस में गैंड़े का सा बल है
वुह अपने शत्रु के देशियों को भक्षण करेगा और उन की हड्डियों को
चूर करेगा और अपने बाणों से उन्हें छेदेगा॥ ९। वुह झुकता है और
सिंह की नाईं हां महासिंह की नाईं लेटा है उसे कौन छेड़ सक्ता है धन्य
है वुह जो तुझे आशीष देवे स्रापित है वुह जो तुझे स्राप देवे॥ १०।
तब बलक का क्रोध बलआम पर भड़का और उस ने अपने दोनों हाथों
से थपोली पीटी और बलक ने बलआम से कहा कि मैं ने तो तुझे अपने
बैरी को स्राप देने को बुलाया और देख तूने तीन बार उन्हें सर्बथा
आशीष दिया है॥ ११। चल अब अपने स्थान को भाग मैं ने तेरी बड़ी

प्रतिष्ठा करने चाहा था पर देख परमेश्वर ने तुझे प्रतिष्ठा से रोक रक्खा॥
१२। बलआम ने बलक से कहा कि मैं ने तेरे दूतों को जिन्हें तू ने मेरे पास
भेजा था नहीं कहा॥ १३। कि यदि बलक अपना घर भर चांदी सोना
मुझे देवे मैं भला अथवा बुरा करने में परमेश्वर की आज्ञा को उल्लंघन
नहीं कर सक्ता परंतु जो कुछ परमेश्वर कहे मैं वही कहूंगा॥ १४। अब
देख मैं अपने लोगों में जाता हूं आ मैं तुझे संदेश देऊंगा कि ये
लोग तेरे लोगों से पिछले दिनों में क्या करेंगे॥ १५। फिर उस ने अपने
दृष्टांत उठाके कहा और बोला कि बऊर का पुत्र बलआम कहता है
और वुह मनुष्य जिस की आंखें खुली हैं कहता है॥ १६। वही जिस
ने ईश्वर के बचन को सुना है और अत्यंत महान के ज्ञान को जाना है
और जिस ने सर्वशक्तिमान का दर्शन पाया है जो पड़ा है परंतु उस की
आंख खुली हैं॥ १७। मैं उसे देखूंगा पर अभी नहीं मेरी दृष्टि उस
पर पड़ेगी पर निकट से नहीं यअकूब से एक तारा निकलेगी और
इसराएल से एक राजदंड उठेगा और मोअब के कोनों को मार लेगा
और सेत के सारे संतान को नाश करेगा॥ १८। अदूम अधिकार
होगा और शईर भी अपने शत्रुन के लिये अधिकार होगा और
इसराएल बीरता करेगा॥ १९। वुह जो राज्य पावेगा सो यअकूब से
निकलेगा और जो नगर में बच रहेगा उसे नाश करेगा॥ २०। फिर
उस ने अमालीक को देखा और अपना दृष्टांत उठाया और कहा कि
अमालीक लोगों में पहिला था परंतु अंत में वुह नाश होगा॥ २१।
फिर उस ने कैनियों पर दृष्टि किई और अपना दृष्टांत उठाया और
कहा कि तेरा निवास दृढ़ है तू पहाड़ पर अपना खोंता बनाता है॥
२२। तथापि कैनी उजाड़ किये जायेंगे यहां लों कि असूर तुझे बंधुआई
में ले जायेगा॥ २३। फिर उस ने अपना दृष्टांत उठाया और कहा
कि हाय कौन जीता रहेगा जब ईश्वर यों हीं करेगा॥ २४। कित्ती के
तीर से जहाज़ आवेंगे और असूर को और इब्र को सतावेंगे और वुह
भी सर्वथा नाश होवेगा तब बलआम उठा और चला और अपने स्थान
को फिर गया और बलक ने भी अपना मार्ग लिया।

२५ पचीसवां पर्ब्ब ।

सो इसराएली सत्तीन में रहे और लोगों ने मोअबियों की बेटियों
से व्यभिचार करना आरंभ किया॥ २। उन्हों ने अपने देवतों के
बलिदानों में उन लोगों को नेउंता दिया और लोगों ने खाया और
उन के देवतों को दंडवत् किई॥ ३। और इसराएल बअलफ़गूर से
मिले तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का॥ ४। और परमेश्वर
ने मूसा से कहा कि लोगों के सारे प्रधानों को पकड़ और उन्हें परमेश्वर
के आगे सूर्य्य के सन्मुख टांग दे जिसतें परमेश्वर के क्रोध का भड़कना
इसराएल पर से टल जाय॥ ५। सो मूसा ने इसराएल के न्यायियों से
कहा कि तुम्में से हर एक अपने लोगों को जो बअलफ़गूर से मिल गये
थे मार डालो॥ ६। सो वहीं एक इसराएली आया और अपने भाइयों
के पास एक मिदयानी स्त्री को मूसा और इसराएल के संतानों की सारी
मंडली के साम्ने लाया और वे मंडली के तंबू के द्वार पर बिलाप करते
थे॥ ७। और हारून याजक के बेटे इलिअज़र के बेटे फ़ीनिहास ने
यह देखा वुह मंडली में से उठा और बरछी हाथ में लिई॥ ८। और
उस मनुष्य के पीछे तंबू में घुसा और उन दोनों को इसराएली पुरुष
और स्त्री के पेट को गोदा तब इसराएल के संतानों में से मरी थम गई॥
९। वे जो उस मरी से मरे चौबीस सहस्र थे॥ १०। फिर परमेश्वर
मूसा से कहके बोला॥ ११। कि हारून याजक के बेटे इलिअज़र के
बेटे फ़ीनिहास ने मेरे कोप को इसराएल के संतानों पर से फेरा जब वुह
उन में मेरे निमित्त ज्वलित था जिसतें मैं ने इसराएल के संतानों को
अपने झल से भस्म न किया॥ १२। सो कह कि देख मैं उसे अपने
कुशल की बाचा देता हूं॥ १३। सो वुह उस के और उस के पीछे
उस के बंश के लिये होगा अर्थात् सनातन की याजकता की बाचा इस
कारण कि वुह अपने ईश्वर के लिये ज्वलित था और उस ने इसराएल के
संतानों के लिये प्रायश्चित्त दिया॥ १४। उस इसराएली मनुष्य का नाम
जो उस मिदयानी स्त्री के साथ मारा गया ज़िमरी था सलू का बेटा जो
समऊनियों के एक श्रेष्ठ घर का अध्यक्ष था॥ १५। और उस मिदयानी

स्त्री का नाम जो मारी गई कज़्बी था सूर की बेटी जो लोगों का प्रधान और मिदयान के संतानों में श्रेष्ठ घर का था॥ १६। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १७। कि मिदयानियों को खिझाओ और उन्हें मारो॥ १८। क्योंकि उन्हों ने अपने छल से जिस्से उन्हों ने फ़गूर के विषय में तुम्हें छल दिया और कज़्बी के विषय में जो मिदयानी के प्रधान की बेटी और उन की बहिन थी जो उस मरी के दिन जो फ़गूर के कारण से ज़ई मारी गई उन्हों ने तुम्हें खिझाया॥

२६ छबीसवां पर्ब्ब।

और ऐसा ज़आ कि उस मरी के पीछे परमेश्वर ने मूसा से और हारून याजक के बेटे इलिअज़र से कहा॥ २। कि इसराएल के संतानों की समस्त मंडली की बीस बरस से लेके ऊपर लों उन के पितरों के समस्त घरानों की सब जो इसराएल में संग्राम के योग्य हैं गिनती लेओ॥ ३। सो मूसा और इलिअज़र याजक ने मोअब के चौगानों में यरदन नदी और यरीहू के लग उन से कहा॥ ४। कि बीस बरस से लेके ऊपर लों गिनो जैसे परमेश्वर ने मूसा और इसराएल के संतानों को जो मिस्र की भूमि से निकले थे आज्ञा किई थी॥ ५। रूबिन इसराएल का पहिलौंठा बेटा रूबिन का संतान हनूक जिस्से हनूकियों का घराना है और फ़लू जिस्से फ़लूइयों का घराना है॥ ६। और हसरून जिस्से हसरूनियों का घराना है और करमी जिस्से करमियों का घराना है॥ ७। ये रूबिनियों के घराने और जो उन में गिने गये सो तेंतालीस सहस्र सात सौ तीस थे॥ ८। और फ़लू के बेटे इलिअब॥ ९। और इलिअब के बेटे नमूएल और दातन और अबिराम ये वुह दातन और अबिराम जो मंडली में नामी जो क़ुरह की जथा में मूसा और हारून के विरोध में झगड़ा जब उन्हों ने परमेश्वर के विरोध में झगड़ा॥ १०। और भूमि ने अपना मुंह खोला और उन्हें क़ुरह सहित निंगल गई जिस समय वुह जथा मर गई जब कि उस आग ने अढ़ाई सौ मनुष्यों को खा लिया और वे एक चिन्ह ज़ए॥ ११॥ तथापि क़ुरह के संतान न मरे॥ १२। और समऊन के बेटे अपने

घराने के समान नमूएल से नमूएलियों का घराना यमीन से यमीनियों का घराना याकीन से याकियों का घराना॥ १३। ज़िरह से ज़िरहीयों का घराना साऊल से साऊलियों का घराना॥ १४। ये समऊनियों के घराने बाईस सहस्र दो सौ थे॥ १५। जद के संतान अपने घराने के समान सफ़ून से सफ़ूनियों का घराना हाजी से हाजियों का घराना सूनी से सूनियों का घराना॥ १६। उज़्नी से उज़्नियों का घराना ऐरी से ऐरियों का घराना॥ १७। अरूद से अरूदियों का घराना अरेली से जिस्से अरेलियों का घराना॥ १८। जद के संतान के घराने उन की गिनती के समान चालीस सहस्र पांच सौ थे॥

१९। यहूदाह के बेटे ऐर और ओनान कनआन के देश में मर गये॥ २०। और यहूदाह के बेटे अपने घराने के समान ये हैं सेल: से सेलानियों का घराना फ़ाड़स से फ़ाड़सियों का घराना ज़िरह से ज़िरहियों का घराना॥ २१। और फ़ाड़स के बेटे हसरून से हसरूनियों का घराना और हमूल से हमूलियों का घराना॥ २२। ये यहूदाह के घराने उन की गिनती के समान छिहत्तर सहस्र पांच सौ थे॥ २३। इश्कार के बेटे उन के अपने घरानों के समान तोलअ से तोलियों का घराना फ़ूव: से फ़ूवियों का घराना॥ २४। यसूब से यसूबियों का घराना सिमरून से सिमरूनियों का घराना॥ २५। ये इश्कार के घराने उन में गिने जाने के समान चौंसठ सहस्र तीन सौ थे॥ २६। ज़बुलून के बेटे अपने घराने के समान सरद से सरदियों का घराना एलून से एलूनियों का घराना यहलिएल से यहलिएलियों का घराना॥ २७। ये ज़बुलूनियों के घराने उन में गिने गये के समान साठ सहस्र पांच सौ थे॥

२८। यूसुफ़ के बेटे अपने घराने के समान मुनस्सी और इफ़रायम॥ २९। मुनस्सी के बेटे मकीर से मकीरियों का घराना और मकीर से जिलिअद उत्पन्न हुआ जिलिअद से जिलिआदियों का घराना॥ ३०। ये जिलिअद के बेटे ईअज़र से ईअज़रियों का घराना खलक़ से खलक़ियों का घराना॥ ३१। और यसरएलि से यसरएलियों का घराना और सिकम से सिकमियों का घराना॥ ३२। और सिमीदाअ से सिमीदाइयों का घराना और हिफ़्र से हिफ़्रीयों का घराना॥ ३३।

हिफ़् के बेटे सिलाफ़िहाद के बेटे न थे परंतु बेटियां जिन के ये नाम
महलः श्रीर नूश्चः श्रीर हजलः श्रीर मिलकः श्रीर तिरजः॥ ३४। ये
मुनस्सी के घराने उन में से जा गिने गये बावन सहस्र सात सा थे॥ ३५।
इफ़रायम के बेटे अपने घराने के समान सूतलह से सूतलहियों का
घराना श्रीर बकर से बकरियों का घराना तहन से तहनियों का घराना॥
३६। श्रीर सूतलह के बेटे ये ऐरान से ऐरानियों का घराना॥ ३७।
ये इफ़रायम के बेटे के घराने उन में से जा गिने गये बत्तीस सहस्र पांच
सा थे सा यूसुफ़ के बेटे अपने घराने के समान ये थे॥ ३८। बिनयमीन
के बेटे अपने घराने के समान बलश्र से बलश्रियों का घराना श्रसबील
से असबीलियों का घराना अख़िराम से अख़िरामियों का घराना॥ ३९।
सफ़ूफ़ाम से सफ़ूफ़ामियों का घराना हूफ़ाम से हूफ़ामियों का घराना॥
४०। बीला के बेटे अरद श्रीर नश्रमान अरदियों का घराना नश्रमान से
नश्रमानियों का घराना॥ ४१। ये बिनयमीन के बेटे उन के घराने के
समान श्रीर वे जा उन में से गिने गये पैंतालीस सहस्र छः सा थे॥ ४२।
श्रीर दान के बेटे अपने घराने के समान सूहाम से सूहामियों का घराना
दान के घराने उन के घरानों के समान॥ ४३। सूहामियों के सारे
घराने उन में की गिनती के समान चौंसठ सहस्र चार सा थे।

४४। श्रीर यसर के संतान अपने घरानों के समान यिमनः से यिमनि-
यों का घराना यसवी से यसवियों का घराना बरीश्रः से बरियों का
घराना॥ ४५। बरीश्रः के बेटों से हिब्र से हिब्रियों का घराना मलकि-
ऐल से मलकिऐलियों का घराना है॥ ४६। श्रीर यसर की बेटी का
नाम सारह था॥ ४७। श्रीर ये यसर के संतान के घराने हैं उन
में से जा गिने गये तिरपन सहस्र चार सा थे॥ ४८। नफ़ताली के
बेटे अपने घराने के समान यहसिऐल से यहसिऐलियों का घराना
श्रीर जूनी से जूनियों का घराना॥ ४९। श्रीर यिस्री से यिस्रीयों
का घराना श्रीर सिल्लीम से सिल्लीमियों का घराना॥ ५०। उस के घराने
के समान ये नफ़ताली के घराने थे उन में से जा गिने गये पैंतालीस
सहस्र चार सा थे॥ ५१। सब इसराएल के संतान जा गिने गये छः
लाख एक सहस्र सात सा तीस थे॥ ५२। फिर परमेश्वर मूसा से

कहके बाला॥ ५३। कि यह देश उन के नाम की गिनती के समान इन के लिये अधिकार में भाग किया जाय॥ ५४। तू बड़तों को बड़तसा अधिकार दीजियो श्रीर थोड़ों को थोड़ा अधिकार हर एक को उस के गिने गये के समान दिया जाय॥ ५५। तिस पर भी देश चिट्ठी से बांटा जावे वे अपने पितरों की गोष्ठियों के नाम के समान अधिकार पावें॥ ५६। बड़तों श्रीर थोड़ों में चिट्ठी से उन का अधिकार बांट दिया जाय॥ ५७। श्रीर वे जो लावियों में से गिने गये उन के घराने के समान ये हैं जैरसुन से जैरसुनियों का घराना क़िहात से क़िहातियों का घराना मिरारी से मिरारियों का घराना॥ ५८। लावी के घराने से लबनियों का घराना हबरूनियों का घराना मुहली का घराना मूसी का घराना क़ुरह का घराना श्रीर क़िहात से अमराम उत्पन्न ड़आ॥ ५९। श्रीर अमराम की पत्नी का नाम यूकबिद था लावी की कन्या जिसे उस की माता लावी से मिस्र में जनी सो वुह अमराम से हारून श्रीर मूसा श्रीर उन की बहिन मिरयम को जनी॥ ६०। श्रीर हारून के बेटे नदब श्रीर अबिहू इलिअज़र श्रीर ईतमर॥ ६१। सो नदब श्रीर अबिहू उस समय कि वे ऊपरी आग परमेश्वर के आगे लाये मर गये॥ ६२। श्रीर वे जो उन में गिने गये एक मास से लेके ऊपर लों तेईस सहस्र पुरुष थे ये इसराएल के संतानों में गिने नहीं गये क्योंकि उन्हें इसारएल के संतान के साथ अधिकार नहीं दिया गया॥ ६३। ये वे इसराएल के संतान हैं जिन्हें मूसा श्रीर इलिअज़र याजक ने मोअब के चौगानों में यरदन नदी यरीहू के साम्ने गिना॥ ६४। परंतु मूसा श्रीर हारून याजक के गिने ड़ओं में से जिस समय कि इसराएल के संतान को सीना के बन में गिना था एक मनुष्य भी उन में न था॥ ६५। क्योंकि परमेश्वर ने उन के विषय में कहा था कि वे निश्चय अरण्य में मर जायेंगे सो उन में से केवल यफुन्नः के बेटे कालिब श्रीर नून के बेटे यहूसूअ को छोड़ एक भी न बचा॥

२७ सताईसवां पर्ब्ब।

तब यूसुफ़ के बेटे मुनस्सी के घराने से मुनस्सी के बेटे मकीर के बेटे जिलिअद के बेटे हिफ़र के बेटे सिलाफ़िहाद की बेटियां आईं श्रीर

उस की बेटियों के नाम ये हैं महल: नूअ: हजल: और मिलक: और
तिरज:॥ २। और मूसा और इलिअज़र याजक और सब मंडली और
अध्यक्षों के आगे मंडली के तंबू के द्वार के निकट खड़ी हुई और बोलीं॥
३। कि हमारा पिता बन में मर गया और वुह उन की जथा में न था
जो परमेश्वर के विरुद्ध होके एकट्ठे हुए थे अर्थात् क़ुरह की परंतु अपने
पाप के कारण मर गया उस के कोई बेटा न था॥ ४। सो हमारे पिता
का नाम उस के घराने से क्योंकर निकाला जाय क्या इस लिये कि उस के
कोई बेटा न था हमें हमारे पिता के भाइयों में मिल के भाग देओ॥ ५।
तब मूसा उन का पद परमेश्वर के निकट लेगया॥ ६। और परमेश्वर
मूसा से कहके बोला॥ ७। कि सिलाफ़िहाद की बेटियां सच कहती हैं
तू उन्हें उन के पिता के भाइयों में भागी करके अवश्य अधिकार दे और
एसा कर कि उन के पिता का अधिकार उन्हीं को पहुंचे॥ ८। और
इसराएल के संतानों से कह यदि कोई पुरुष मर जाय और उस के कोई
बेटा न हो तो उस का अधिकार उस की बेटी को पहुंचे॥ ९। और
यदि उस की बेटी भी न हो तो उस के भाइयों को उस का अधिकार
दीजियो॥ १०। यदि उस के भाई न हों तो तुम उस का अधिकार
उस के पिता के भाइयों को देओ॥ ११। यदि उस के पिता के भाई भी
न हों तो तुम उस का अधिकार उस के घराने के समीपी कुटुम्ब को देओ
वुह उस का अधिकारी होगा और यह आज्ञा इसराएल के संतानों के
लिये जैसा परमेश्वर ने मूसा से कहा यह सदा के लिये बिधि होगी॥
१२। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला कि अब तू अबरीम के इस
पहाड़ पर चढ़ जा और उस देश को जो मैं ने इसराएल के संतानों को
दिया है देख॥ १३। और जब तू उसे देख लेगा तू भी अपने लोगों में
मिल जायगा जिस रीति से तेरा भाई हारून मिल गया॥ १४। क्योंकि
मंडली के झगड़े में ज़ीन के अरण्य में तुम मेरी आज्ञा के विरोध में
फिर गये और उन की आंखों के आगे पानी पास जो मरीब: के पानी
क़ादिस में ज़ीन के अरण्य में मुझे पवित्र न किया॥ १५। तब मूसा
परमेश्वर के आगे कहके बोला॥ १६। कि हे परमेश्वर सब शरीरों के
प्राणों का ईश्वर किसी को मंडली का प्रधान बना॥ १७। जो बाहर

भीतर उनके आगे आगे आया जाया करे और जो बाहर भीतर उन की अगुआई करे जिसतें परमेश्वर की मंडली उन भेड़ों की नाईं न हो जाय जिन का कोई रखवाल न हो ॥ १८। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि नून के बेटे यहूसूअ को ले जिस पर आत्मा है और उस पर अपना हाथ रख॥ १९। और उसे इलिअज़र याजक और सारी मंडली के आगे खड़ा कर और उन के आगे उसे आज्ञा कर॥ २०। और अपनी प्रतिष्ठा में से उस पर कुछ रख जिसतें इसराएल के संतानों की सारी मंडली बश में होवे॥ २१। वुह इलिअज़र याजक के आगे खड़ा होवे जो उस के लिये उरिम के न्याय के समान परमेश्वर के आगे पूछे वुह और सारे इसराएल के संतानों की सारी मंडली उस के कहने से बाहर जायें और उस के कहने से भीतर आवें॥ २२। सो जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने यहूसूअ को लेके इलिअज़र याजक और सारी मंडली के साम्ने खड़ा किया॥ २३। और उस ने अपने हाथ उस पर रक्खे और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से कहा था उसे आज्ञा दिई॥

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों को आज्ञा करके उन्हें बोल कि मेरी भेंट और होम के बलिदानों की रोटी मेरे सुगंध के लिये उन के समय में पालन करके चढ़ाओ॥ ३। तू उन्हें कह कि होम की भेंट जो तुम परमेश्वर के लिये चढ़ाइयो सो यह है कि पहिले बरस के दो निष्खोट मेम्ने प्रति दिन नित्य के होम की भेंट के लिये॥ ४। एक मेम्ना बिहान को और एक मेम्ना सांझ को॥ ५। और सवा सेर पिसान और सवा सेर कूटा हुआ तेल भोजन की भेंट के लिये॥ ६। यह होम की भेंट नित्य के लिये है जो सीना के पहाड़ पर होम का बलिदान परमेश्वर के सुगंध के लिये ठहराया गया है॥ ७। और उस के पीने की भेंट सवा सेर एक मेम्ना के लिये तीक्ष्ण दाखरस को परमेश्वर के आगे पीने की भेंट के लिये पवित्र स्थान में बिटावे॥ ८। और तू दूसरा मेम्ना सांझ को चढ़ाना तू बिहान के भोजन की भेंट की नाईं उस के पीने की भेंट की नाईं परमेश्वर के सुगंध

के लिये होम की भेंट चढ़ा॥ ९। श्रोर बिश्राम के दिन पहिले बरस के दो निष्खोट मेम्ने अढ़ाई सेर पिसान भोजन की भेंट के लिये तेल से मिला हुआ श्रोर उस के पीने की भेंट समेत॥ १०। हर एक बिश्राम के होम की भेंट नित्य के होम की भेंट के। छोड़ के श्रोर उस के पीने की भेंट यही है॥ ११। श्रोर तुम्हारे मास के आरंभ में होम की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे दो बछड़े एक मेंढ़ा पहिले बरस के निष्खोट सात मेम्ने चढ़ाओ॥ १२। एक बछड़ा के लिये तेल से मिला हुआ पैाने चार सेर पिसान भोजन की भेंट के लिये एक मेंढ़े के लिये तेल से मिला हुआ अढ़ाई सेर पिसान भोजन की भेंट के लिये॥ १३। एक मेम्ना के भोजन की भेंट के लिये तेल से मिला हुआ सवा सेर पिसान सुगंध के होम की भेंट के लिये आग से बनाया हुआ परमेश्वर के लिये बलिदान॥ १४। श्रोर उन के पीने की भेंट एक बछड़े पीछे अढ़ाई सेर दाखरस श्रोर मेंढ़े पीछे अढ़ाई पाव है श्रोर मेम्ना पीछे सवा सेर बरस के हर मास के होम का बलिदान यह है॥ १५। श्रोर नित्य के होम के बलिदान श्रोर उस के पीने के बलिदान के। छोड़ पाप की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे बकरी का एक मेम्ना चढ़ाया जाय॥ १६। पहिले मास की चैादहवीं तिथि परमेश्वर का पार जाना है॥ १७। श्रोर इस मास की पंद्रहवीं तिथि के। पार जाने का पर्ब्ब होगा सात दिन तुम अख़मीरी रोटी खाइयो॥ १८। पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा उस दिन तुम कोई संसारिक कार्य न करना॥ १९। श्रोर होम का बलिदान आग से परमेश्वर के लिये यह चढ़ाइयो दो बछड़े एक मेंढ़ा पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने॥ २०। श्रोर उन के साथ भोजन की भेंट पैाने चार सेर पिसान तेल से मिला हुआ हर बछड़े पीछे श्रोर हर मेंढ़े पीछे अढ़ाई सेर चढ़ाइयो॥ २१। श्रोर सातों मेम्नों में से हर मेम्ना पीछे सवा सेर चढ़ाइयो॥ २२। श्रोर अपने प्रायश्चित्त के निमित्त पाप की भेंट के लिये एक बकरी॥

२३। तुम बिहान के होम के बलिदान से अधिक जो सदा जलाया जाता है चढ़ाया करो॥ २४। परमेश्वर के सुगंध के लिये होम के बलिदान के मांस के। सात दिन भर प्रतिदिन इस रीति से चढ़ाइयो

नित्य के होम की भेंट और पीने की भेंट को छोड़ के इसे चढ़ाइयो॥
२५। सातवें दिन तुम्हारा पवित्र बुलावा है उस में तुम कोई संसारिक
कार्य न करना॥ २६। और पहिले फल के दिन में भी जब तुम भोजन
की भेंट अपने अठवारों के पीछे परमेश्वर के आगे चढ़ाइयो तो तुम्हारे
लिये पवित्र बुलावा होवे कोई संसारिक कार्य न कीजियो॥ २७। और
तुम परमेश्वर के सुगंध के लिये होम की भेंट चढ़ाइयो दो बछड़े एक मेंढ़ा
पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने चढ़ाइयो॥ २८। और उन के
भोजन की भेंट पौने चार सेर पिसान तेल से मिला हुआ हर बछड़े पीछे
और अढ़ाई सेर हर मेंढ़े पीछे॥ २९। और सवा सेर सातों मेम्नों
में से हर एक मेम्ना पीछे॥ ३०। और एक बकरी का मेम्ना जिसतें
तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त में दिया जाय॥ ३१। सो नित्य के होम की भेंट
और उस के भोजन की भेंट जो तुम्हारे लिये निष्खोट होवे और उन के
पीने की भेंट छोड़ के उसे जो निष्खोट होवे चढ़ाइयो॥

२९ उंतीसवां पर्ब्ब।

और सातवें मास की पहिली तिथि में तुम्हारा पवित्र बुलावा होगा
तुम कोई सेवा का कार्य न कीजियो यह तुम्हारे नरसिंगे फूकने
का दिन है॥ २। और तुम परमेश्वर के सुगंध के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा
और पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने होम का बलिदान चढ़ाइयो॥
३। और उन के भोजन की भेंट हर बछड़े पीछे पौने चार सेर पिसान तेल
से मिला हुआ और हर मेंढ़े पीछे अढ़ाई सेर॥ ४। और सातों मेम्नों
के लिये हर मेम्ना पीछे सवा सेर॥ ५। और बकरी का एक मेम्ना पाप की
भेंट के लिये जिसतें तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त किया जाये॥ ६। मास के होम
की भेंट और उस के भोजन की भेंट और प्रतिदिन के होम की भेंट और
उस के भोजन की भेंट और उन के पीने की भेंट उन के रीति के समान
आग से किये हुए बलिदान के अधिक परमेश्वर के सुगंध के लिये
चढ़ाइयो॥ ७। और इस सातवें मास की दसवीं तिथि में पवित्र बुलावा
होगा और तुम अपने प्राण को क्लेश दीजियो और कोई कार्य न करियो॥
८। परंतु परमेश्वर के सुगंध के होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक

मेंढ़ा पहिले बरस के सात मेम्ने चढ़ाइयो वे तुम्हारे लिये निष्खोट होवें॥
९। और उन के भोजन की भेंट पौने चार सेर पिसान तेल से मिला हुआ
बछड़ा पीछे और हर मेंढ़ा पीछे अढ़ाई सेर॥ १०। और सातों मेम्नों
के लिये हर मेम्ना पीछे सवा सेर॥ ११। पाप के प्रायश्चित्त की भेंट के
और नित्य के होम की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उन
के पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥
१२। और सातवें मास की पंद्रहवीं तिथि में तुम्हारा पवित्र बुलावा
होगा उस दिन तुम सेवा का कोई कार्य न करो और सात दिन तक
परमेश्वर के लिये पर्ब्ब करो॥ १३। फिर तुम होम की भेंट के लिये
परमेश्वर के सुगंध के लिये तेरह बछड़े दो मेंढ़े और पहिले बरस के चौदह
मेम्ने आग से किये हुए बलिदान चढ़ाइयो ये सब निष्खोट होवें॥ १४।
और उन के भोजन की भेंट तेल से मिला हुआ पौने चार सेर पिसान
तेरह बछड़ों में से हर बछड़े के लिये अढ़ाई सेर दो मेंढ़ों में से हर मेंढ़े
पीछे॥ १५। और चौदह मेम्नों में से हर मेम्ना पीछे सवा सेर॥ १६।
नित्य के होम की भेंट और उस के भोजन की भेंट और उस के पीने की
भेंट से अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना चढ़ाइयो॥
१७। और दूसरे दिन बारह बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चौदह
निष्खोट मेम्ने चढ़ाइयो॥ १८। और उन के भोजन की भेंट और उन
के पीने की भेंट बछड़ों और मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती के
और रीति के समान होवें॥ १९। नित्य के होम की भेंट के और उस
के भोजन की भेंट के और उन के पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट
के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ २०। और तीसरे दिन ग्यारह बछड़े
दो मेंढ़े और पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्ने॥ २१। और उन के
भोजन की भेंट और उन के पीने की भेंट बछड़ों और मेंढ़ों और मेम्नों उन
की गिनती के और रीति के समान होवें॥ २२। नित्य के होम की
भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उस के पीने की भेंट के
अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना चढ़ाइयो॥ २३।
और चौथे दिन दस बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चौदह निष्खोट
मेम्ने॥ २४। उन के भोजन की भेंट और उन के पीने की भेंट बछड़ों

और मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती के और रीति के
समान होवें॥ २५। नित्य के होम की भेंट के और उस के भोजन
की भेंट के और उस के पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट के
लिये बकरी का एक मेम्ना होवे॥ २६। और पांचवें दिन नव
बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्ने॥ २७। और
उन के भोजन की भेंट और उन के पीने की भेंट बछड़ों और मेंढ़ों और
मेम्नों के लिये उन की गिनती के और रीति के समान होवें॥ २८।
नित्य के होम की भेंट और उस के भोजन की भेंट के और उस के पीने
की भेंट के अधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे॥ २९। और
छठवें दिन आठ बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्ने॥
३०। और उन के भोजन की भेंट और उन के पीने की भेंट बछड़ों और
मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती के और रीति के समान होवे॥
३१। नित्य के होम की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उस
के पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे।

३२। और सातवें दिन सात बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चौदह
निष्खोट मेम्ने॥ ३३। और उन के भोजन की भेंट और उन के पीने
की भेंट बछड़ों और मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती के और
रीति के समान होवे॥ ३४। नित्य के होम की भेंट के और उस के
भोजन की भेंट के और उस के पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट के
लिये एक बकरी होवे॥ ३५। आठवें दिन तुम्हारी पवित्र सभा होगी
तुम उस दिन सेवा का कोई कार्य न कीजियो॥ ३६। फिर तुम एक
बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने होम की भेंट के
कारण परमेश्वर के सुगंध के लिये आग से बनाई हुई भेंट चढ़ाइयो॥
३७। और उन के भोजन की भेंट और उन के पीने की भेंट बछड़ों
और मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती के और रीति के समान
होवे॥ ३८। नित्य के होम की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के
और उस के पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी
होवे॥ ३९। अपनी मनौतियों के और अपनी वांछित भेंटों के और
अपने होम की भेंटों के और भोजन की भेंटों के और पीने की भेंटों के

और अपने कुशल की भेंटों के अधिक तुम इन्हें अपने ठहराये ज्ञए पर्बों
में कीजियो॥ ४०। और मूसा ने परमेश्वर की समस्त आज्ञा के समान
इसराएल के संतानों से कहा॥

३० तीसवां पर्ब्ब।

यह वुह बात है जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी और मूसा
ने गोष्ठियों के प्रधानों से इसराएल के संतान के बिषय में कहा॥
२। यदि कोई पुरुष परमेश्वर की मनौती माने अथवा किरिया खाके
अपने प्राण को बंधन में करे तो वुह अपनी बाचा को न तोड़े परंतु जो
कुछ उस ने अपने मूंह से कहा है संपूर्ण करे॥ ३। और यदि कोई स्त्री
परमेश्वर की मनौती माने और अपनी लड़काई में अपने पिता के घर
में होते ज्ञए आप को बाचा में बांधे॥ ४। और उस का पिता उस की
मनौती और उस की बाचा जिस्से उस ने अपने प्राण को बांधा है सुन के
चुप हो रहे तो उस की सब मनौतियां और हर एक बाचा जिस्से उस ने
अपने प्राण को बांधा है स्थिर रहेगी॥ ५। परंतु यदि उस का पिता
सुनते ज्ञए उसे मान्ने न देवे तो उस की कोई मनौती और कोई बाचा जो
उस ने अपने प्राण को उस्से बांधा न ठहरेगी और परमेश्वर उस स्त्री को
क्षमा करेगा क्योंकि उस के पिता ने उसे मान्ने न दिया॥ ६। और जब
उस ने मनौती मानी अथवा अपने मूंह से अपने प्राण को किसी बाचा से
बांधा और यदि उस का पति होवे॥ ७। और उस का पति सुन के
उस दिन चुपका हो रहा तो उस की मनौतियां ठहरेंगी और उस की
बाचा जिन से उस ने अपने प्राण को बांधा ठहरेगी॥ ८। परंतु यदि
उस का पति सुन के उसी दिन उस ने उसे मान्ने न दिया हो तो उस ने उस
की मनौती को जो उस ने मानी और उस की बाचा को जो उस ने अपने
मूंह से अपने प्राण को उस्से बांधा वृथा किया तो परमेश्वर उस स्त्री को
क्षमा करेगा॥ ९। परंतु बिधवा और त्यक्त स्त्री अपनी हर एक मनौती
जिस्से उन्हों ने अपने प्राण को बांधा उन पर बनी रहेगी॥ १०।
और यदि उस ने अपने पति के घर होते ज्ञए कुछ मनौती मानी हो और
किरिया करके किसी बाचा में आप को बांधे हो॥ ११। उस का पति

सुन के चुप हो रहे और उसे न रोके तो उस की मनौतियां ठहरेंगी और
उस की हर एक बाचा जिस्से उस ने अपने प्राण को बांधा ठहरेगी॥
१२। परंतु यदि सुनके उसी दिन उस का पति उसे बृथा करे तो जो
कुछ मनौतियां और अपने प्राण के बंधन के बिषय में उस के मूंह से
निकला सो न ठहरेगी उस के पति ने उन्हें बृथा किया परमेश्वर उसे क्षमा
करेगा॥ १३। सब मनौतियां और किरिया जिस्से उस ने अपने प्राण
को दुःख देने के लिये बांधा उस का पति चाहे तो उसे ठहरावे और चाहे
मिटावे॥ १४। परंतु यदि उस का पति सुन के प्रतिदिन चुप रहे तो
उस ने उस की समस्त मनौतियों और बाचों को जो उस पर है स्थिर
किया क्योंकि सुन के उस ने अपने चुप रहने से उन्हें स्थिर किया॥ १५।
परंतु यदि उस ने सुन लिया और उस के पीछे उसे बृथा किया तो वुह
उस का पाप भोगेगा॥ १६। पति और उस की पत्नी के मध्य में और
पिता पुत्री के मध्य में जब पुत्री लड़काई के समय में पिता के घर होवे
ये बिधि जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥

३१ एकतीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों
का पलटा मिदयानियों से ले इस के पीछे तू अपने लोगों में मिल
जायगा॥ ३। तब मूसा ने लोगों से कहा कि आपुस में कितनों को संग्राम
के लिये लैस करो और मिदयानियों का साम्हना करो जिसतें परमेश्वर का
पलटा मिदयानियों से लेओ॥ ४। इसराएल की समस्त गोष्ठियों में से
हर एक गोष्ठी से एक एक सहस्र संग्राम करने को भेजो॥ ५। सो
इसराएल के सहस्रों में से हर गोष्ठी पीछे एक सहस्र बारह सहस्र
हथियार बंध युद्ध के लिये सौंपे गये॥ ६। तब मूसा ने उन्हें इलिअज़र
याजक के बेटे फीनिहास के साथ करके लड़ाई पर भेजा और पवित्र
पात्र और फूकने के नरसिंगे उस के हाथ में थे॥ ७। जैसे परमेश्वर
ने मूसा को आज्ञा किई थी उन्हों ने मिदयानियों से युद्ध किया और सारे
पुरुषों को मार डाला॥ ८। और उन्हों ने उन जूझे ऊओं से अधिक
मिदयान के राजा अवी और रक़म और सूर और हूर और रबअ़ को

जो मिद्‌यान के पांच राजा थे प्राण से मारा और बऊर के बेटे बलआम
को भी खड्ग से मार डाला॥ ९। और इसराएल के संतानों ने मिद्‌यान
की स्त्रियों को और उन के लड़कों को बंधुआई में लिया और उन के
पशु और चौपाये और संपत्ति समस्त लूट लिया॥ १०। और उन की
सारी बस्तियों जिन में वे रहते थे और उन के सुंदर गढ़ों को फूंक दिया॥
११। और उन्हों ने सारी लूट और समस्त मनुष्य और पशु को अहेर
किया॥ १२। और मूसा और इलिअज़र याजक और इसराएल के
समस्त संतानों की मंडली छावनी में मोअब के चौगानों में जो यरदन
के लग यरीहू है बंधुए और लूट और अहेर को लाये॥ १३। तब मूसा
और इलिअज़र याजक और मंडली के समस्त प्रधान उन्हें आगे से मिलने
के लिये छावनी में से बाहर गये॥

१४। और मूसा सेना के प्रधानों से और सहस्रों के पतिन से
और सैकड़ों के पतिन से जो लड़ाई से आये क्रुद्ध हुआ॥ १५। और
मूसा ने उन्हें कहा कि तुम ने सब स्त्रियों को जीती रक्खा॥ १६। देखो
इन्हों ने बलआम के मंत्र से इसराएल के बंश को फग़ूर के बिषय में
परमेश्वर के बिरोध में अपराध करवाया सो परमेश्वर की मंडली में
मरी पड़ी॥ १७। इस लिये लड़कों में से हर एक बेटे को और हर एक
स्त्री को जो पुरुष से संयुक्त हुई हो प्राण से मारो॥ १८। परंतु वे बेटी जो
पुरुष से संयुक्त न हुई हैं उन्हें अपने लिये जीती रक्खो॥ १९। और
तुम सात दिन लों छावनी से बाहर रहो जिस किसी ने मनुष्य को मारा
हो और जिस किसी ने लोथ को छूआ हो वुह आप को और अपने
बंधुओं को तीसरे दिन और सातवें दिन पवित्र करे॥ २०। तुम अपने
समस्त बस्त्र और सब जो चमड़े के बने हुए हैं और सब बकरी के रोम के
कार्य और काष्ठ के पात्र शुद्ध करो॥ २१। तब इलिअज़र याजक ने
उन योद्धाओं को जो लड़ाई में गये थे कहा कि यह व्यवस्था की बिधि है
जो परमेश्वर ने मूसा से आज्ञा किई॥ २२। सोना रूपा पीतल लोहा
रांगा सीसा॥ २३। और समस्त बस्तें जो आग में ठहरें तुम उन्हें आग
में डालो और पवित्र करो तथापि वुह अलग किये हुये जल से पवित्र
किया जायगा और सब बस्तें जो आग में नहीं ठहरतीं तुम उन्हें जल

में डालो॥ २४। और सातवें दिन अपने कपड़े धोके पवित्र होओगे
उस के पीछे छावनी में आओ॥ २५। फिर परमेश्वर मूसा से कहके
बोला॥ २६। कि तू और इलिअज़र याजक और मंडली के सब प्रधान
मिल के मनुष्य की और पशुन की जो लूट में आये हैं गिनती करो॥
२७। और लूट को दो भाग करो एक उन को जो संग्राम में लड़े और
एक समस्त मंडली को देओ॥ २८। और योड्डा से जो लड़ाई में चढ़ गये
थ परमेश्वर के लिये कर लेओ पांच सौ में एक प्राणी चाहे मनुष्य हों
चाहे गाय बैल चाहे गदहे हों चाहे भेड़ बकरी॥ २९। और इलिअज़र
याजक को दे जिसतें परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट होवे॥ ३०।
और इसराएल के संतानों के भाग में से क्या मनुष्य क्या गाय बैल क्या
गदहे क्या भेड़ बकरी पचास पचास पीछे एक एक ले और लावियों को
जो परमेश्वर के छावनी की रक्षा करते हैं दे॥ ३१। सो मूसा और
इलिअज़र याजक ने वैसाही किया जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
किई॥ ३२। लूट का बचा हुआ जो योड्डा लोगों के पास था यह था
छः लाख पचहत्तर सहस्र भेड़॥ ३३। और बहत्तर सहस्र गाय बैल॥
३४। और एकसठ सहस्र गदहे॥ ३५। और वे लड़कियां जो पुरुष से
सयुक्त न थीं बत्तीस सहस्र थीं॥ ३६। तो आधा जो योड्डा लोगों का भाग
ठहरा यह था तीन लाख सैंतीस सहस्र पांच सौ भेड़॥ ३७। और
परमेश्वर का कर भेड़ में से छः सौ पचहत्तर थीं॥ ३८। और गाय बैल
छत्तीस सहस्र थे जिनमें से परमेश्वर का कर बहत्तर थे॥ ३९। और
गदहों में से जो तीस सहस्र पांच सौ थे परमेश्वर का भाग एकसठ थे॥
४०। और मनुष्य में से जो सोलह सहस्र थे परमेश्वर का कर बत्तीस जन
हुए॥ ४१। सो मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के समान उस कर को जो
परमेश्वर की उठाने की भेंट थी इलिअज़र याजक को दिया॥ ४२।
और इसराएल के संतानों का भाग जो मूसा ने योड्डा लोगों से लिया॥
४३। सो वुह आधा जो मंडली का भाग हुआ यह था तीन लाख सैंतीस
सहस्र पांच सौ भेड़॥ ४४। और छत्तीस सहस्र ढोर॥ ४५। और
तीस सहस्र पांच सौ गदहे॥ ४६। और सोलह सहस्र जन॥ ४७।
जैसी परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा ने इसराएल के संतानों के भाग

में से हर पचास जीवधारी पीछे मनुष्य और पशु से एक एक लिया और
उसे लावियों को जो परमेश्वर के तंबू की रक्षा करते थे दिया॥ ४८।
तब सेना के सहस्र पति और शत पति मूसा के पास आये॥ ४९। और
उन्हों ने मूसा से कहा कि तेरे सेवकों ने समस्त योद्धाओं को जो हमारी आज्ञा
में हैं गिना और उन में से एक पुरुष भी न घटा॥ ५०। सो हम हर
एक वस्तु में से जो हर एक ने पाई परमेश्वर के लिये भेंट लाये हैं सोने के
गहने और सीकरें और कड़े और अंगूठियां और बालियां और जंत्र
जिसतें हमारे प्राणों के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त होवे॥ ५१।
सो मूसा और इलिअज़र याजक ने सोने के बनाये हुए समस्त गहने उन
से लिये॥ ५२। और भेंट का सब सोना जो सहस्र पति और शत पतिन
ने परमेश्वर के लिये चढ़ाया सो मन आठ एक का था॥ ५३। क्योंकि
योद्धों में से हर एक जन अपने अपने लिये लूट लाया था॥ ५४। सो
मूसा और इलिअज़र याजक उस सोने को जो उन्हों ने सहस्रों और
सैकड़ों के प्रधानों से लिया मंडली के तंबू में लाये जिसतें परमेश्वर के
आगे इसराएल के संतानों का स्मरण हो।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब।

अब रूबिन और जद के संतानों के ढोर अति बहुत थे सो जब उन्हों
ने यअज़ीर और जिलिअद के देश को देखा कि ढोर के लिये
बहुत अच्छा है॥ २। तो उन्हों ने आके मूसा और इलिअज़र याजक
और मंडली के अध्यक्षों से कहा॥ ३। कि अतरात और दैबून और
यअज़ीर और तिमरः और हसबून और इलआली और शबाम और
नबू और बऊन का देश॥ ४। जिसे परमेश्वर ने इसराएल की मंडली
के आगे मारा ढोर का देश और तेरे दासों के ढोर हैं॥ ५। इस
कारण उन्हों ने कहा यदि आप की दृष्टि में हम लोगों ने अनुग्रह पाया है
तो इस देश को अपने सेवकों के अधिकार में दीजिये और हमें यरदन
पार न ले जाइये॥ ६। मूसा ने जद के संतान और रूबिन के संतान से
कहा कि क्या तुम्हारे भाई लड़ाई करने जावें और तुम यहीं बैठे
रहोगे।

७। जिस देश को परमेश्वर ने उन्हें दिया है उस में जाने से इसराएल
के संतानों के मन को क्यों घटाते हो॥ ८। जब मैं ने तुम्हारे पितरों
को क़ादिसबरनीअ से उस देश को देखने भेजा उन्हों ने भी ऐसा ही
किया॥ ९। और जब वे इसकाल की तराई को पहुंचे और उस देश
को देखा तो उन्हों ने इसराएल के संतानों के मन को घटा दिया जिसतें
वे उस देश को जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था न जावें॥ १०। और
तभी परमेश्वर का क्रोध भड़का और उस ने किरिया खाके कहा॥
११। कि निश्चय लोगों में से जो मिस्र से निकले बीस बरस से लेके ऊपर
लों कोई उस देश को जिस के बिषय में मैं ने अबिरहाम और इज़हाक
और यअक़ूब से किरिया खाई है न देखेगा इस कारण कि वे निरधार
मेरी बात पर न चले॥ १२। केवल क़नीज़ी यफ़ुन्नः का बेटा कालिब
और नून का बेटा यहूसूअ क्योंकि वे परमेश्वर की ओर निरधार चले॥
१३। तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने उन्हें
बन में चालीस बरस लों भरमाया यहां लों कि वुह समस्त पीढ़ी जो
परमेश्वर के आगे बुराई करती थी नष्ट हुई॥ १४। और देखो तुम
लोग अपने पितरों की संती पाप मय जन बढ़ गये हो जिसतें परमेश्वर के
क्रोध को इसराएलियों की ओर बढ़ाओ॥ १५। यदि तुम उस्से फिर
जाओगे तो वुह उन्हें फिर बन में छोड़ देगा और तुम इन सब लोगों
को नाश करोगे॥ १६। तब वे उस के पास आये और बोले कि हम
अपने ढोर के लिये यहां भेड़ शाले और अपने बालकों के कारण नगर
बनावेंगे॥ १७। पर हम हथियार बांधे हुए लैस होके इसराएल के
संतानों के आगे आगे जायेंगे यहां लों कि उन्हें उन के स्थान लों पहुंचावें
और देश के बासियों के कारण हमारे बालक घेरित नगरों में रहेंगे॥
१८। हम अपने घरों को न फिरेंगे जब लों इसराएल के संतानों में से
हर एक अपना अपना अधिकार न पा लेवें॥ १९। क्योंकि हम उन के
संग यरदन के उस पार अथवा आगे अधिकार न लेंगे इस लिये कि हमारा
अधिकार पूर्ब का यरदन के इस पार मिला है॥ २०। मूसा ने उन्हें
कहा कि यदि तुम यह करो और परमेश्वर के आगे हथियार बांधे हुए
जाओगे॥ २१। और हथियार बांध के परमेश्वर के आगे यरदन के

उस पार जाओ यहां लें कि वुह अपने बैरियों को अपने आगे से दूर
करे॥ २२। और वुह देश परमेश्वर के आगे बश में होय तो उस के
पीछे तुम फिर आओगे और परमेश्वर के और इसराएल के आगे निर्दोष
ठहरोगे तब परमेश्वर के आगे तुम्हारा अधिकार होगा॥ २३। परंतु
यदि तुम यूं न करोगे तो देखो कि तुम परमेश्वर के आगे पापी ऊए और
निश्चय जानो कि तुम्हारा पाप तुम्हें पकड़ेगा॥ २४। तुम अपने
बालकों के लिये नगर बनाओ और अपनी भेड़ों के लिये भेड़ शाले और
जो तुम्हारे मुंह से निकला है सो करो॥ २५। तब जद के संतान और
रूबिन के संतान मूसा से कहके बोले कि जैसी मेरे स्वामी ने आज्ञा किई
है वैसाही तेरे सेवक करेंगे॥ २६। हमारे बालक हमारी पत्नियां
हमारी झुंड हमारे ढोर जिलिअद के नगरों में रहेंगे॥ २७। परंतु
जैसा मेरा प्रभु कहता है तेरे सेवक हर एक हथियार बांधे ऊए संग्राम के
लिये परमेश्वर के आगे पार जायेंगे॥ २८। तब मूसा ने उन के बिषय
में इलिअज़र याजक को और नून के बेटे यहूसूअ को और इसराएल के
संतानों की गोष्ठी के प्रधान के पितरों को कहा॥ २९। और मूसा ने उन्हे
कहा कि यदि जद के संतान और रूबिन के संतान परमेश्वर के आगे
तुम्हारे साथ यरदन के पार हथियार बांध के जावें और लड़ें और देश
तुम्हारे बश में आवे तो तुम जिलिअद का देश उन का अधिकार
कर दीजियो॥ ३०। परंतु यदि वे हथियार बांध के तुम्हारे साथ पार
न जावें तो वे एकट्ठे रहके कनआन के देश में अधिकार पावें॥ ३१।
तब जद के संतान और रूबिन के संतान उत्तर में बोले कि जैसा
परमेश्वर ने तेरे सेवकों को कहा हम वैसा ही करेंगे॥ ३२। हम
हथियार बांध के परमेश्वर के आगे उस पार कनआन के देश को जायेंगे
जिसतें यरदन के इधर का देश हमारा अधिकार होवे॥ ३३। तब
मूसा ने अमूरियों के राजा सैहून का राज्य और बसन के राजा ऊज का
राज्य वुह देश उन के नगर समेत जो उस सिवाने में है और देश के चारों
ओर के नगरों को जद के संतान और रूबिन के संतान और यूसुफ़ के
पुत्र मुनस्सी की आधी गोष्ठी को दिया॥ ३४। तब जद के संतान ने
दैबून और अतरात और अरआयर॥ ३५। और अतरात और शूफान

और यअज़ीर और युगबिहाह॥ ३६। और बैतनिमरः और घेरे ऊए
नगर भेड़ों के लिये भेड़ शाले बनाये॥ ३७। और रूबिन के संतान ने
हसबून और इलआली और क़रयतैन॥ ३८। और नबू और बअलम-
ऊन उन के नाम फेरे गये और शिबमः और उन नगरों के जो उन्हों ने
बनाये और ही नाम रक्खे॥ ३९। तब मकीर के संतान मुनस्सी के
बेटे जिलिअद को गये और उसे लेलिया और उस में के अमूरियों को
उठा दिया॥ ४०। और मूसा ने जिलिअद को मकीर मुनस्सी के बेटे को
दिया और वुह उस में बसा॥ ४१। और मुनस्सी का बेटा याइर
निकला और उस के छोटे छोटे नगरों को ले लिया और उन का नाम
याइर गांव रक्खा॥ ४२। और नूबा गया और क़िनात और उस के
गांओं को लेलिया और उस का नाम अपने नाम के समान नूबह रक्खा॥

३३ तेंतीसवां पर्ब्ब।

मूसा और हारून के बश में होके मिस्र देश से अपनी अपनी सेना
समेत इसराएल के संतान बाहर निकल आये उन की यात्रा ये
हैं॥ २। और मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के समान उन की यात्रा के
अनुसार उन का कूंच लिख रक्खा और उन की यात्रा के अनुसार उन का
कूंच यह है॥ ३। कि इसराएल के संतान पहिले मास की पंद्रहवीं
तिथि में बीत जाने के पर्ब के दूसरे दिन रामसीस से बड़े बल के साथ
यात्रा करके समस्त मिस्रियों की दृष्टि में सिधारे॥ ४। क्योंकि
मिस्रियों ने अपने समस्त पहिलौंठों को जिन्हें परमेश्वर ने उन में नाश
किया था गाड़ा परमेश्वर ने उन के देवतों को भी न्याय का दंड दिया॥
५। सो इसराएल के संतानों ने रामसीस से उठके सुक्कात में डेरे
किये॥ ६। और सुक्कात से चलके ऐताम में जो बन के सिवाने में है
डेरा किया॥ ७। फिर ऐताम से कूंच करके फीउलहीरात को जो
बअलसफून के सन्मुख है फिर गये और मिजदाल के आगे डेरा किया॥
८। फिर फीउलहीरात से चले और समुद्र के मध्य में से निकल के बन
में आये और ऐताम के बन में तीन दिन के टप्पे पर गये और मरः में
डेरा किया॥ ९। और मरः से चलके ऐलीम में आये जहां पानी के

बारह सोते और छोहाड़े के सत्तर पेड़ थे और वहां डेरा किया॥ १०।
और ऐलीम से यात्रा करके लाल समुद्र के लग डेरा किया॥ ११। और
लाल समुद्र से चलके सीन के बन में डेरा किया॥ १२। और सीन के
बन से यात्रा करके दफ़कः में डेरा किया॥ १३। और दफ़कः से चलके
अलूस में डेरा किया॥ १४। और अलूस से चलके रफ़ीदीम में डेरा
किया वहां लोगों के पीने के लिये पानी न था॥ १५। और रफ़ीदीम से
चलके सीना के अरण्य में आये॥ १६। और सीना के अरण्य से चलके
क़िबरातुलताबः में डेरा किया॥ १७। और क़िबरातुलताबः से यात्रा
करके हसीरात में डेरा किया॥ १८। और हसीरात से चलके रितमः
में डेरा किया॥ १९। और रितमः से चलके रुम्मानफ़रस में डेरा
किया॥ २०। और रुम्मानफ़रस से चलके लिबनः में डेरा किया॥
२१। और लिबनः से चलके रिस्सह में डेरा किया॥ २२। और
रिस्सह से चलके क़हीलाथा में डेरा किया॥ २३। और क़हीलाथा से
चलके सफ़र पहाड़ में डेरा किया॥ २४। और सफ़र पहाड़ से चलके
हरादः में डेरा किया॥ २५। और हरादः से चलके मक़हीलात में
डेरा किया॥ २६। और मक़हीलात से चलके तहत में डेरा किया॥
२७। और तहत से चलके तारह में डेरा किया॥ २८। और तारह से
यात्रा करके मितकः में डेरा किया॥ २९। और मितकः से चलके
हश्मूना में डेरा किया॥ ३०। और हश्मूना से चलके मूसीरूस में डेरा
किया॥ ३१। और मूसीरूस से चलके यअ्क़ान में डेरा किया॥ ३२।
और यअ्क़ान से चलके जिदजाद में डेरा किया॥ ३३। और
जिदजाद से चलके युतबता में डेरा किया॥ ३४। और युतबता से
चलके अब्रनः में डेरा किया॥ ३५। और अब्रनः से चलके असयूनजब्र
में डेरा किया॥ ३६। और असयूनजब्र से सिन के अरण्य में जो
क़ादिस है डेरा किया॥ ३७। और क़ादिस से चलके हूर पर्ब्बत के बन
में जो अदूम के देश का सिवाना है डेरा किया॥ ३८। हारून याजक
परमेश्वर की आज्ञा से हूर पर्ब्बत पर चढ़ गया और वहां मर गया यह
इसराएल के संतानों के मिस्र से बाहर निकलने के चालीसवें बरस के
पांचवें मास की पहिली तिथि थी॥ ३९। और हारून एक सौ तेईस

बरस का था जब वुह हूर पर्ब्बत पर मर गया॥ ४०। और अराद राजा
कनआनी ने जो कनआन देश की दक्षिण ओर रहता था सुना कि
इसराएल के संतान आ पहुंचे॥ ४१। और हूर पर्ब्बत से यात्रा करके
ज़लमनः में डेरा किया॥ ४२। और ज़लमनः से चलके फ़ूनोन में डेरा
किया॥ ४३। और फ़ूनोन से चलके ओबात में डेरा किया॥ ४४।
और ओबात से चलके ऐयेअबारीम में जो मोअब का सिवाना है डेरा
किया॥ ४५। और ऐयीम से चलके दैबूनजद्द में डेरा किया॥ ४६।
और दैबूनजद्द से चलके अलमूनदबलतैमः में डेरा किया॥ ४७। और
अलमूनदबलतैमः से यात्रा करके अबरीम पर्ब्बतों पर नबू के आगे डेरा
किया॥ ४८। और अबरीम पर्ब्बतों से चलके मोअब के चौगानों में
यरदन के तीर पर जो अरीहू के लग है डेरा किया॥ ४९। और
यरदन के तीर बैतुलयसीमात से यात्रा करके अबीलसत्तीन से होके मोअब
के चौगानों में डेरा किया॥

५०। और परमेश्वर मोअब के चौगानों में अबीलसत्तीन के तीर
अरीहू के लग मूसा से कहके बोला॥ ५१। कि इसराएल के संतानों को
आज्ञा कर और कह कि जब तुम यरदन से पार होके कनआन के देश में
पहुंचो॥ ५२। तब तुम उन सब को जो उस देश के बासी हैं अपने सन्मुख
से दूर करो उन की सारी प्रतिमा को नाश करो और उन की ढाली हुई
मूर्त्तियों को नष्ट करो और उन के सब ऊंचे स्थानों को ढा देओ॥ ५३। और
उस देश से बिदेश करके उस में बास करो क्योंकि मैं ने वुह देश तुम्हें तुम्हारे
अधिकार के लिये दिया है॥ ५४। और तुम चिट्ठी डाल के उस देश
को आपस में अपने घराने के समान बांट लेओ बहुतों को बहुत अधिकार
देओ और थोड़ों को थोड़ा हर एक का उसी में स्थान होगा जहां उस
की चिट्ठी पड़े अपने पितरों की गोष्ठियों के समान तुम अधिकार लेओ॥
५५। परंतु यदि तुम उस देश के बासियों को अपने आगे से दूर न करोगे
तो यूं होगा कि जिन्हें तुम रहने देओगे वे तुम्हारी आंखों में कांटे और
तुम्हारे पांजरों में कील होंगे और उस देश में जहां तुम बसोगे तुम्हें
सताएंगे॥ ५६। परंतु अंत को यह होगा कि जो कुछ मैं उन से किया
चाहता हूं सो तुम से करूंगा॥

३४ चेंातीसवां पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों
को आज्ञा कर और कह कि जब तुम कनआन के देश में पहुंचो [वुह
देश जो तुम्हारे अधिकार में पड़ेगा अर्थात् कनआन का देश उस के
सिवाने सहित]॥ ३। तब सीन के बन से अदूम के सिवाने लों तुम्हारी
दक्षिण दिशा होगी और तुम्हारा दक्षिण सिवाना खारी समुद्र के
अंत तीर पूर्ब दिशा होगी॥ ४। और तुम्हारा दक्षिण सिवाना
अक्राबीम के चढ़ाव के मार्ग लों घेरेगा और सीन लों पहुंचेगा और
कादिशबरनीअ की दक्षिण की ओर निकलेगा और हसरअद्दार लों
जायगा और अज़मून लों चला जायगा॥ ५। और यह सिवाना
अज़मून से घूम के मिस्र की नदी लों पहुंचेगा और उस का निकास समुद्र
से होगा॥ ६। और तुम्हारा पश्चिम का सिवाना महा समुद्र होगा यही
तुम्हारा पश्चिम सिवाना होगा॥ ७। और यह तुम्हारा उत्तर सिवाना
होगा महा समुद्र से हूर पर्बत लों॥ ८। और हूर पहाड़ से हमात के
पैठ लों और वुह सिवाना सीदाद लों जायगा॥

९। और वुह सिवाना ज़िफ़रून को और उस का निकास हसरऐनान
से हो जायगा यही तुम्हारी उत्तर दिशा है॥ १०। और तुम अपने
लिये पूर्ब दिशा हसरऐनान से लेके सफ़ाम लों ठहराइयो॥ ११।
और उस का सिवाना सफ़ाम से लेके रिबलः लों आईन के पूर्ब ओर होगा
और सिवाना वहां से उतर के किन्नारात के समुद्र की पूर्ब दिशा में
मिलेगा॥ १२। और उस का सिवाना यरदन को उतरेगा और उस का
निकास खारी समुद्र लों होगा यही तुम्हारे देश और उन के तीर समेत
चारों दिशा में होंगे॥ १३। फिर मूसा ने इसराएल के संतानों से कहा कि
यह वुह देश है जिस के अधिकारी तुम चिट्ठी से होओगे जिस के विषय में
परमेश्वर ने कहा कि तू साढ़े नव गोष्ठियों को बांट दीजियो॥ १४।
क्योंकि रूबिन की गोष्ठी ने अपने पितरों के घराने के समान और जद के
संतान ने अपनी गोष्ठी के घराने के समान और मनस्सी की आधी गोष्ठी
ने अपने घराने के समान पाया॥ १५॥ उन अढ़ाई गोष्ठियों ने यरदन

के इस पार अरीहू के लग पूर्ब दिशा को अपना अधिकार पाया॥ १६।
फिर परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा करके कहा॥ १७। वे लोग जो तुम्हारे
देश को बांटेंगे उन के ये नाम हैं इलिअज़र याजक और नून का बेटा
यहूसूअ॥ १८। और तुम अपने लिये हर गोष्ठी का एक प्रधान लेओ
जिसते उस देश को भाग करे॥ १९। और उन प्रधानों के नाम ये हैं
यफुन्ः का बेटा कालिब यहूदाह की गोष्ठी का॥ २०। और अम्मिहूद
का बेटा समूएल समऊन की गोष्ठी के घराने का॥ २१। और किसलून का
बेटा इलिदाद बिन्यमीन के घराने का॥ २२। और दान के संतान की
गोष्ठी का अध्यक्ष युगली का बेटा बक्की॥ २३। यूसफ़ के संतान के प्रधान
मुनस्सी के संतानों की गोष्ठी के लिये अफूद का बेटा हन्निएल॥ २४।
और इफ़रायम के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष सिफ़तान का बेटा कमूएल॥
२५। ज़बूलून के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष फ़रनाक का बेटा
इलीसफन॥ २६। और इशकार के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष
अज़ान का बेटा फ़लतिएल॥ २७। और यसर के संतान की गोष्ठी का
अध्यक्ष सलमी का बेटा अखिहूद॥ २८। और नफ़ताली के संतान
की गोष्ठी का अध्यक्ष अम्मिहूद का बेटा फिदहिएल॥ २९। ये वे लोग हैं
जिन्हें परमेश्वर ने आज्ञा किई कि कनआन का देश इसराएल के संतान
को अधिकार में बांट देवें।

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब॥

फिर परमेश्वर मोअब के चौगान में यरदन के तीर पर अरीहू के लग
मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों से कह कि लावियों
को अपने अधिकार में से अधिकार के लिये नगर बसने को देवें और
नगरों के चारों ओर के उप नगर उन्हें देओ॥ ३। और नगरों को उन
के रहने के कारण और आस पास उन के गाय बैल के कारण और उन
की संपत्ति और उन समस्त पशुन के लिये हों॥ ४। और नगरों के आस
पास जो तुम लावियों को देओगे चाहिये कि नगर की भीत से सहस्र
हाथ बाहर होवे॥ ५। और तुम नगर से लेके बाहर पूर्ब की ओर दो
सहस्र हाथ नापो और दक्षिण की ओर दो सहस्र हाथ और पच्छिम की

और दो सहस्र हाथ और उत्तर की ओर दो सहस्र हाथ और उन के मध्य में ये उन के लिये नगरों के उप नगर होंगे॥ ६। और उन नगरों के मध्य में जो तुम लावियों को देओगे छः नगर शरण के लिये होवें जिसे तुम घातक के लिये ठहराओ और उन में बयालीस नगर और भी मिला देओ॥ ७। सारे नगर जो तुम लावियों को देओगे अठतालीस नगर उन के उप नगर सहित॥ ८। और जो नगर तुम देओगे सो इसराएल के संतानों के अधिकार में से बहुत में से बहुत दीजियो और थोड़ में से थोड़ा सब कोई अपने अधिकार के समान अपने नगरों में से जो उस के अधिकार में है लावियों को दीजियो॥ ९। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १०। कि इसराएल के संतानों को आज्ञा कर और उन्हें कह कि जब तुम यरदन पार कनआन के देश में पहुंचो॥ ११। तब तुम अपने लिये नगरों को शरण नगर के कारण ठहराओ जिसतें वुह घातक जिस्से अनजाने घात हो जाय भाग के वहां जा रहे॥ १२। और वुह तुम्हारे लिये पलटा दायक से शरण नगर होगा और घातक जब लों बिचार के लिये मंडली के आगे खड़ा न होवे मारा न जाय॥ १३। सो जो जो नगर तुम देओगे उन में छः नगर शरण के लिये होंगे॥ १४। यरदन के इस पार तीन नगर दीजियो और कनआन के देश में तीन नगर दीजियो ये शरण नगर होंगे॥ १५। ये छः नगर इसराएल के संतानों और परदेशी और उन के कारण जो तुम्में रहते हैं शरण के लिये होंगे कि जो कोई अनजाने किसी को मारे उधर भाग जाय॥ १६। और यदि कोई किसी को लोहे के हथियार से मारे ऐसा कि वुह मर जाय तो वुह घातक है घातक अवश्य घात किया जायगा॥ १७। और यदि कोई किसी को ऐसा पत्थर फेंक मारे कि वुह मर जाय तो वुह घातक है घातक अवश्य मार डाला जाय॥ १८। अथवा कोई किसी को ऐसा लठ मारे कि वुह मर जाय तो वुह घातक है घातक अवश्य घात किया जाय॥ १९। लोहू का पलटा दायक वही घातक को आप ही उसे घात करे जब वुह उसे पावे उसे मार डाले॥ २०। और यदि कोई किसी को डाह से ढकेल देवे अथवा दांवघात से उसे पटक देवे कि वुह मर जाय॥ २१। अथवा बैरी को हाथ से मारे कि वुह मर जाय तो जिस ने उसे मारा वुह निश्चय मारा जायगा मारे हुए

का कुटुंब जब उस घातक को पावे उसे घात करे॥ २२। और यदि कोई किस को बिना बैर के अकस्मात् ढकेल देवे अथवा बिना दांवघात उस पर कोई बस्तु डाल देवे॥ २३। अथवा उसे बिन देखे ऐसा पत्थर फेंके कि उस पर गिरे और वुह मर जाय और वुह उस का बैरी न था और न उस की बुराई चाहता था॥ २४। तब मंडली उस घातक और लोहू के पलटा दायक के मध्य इन न्याय के समान बिचार करे॥ २५। कि मंडली उस घातक को लोहू के पलटा दायक के हाथ से छुड़ा के उस शरण नगर में जहां वुह भाग के गया था फिर भेज देवे और वुह प्रधान याजक के जो पवित्र तेल से अभिषिक्त हुआ था मरने लों वहीं रहे॥ २६। परंतु यदि घातक उस शरण नगर के सिवाने से जहां वुह भाग के गया था बाहर आवे॥ २७। और लोहू का पलटा दायक घातक को शरण नगर के सिवाने से बाहर पावे और घातक को मार डाले तो उस पर घात का अपराध नहीं॥ २८। क्योंकि उस घातक को उचित था कि प्रधान याजक की मृत्यु लों शरण नगर में रहता और उस के मरने के पीछे अपने अधिकार के देश में आता॥ २९। सो तुम्हारी सारी पीढ़ियों में और समस्त बस्तियों में न्याय के लिये यह ब्यवस्था होगी॥ ३०। जो किसी को मार डाले तो घातक साक्षियों की साक्षी के समान घात किया जाय परंतु एक साक्षी की साक्षी से किसी को घात न करना॥ ३१। और तुम घातक के प्राण की संती जो घात के योग्य है मोल मत लेओ परंतु वुह अवश्य मारा जाय॥ ३२। और तुम उस्से भी जो अपने शरण के नगर को भाग गया हो घात का मोल मत लेओ जिसतें वुह याजक की मृत्यु लों अपने देश में आ बसे॥ ३३। सो जहां हो उस देश को अशुद्ध मत कीजियो क्योंकि घात ही से देश अशुद्ध होता है और देश उस लोहू से जो उस में बहाया गया है शुद्ध नहीं होता परंतु केवल उसी के लोहू से जिस ने उसे बहाया है॥ ३४। सो तुम अपने निवास के देश को जहां मैं रहता हूं अशुद्ध न करो क्योंकि मैं परमेश्वर इसराएल के संतानों के मध्य में रहता हूं॥

३६ छत्तीसवां पर्ब्ब।

जलिआद के संतान के घराने के पितरों के प्रधान और यूसुफ के
संतान के घराने में से मुनस्सी के बेटे माखीर के बेटे जलआद के
संतान के घराने के पितरों के प्रधान आके मूसा के आगे और इसराएल
के संतानें के पितरों के आगे बोले॥ २। कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु को
आज्ञा किई कि चिट्ठी डाल के देश को इसराएल के संतानें को अधिकार
के लिये देवे और हमारे प्रभु ने परमेश्वर की आज्ञा से कहा कि हमारे
भाई सिलाफिहाद का अधिकार उस की बेटियों को दिया जाय॥ ३।
सो यदि वे इसराएल के संतानें की और गोष्ठियों के बेटों में से किसी
के साथ ब्याही जावें तो उन का अधिकार हमारे पितरों के अधिकार
से निकल जायगा और उस गोष्ठी के अधिकार में जहां वे ब्याही गईं मिल
जायगा सो हमारी चिट्ठी का अधिकार घट जायगा॥ ४। और जब
इसराएल के संतानें के आनंद का बरस आवे तब उन का अधिकार उस
घराने के अधिकार में जहां वे ब्याही गईं मिल जायगा और उन का
अधिकार हमारे पितरों की गोष्ठी के अधिकार में से निकल जायगा॥
५। तब मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा से इसराएल के संतानें से कहा कि
यूसुफ के संतान की गोष्ठी अच्छा कहती है॥ ६। सो परमेश्वर सिलाफिहाद
की बेटियों के बिषय में यों आज्ञा करता है कि वे जिसे चाहें उसे ब्याह
करें केवल अपने पिता की गोष्ठी में ब्याह करें॥ ७। जिसतें इसराएल
के संतानें का अधिकार एक गोष्ठी से दूसरी गोष्ठी में न जावे और
इसराएल के संतान में से हर जन आप को अपने ही पितरों की गोष्ठी के
अधिकार में रक्खे॥ ८। और हर एक बेटी इसराएल के संतानें की
किसी गोष्ठी में अधिकार रक्खे अपने बाप ही के घराने की गोष्ठी में से
एक की पत्नी होवे जिसतें इसराएल के संतान में हर जन अपने पिता के
अधिकार पर स्थिर रहे॥ ९। और अधिकार एक गोष्ठी में से दूसरी
गोष्ठी में न जाय परंतु इसराएल के संतान के घरानें में हर एक जन
अपने अधिकार में आप को रक्खे॥ १०। सो सिलाफिहाद की बेटियों
ने वैसा ही किया जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥ ११।

क्योंकि महलः और तिरजः और हजलः और मिलकः और नुअः सिला
फ़िहाद की बेटियां अपने चचेरे भाइयों के साथ व्याही गईं॥ १२।
यसुफ के बेटे मुनस्सी के घरानों में व्याही गईं और उन का अधिकार उन
के पिता की गोष्ठी में बना रहा॥ १३। ये वे आज्ञा और बिचार हैं जो
परमेश्वर ने मूसा की ओर से मोअब के चौगानों में यरदन के तीर पर
अरीहू के सन्मुख इसराएल के सतानों को आज्ञा किई॥

मूसा की पांचवीं पुस्तक जो बिवाद की कहाती है।

१ पहिला पर्ब्ब ।

ये वे बातें हैं जिन्हें मूसा ने यरदन के इस पार अरण्य में लाल समुद्र
के सन्मुख चौगान में फ़ारान और तोफ़ा और लाबन और हसीरात
और दीज़हब के मध्य में इसराएल के संतानों से कहा॥ २। हरिब से
क़ादिशबरनीअ लों शईर पर्वत के पथ से ग्यारह दिन का मार्ग है॥ ३।
और ऐसा हुआ कि चालीसवें बरस के ग्यारहवें मास की पहिली तिथि
में उन समस्त आज्ञाओं के समान जिन्हें परमेश्वर ने उसे दिई थीं जिसतें
इसराएल के संतानों से कही जावें मूसा ने उन्हें कहा॥ ४। उस के
पीछे कि उस ने अमूरियों के राजा सैहून को जो हसबून में रहता था
और बासान के राजा ऊज को जो इसतारात और अद्रिअई में रहता था
बधन किया॥ ५। यरदन के इस पार मोअब के चौगान में इस ब्यवस्था
को बर्णन करना आरंभ किया और कहा॥ ६। कि परमेश्वर हमारा
ईश्वर हरिब में हमें यह कहके बोला कि तुम इस पहाड़ पर बहुत
रहे॥ ७। फिरो और यात्रा करो और अमूरियों के पहाड़ को और
उस के समस्त परोसियों में जाओ चौगान में पहाड़ों में और तराई में
दक्षिण में और समुद्र के तीर कनआनियों के देश को और लुबनान को
महानदी फ़ुरात लों जाओ॥ ८। देखो मैं ने आगे का देश तुम्हें दिया
प्रवेश करो और उस देश पर जिस के बिषय में परमेश्वर ने तुम्हारे पितर
अबिरहाम और इज़हाक़ और यअक़ूब से किरिया खाई कि तुम्हें और
तुम्हारे पीछे तुम्हारे बंश को देऊंगा अधिकार में लेओ॥ ९। और

उसी समय मैं ने तुम्हें कहा कि मैं अकेला तुम्हारा बोझ नहीं उठा सक्ता॥
१०। परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें बढ़ाया और देखो तुम आज के
दिन आकाश के तारों की नाईं मंडली हो॥ ११। परमेश्वर तुम्हारे
पितरों का ईश्वर तुम्हें इस्से भी सहस्र गुण अधिक बढ़ावे और जैसा उस
ने तुम से कहा है तुम्हें आशीष देवे॥ १२। मैं तुम्हारे परिश्रम और
बोझ और झगड़ों को अकेला क्योंकर उठा सकूं॥ १३। तुम बुद्धिमान
और ज्ञानी और अपनी गोष्ठियों में से प्रसिद्ध लोगों को लाओ और मैं
उन्हें तुम पर आज्ञाकारी करूंगा॥ १४। और तुम ने मुझे उत्तर
देके कहा कि जो कुछ तू ने कहा है सो पालन करने को भला है॥ १५।
सो मैं ने तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधानों को बुद्धिमान और प्रसिद्धों को लिया
और उन्हें तुम्हारा प्रधान सहस्रों का प्रधान और सैकड़ों का प्रधान
और पचास पचास का प्रधान और दस दस का प्रधान तुम्हारी गोष्ठियों
में करोड़ा किया॥ १६। और उस समय मैं ने तुम्हारे न्यायियों को
आज्ञा करके कहा कि अपने भाइयों का विवाद सुनो मनुष्य में और उस के
भाइयों में और उस के साथ के परदेशियों में धर्म से न्याय करो॥ १७।
तुम मूंह देखा न्याय न करो तुम न्याय में किसी के रूप को मत मानो बड़े
के समान छोटे की भी सुनियो तुम मनुष्य के रूप से न डरो क्योंकि न्याय
ईश्वर का है और जो विषय तुम्हारे लिये कठिन होय मेरे पास लाओ मैं
उसे सुनूंगा॥ १८। सब जो तुम्हें करना था मैं ने उसी समय में तुम्हें
आज्ञा किई॥ १९। और हम ने हरिब से यात्रा किई तो जैसी परमेश्वर
हमारे ईश्वर ने हमें आज्ञा किई थी उस समस्त महा भयंकर बन में गये
जिसे तुम ने अमूरियों के पहाड़ को जाते हुए देखा और क़ादिशबरनीअ
में आये॥ २०। और मैं ने तुम्हें कहा कि तुम अमूरियों के पहाड़ को
पहुंचे हो जो परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें देता है॥ २१। देख परमेश्वर
तेरे ईश्वर ने यह देश तेरे आगे धरा है चढ़ और उसे वश में कर जैसा
परमेश्वर तेरे पितरों के ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है मत डर और
हियाव न छोड़॥

२२। तब हर एक तुम्में से मुझ पास आया और बोला कि हम अपने
आगे लोग भेजेंगे वे हमारे लिये उस देश का भेद लेवें और आके

हम से कहें कि हम किस मार्ग से वहां जावें और कौन कौन नगरों में प्रवेश करें॥ २३। वुह कहना मुझे भाया और मैं ने तुम्हों से गोष्ठी पीछे एक एक मनुष्य करके बारह मनुष्य लिये॥ २४। वे चल निकले और पहाड़ पर गये और इसकाल की तराई में आये और उस का भेद लिया॥ २५। और वे उस देश का फल अपने हाथों में लेके हमारे पास उतर आये और संदेश ले आये और बोले कि परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें उत्तम देश देता है॥ २६। तथापि तुम चढ़ न गये परंतु परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा से फिर गये॥ २७। और तुम अपने तंबूओं में कुड़कुड़ा के बोले इस कारण कि परमेश्वर हम से डाह रखता था हमें मिस्र के देश से निकाल लाया कि हमें अमूरियों के हाथ में करके नाश करे॥ २८। हम कहां चढ़ हमारे भाइयों ने तो यों कहके हमारे मन को घटा दिया कि वे लोग तो हम से बड़े और लम्बे हैं और उन के नगर बड़े हैं जिस की भीतें स्वर्ग लों हैं और इस्से अधिक हम ने अनाकियों के बेटों को वहां देखा॥ २९। तब मैं ने तुम्हें कहा कि मत डरो और उन से भय मत करो॥ ३०। परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर जो तुम्हारे आगे आगे जाता है वही तुम्हारे लिये लड़ेगा जैसा कि उस ने तुम्हारी दृष्टि में तुम्हारे लिये मिस्र में किया॥ ३१। और अरण्य में जहां तुम ने देखा कि जैसा मनुष्य अपने बेटे को उठाता है वैसा परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने सारे मार्ग में जहां जहां तुम गये तुम्हें उठाया है जब लों तुम इस स्थान में आये॥ ३२। तथापि इस बात में तुम ने परमेश्वर अपने ईश्वर की प्रतीति न किई॥ ३३। वुह रात को आग में और दिन को मेघ में जिसतें तुम्हें जाने का मार्ग बतावे मार्ग में तुम से आगे आगे गया जिसतें तुम्हारे लिये स्थान ठहरावे जहां अपने तंबू खड़े करो॥ ३४। तब परमेश्वर ने तुम्हारी बातें सुनीं और क्रुद्ध हुआ और किरिया खाके बोला॥ ३५। कि निश्चय इस दुष्ट पीढ़ी में से एक भी उस अच्छे देश को जिस के देने को मैं ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है न देखेगा॥ ३६। केवल यफुन्नः का बेटा कालिब उसे देखेगा और मैं वुह देश जिस पर उस का पांव पड़ा उसे और उस के बंश को दूंगा इस कारण कि वुह पूर्णता से परमेश्वर के मार्ग पर चला॥ ३७। और तुम्हारे कारण से परमेश्वर ने मुझ पर भी क्रुद्ध

होके कहा कि तू भी उस में प्रवेश न करेगा॥ ३८। परंतु नून का बेटा
यहूसूअ जो तेरे आगे खड़ा रहता है उस में प्रवेश करेगा तू उसे उभाड़
क्योंकि वह इसराएल को उस का अधिकारी करेगा॥ ३९। और तुम्हारे
बालक जिन्हें तुम ने कहा था कि अहेर हो जायेंगे और तुम्हारे लड़के
जिन्हें भले बुरे का ज्ञान तब न था वहां प्रवेश करेंगे और मैं उन्हें देऊंगा
और वे उस के अधिकारी होंगे॥ ४०। परंतु तुम फिरो और लाल
समुद्र के मार्ग से बन में यात्रा करो॥ ४१। तब तुम ने मुझे उत्तर देके
कहा कि हम ने परमेश्वर का अपराध किया है सो हम चढ़ जायेंगे और
जैसी कि परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें आज्ञा किई है हम लड़ेंगे फिर तुम
सब के सब हथियार बांध के सिद्ध हुए कि पहाड़ पर चढ़ जाओ॥ ४२।
तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि तू उन्हें कह कि मत चढ़ो और युद्ध न करो
क्योंकि मैं तुम्में नहीं हूं न हो कि तुम अपने बैरियों के आगे मारे जाओ॥
४३। सो मैं ने तुम्हें कह दिया और तुम ने न सुना परंतु परमेश्वर की आज्ञा
से फिर गये और मगराई से पहाड़ पर चढ़ गये॥ ४४। तब अमूरियों ने
जो उस पहाड़ पर रहते थे तुम्हारा साम्ना किया और मधु माखियों की
नाईं तुम्हें रगेदा और शईर में हुरमः लों तुम्हें मारा॥ ४५। तब तुम
फिरे और परमेश्वर के आगे रोये परंतु परमेश्वर ने तुम्हारी न सुनी और
न तुम्हारी ओर कान धरा तब तुम कादिस में बहुत दिन लों रहे।

२ दूसरा पर्ब्ब।

तब जैसी परमेश्वर ने मुझे आज्ञा किई थी हम फिरे और लाल
समुद्र के मार्ग से बन में यात्रा किई और बहुत दिन लों शईर
पर्बत को घेरा॥ २। फिर परमेश्वर मुझे कहके बोला॥ ३। कि तुम ने
इस पर्बत को बहुत दिन लों घेरा अब उत्तर की ओर जाओ॥ ४।
और लोगों से कह कि तुम अपने भाई एसौ के संतान के सिवाने से चलते
हो वे शईर में रहते हैं वे तुम से डरेंगे सो तुम आप से चौकस रहो॥ ५।
और उन्हें मत छेड़ो क्योंकि मैं उन की भूमि से एक पैर भर भी तुम्हें न
देऊंगा इस कारण मैं ने शईर पर्बत एसौ के अधिकार में दिया है॥ ६।
तुम खाने के लिये उन से भोजन मोल लीजियो और पीने के लिये दाम

देके जल भी मोल लीजियो॥ ७। क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरे
हाथ के सब कार्यों में तुझे आशीष दिया है वुह इस महा बन में तेरा
जाना जानता है इन चालीस बरस भर परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे साथ
है तुझे किसी बात की घटी न ऊई॥ ८। और जब हम अपने भाई
ऐसे के संतान से जो शईर में रहते थे चैागान के मार्ग में से और
असयूनजब्र से होके चले गये ते हम फिरे और मोअब के बन के मार्ग
में से आये॥ ९। तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि मोअबियों को मत छेड़
और उन से मत झगड़ क्योंकि उन के देश का अधिकारी तुझे न करूंगा
इस कारण कि मैं ने आर को लूत के संतान के अधिकार में दिया है॥
१०। वहां आगे ऐमीम रहते थे वे बड़े बड़े और बऊत और लम्बे लम्बे
अनाकियों के समान थे॥ ११। वे भी अनाक के संतान के समान दानव
में गिने जाते थे परंतु मोअबी उन को ऐमीम कहते हैं॥ १२। परंतु
आगे शईर में हूरीम रहते थे और ऐसे के संतान उन के अधिकारी
ऊए और उन्हें अपने आगे मिटा डाला और उन के स्थान पर बसे जैसा
इसराएल के संतान ने अपने अधिकार के देश में किया जो परमेश्वर ने उन्हें
दिया था॥ १३। अब उठो और ज़रद की नाली पार होओ सो हम
ज़रद की नाली के पार उतर गये॥ १४। और जब से हम ने
क़ादिशबरनीअ को छोड़ा और ज़रद की नाली के पार उतरे अठतीस बरस
ऊए जब लों कि लड़ाके की समस्त पीढ़ी सेना में से घट गई जैसी परमेश्वर
ने उन से किरिया खाई थी॥ १५। क्योंकि निश्चय परमेश्वर का हाथ
उन की बिरुद्धता में था कि सेना में से उन्हें नाश करे यहां लों कि वे भस्म
हो गये॥ १६। सो ऐसा ऊआ कि जब समस्त लड़ाके मिट के लोगों में
से मर गये॥ १७। तब परमेश्वर मुझे कहके बोला॥ १८। कि तू
आज आर में होके जो मोअब का सिवाना है चला जायगा॥ १९।
और जब तू अम्मून के संतान के आम्ने साम्ने आ पऊंचे ते उन्हें दुःख न दे
और न उन्हें छेड़ क्योंकि मैं अम्मून के संतान के देश में तुझे अधिकार
नहीं देने का इस कारण कि मैं ने उसे लूत के संतान के अधिकार में
दिया है॥ २०। वुह भी दानव का देश कहाता था आगे वहां दानव
रहते थे और अम्मनी उन्हें ज़ज़मी कहते थे॥ २१। वे बऊत और

लम्बे लम्बे अनाकियों के समान थे परमेश्वर ने उन्हें उन के आगे नाश किया सो उन्हों ने उन्हें निकाल दिया और उन के स्थान पर बसे॥ २२। जैसा उस ने एसौ के संतानों से किया जो शईर में रहते थे जब उस ने हूरीयों को उन के आगे से नाश किया सो उन्हों ने उन्हें निकाल दिया और उन के स्थान पर आज लों बसे हैं॥ २३। और अवीयों को भी जो हसरैम में रहते थे और कफतूरी जो कफतूर से आये उन्हें नाश किया और उन के स्थान में बसे॥ २४। तुम उठो चलो अरनून के पार जाओ देखो मैं ने हसबून के राजा अमूरी सैहून को उस की भूमि सहित तुम्हारे हाथ में दिया है सो अधिकार लेने को आरंभ करो और लड़ाई में उन का साम्ना करो॥ २५। आज के दिन से मैं तुम्हारा डर और भय उन जाति गणों पर डालूंगा जो सारे आकाश के नीचे हैं वे तुम्हारी सुधि पावेंगे और घबरायेंगे और तुम्हारे आगे थर्थरा जायेंगे॥ २६। तब मैं ने कदीमात से हसबून के राजा सैहून पास दूतों से मिलाप का यह बचन कहला भेजा॥ २७। कि तू अपने देश में से मुझे जाने दे मैं राज मार्ग में होके जाऊंगा और मैं दहिने बायें हाथ न मुड़ूंगा॥ २८। खाने के लिये दाम लेके मुझे अन्न जल दीजियो केवल मैं पांव पांव चला जाऊंगा॥ २९। जिस रीति से कि एसौ के संतान ने जो शईर में रहते हैं और मोअबियों ने जो आर में बसते हैं मुझ से किया जिसतें हम यरदन के पार उस भूमि में पहुंचें जो परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें देता है॥ ३०। परंतु हसबून के राजा सैहून ने हमें अपने पास से जाने न दिया क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने उस के आत्मा को कठोर और उस के मन को ढीठ कर दिया जिसतें उसे आज के समान तेरे हाथ में देवे॥ ३१। फिर परमेश्वर ने मुझे कहा कि देख मैं ने सैहून को उस के देश सहित तुझे देना आरंभ किया तू अधिकार लेना आरंभ कर जिसतें तू उस के देश का अधिकारी होवे॥ ३२। तब सैहून अपने सारे लोग लेके यहस में लड़ने को निकल आया॥ ३३। सो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने उसे हमें सौंप दिया और हम ने उसे और उस के बेटे और उस के सब लोगों को मारा॥ ३४। और हम ने उसी समय उस के समस्त नगरों को ले लिया और हर एक नगर के पुरुष

श्रेर स्त्री श्रेर लड़कों को नाश किया श्रेर किसी को न छोड़ा॥ ३५।
केवल ढोर हम ने अपने लिये अहेर में लिया श्रेर नगरों की लूट
जिसे हम ने लिया॥ ३६। अरुईर से ले के जो अरनून की नदी के तीर
पर है श्रेर उस नगर से ले के जो नदी के तीर पर है अर्थात् जिलिअद
लों ऐसा कोई नगर हमारे लिये दृढ़ न था जिसे परमेश्वर हमारे
ईश्वर ने हमें न सोंप दिया॥ ३७। केवल अम्मून के संतान के देश जिस
के निकट तू न गया श्रेर नदी यबूक के किसी स्थान में न पहाड़ के
नगरों में श्रेर जहां जहां परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें बरजा॥

३ तीसरा पर्ब्ब।

तब हम फिरे श्रेर बसन की श्रेर चढ़ गये श्रेर बसन का राजा
ऊज अद्रिअई में अपने सारे लोग ले के हमारे सन्मुख लड़ने को
निकला॥ २। श्रेर परमेश्वर ने मुझे कहा कि उसे मत डर क्योंकि मैं
उसे श्रेर उस के सारे लोगों को उस के देश सहित तेरे हाथ में सोंपूंगा
तू उसे वैसा कर जैसा तू ने अमूरियों के राजा सैहून से जो हसबून
में रहता था किया॥ ३। सो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने बसन के
राजा को भी श्रेर उस के समस्त लोग को हमारे बश में कर दिया श्रेर
हम ने उन्हें यहां लों मारा कि उन में से कोई न बचा॥ ४। उस के
समस्त नगर ले लिये अरजुब का सारा देश ऊज का राज्य बसन का एक
नगर भी न रहा जो हम ने उन से न लिया साठ नगर ले लिये कोई
नगर न रहा जो हम ने उन से न लिया॥ ५। ये सब नगर ऊंची ऊंची
भीतों श्रेर फाटकों श्रेर अंड़गों से दृढ़ थे श्रेर बहुत बिन भीत से घेरे
हुए नगर भी ले लिये॥ ६। श्रेर हम ने उन्हें उन के पुरुषों श्रेर स्त्रियों
श्रेर बालकों को हर एक नगर से नाश किया जैसा कि हम ने हसबून के
राजा सैहून से किया॥ ७। परंतु नगरों के समस्त ढोर श्रेर लूट हम
ने अपने ही लिये लिया॥ ८। श्रेर हम ने उस समय अमूरियों के दोनों
राजाश्रों से यरदन के उस ही पार का देश अरनून की नदी से हरमुन
पर्बत लों ले लिये॥ ९। हरमुन को सैदूनी सरियून कहते हैं श्रेर अमूरी
सनीर कहते हैं॥ १०। चैागान के समस्त नगर श्रेर सारा जिलिअद

और सारा बसन सलक: और अद्रिअई लों जो बसन में ऊज के राज्य के नगर हैं॥ ११। क्योंकि केवल बसन का राजा ऊज रह गया जो दानव में का था देखा उस की खाट लोहे की थी क्या वुह अम्मून के संतान राबाश में नहीं है मनुष्य के हाथों से नौ हाथ लम्बी चार हाथ की चौड़ी॥ १२। और यह देश हम ने उसी समय बश में किया अरूईर से जो अरनून की नदी के पास और आधा पहाड़ जिलिअद और उस के नगर मैं ने रूबिनियां और जद्दियां को दिये॥ १३। और जिलिअद का उबरा ऊआ और समस्त बसन जो ऊज का राज्य था मैं ने मुनस्सी की आधी गोष्ठी को दिया अरजुब का सारा देश बसन सहित जो दानव का देश कहाता था॥ १४। मुनस्सी के बेटे याईर ने अरजुब का समस्त देश जसूरियों और माकासियों के सिवाने लों ले लिये और उस ने बसन हवसयाईर अपने नाम के समान उस का नाम आज लों रक्खा॥ १५। और मैं ने जिलिअद माकीर को दिया॥ १६। और जिलिअद से अरनून की नदी लों और आधी तराई और सिवाना याबूक की नदी लों जो अम्मून के संतान का सिवाना है मैं ने रूबिनियों को और जद्दियों को दिया॥ १७। और चैागान भी और यरदन और उस के सिवाने किन्नारात से लेके चैागान के समुद्र लों अर्थात् खारी समुद्र जो पिसगः के सोतों के नीचे है पूर्ब की ओर भी॥

१८। और मैं ने उसी समय तुम्हें आज्ञा करके कहा कि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने उस भूमि का तुम्हें अधिकारी किया तुम अपने भाई इसराएल के संतानों के आगे हथियार बांध के सब जितने लड़ाई के योग्य हो पार उतरो॥ १९। केवल तुम्हारी पत्नियां और तुम्हारे बालक और तुम्हारे ढोर जो मैं ने तुम्हें दिये हैं तुम्हारे नगरों में रहें क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम्हारे ढोर बऊत हैं॥ २०। जब लों कि परमेश्वर तुम्हारे भाइयों को चैन देवे जैसा तुम्हें दिया जिस में वे भी उस देश के जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने यरदन के पार उन्हें दिया है अधिकारी होवें तब हर एक पुरुष अपने अपने अधिकार में फिर जाय जो मैं ने तुम्हें दिया है॥ २१। और उसी समय मैं ने यहूसूअ को कहा कि तेरी आंखों ने कुछ देखा है जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने उन दोनों

राजाओं से किया परमेश्वर उन सब राजाओं से जहां जहां तू जायगा
वैसा करेगा॥ २२। तुम उन से मत डरियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा
ईश्वर तुम्हारे लिये लड़ेगा॥ २३॥ तब मैं परमेश्वर के आगे गिड़गिड़ाया
और बोला॥ २४। कि हे प्रभु ईश्वर तू ने अपनी बड़ाई और अपना
सामर्थी हाथ अपने दास के दिखाने को आरंभ किया है क्योंकि स्वर्ग में
अथवा पृथिवी में कौनसा ईश्वर है जो तेरे कार्य्य और तेरी सामर्थ्य के समान
कर सके॥ २५। मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे पार जाके उस अच्छे देश
को देखने दे जो यरदन के पार है वुह सुंदर पर्बत और लुबनान॥ २६।
परंतु परमेश्वर तुम्हारे कारण मुझ से क्रुद्ध हुआ और उस ने मेरी न सुनी
और परमेश्वर ने मुझे कहा कि यही बस है उस बिषय में फेर मुझ से मत
कह॥ २७। पिसगः की चोटी पर चढ़ जा और अपनी आंखें पश्चिम और
उत्तर और दक्षिण और पूर्ब की ओर उठा और अपनी आंखों से देख
क्योंकि तू इस यरदन के पार न जायगा॥ २८। पर यहूसूअ को आज्ञा
कर और उसे ढ़ियाव दे और उसे दृढ़ कर क्योंकि वुह इन लोगों के आगे
पार जायगा और वही उन्हें उस देश का जो तू देखता है अधिकारी
करेगा॥२९। सो हम तराई में फ़ग़ूर के सन्मुख रहे।

४ चौथा पर्ब्ब।

सो अब हे इसराएल के संतानों जो बिधि और बिचार मैं तुम्हें
सिखाता हूं सुनो और उन पर ध्यान करो जिसतें तुम जीयो
और उस देश में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें देता है
पहुंच के उस के अधिकारी होओ॥ २। तुम उस बात में जो मैं
तुम्हें कहता हूं कुछ मत मिलाइयो न घटाइयो जिसतें तुम परमेश्वर
अपने ईश्वर की आज्ञाओं को जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं पालन करो॥
३। जो कुछ कि परमेश्वर ने बअलफ़ग़ूर से किया तुम ने सब अपनी
आंखों से देखा क्योंकि उन सब पुरुषों को जिन्हों ने बअलफ़ग़ूर का पीछा
किया परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम में से नष्ट किया॥ ४। परंतु तुम
जो परमेश्वर अपने ईश्वर से लवलीन हो रहे हो सो तुम में से हर एक
आज लों जीता है॥ ५। देखो मैं ने बिधि और बिचार जिस रीति से

परमेश्वर मेरे ईश्वर ने मुझे आज्ञा किई तुम्हें सिखलाये जिसतें तुम उस
देश में जाके जिस के अधिकारी होओगे उन का पालन करो॥ ६।
सो उन्हें धारण करो और मानो क्योंकि जातिगणों के आगे यही तुम्हारी
बुद्धि और समुझ है कि वे इन समस्त बिधिन को सुनके कहेंगे कि
निश्चय यह जाति बुद्धिमान और ज्ञानमान है॥ ७। क्योंकि कौन
जातिगण ऐसी बड़ी है जिसके पास ईश्वर ऐसा समीप होवे जैसा परमेश्वर
हमारा ईश्वर सब में जो हम उसे मांगते हैं हमारे समीप है॥ ८।
और कौन ऐसी बड़ी मंडली है जिसकी बिधि और बिचार ऐसा धर्म्म
का हो जैसी यह समस्त व्यवस्था जो मैं आज तुम्हारे आगे धरता हूं॥
९॥ केवल आप से चौकस रहो और अपने प्राण को यत्न से रक्खो ऐसा
न हो कि तुम उन बस्तुन को जिन्हें तेरी आंखों ने देखा भूल जाओ और
ऐसा न हो कि वे बातें जीवन भर में कभी तुम्हारे अंतःकरणों से जाती
रहें परंतु तुम उन्हें अपने बेटों और पोतों को सिखाओ॥ १०। जिस
दिन तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे हरिब में खड़ा हुआ और परमेश्वर
ने मुझे कहा कि लोगों को मेरे आगे एकट्ठा कर और मैं उन्हें अपनी
बचन सुनाऊंगा जिसतें वे मेरा डर सीखें जब लों वे भूमि पर जीते रहें
और वे अपने लड़कों को सिखावें॥ ११। सो तुम पास आये और
पहाड़ के नीचे खड़े रहे और पहाड़ स्वर्ग के मध्य लों अंधकार और मेघ
और गाढ़ा अंधकार आग से जल रहा था॥ १२। और परमेश्वर तुम्हारे
ईश्वर ने उस आग के मध्य में से तुम्हारे साथ बातें किईं तुम ने बातों का
शब्द सुना परंतु मूर्त्ति न देखी केवल शब्द। १३। और उस ने अपनी
बाचा तुम्हारे आगे बर्णन किई जिसे उस ने तुम्हें पालन करने को आज्ञा
किई दस आज्ञा उस ने उन्हें पत्थर की दो पटियों पर लिखीं॥ १४।
और परमेश्वर ने उस समय मुझे आज्ञा किई कि तुम्हें बिधि और बिचार
सिखाऊं जिसतें तुम उस देश में जाके जिस के तुम अधिकारी होओगे
उन पर चलो॥ १५। सो तुम आप से बहुत चौकस रहो क्योंकि जिस दिन
परमेश्वर ने हरिब में आग के मध्य में से तुम्हारे साथ बातें कहीं तुम ने
किसी प्रकार का रूप न देखा॥ १६। ऐसा न हो कि तुम बिगड़ जाओ
और अपने लिये खोदी हुई मूर्त्ति किसी पुरुष अथवा स्त्री की प्रतिमा

बनाओ॥ १७। किसी पशु की प्रतिमा जो पृथिवी पर है अथवा किसी पंछी का रूप जो आकाश में उड़ते हैं॥ १८। अथवा किसी जंतु का रूप जो भूमि पर रेंगते हैं अथवा किसी मछली का रूप जो पृथिवी के नीचे पानियों में हैं॥ १९। ऐसा न हो कि तुम स्वर्ग की ओर आंख उठाओ और सूर्य्य और चंद्रमा और तारों को और आकाश की समस्त सेनों को देखो तब उन्हें पूजने के लुभाये जाओ और उन की सेवा करो जिन्हें परमेश्वर ने स्वर्ग के तले समस्त जातिगणों के लिये विभाग किया है॥ २०। परंतु परमेश्वर ने तुम्हें लिया और वुह तुम्हें लोहे के भट्ठे से अर्थात् मिस्र में से निकाल लाया जिसतें तुम उस की ओर से अधिकार के लोग होओ जैसा कि आज के दिन॥ २१। परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे कारण से मुझ पर रिसियाके किरिया खाई कि तू यरदन पार न जायगा और इस अच्छे देश में जिस का परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे अधिकारी करता है न पहुंचेगा॥ २२। परंतु मैं अवश्य इसी देश में मरूंगा निश्चय मैं यरदन पार उतरने न पाऊंगा परंतु तुम पार उतरोगे और उस अच्छी भूमि के अधिकारी होओगे॥ २३। आप से चौकस रहो ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की बाचा को जो उस ने तुम से किई भूल जाओ और अपने लिये खोदी हुई मूर्त्ति अथवा किसी वस्तु का रूप बनाओ जिस के बनाने से परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे बर्जा है॥ २४। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर एक भस्मक अग्नि ज्वलित ईश्वर है।

२५। जब तुम से लड़के और लड़कों के लड़के उत्पन्न होंगे और तुम अनेक दिन लों उस देश में रहोगे और बिगड़ जाओगे और खोदी हुई मूर्त्ति और किसी का रूप बनाओगे और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बुराई करके उस के कोप को भड़काओगे॥ २६। तो मैं आज के दिन तुम पर स्वर्ग और पृथिवी को साक्षी करता हूं कि तुम उस देश पर से जहां तुम यरदन पार जाते हो कि अधिकारी बनो शीघ्र नाश हो जाओगे तुम वहां अपने दिन को न बढ़ाओगे परंतु सर्व्वथा नष्ट हो जाओगे॥ २७। और परमेश्वर तुम्हें जातिगणों में छिन्न भिन्न करेगा और अन्य देशियों के मध्य में जिधर तुम्हें परमेश्वर ले जायगा थोड़े से रह जाओगे॥ २८। वहां उन देवतों की सेवा करोगे जो मनुष्यों के हाथों से बने हैं लकड़ी के और

पत्थर के जो न देखते न सुनते न खाते न सूंघते हैं॥ २९। पर वहां भी
जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर की खोज करेगा यदि तू अपने सारे मन से
और अपने सारे प्राण से उसे ढूंढ़ेगा तो उसे पावेगा॥ ३०। जब तू कष्ट
में होगा और ये सब अंत्य के दिनों में तुझ पर आ पड़ें यदि तू परमेश्वर
अपने ईश्वर की ओर फिरेगा और उस का शब्द मानेगा॥ ३१। क्योंकि
परमेश्वर तेरा ईश्वर दयालु है वुह तुझे न छोड़ेगा न तुझे नष्ट करेगा
और तेरे पितरों की वाचा को जो उस ने उन से किरिया खाई है न
भूलेगा॥ ३२। क्योंकि अगले दिनों से जो तुझ से आगे हो गये उस
दिन से जब मनुष्य को परमेश्वर ने पृथिवी पर उत्पन्न किया और स्वर्ग की
एक अलंग से लेके दूसरी लों पूछो यदि ऐसी बड़ी बात कभी हुई अथवा
उस के समान सुनी गई॥ ३३। कि कभी लोगों ने परमेश्वर का शब्द
सुना था कि आग में से बोले जैसा तू ने सुना और जीता है॥ ३४।
अथवा कभी ईश्वर ने इच्छा किई कि जाके एक जातिगण को जातिगण
के मध्य में से परीक्षा से और लक्षण से और लड़ाई से और सामर्थी हाथ
से और बढ़ाई हुई भुजा से और बड़े बड़े भय से अपने लिये लेवे जिस
रीति से परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारी आंखों के साम्ने मिस्र में
तुम्हारे लिये किया॥ ३५। यह सब तुझे दिखाया गया जिसतें तू
जाने कि परमेश्वर वही ईश्वर है उसे छोड़ कोई नहीं है॥ ३६।
उस ने अपना शब्द स्वर्ग में से तुझे सुनाया जिसतें तुझे सिखावे और
पृथिवी पर उस ने तुझे अपनी बड़ी आग दिखाई और तू ने उस का
वचन आग में से सुना॥ ३७। और इस कारण कि उस ने तेरे पितरों
से प्रेम किया उस ने उन के पीछे उन के वंश को इस कारण चुन लिया
और अपनी बड़ी सामर्थ्य से तुझे मिस्र से अपनी दृष्टि के आगे निकाल
लाया॥ ३८। जिसतें तेरे आगे से जातिगणों को जो तुझ से बड़े
और बलवंत हैं दूर करे और तुझे लावे और उन के देश का अधिकारी
करे जैसा आज के दिन है॥ ३९। सो आज के दिन जान और अपने
मन में सोच कि परमेश्वर ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथिवी में वही ईश्वर है
और कोई नहीं है॥ ४०। सो तू उस की विधि और उस की आज्ञाओं
को जो आज मैं तुझे कहता हूं पालन कर जिसतें तेरे और तेरे पीछे

तेरे बंश के लिये भला होवे और तेरी बय उस देश पर जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है बढ़ जाय॥ ४१। फिर मूसा ने सूर्य्य के उदय की ओर यरदन के इसी पार तीन बस्तियां अलग किईं॥ ४२। जिसतें घातक जो अचानक अपने परोसी को घात करे और आगे से उस्से बैर न रखता था और जब उन नगरों में से एक में भागके प्रवेश करे तो जीता रहे॥ ४३। अर्थात् बुस्र बन में रूबिनियों के चौगान के देश में और जद्दियों में रामात जिलिअद में और मुनस्सी के जौलान बसन में॥ ४४। यह वुह ब्यवस्था है जिसे मूसा ने इसराएल के संतानों के आगे धरी॥ ४५। ये हैं वे साक्षियां और बिधि और बिचार जिन्हें मूसा ने इसराएल के संतानों के लिये जब वे मिस्र से निकल आये उन से कहा॥ ४६। यरदन के इसी पार बैतफ़गूर के सन्मुख की तराई में अमूरियों के राजा सैहून के देश में जो हसबून में रहता था जिसे मूसा और इसराएल के संतानों ने मिस्र से निकलके मारा॥ ४७। और वे उस के और बसन के राजा ऊज के राज्य के अधिकारी ऊए ये अमूरियों के दो राजा थे जो यरदन के इस पार सूर्य्य के उदय की ओर रहते थे॥ ४८। अरूआयर से लेके जो अरनन की नदी के तीर पर है सैहून के पहाड़ लों जो हरमून है॥ ४९। और समस्त चौगान इसी पार यरदन की पूर्व ओर चौगान के समुद्र लों जो पिसगः के सोतों के नीचे है।

५ पांचवां पर्व्व।

फिर मूसा ने समस्त इसराएली को बुलाके उन से कहा कि हे इसराएलियो यह बिधि और बिचार सुन रक्खो जिन्हें मैं आज तुम्हारे कानों में कहता हूं जिसतें तुम उन्हें सीखो और धारण करके मानो॥ २। परमेश्वर हमारे ईश्वर ने होरिब में हम से एक बाचा बांधी॥ ३। परमेश्वर हमारे ईश्वर ने यह बाचा हमारे पितरों से नहीं बांधी परंतु हम से हमीं से जो सब आज के दिन जीते हैं॥ ४। पर्व्वत पर आग के मध्य में से परमेश्वर ने तुम्हारे संग आम्ने साम्ने बातें किईं॥ ५। मैं ने तुम्हारे और परमेश्वर के मध्य में खड़े होके परमेश्वर

का बचन तुम्हें सुनाया क्योंकि तुम आग के कारण से डर गये और पहाड़
पर न चढ़े॥ ६। मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुम्हें मिस्र के देश से और
सेवकाई के घर से बाहर लाया॥ ७। मेरे आगे तेरा कोई दूसरा ईश्वर
न होवे॥ ८। अपने लिये खोदी हुई मूर्त्ति किसी का रूप जो ऊपर स्वर्ग
में अथवा नीचे पृथिवी पर अथवा पृथिवी के नीचे पानियों में है मत
बना॥ ९। तू उन्हें दंडवत न करना न उन की सेवा करना क्योंकि मैं
परमेश्वर तेरा ईश्वर ज्वलित ईश्वर हूं जो पितरों के अपराध का प्रतिफल
बालकों पर तीसरी चौथी पीढ़ी लों जो मुझ से बैर रखते हैं देता हूं॥
१०। और सहस्रों पर जो मुझ से प्रेम रखते हैं और मेरी आज्ञाओं
को पालन करते हैं दया करता हूं॥ ११। तू परमेश्वर अपने ईश्वर
का नाम अकारथ मत लेना क्योंकि जो उस का नाम अकारथ लेता है
परमेश्वर उसे निर्दोष न ठहरावेगा॥ १२। बिश्राम दिन को पवित्र के लिये
धारण कर जैसो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है॥ १३।
छ: दिन लों परिश्रम करना और अपने समस्त कार्य करना॥ १४।
परंतु सातवां दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर का बिश्राम है कोई कार्य न करना
न तू न तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा दास न तेरी दासी न तेरा बैल
न तेरा गदहा न तेरे ढोर न तेरा पाहुन जो तेरे फाटकों के भीतर हैं
जिसतें तेरा दास और तेरी दासी तेरी नाईं चैन करें॥ १५। और
चेत कर कि तू मिस्र के देश में सेवक था और परमेश्वर तेरा ईश्वर अपने
सामर्थी हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से तुझे वहां से निकाल लाया
इसलिये परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई कि तू बिश्राम दिन का
पालन करे॥ १६। अपने माता पिता को प्रतिष्ठा दे जैसी परमेश्वर
तेरे ईश्वर ने आज्ञा किई है जिसतें तेरा जीवन बढ़जाय और उस देश में
जिसे तेरा ईश्वर तुझे देता है तेरा भला होवे॥ १७। हत्या मत कर॥
१८। पर स्त्री गमन मत कर॥ १९। चोरी मत कर॥ २०। अपने
परोसी पर झूठी साक्षी मत दे॥ २१। अपने परोसी की पत्नी की इच्छा
मत कर अपने परोसी के घर की और उस के खेत की अथवा उस के दास
और दासी की उस के बैल और गदहे की और परोसी की किसी वस्तु की
लालच मत कर॥ २२। परमेश्वर ने पहाड़ पर मेघ और गाढ़े अंधकार

की आग में से तुम्हारी समस्त मंडली से महा शब्द से बातें किईं और
उस्से अधिक कुछ न कहा और उस ने उन्हें पत्थर की दो पटियों पर
लिखा और उन्हें मुझे सोंपा॥ २३। और यों ऊआ कि जब तुम ने
अंधकार में से यह शब्द सुना क्योंकि पहाड़ आग से जल रहा था तुम
और तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधान और तुम्हारे प्राचीन मेरे पास आये॥
२४। और तुम ने कहा कि देख परमेश्वर हमारे ईश्वर ने अपना
ऐश्वर्य और अपनी महिमा दिखाई और हम ने आग के मध्य में से उस
का शब्द सुना हम ने आज के दिन देखा कि ईश्वर मनुष्य से बार्त्ता
करता है और मनुष्य जीता है॥ २५। सो अब हम किस लिये
मरें कि यह ऐसी बड़ी आग हमें भस्म करेगी यदि हम परमेश्वर
अपने ईश्वर का शब्द अब के फिर सुनेंगे ता हम मरही जायेंगे॥
२६। क्योंकि समस्त शरीरों में से ऐसा कैान है जिस ने हमारे
समान आग के बीच में से जीवित ईश्वर का शब्द सुना और जीता रहा॥
२७। तू आप ही समीप जा और सब जो कुछ कि परमेश्वर हमारा ईश्वर
कहे सुन और जो कुछ परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें कहे तू हम से कह हम
उसे सुनके मानेंगे॥ २८। और जब तुम ने मुझ से कहा परमेश्वर ने
तुम्हारी बातों का शब्द सुना तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि मैं ने इन
लोगों की बातों का शब्द जो उन्हों ने तुझ से कहीं सुना जो कुछ उन्हों ने
कहा अच्छा कहा॥ २९। हाय कि उन के ऐसे मन होते कि वे मुझ से डरते
और सदा मेरी समस्त आज्ञाओं को पालन करते जिसतें उन के लिये
और उन के वंश के लिये सनातन लों भला होवे॥ ३०। जा उन्हें कह
कि अपने अपने तंबू को फिर जाओ॥ ३१। परन्तु तू जो है यहां मुझ
पास खड़ा रह और मैं समस्त आज्ञा और बिधि और बिचार तुझे
बताऊंगा तू उन्हें सिखाना जिसतें वे उस देश में जिस का अधिकारी मैं
ने उन्हें किया है उन पर चलें॥ ३२। सो तुम चैाकस होके जैसी परमेश्वर
तुम्हारे ईश्वर ने आज्ञा किई है पालन करो और दहिने बायें न मुड़ो॥
३३। तुम सब मार्गों पर चलो जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें बताये
जिसतें तुम जीते रहो और तुम्हारा भला होवे और उस देश में जिस के
तुम अधिकारी होओगे तुम्हारे जीवन बढ़ें॥

६ छठवां पर्ब्ब।

ये आज्ञा और बिधि और बिचार हैं जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें सिखाने को मुझे आज्ञा किई जिसतें तुम उस देश में
जिस के अधिकारी होने पार जाते हो उन पर चलो॥ २। जिसतें तू
परमेश्वर अपने ईश्वर से डरके उस की सब बिधि और आज्ञाओं को जो
मैं तुझे आज्ञा करता हूं चेत में रक्खे तू और तेरा पुत्र और तेरा पौत्र
जीवन भर जिसतें तेरा जीवन बढ़ जाय॥ ३। सो हे इसराएल सुन ले
और उसे सोचके मान जिसतें तेरा भला होवे और तुम उस देश में अत्यंत
बढ़ जाओ जिस में दूध और मधु बहता है जैसा परमेश्वर तुम्हारे पितरों
के ईश्वर ने तुम से प्रण किया है॥ ४। सुन ले हे इसराएल परमेश्वर
हमारा ईश्वर एक परमेश्वर है॥ ५। अपने सारे मन से और सारे जीव
से और अपने सारे पराक्रम से परमेश्वर अपने ईश्वर से हित रख॥ ६।
और ये बातें जो आज के दिन मैं तुझे कहता हूं तेरे अन्तःकरण में रहें॥
७। और ये बातें अपने लड़कों को यत्न से सिखा और अपने घर में
बैठते हुए और मार्ग में चलते हुए और सोते और जागते उन की चर्चा
कर॥ ८। और उन्हें चिन्ह के लिये अपने हाथ पर बांध और वे तेरी
आंखों के मध्य में टीकों की नाईं होंगे॥ ९। और उन्हें अपने घर के
खंभों पर और द्वारों पर लिख॥ १०। और यों होगा कि जब परमेश्वर
तेरा ईश्वर तुझे उस देश में ले जायगा जिस के बिषय में उस ने तेरे
पितर अबिरहाम और इज़हाक़ और यअ़क़ूब से किरिया खाई है कि
बड़ी और उत्तम बस्तियां जो तू ने नहीं बनाईं तुझे देवे॥ ११। और घर
समस्त उत्तमों से भरे हुए जिन्हें तू ने नहीं भरा और खोदे खोदाय कूयें
जो तू ने नहीं खोदे और दाख की बारी और जलपाई के पेड़ जो तू ने
नहीं लगाये तुझे देगा और तू खायेगा और संतुष्ट होगा॥ १२। चौकस
रह न हो कि तू परमेश्वर को भूल जाय जो तुझे मिस्र के देश से दासों के
घर से निकाल लाया॥ १३। तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरियो और
उस की सेवा कीजियो और उस के नाम की किरिया खाइयो॥ १४।
तुम आन आन देवतों के पीछे लोगों के देवतों के जो तुम्हारे आस पास

हैं मत जाइयो॥ १५। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुम्हारे मध्य में है ज्वलित ईश्वर है नहो कि परमेश्वर तेरे ईश्वर के कोप की आग तुझ पर भड़के और तुम्हें पृथिवी पर से मिटा डाले॥ १६। तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की परीक्षा मत कीजियो जैसे तुम ने मस्सः में उस की परीक्षा किई॥ १७। तुम यत्न से परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को और उस की साक्षियों को और विधि को जो उस ने तुझे आज्ञा किई है स्मरण करियो॥ १८। और वही कीजियो जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक और भला है जिसतें तेरा भला होवे और तू उस सुथरी भूमि में जिस के विषय में परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया खाई है प्रवेश करके अधिकारी होवे॥ १९। कि तुम्हारे आगे से तुम्हारे सारे बैरियों को दूर करे जैसा परमेश्वर ने कहा है॥ २०। जब कल को तेरा बेटा तुझ से यह कहके पूछे कि ये कैसी साक्षियां और विधि और बिचार हैं जो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई है॥ २१। तब अपने बेटे से कहियो कि हम मिस्र में फिरऊन के बंधुए थे तब परमेश्वर सामर्थी हाथ से हमें मिस्र से निकाल लाया॥ २२। और परमेश्वर ने चिह्न और बड़े बड़े दुःख और पीड़ा के आश्चर्य मिस्र में फिरऊन पर और उस के सारे घराने पर हमारी आंखों के आगे दिखाये॥ २३। और वह हमें वहां से निकाल लाया जिसतें हमें उस देश में पहुंचावे जिस के विषय में उस ने हमारे पितरों से किरिया खाई हमें देवे॥ २४। सो परमेश्वर ने हमें आज्ञा किई कि हम उन सब विधिन पर चलें और परमेश्वर अपने ईश्वर से अपने भले के लिये सर्वदा डरें जिसतें वुह हमें जीता रक्खे जैसा आज के दिन है॥ २५। और यही हमारा धर्म्म होगा यदि हम इन सब आज्ञाओं को परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उस की आज्ञा के समान पालन करें।

७ सातवां पर्ब्ब।

जब कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का अधिकारी होने जाता है तुझे पहुंचावे और तेरे आगे से बहुत जातिगणों को दूर करे अर्थात् हित्तियों को और जिरजाशियों को और अमूरियों को

और कनआनियों को और फरज्जियों को और हव्वियों को और यबूसियों सात जातिगणों को जो तुझ से बड़े और सामर्थी हैं॥ २। और जब कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तुझे सौंप देवे तू उन्हें मार के सर्बथा नाश करियो उन से कोई बाचा न बांधियो न उन पर दया कीजियो॥ ३। न उन से बिवाह करियो न उस के बेटे को अपनी बेटी दीजियो न अपने बेटों के लिये उस की बेटी लीजियो॥ ४। क्योंकि वे तेरे बेटे को मुझ से फिरावेंगी जिसतें वे आन देवतों की सेवा करें सो परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़केगा और वुह तुझे अचानक नाश कर देगा॥ ५। सो तुम उन से यह व्यवहार करियो उन की बेदियों को ढाइयो उन की मूर्त्तिन को तोड़ियो उन के कुंजों को काटडालियो और उन की खोदी ऊई मूर्त्तियों को आग से जलाइयो॥ ६। क्योंकि तू तो परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र लोग है परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे चुना कि तू सब लोगों में से जो पृथिवी पर हैं उस के निज लोग होओ॥ ७। परमेश्वर ने तुम से इस लिये प्रीति करके तुम्हें नहीं चुना कि तुम सारे लोगों से गिनती में अधिक थे क्योंकि तुम समस्त लोगों से थोड़े थे॥ ८। परंतु इस कारण कि परमेश्वर तुम से प्रीति रखता था और इस कारण कि उसे उस किरिया को पालन करना था जो उस ने तुम्हारे पितरों से खाई थी परमेश्वर तुम्हें अपनी सामर्थ्य से निकाल लाया और दासों के घर से मिस्र के राजा फिरऊन के हाथ से तुम्हें छुड़ाया॥ ९। सो जान रखना कि परमेश्वर तेरा ईश्वर वही ईश्वर वुह बिश्वस्त ईश्वर है जो उन से जो उस्से प्रेम रखते हैं और उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं सहस्र पीढ़ी लों बाचा और दया रखता है॥ १०। और जो उस्से बैर रखते हैं उन के मूंह पर पलटा देके उन्हें नाश करता है जो उस्से बैर रखता है वुह उस के लिये बिलंब न करेगा वुह उस के देखते ही पलटा देगा॥ ११। सो तू उन आज्ञा और बिधिन और बिचार को जो मैं तुझे आज के दिन पालन करने को आज्ञा करता हूं धारण करियो॥ १२। सो यदि तुम इन बिचारों को सुनोगे और धारण करके उन्हें मानोगे तो यों होगा कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उस प्रण और दया को जिस के बिषय में उस ने तेरे पितरों से

किरिया खाई है तेरे लिये धारण करेगा॥ १३। और वुह तुझे प्यार
करेगा और तुझे आशीष देगा और तुझे बढ़ावेगा वुह तेरे गर्भ के फल
और तेरी भूमि के फल में तेरा अन्न और तेरी मदिरा और तेरे तेल और
तेरे ढोर की बढ़ती और तेरी झुंड की भेड़ उस देश में जिस के विषय में
उस ने देने को तेरे पितरों से किरिया खाई आशीष देगा॥ १४। तू
समस्त लोगों से अधिक आशीष पावेगा और तुझ में अथवा तुम्हारे ढोर
में नर अथवा स्त्री बर्ग बांझ न होंगे॥ १५। और परमेश्वर तुझ में से
समस्त रोग दूर करेगा और मिस्र के सब बुरे रोगों में से जिन्हें तू
जानता है तुझ पर न लावेगा परंतु उन पर डालेगा जो तुझ से बैर
रखते हैं॥ १६। और सब लोगों को जिन्हें परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे
सौंप देगा तू खा जायगा तेरी आंख उन पर दया न करेगी तू उन के देवों
की पूजा न करना क्योंकि तेरे लिये फंदा है॥ १७। यदि तू अपने मन
में कहे कि ये जातिगण मुझ से अधिक हैं मैं उन्हें क्योंकर निकाल
सकूंगा॥ १८। तू उन से मत डरना जो कुछ परमेश्वर तेरे ईश्वर
ने फिरऊन और समस्त मिस्र से किया अच्छी रीति से स्मरण करना॥
१९। वुह बड़ी बड़ी परीक्षा जिन्हें तेरी आंखों ने देखा और बड़े बड़े
चिन्ह और आश्चर्य और सामर्थी हाथ और फैलाई हुई भुजा जिन से
परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे निकाल लाया जिन लोगों से तू डरता है
परमेश्वर तेरा ईश्वर उन से वैसाही करेगा॥ २०। और परमेश्वर तेरा
ईश्वर उन पर बर्रे को भेजेगा जब लों वे जो बचे हुए और तुम से छिपते हैं
नाश हो जावें॥ २१। तू उन से मत डरना क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर
तुझ में है बड़ा और भयानक ईश्वर॥ २२। और परमेश्वर तेरा ईश्वर
उन जातिगणों को तेरे आगे थोड़ा थोड़ा करके उखाड़ेगा तू एक बार
उन्हें नाश न करना न होवे कि बनैले पशु तुझ पर बढ़ जावें॥ २३।
परंतु परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे आगे सौंप देगा और महा नाश से
उन्हें नाश करेगा यहां लों कि वे नाश हो जायें॥ २४। और वुह उन के
राजाओं को तेरे हाथ में सौंपेगा और तू उन के नाम को स्वर्ग के तले से
मिटा देगा और कोई मनुष्य तेरे आगे ठहर न सकेगा जब लों तू उन्हें
नाश न कर ले॥ २५। तुम उन की खोदी हुई देवतों की मूर्त्तिन को

आग से जला देना तू उन पर के रूपे साने का लाभ न करना और उसे
अपने लिये मत लेना न हो कि तू उन में बझजाय क्योंकि परमेश्वर तेरे
ईश्वर के आगे वुह घिनित है॥ २६। और तू कोई घिनित अपने घर
में मत लाइयो न हो कि तू उस की नाईं स्रापित हो जाय तू उन से सर्बथा
घिन कीजियो और उसे सर्बथा तुच्छ जानियो क्योंकि वुह स्रापित बस्तु है।

८ आठवां पर्ब्ब।

समस्त आज्ञा को जो आज के दिन मैं तुझे देता हूं मानियो और
उन्हें पालन कीजियो जिसतें तुम जीओ और बढ़ जाओ और उस
देश में जाओ जिन के बिषय में परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों से किरिया
खाई है अधिकारी होओ॥ २। और उस समस्त मार्ग को स्मरण करियो
जिस में परमेश्वर तेरा ईश्वर बन में इन चालीस बरस से तुझे लिये फिरा
जिसतें तुझे दीन करे और तुझे परखे और तेरे मन की बात
जांचे कि तू उस की आज्ञाओं को पालन करेगा कि नहीं॥ ३।
और उस ने तुझे दीन किया और तुझे भूखा रक्खा और वुह
मन्न जिसे तू जानता न था और न तेरे पितर जानते थे तुझे
खिलाया जिसतें तुझे सिखावे कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं
जीता रहता परंतु हर एक बात से जो परमेश्वर के मुंह से निकलती
है जीता रहता है॥ ४। चालीस बरस लों तेरे कपड़े तुझ पर
पुराने न हुए और तेरे पांव न सूजे॥ ५। तू अपने मन में सोचियो
कि जिस रीति से मनुष्य अपने बेटे को ताड़ना करता है परमेश्वर
तेरा ईश्वर तुझे ताड़ता है॥ ६। सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर की
आज्ञाओं को पालन कर कि उस के मार्गों पर चल और उस्से डर॥
७। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे एक उत्तम भूमि में पहुंचाता है
जहां पानी के नाले और सोते और झील तराई और पहाड़ों से
बहती है॥ ८। गेहूं और जव और दाख और गूलर और अनार का
और जलपाई का पेड़ और मधु का देश॥ ९। वुह देश जहां तू बिन
महंगी से रोटी खायगा जहां तेरे लिये किसी बात की घटती न होगी
जिस के पत्थर लोहे हैं और पहाड़ों से तू तांबा खोदे॥ १०। जब तू

खावे और तृप्त होवे तब तू परमेश्वर अपने ईश्वर को जिस ने तुझे वुह अच्छा देश दिया धन्य माने॥ ११। चौकस रह कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को भूल न जाय कि उस की आज्ञाओं और बिचार और बिधि पर जो आज मैं तुझे कहता हूं न चले॥ १२। ऐसा न हो कि जब तू खाके तृप्त होवे और सुथरे सुथरे घर बनावे और उन में रहे॥ १३। और तेरे लेहंड़े और झुंड बढ़ जायें और तेरी चांदी और तेरा सोना बढ़ जाय और तेरा सब कुछ अधिक होवे॥ १४। तब तेरा मन उभड़ जाय और तू परमेश्वर अपने ईश्वर को जो तुझे मिस्र देश से और बंधुआई के घर से निकाल लाया भूल जाय॥ १५। जो उस बड़े भयानक बन में तुझे लिये फिरा जहां आग के सर्प और बिच्छू थे और सूखा जहां पानी न था जिस ने तेरे लिये पथरी के चटान से पानी निकाला॥ १६। जिस ने बन में तुझे मन्न खिलाया जिसे तेरे पितर न जानते थे जिसतें तुझे दीन करे और तुझे परखे जिसतें अंत्य समय में तेरा भला करे॥ १७। और तू अपने मन में कहे कि मैं ने अपने पराक्रम और भुजा के बल से यह संपत्ति प्राप्त किई॥ १८। परंतु तू परमेश्वर अपने ईश्वर को स्मरण करियो क्योंकि वही तुझे संपत्ति प्राप्त करने को बल देता है जिसतें वुह अपनी बाचा को जो उस ने किरिया खाके तेरे पितरों से किया दृढ़ करे जैसा आज के दिन है॥ १९। और यों होगा कि यदि तू कभी परमेश्वर अपने ईश्वर को भूलेगा और और ही देवों का पीछा करेगा और उन की सेवा और दंडवत करेगा तो मैं आज के दिन तुम पर साक्षी देता हूं कि तुम निश्चय नष्ट हो जाओगे॥ २०। उन जातिगणों के समान जिन्हें परमेश्वर तुम्हारे सन्मुख नष्ट करता है तुम भी वैसे ही नष्ट हो जाओगे इस कारण कि तुम ने अपने ईश्वर परमेश्वर के शब्द को न माना॥

९ नवां पर्ब्ब।

हे इसराएल सुन ले तुझे आज के दिन यरदन पार जाना है जिसतें तू उन जातिगणों का जो तुझ से बड़ी और पराक्रमी हैं और उन नगरों को जो बड़े और स्वर्ग लों घेरे हैं अधिकारी होवे॥ २। वहां के लोग बड़े और लम्बे हैं जो अनाकियों के संतान हैं जिन्हें

तू जानता है और कहते ज़ुए सुना है कि कौन है जो अनाक़ के संतान
के आगे ठहर सक्ता है॥ ३। सो तू आज के दिन समुझ ले कि परमेश्वर
तेरा ईश्वर जो तेरे आगे आगे पार जाता है भस्मक अग्नि के तुल्य वुह
उन्हें नाश करेगा और वुह उन्हें तेरे आगे धूस्त करेगा तू उन्हें हांक देगा
और शीघ्र नष्ट करेगा जैसा परमेश्वर ने तुझे कहा है॥ ४। और जब
परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे आगे से दूर कर देवे तब अपने मन में मत
कहना कि परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के कारण मुझे इस देश का अधिकारी
किया परंतु परमेश्वर उन जातिगणों की दुष्टता के कारण उन्हें तेरे आगे
से हांक देता है॥ ५। तू अपने धर्म्म से और अपने मन की खराई से उस
देश का अधिकारी होने नहीं जाता परंतु परमेश्वर तेरा ईश्वर उन
जातिगणों की दुष्टता के कारण उन्हे तेरे आगे से हांक देता है जिसतें
वुह उस बचन को जो उस ने किरिया खाके तेरे पितर अबिरहाम और
इज़हाक़ और यअ़क़ूब से कहा पूरा करे॥ ६। सो समुझ ले कि परमेश्वर
तेरा ईश्वर तेरे धर्म्म के कारण तुझ उस अच्छे देश का अधिकारी नहीं
करता क्योंकि तू तो कठोर लोग है॥

७। चेत कर भूल न जा कि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के कोप को बन
में क्योंकर भड़काया जिस दिन से कि तू मिस्र के देश से बाहर निकला
जब लों इस स्थान में आये तुम परमेश्वर से फिरगये हो॥ ८। और तुम ने
हरिब में भी परमेश्वर के क्रोध को भड़काया सो परमेश्वर तुम्हें नाश करने
के लिये क्रुद्ध ज़ुआ॥ ९। जब मैं दो पत्थर की पटियां लेने को पहाड़ पर
चढ़ा अर्थात् नियम की पटियां जो परमेश्वर ने तुम से किया तब मैं चालीस
रात दिन उस पहाड़ पर रहा मैं ने रोटी न खाई न पानी पीया॥ १०।
तब परमेश्वर ने पत्थर की दो पटियां मुझे सौंपी जिन पर परमेश्वर ने अपनी
अंगुलियों से लिखा था उन सब बातों के समान जो परमेश्वर ने पहाड़
पर आग में से तुम्हारे एकट्ठे होने के दिन तुम से कही थीं॥ ११। और
ऐसा ज़ुआ कि चालीस दिन रात के पीछे परमेश्वर ने पत्थर की वे दोनों
पटियां अर्थात् नियम की पटियां मुझे दिईं॥ १२। और परमेश्वर ने मुझे
कहा कि उठ चल यहां से नीचे जा क्योंकि तेरे लोगों ने जिन्हें तू मिस्र से
निकाल लाया आप को बिगाड़ दिया वे झट पट उस मार्ग से जो मैं ने उन्हें

बताया फिर गये उन्हों ने अपने लिये एक ढाली ऊई मूर्त्ति बनाई॥ १३।
और परमेश्वर मुझे कहके बोला कि मैं ने इन्हें देखा है देख ये कठोर
लोग हैं॥ १४। मुझे छोड़ कि मैं उन्हें नाश करूं और उन का नाम
स्वर्ग के तले से मिटाडालूं और मैं तुझ से एक जाति जो इस्से बऊत और
बली है बनाऊंगा॥ १५। सो मैं फिरा और पहाड़ पर से उतरा और
पर्ब्बत आग से जल रहा था और नियम की दोनें पटियां मेरे दोनें हाथ
में थीं॥ १६। तब मैं ने दृष्टि किई और क्या देखता हूं कि तुम ने
परमेश्वर अपने ईश्वर का पाप किया था और अपने लिये ढाला ऊआ
बछड़ा बनाया तुम बऊत शीघ्र उस मार्ग से जो परमेश्वर ने तुम्हें बताया
फिर गये॥ १७। तब मैं ने दोनें पटियां लेके अपने दोनें हाथें से पटक
दिईं और तुम्हारी आखें के आगे तोड़ डाली॥ १८। और उन सब
पापें के कारण जो तुम ने किये जब तुम ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई
करके उसे रिस दिलाई मैं आगे की नाईं चालीस रात दिन परमेश्वर के
आगे गिरा पड़ा रहा मैं ने रोटी न खाई न पानी पीया॥ १९। क्योंकि
मैं परमेश्वर के कोप और क्रोध से डरा कि वुह तुम्हें नाश करने के लिये
कोपित था परंतु परमेश्वर ने उस समय में भी मेरी सुनी॥ २०। तब
हारून को नाश करेने के लिये परमेश्वर का क्रोध भड़का तब मैं ने उस
समय में हारून के लिये भी प्रार्थना किई॥ २१। और मैं ने तुम्हारे
पाप को अर्थात् उस बछड़े को जो तुम ने बनाया था लिया और आग में
जलाया फिर उसे कूटा और बुकनी किया ऐसा कि वुह धूलसा हो गया
और मैं ने उस धूल को नाली में जो पर्ब्बत से बहती थी डाल दिया॥
२२। और तबअर: में और मस्सः में और क़बरातुलतावः में तुम ने परमेश्वर
को कोपित किया॥ २३। और उसी ढब से उस समय में जब परमेश्वर
ने तुम्हें क़ादिशबरनीअ से यह कहके भेजा कि चढ़ जाओ और उस देश
के जो मैं ने तुम्हें दिया है अधिकारी होओ तब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर
की आज्ञा से फिर गये और तुम उस पर बिश्वास न लाये और उस के शब्द
को न सुना॥ २४। तिस दिन से मैं ने तुम्हें जाना तुम परमेश्वर से
फिर गये हो॥ २५। सो मैं परमेश्वर के आगे चालीस रात दिन पड़ा
रहा क्योंकि परमेश्वर ने कहा था कि मैं इन्हें नाश करूंगा॥ २६। सो

मैं ने परमेश्वर की बिनती किई और कहा कि हे परमेश्वर प्रभु अपने लोग
को और अपने अधिकार को जिन्हें तू अपने महत्व से छुड़ा लाया तू
अपनी भुजा के पराक्रम से मिस्र से निकाल लाया नाश न कर॥ २७।
अपने सेवक अबिरहाम और इज़्हाक़ और यअ़क़ूब को स्मरण कर इस
लोग की ढिठाई और दुष्टता और पापों पर दृष्टि न कर॥ २८।
न होवे कि वुह देश जहां से तू हमें निकाल लाया कहे कि परमेश्वर
सामर्थी न था कि उन्हें उस देश में जिस के बिषय में उन से बाचा किई
पहुंचावे और इस लिये कि वुह उन से डाह रखता था वुह उन्हें निकाल
ले गया कि उन्हें बन में नाश करे॥ २९। तथापि वे तेरे लोग और तेरे
अधिकार हैं जिन्हें तू अपने बड़े पराक्रम और बढ़ाई हुई भुजा से
निकाल लाया है॥

१० दसवां पर्ब्ब।

उस समय परमेश्वर ने मुझे कहा कि अपने लिये पत्थर की दो
पटियां अगलों के समान चीर और पहाड़ पर मुझ पास आ और
अपने लिये लकड़ी की एक मंजूषा बना॥ २। मैं उन पटियों पर वे
बातें लिखूंगा जो अगली पटियों पर थीं जिन्हें तू ने तोड़ डाला और तू
उन्हें मंजूषा में रखियो॥ ३। तब मैं ने शमशाद लकड़ी की मंजूषा
बनाई और पत्थर की दो पटियां अगली के समान चीरीं और उन दोनों
पटियों को अपने हाथ में लिये हुए पहाड़ पर चढ़ गया॥ ४। और
उस ने पटियों पर अगले लिखे हुए के समान वे दस बचन लिखे जो
परमेश्वर ने पहाड़ पर आग के मध्य से सभा के दिन तुम्हें कहा था
और परमेश्वर ने उन्हें मुझे दिया॥ ५। फिर मैं फिरा और पहाड़ पर
से उतरा और उन पटियों को उस मंजूषा में जिसे मैं ने बनाया था
रक्खा सो वे परमेश्वर की आज्ञा के समान अब लों उस में हैं॥ ६। तब
इसराएल के संतान ने यअ़क़ान के संतान बिअरात से मोसीरः को यात्रा
किई वहां हारून मर गया और वहीं गाड़ा गया और उस के बेटे
इलिअज़र ने याजक के पद पर उस के स्थान में सेवा किई॥ ७। वहां
से उन्हों ने जिदजाद को यात्रा किई और जिदजाद से युतबतः को जो

पानियों के नदियों का देश है॥ ८। उस समय परमेश्वर ने लावी की गोष्ठी को इस लिये अलग किया कि परमेश्वर के नियम की मंजूषा को उठावें और परमेश्वर के आगे खड़े होके सेवा करें और उस के नाम से आशीष देवें सो आज के दिन लों यूंही है॥ ९। इस लिये लावी का अंश और अधिकार उस के भाइयों के साथ नहीं परमेश्वर उस का अधिकार है जैसा परमेश्वर तेरे ईश्वर ने उसे बचन दिया॥ १०। और मैं अगले दिनों के समान फिर चालीस रात दिन पहाड़ पर रहा और उस समय भी परमेश्वर ने मेरी सुनी और परमेश्वर ने न चाहा कि तुझे बिनाश करे॥ ११। फिर परमेश्वर ने मुझे कहा कि उठ और लोगों के आगे आगे चल और उन्हें ले जा जिसतें वे उस देश में बसें जो मैं ने उन के पितरों से किरिया खाके कहा था कि उन्हें देऊंगा॥ १२। अब हे इसराएल परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ से क्या चाहता है केवल यही कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरे और उस के सारे मार्गों पर चले और उस्से प्रेम रक्खे और अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करे॥ १३। और परमेश्वर की आज्ञाओं को और उस की विधिन को जो आज के दिन तेरी भलाई के लिये तुझे कहता हूं पालन करे जिसतें तेरी भलाई होवे॥ १४। देख कि स्वर्ग और स्वर्गों के स्वर्ग और पृथिवी उस सब समेत जो उस में है परमेश्वर तेरे ईश्वर का है॥ १५। केवल परमेश्वर ने चाहा कि तुम्हारे पितरों से प्रेम रक्खे इस लिये उन के पीछे उन के बंश को अर्थात् तुम्हें समस्त लोगों से अधिक चुन लिया जैसा कि आज है॥ १६। सो अपने मन का खतनः करो और आगे को कठोर मत होओ॥ १७। क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर ईश्वरों का ईश्वर और प्रभुओं का प्रभु एक महा ईश्वर शक्तिमान भयंकर है जो मनुष्यत्व पर दृष्टि नहीं करता और अकोर नहीं लेता॥ १८। वुह अनाथों और बिधवों का न्याय करता है और परदेशियों से प्रेम रखके उन्हें भोजन वस्त्र देता है॥ १९। सो तुम भी परदेशियों को प्यार करो क्योंकि तुम भी मिस्र के देश में परदेशी थे॥ २०। परमेश्वर अपने ईश्वर से डरता रह उस की सेवा कर और उसी से लवलीन रह उसी के नाम की किरिया खा॥ २१। वही तेरी स्तुति और तेरा ईश्वर

है जिस ने तेरे लिये ए हे ऐसे बड़े और भयंकर कार्य्य किये जिन्हें तू ने अपनी
आंखों से देखा॥ २२। तेरे पितर सत्तर जन लेके मिस्र में उतरे और
अब परमेश्वर तेरे ईश्वर ने आकाश के तारों के समान तुझे बढ़ाया॥

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रख और उस की आज्ञा और
बिधि और न्याय और उस की बचन सदा पालन कर॥ २। और
तुम आज के दिन जान लेओ क्योंकि मैं तुम्हारे बंश से नहीं बोलता जिन्हों
ने तुम्हारे ईश्वर की ताड़ना और उस की महिमा और उस के हाथ का
बल और उस की बढ़ाई हुई भुजा न जाना है न देखा है॥ ३। और
उस के आश्चर्य्य और उस के कार्य्य जो उस ने मिस्र के मध्य में और मिस्र के
राजा फिरऊन के मध्य में उस के समस्त देश में किये॥ ४। और जो कुछ
उस ने मिस्र की सेनाओं के साथ और उन के घोड़ों और उन की गाड़ियां
के साथ किये किस रीति से उस ने लाल समुद्र का पानी उन पर उभाड़ा
जब उन्हों ने तुम्हारा पीछा किया सो परमेश्वर ने उन्हें नष्ट किया आज के
दिन लों॥ ५। और जो कुछ उस ने अरण्य में जब लों कि तुम यहां पहुंचे
तुम्हारे साथ किया॥ ६। और जो उस ने दातन और अबिराम के साथ
किया जो रूबिन के बेटे इलिअब के बेटे थे किस रीति से पृथिवी ने अपना
मुंह खोला और उन्हें और उन के घरानों और उन के तंबुओं को और
समस्त जीवधारियों को जिन्हों ने उन का पीछा किया और जो उन के
बश में थे समस्त इसराएल के मध्य में उन्हें निगल गई॥ ७। क्योंकि
तुम्हारी आंखों ने परमेश्वर के समस्त महान कार्य्य जो उस ने किये देखे॥
८। सो तुम उन समस्त आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें कहता हूं पालन
करो जिसतें तुम बली होओ और जाके उस देश के जिस के अधिकारी
होने के लिये पार जाते हो अधिकारी होओ॥ ९। और जिसतें तुम
उस देश पर अपना जीवन बढ़ाओ जिस के कारण परमेश्वर ने तुम्हारे
पितरों से किरिया खाके कहा कि मैं उन्हें और उन के बंश को देऊंगा
वुह देश जिस में दूध और मधु बहता है॥ १०। क्योंकि वुह देश
जिस का तू अधिकारी होने जाता है मिस्र के समान नहीं जहां से तुम

निकल आये जहां तू अपना बीहन बोता था और उसे अपनी तरकारी की बारी की नाईं पांव से पानी सींचता था॥ ११। परंतु वुह भूमि जिस के अधिकारी होने को जाते हो पहाड़ों और तराई का देश है जो आकाश के मेघ से सींचा जाता है॥ १२। यह वुह देश है जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चाहता है और बरस के आरंभ से लेके बरस के अंत लों सदा परमेश्वर तेरे ईश्वर की आंखें उस पर लगी हैं॥ १३। और यों होगा कि यदि तुम ध्यान से मेरी आज्ञाओं को सुनोगे जो मैं तुम्हें आज के दिन आज्ञा करता हूं परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम करो कि अपने समस्त मन से और अपने सारे प्राण से उस की सेवा करो॥ १४। तो मैं तुम्हारी भूमि में समय पर मेंह बरसाऊंगा आरंभ के मेंह और अंत के मेंह मैं तुम्हें देऊंगा जिसतें तू अपना अन्न और दाख रस और तेल एकट्ठा करे॥ १५। और तेरे खेत में तेरे पशु के लिए घास उगाऊंगा जिसतें तू खाय और तृप्त होवे॥ १६। तुम आप से चौकस रहो जिसतें तुम्हारे मन छल न खावें और तुम फिर जाओ अरु और देवतों की सेवा करो और उन को दंडवत करो॥ १७। और परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़के और वुह स्वर्ग को बंद करे जिसतें मेंह न बरसे और भूमि अपना फल न देवे और तुम उस भूमि से जो परमेश्वर तुम्हें देता है शीघ्र नष्ट हो जाओ॥ १८। सो मेरी इन बातों को अपने अंतःकरण में और मन में रख छोड़ो और चिन्ह के लिये अपने बांह भुजा पर बांधो जिसतें वे तुम्हारी दोनों आंखों के मध्य में टीके की नाईं रहें॥ १९। और तुम उन्हें अपने घर में बैठे हुए और मार्ग चलते हुए और लेटते हुए और उठने के समय अपने लड़कों को सिखाओ॥ २०। और तू उन्हें अपने घर के फाटकों पर और द्वारों पर लिखे॥ २१। जिसतें तुम्हारे और तुम्हारे बंश के दिन जैसा कि स्वर्ग के दिन पृथिवी पर बढ़ते हैं वैसेही तुम्हारे दिन उस देश में जिस के कारण परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हें देऊंगा बढ़ जायें।

२२। क्योंकि यदि तुम उन सब आज्ञाओं की जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं यत्न से पालन करोगे और उन्हें मानोगे और परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रक्खोगे और उस के समस्त मार्गों पर चलोगे और उसी लवलीन

रहोगे॥ २३। तब परमेश्वर इन सब जातिगणों को तुम्हारे आगे से हांक देगा और तुम जातिगणों के जो बड़े बली और तुम से अधिक सामर्थी हैं अधिकारी होओगे॥ २४। जिस जिस स्थान पर तुम्हारे पांओं का तलवा पड़ेगा सो सो तुम्हारा हो जायगा बन और लुबनान से और नदी से फ़रात नदी से लेके अत्यंत समुद्र लों तुम्हारा सिवाना होगा॥ २५। किसी की सामर्थ्य न होगी कि तुम्हारे आगे ठहर सके परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा भय और तुम्हारा डर समस्त देश में जिस पर तुम्हारा पैर पड़ेगा डालेगा जैसा उस ने तुम से कहा है॥ २६। देखो मैं आज के दिन तुम्हारे आगे आशीष और स्राप धर देता हूं॥ २७। आशीष यदि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें देता हूं पालन करोगे॥ २८। और स्राप यदि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा पालन न करोगे परंतु उस मार्ग से फिर के जो आज मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं अरु और देवता का पीछा करोगे जिन्हें तुम ने नहीं जाना॥ २९। और यों होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश में जहां तू अधिकारी होने को जाता है पहुंचावे तो तू आशीष को जरिज़ीम के पहाड़ पर रखियो और स्राप को ऐबाल के पहाड़ पर॥ ३०। क्या वे यरदन पार नहीं उसी मार्ग में जिधर सूर्य्य अस्त होता है कनआनी के देश में जो जिलजाल के साम्ने चैागान में रहते हैं और चैागानों के लग है॥ ३१। क्योंकि तुम यरदन पार जाते हो जिसतें उस देश के जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देता है अधिकारी होओ और तुम उस के अधिकारी होगे और उस में बसोगे॥ ३२। सो तुम समस्त विधि और बिचार जो आज मैं तुम्हारे आगे धरता हूं सोच रखियो।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

ये वे विधि और बिचार हैं जिन्हें तुम उस देश में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें अधिकार में देता है जब लों तुम पृथिवी पर जीते रहो उन्हें सोचके मानियो॥ २। तुम उन स्थानों को सर्व्वथा नाश कीजियो जहां उन जातिगणों ने जिन के तुम अधिकारी होओगे अपने

देवतों की सेवा किई है ऊंचे पहाड़ों पर और टीलों पर और हर एक हरे पेड़ तले॥ ३। उन की बेदियों को ढा दीजियो और उन के खंभों को तोड़िया और उन के कुंजों को आग से जलाइयो और उन के देवतों की खोदी ऊई मूर्त्तियों को ढा दीजियो और उन के नाम को उस स्थान से मिटा दीजियो॥ ४। तुम ऐसा कुछ परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मत कीजियो॥ ५। परंतु वुह स्थान जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारी समस्त गोष्ठियों में से चुनेगा कि अपना नाम उस पर रक्खे और उसी के निवास को ढूंढ़ो और उसी स्थान पर आओ॥ ६। और वहां होम की भेंटें और अपने बलि और अपने अंश और अपने हाथ की हिलाई ऊई भेंटें और अपनी मनौतियां और अपनी बांछा की भेंटें और अपने ढोर और झुंड के पहिलौंठे लाइयो॥ ७। वहां परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे खाओगे और अपने सारे घराने समेत अपने हाथ के सब कामों में जिन में परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें आशीष दिया आनंद करोगे॥ ८। तुम ऐसे कार्य्य जैसे हम यहां करते हैं हर एक जो अपनी अपनी दृष्टि में ठीक है वहां मत कीजियो॥ ९। क्योंकि तुम उस बिश्राम और अधिकार को जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देता है अब लों नहीं पऊंचे॥ १०। परंतु जब तुम यरदन पार जाओ और उस देश में बसो जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा अधिकार कर देता है और तुम्हें तुम्हारे सब शत्रुन से जो चारों ओर हैं चैन देगा ऐसा कि तुम चैन से बसो॥ ११। तब वहां एक स्थान होगा जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर चुनके अपना नाम उस पर रक्खे तुम सब कुछ जो मैं तुम्हें कहता हूं वहां ले जाइयो अर्थात् अपनी होम की भेंटें और अपने बलि अपने अंश और अपने हाथ की हिलाई ऊई भेंट और अपनी बांछा की मनौती जो तुम परमेश्वर के लिये मानते हो वहां लाइयो॥ १२। और अपने बेटों और अपनी बेटियों और अपने दासों और अपनी दासियों और उस लावी सहित जो तुम्हारे फाटकों में हो इस लिये कि उस का अंश और अधिकार तुम्हारे साथ नहीं परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे आनंद कीजियो॥ १३। अपने से सेचेत रहो और अपनी भेंट हर एक स्थान पर जहां संयोग मिले मत चढ़ाइयो॥

१४। परंतु उसी स्थान में जिसे परमेश्वर तेरी गोष्ठियों में से चुन लेगा तू अपनी भेंट चढ़ाइयो और सब कुछ जो मैं तुझे आज्ञा करता हूं वही कीजियो॥ १५। और जिस वस्तु को चाहे अपने समस्त फाटकों में मार खाइयो और परमेश्वर अपने ईश्वर के आशीष के समान जो उस ने तुझे दिया है चाहे पावन हो चाहे अपावन हर एक उसे खाये जैसे हरिण और बारहसींगा जो कुछ तेरा मन चाहे॥ १६। केवल लोहू मत खाइयो परंतु उसे पानी की नाईं भूमि पर ढाल दीजियो॥ १७। अपना अनाज और दाख रस और तेल का बाईसवां अंश और अपने ढोर अथवा झुंड के पहिलौंठे अथवा अपनी मानी हुई मनौती और अपनी बांछा की भेंट अथवा अपने हाथ के हिलाने की भेंट अपने फाटकों में मत खाइयो॥ १८। परंतु तुझ पर और तेरे बेटा बेटी और तेरे दास और तेरी दासी पर और लावी पर जो तेरे फाटकों में हैं उचित है कि उन वस्तुन को परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उस स्थान में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा खाइयो और तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे अपने सब कामों में आनंद करियो॥ १९। आप से चौकस रहियो जब लों तू जीता रहे लावी को मत त्यागियो॥ २०। जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे सिवानों को बढ़ावे जैसा उस ने तुझ से प्रतिज्ञा किई है और तू कहे कि मैं मांस खाऊंगा इस कारण कि तेरा जीव मांस खाने का अभिलाषी है तो तू मांस और हर एक वस्तु जिसे तेरा जीव चाहे खाइयो॥ २१। यदि वुह स्थान जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपना नाम वहां रखने को चुन लिया तुझ से बहुत दूर होवे तो तू अपने ढोर और झुंड में से जो ईश्वर ने तुझे दिये हैं जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है मारियो और अपने फाटकों में जो कुछ तेरा जीव चाहे सो खाइयो॥ २२। जैसा कि हरिण और बारासिंगे खाये जाते हैं तू उन्हें खाइयो पवित्र और अपवित्र उन्हें समान खायें॥ २३। केवल चौकस होके लोहू मत खाइयो क्योंकि लोहू जीव है और तुझे उचित नहीं कि मांस के साथ जीव खाये॥ २४। तू उसे मत खाइयो उसे पानी की नाईं भूमि पर डाल दीजियो॥ २५। तू उसे मत खाइयो जिस में तेरा और तेरे पीछे तेरे बंश का भला होय जब कि तू वुह जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक है करे॥

२६। परंतु तू अपने पवित्र बस्तुन को और अपनी मनौतियों को उस
स्थान में जिसे ईश्वर चुनेगा लेजाइयो॥ २७। और तू अपनी होम की
भेंटें मांस और लोहू परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी पर चढ़ाइयो और तेरे
बलिदानों का लोहू परमेश्वर तेरे ईश्वर की बेदी पर ढाला जायगा और
तू मांस को खाइयो॥ २८। चौकस हो और इन सब बातों को सोचो जो
मैं तुझे आज्ञा करता हूं सुनो जिस में तेरा और तेरे पीछे तेरे बंश का
सनातन लों भला होवे जब कि तुम वुह जो भला और ठीक है परमेश्वर
अपने ईश्वर की दृष्टि में करो॥ २९। जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जाति
गणों को तेरे आगे से काट डाले जहां तू जाता है कि अधिकारी बने और
तू उन का अधिकारी होवे और उन के देश में बास करे॥ ३०। अपने
से चौकस रहियो न हो कि जब वे तेरे आगे से बिनाश होवें तू उन के पीछे
बझ जाय और न हो कि तू उन के देवतों को खोज करके कहे कि इन
जातिगणों ने अपने देवतों की सेवा किस रीति से किई यों मैं भी वैसी
करूंगा॥ ३१। तू परमेश्वर अपने ईश्वर से ऐसा मत कीजियो क्योंकि
उन्हों ने हर एक कार्य्य जिस्से ईश्वर को घिन है जिस्से वुह बैर रखता है
अपने देवतों के लिये किया यहां लों कि अपने बेटों और बेटियों को अपने
देवतों के लिये आग में जला दिया॥ ३२। तुम हर एक बात को जो मैं
तुम्हें कहता हूं सोचके मानियो उस में न बढ़ाइयो न उस में घटाइयो॥

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

यदि तुम्में कोई आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी प्रगट होवे और
तुझे कोई लक्षण अथवा आश्चर्य दिखावे॥ २। और वुह
लक्षण अथवा आश्चर्य्य जो उस ने देखाया पूरा होवे और वुह
तुम्हें कहे कि आओ हम आन देवतों का पीछा करें जिन्हें तू ने नहीं
जाना और उन की सेवा करें॥ ३। तो कभी उस आगमज्ञानी अथवा
स्वप्नदर्शी के बचन मत सुनियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें
परखता है जिसतें देखे कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे
जीव से और सारे प्राण से मित्र रखते हो कि नहीं॥ ४। तुम परमेश्वर
अपने ईश्वर का पीछा करो और उस्से डरो और उस की आज्ञाओं को

धारण करो और उस का शब्द माने तुम उस की सेवा करो और उसी से लवलीन रहो॥ ५। और वुह आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी घात किया जायगा क्योंकि उस ने तुम्हें परमेश्वर अपने ईश्वर से फिरावने की बात कही जो तुम्हें मिस्र से बाहर निकाल लाया और तुझे बंधुआई के घर से छुड़ाया जिसतें तुझे उस मार्ग में से जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने आज्ञा किई है बगदा देवे सो तुझे उचित है कि तू उस बुराई को अपने मध्य से निकाल डाले॥ ६। यदि तेरा सगा भाई अथवा तेरा बेटा अथवा तेरी बेटी अथवा तेरी गोद की पत्नी अथवा तेरा मित्र जो तेरे प्राण के समान होवे तुझे चुपके से फुसलावे और कहे कि चल दूसरे देवतों की सेवा करें जिन्हें तू और तेरे पितर नहीं जानते हैं॥ ७। उन लोगों के देवतों में से जो तुम्हारे आस पास तेरे चारों ओर हैं अथवा तुझ से दूर भूमि के इस खूंट से उस खूंट लों॥ ८। तू उस की बात न मानियो न उस की सुनियो न उस पर दया की दृष्टि कीजियो तू उसे मत छोड़ न उस को छिपा॥ ९। परंतु उसे अवश्य मार डालियो उस के बधन में पहिले तेरा हाथ उस पर पड़े और पीछे सब लोगों के हाथ॥ १०। तू उस पर पथरवाह कीजियो जिसतें वुह मर जाय क्योंकि उस ने चाहा कि परमेश्वर तेरे ईश्वर से तुझे भटकावे जो तुझे मिस्र के देश और बंधुआई के घर से निकाल लाया॥ ११। और सारे इसराएल सुनके डरेंगे और तुम्हारे मध्य में फेर ऐसी दुष्टता न करेंगे॥ १२। यदि तू उन नगरों में जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे बसने के लिये दिये हैं यह कहते सुने॥ १३। कि कितने लोग तुझ से निकल गये और अपने नगर के बासियों को यों कहके भटकाया कि आओ चलें और देवतों की सेवा करें जिन्हें तुम ने नहीं जाना है॥ १४। सो खोजियो और यत्न से पूछियो और देख यदि सत्य होय और निःसंदेह कि ऐसा घिनित कार्य्य तुझ में है॥ १५। तो उस नगर के बासियों को खड्ग की धार से निश्चय मार डालियो उसे और जो कुछ उस में है और वहां के ढोर को खड्ग की धार से सर्व्वथा नाश कीजियो॥ १६। और तू वहां की सारी लूट को वहां की सड़क के मध्य में एकट्ठे कीजियो और उस नगर को और वहां की सारी लूट को परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये

जला दीजियो और वुह सनातन लों एकट्ठे रहेगा फिर बनाया न जायगा॥ १७। और उस स्थापित वस्तु में से कुछ तेरे हाथ में सटी न रहे जिसतें परमेश्वर अपने क्रोध के जलजलाहट से फिर जाय और तुझ पर अनुग्रह करे और दयाल होवे और तुझे बढ़ावे जैसा कि उस ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है॥ १८। जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुने कि उस की सारी आज्ञा को जो आज मैं तुझे कहता हूं जो परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे ठीक है उसे पालन करे।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के संतान हो तुम मृतक के लिये अपने को काटकूट न करियो न अपने माथे को मुड़ाइयो॥ २। क्योंकि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र लोग हो और परमेश्वर ने समस्त जातिगणों में से जो पृथिवी पर हैं तुझे चुन लिया कि अपना निज लोग बनावे॥ ३। तू किसी घिनित वस्तु को मत खाइयो॥ ४। इन पशुन को खाइयो बैल भेड़ बकरी॥ ५। और हरिण और हरिणी और कंदली और बनैली बकरी और गबय और बनैला बैल और बातप्रमी॥ ६। और हर एक चौपाया जिस के खुर चिरे हुए हों और उस के खुर में बिभाग हो और पागुर करता हो तुम उसे खाइयो॥ ७। तथापि उन में से जो पागुर करते हैं अथवा उन के खुर चिरे हुए हैं जैसे ऊंट और खरहा और सफन तुम इन्हें मत खाइयो इस लिये कि ये पागुर नहीं करते परंतु उन के खुर चिरे हुए हैं सो ये तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं॥ ८। और सूअर इस कारण कि उस के खुर चिरे हुए हैं तथापि पागुर नहीं करता वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध है तुम उन का मांस न खाइयो न उन की लोथों को छूइयो॥ ९। सब में से जो पानियों में रहते हैं इन्हें खाइयो जिन के पंख और छिलके हों॥ १०। और जिस किसी के पंख और छिलके न हों तुम उन्हें न खाइयो वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं॥ ११। समस्त पावन पक्षी को खाइयो॥ १२। परंतु उन में इन्हें न खाइयो गिद्ध और हाड़गिल और कुरर॥ १३। और शंकरचील्ह और चील्ह और भांति भांति के गिद्ध॥ १४। और भांति भांति के कव्वे॥ १५।

पेंचा और लक्ष्मी पेंचा और कोइल और भांति भांति के सिकरा॥ १६।
और छोटा पेंचा और उल्लू और राजहंस॥ १७। और गरुड़ और बासा
और मछरंग॥ १८। और सारस और भांति भांति के बगुले और
टिटिहरी और चमगूदर॥ १९। और हर एक रेंगवैया जो उड़ता है
तुम्हारे लिये अशुद्ध है वे खाये न जावें॥ २०। समस्त पवित्र पक्षी
खाइयो॥

२१। जो कुछ आप से मर जाय उसे मत खाइयो तू उसे किसी
परदेशी को जो तेरे फाटकों में है खाने को दीजियो अथवा
किसी बिदेशी के हाथ बेच डालियो क्योंकि तू परमेश्वर अपने ईश्वर
का पवित्र लोग है तू मेम्ना को उस की माता के दूध में मत
उसिनना॥ २२। बरस बरस जो बीज तेरे खेतों में उगे तू निश्चय
उस का अंश दिया कर॥ २३। तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उस
स्थान में जिसे वुह अपने नाम के लिये चुनेगा अपने अन्न का अपनी मदिरा
का अपने तेल का अपने ढोर और अपनी झुंड के पहिलौठों के अंश को
खाइयो जिसतें तू सर्बदा परमेश्वर अपने ईश्वर से डरना सीखे॥ २४।
और यदि मार्ग तेरे लिये अति दूर होवे यहां लों कि तू उसे न ले
जा सके यदि वुह स्थान जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना जिसतें
अपना नाम वहां स्थिर करे बहुत दूर होवे तो जब परमेश्वर तेरा ईश्वर
तुझे आशीष देवे॥ २५। तब तू उन्हें बेचके उन का रोकड़ अपने हाथ
में लेके उस स्थान को जा जो तेरे परमेश्वर ने चुना है॥ २६। और
उस रोकड़ से जिस बस्तु को तेरा मन चाहे मोल ले गाय बैल अथवा
भेड़ अथवा दाखरस अथवा मद्य अथवा जो बस्तु तेरा जीव चाहे तू और
तेरा घराना परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे खाय और आनंद करे॥
२७। और जो लावी तेरे फाटकों में है उसे त्याग मत करियो क्योंकि
उस का भाग और अधिकार तेरे साथ नहीं है॥ २८। तीन बरस के
पीछे अपनी बढ़ती का समस्त दसवां भाग उसी बरस लाइयो और अपने
फाटकों के भीतर धरियो॥ २९। और इस कारण कि लावी तेरे संग
भाग और अंश नहीं रखता है और परदेशी और अनाथ और बिधवा
जो तेरे फाटकों में हैं आवें और खावें और तृप्त होवें जिसतें

परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्यों में जो तू करता है आशीष देवे॥

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

सात बरसें के पीछे तू छुटकारा ठहराओ॥ २। और छुटकारे की रीति यह है कि हर एक धनिक जो अपने परोसी को ऋण देता है सो उसे छोड़ देवे और अपने परोसी से अथवा भाई से न लेवे इस कारण कि यह परमेश्वर का छुटकारा कहाता है॥ ३। परदेशी से तू ले सके परंतु यदि तेरा कुछ तेरे भाई पर है तो उसे छोड़ दे॥ ४। जिसतें तुम्म कोई कंगाल न होवे क्योंकि परमेश्वर उस देश में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार में देता है तुझे आशीष देगा॥ ५। यदि तू केवल परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुने और ध्यान से उन समस्त आज्ञाओं पर चले जो आज मैं तुझे कहता हूं॥ ६। तो परमेश्वर तेरा ईश्वर जैसा उस ने तुझ से प्रण किया है तुझे आशीष देगा और तू बहुत जातिगणों को उधार देगा परंतु तू उधार न लेगा और तू बहुत से जातिगणों पर राज्य करेगा परंतु वे तुझ पर राज्य न करेंगे॥ ७। यदि तुम्हारे बीच तुम्हारे भाइयों में से तेरे किसी नगर में उस देश का जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है कोई कंगाल होवे तो उस्से अपने मन को कठोर मत करियो और अपने कंगाल भाई की ओर से अपना हाथ न खींचियो॥ ८। परंतु अवश्य उस की सहाय करियो परंतु उस्से हाथ बंद मत कीजियो और निश्चय उस के आवश्यक के समान उसे उधार देना॥ ९। सावधान हो कि तेरे दुष्ट मन में कोई बुरी चिंता न हो कि सातवां बरस तेरे छुटकारे का बरस पास है और तेरी आंख तेरे कंगाल भाई की ओर बुरी होवे और तू उसे कुछ न देवे और वुह तुझ पर परमेश्वर के आगे विलाप करे और तेरे लिये पाप होवे॥ १०। अवश्य उसे दीजियो और जब तू उसे देवे तो तेरा मन उदास न होवे क्योंकि इस कारण परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे समस्त कार्यों में जिन में तू हाथ लगावे बढ़ती देगा॥ ११। क्योंकि देश में से कंगाल न मिटेंगे इस लिये मैं तुझे आज्ञा करता हूं कि अपने भाई के लिये जो

तेरे सन्मुख और अपने कंगाल और अपने दरिद्र के लिये जो तेरे देश में है अपना हाथ खोलियो॥ १२। यदि तेरा इबरानी भाई पुरुष हो अथवा स्त्री तेरे हाथ बेचा जाय और छः बरस लों तेरी सेवा करे तब सातवें बरस सेंत से उसे जाने दीजियो॥ १३। और जब तू उसे अपने पास से जाने देवे तो उसे छूछे हाथ मत जाने दीजियो॥ १४। अपनी झुंड और खत्ते और कोल्हू में से उस बढ़ती में से जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिई है उसे मन खोलके दीजियो॥ १५। और स्मरण कीजियो कि मिस्र देश में तू बंधुआ था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे छुड़ाया इस लिये आज मैं तुझे यह आज्ञा करता हूं॥ १६। और यदि वुह तुझे कहे कि मैं तुझ पास से न जाऊंगा इस कारण कि वुह तुझ से और तेरे घर से प्रीति रखता है क्योंकि वुह तेरे संग कुशल से है॥ १७। तो तू एक सुतारी लेके अपने द्वार पर उस का कान छेदियो जिसते वुह सदा का तेरा सेवक हो और अपनी दासी से भी तू ऐसा ही करियो॥ १८। और जब तू उसे छोड़ देवे तो तुझे कठिन न समुझ पड़े क्योंकि उस ने दो बनिहारों के तुल्य छः बरस लों तेरी सेवा किई सो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हर एक कार्य में तुझे आशीष देगा॥ १९। अपने ढोर के और अपने झुंड के सारे पहिलौठे नर परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र करियो तू अपने बैलों के पहिलौठों से कुछ कार्य मत लीजियो अपनी भेड़ के पहिलौठों को मत कतरना॥ २०। परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बरस बरस उस स्थान में जो परमेश्वर चुनेगा अपने घराने सहित खाइयो॥ २१। परन्तु यदि उस में कोई खोट होवे लंगड़ा अथवा अंधा अथवा कोई भारी खोट होवे तो उसे परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान मत करियो॥ २२। जैसे हरिन और बारहसींगा तुम उसे अपने द्वारों पर खाइयो पवित्र हो अथवा अपवित्र दोनों समान॥ २३। केवल उस का लोहू मत खाइयो तू उसे पानी की नाईं भूमि पर ढाल दीजियो॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

आबिब मास का पालन करियो और परमेश्वर अपने ईश्वर का बीत जाना मानियो क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर अबिब के मास में रात को तुझे मिस्र से निकाल लाया॥ २। उस स्थान में जिसे परमेश्वर अपना नाम स्थापन करने के लिये चुनेगा अपने परमेश्वर ईश्वर के लिये तू अपने ढोर में से बीत जाना बलि करियो॥ ३। तू उस के साथ ख़मीरी रोटी मत खाना सात दिन उस के साथ अख़मीरी रोटी अर्थात् कष्ट की रोटी खाइयो क्योंकि तू मिस्र देश से उतावली से निकला जिसतें तू उस दिन को अपने जीवन भर स्मरण करे जब तू मिस्र से निकला॥ ४। और तेरे सारे सिवाने में सात दिन लों ख़मीरी रोटी दिखाई न देवे और न उस मांस में से जिसे तू ने पहिले दिन सांझ को बलि किया रात भर बिहान लों बच रहे॥ ५। तू अपने किसी फाटकों के भीतर जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है बीत जाना बलि मत करियो॥ ६। परंतु उसी स्थान में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर अपना नाम स्थापन करने के लिये चुनेगा सांझ को सूर्य्य अस्त होते उसी समय में जब तू मिस्र से निकला बीत जाना बलि करियो॥ ७। और उस स्थान में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा तू उसे भूनके खाइयो और बिहान को फिर के अपने तंबूओं को चले जाइयो॥ ८। छः दिन लों अख़मीरी रोटी खाइयो और सातवें दिन जो तेरे ईश्वर के रोक़ का दिन है कुछ काम काज न करना॥ ९। अपने लिये सात अठवारे गिन और खेती में हंसुआ लगाने से गिन्ने का आरंभ करियो॥ १०। और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये अठवारों का पर्ब्ब रखिआे उस में तू अपने ईश्वर के आशीष के समान अपने हाथ के मनमंता दान दीजियो॥ ११। और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे तू और तेरा बेटा बेटी और तेरे दास दासी और लावी जो तेरे फाटकों के भीतर हैं और परदेशी और अनाथ और बिधवा जो तुझ में हैं उस स्थान में आनंद करियो जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुन लेगा कि अपना नाम वहां स्थापन करे॥ १२। और सुधि रखियो कि तू मिस्र में दास था सो चैाकस रह कि इन विधिन को पालन कर और मान॥ १३। जब तू अपने खरिहान

और अपने कोल्हू को एकट्ठा कर चुके तो सात दिन लों तंबुओं का पर्ब मानियो॥ १४। और अपने बेटा बेटी और अपने दास दासी और लावी और परदेशी और अनाथ और बिधवा समेत जो तेरे फाटकों के भीतर हैं आनंद करियो॥ १५। सात दिन लों अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये उसी स्थान में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा पर्ब मानियो इस लिये कि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी सारी बढ़तियों में और तेरे हाथों के समस्त कार्यों में तुझे बर देगा सो तू निश्चय आनंद करियो॥ १६। बरस में तेरे समस्त पुरुष तीन बार अर्थात् अखमीरी रोटी के पर्ब में और अठवारों के पर्ब में और तंबुओं के पर्ब में परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस स्थान में जिसे वुह चुनेगा एकट्ठे होवें और वे परमेश्वर के आगे छूछे न आवें॥ १७। हर एक पुरुष अपनी पूंजी के समान और परमेश्वर तेरे ईश्वर के आशीष के समान जो उस ने तुझे दिया है देवे॥ १८। अपने समस्त फाटकों में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देगा अपनी समस्त गोष्ठियों में न्यायी और प्रधान ठहराइयो और वे यथार्थ से लोगों का न्याय करें॥ १९। तू अन्याय विचार मत करियो तू पक्ष न करियो घूस मत लीजियो क्योंकि घूस बुद्धिमान को अंधा कर देता है और धर्म्मी की बातों को फेर देता है॥ २०। जो हर प्रकार से यथार्थ है तू उस का पीछा करियो जिसतें तू जीये और उस देश का जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है अधिकारी होवे॥ २१। परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी के लग अपने लिये पेड़ों का कुंज जिसे तू लगाता है न लगाइयो॥ २२। न अपने लिये किसी भांति की मूर्त्ति स्थापित करियो जिस्से परमेश्वर तेरे ईश्वर को घिन है।

१७ सतरहवां पर्ब्ब॥

तू परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बैल अथवा भेड़ जिस में कोई खोट अथवा बुराई होय बलि मत चढ़ाइयो क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर को उस्से घिन है॥ २। यदि तुम्हारे किसी फाटकों के भीतर जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तुम्हों में कोई पुरुष अथवा स्त्री होय जिस ने परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस की बाचा को भंग करके दुष्टता किई

होय॥ ३। और जाके दूसरे देवों की पूजा किई हो और उन्हें दंडवत किई हो जैसे सूर्य अथवा चंद्रमा अथवा आकाश की कोई सेना जिन को मैं ने आज्ञा नहीं दिई॥ ४। और तुझ से कहा जाय और तू ने सुना है और यत्न से खोजा और सत्य पाया और निश्चय किया जाय कि इसराएल में ऐसा घिनित कार्य हुआ है॥ ५। तब तू उस पुरुष अथवा उस स्त्री को जिस ने तेरे फाटकों में दुष्ट कार्य किया है उसी पुरुष अथवा उसी स्त्री को बाहर लाइयो और उन पर यहां लों पथरवाह कीजियो कि वे मर जावें॥
६। दो अथवा तीन की साक्षी से जो मार डालने के योग्य है मार डाला जाय परंतु एक साक्षी से वुह मारा न जाय॥ ७। पहिले साक्षियों के हाथ उस के मारने के लिये उठें और पीछे सब लोगों के तुम अपनों में से बुराई को यों मिटा डालियो॥ ८। यदि आपुस के लोहू बहाने में और आपुस के बिवाद में और आपुस की मार पीट में तेरे फाटकों के भीतर अपवाद के बिषय में तेरे बिचार के लिये कठिन होय तो तू उठ और उस स्थान को जा जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना है॥ ९। और याजकों अर्थात् लावियों पास और उस न्यायी के पास जो उन दिनों में हो जा और उस्से पूछ और वे तुझे न्याय की आज्ञा बतावेंगे॥ १०।
और तू उस आज्ञा के समान करना जो वे तुझे उस स्थान से जिसे परमेश्वर चुनेगा बतावे तू सोचके उन सभों के समान जो वे तुझे बतावें मानना॥
११। और उस ब्यवस्था की आज्ञा के समान जो वे तुझे सिखावें और उस बिचार के तुल्य जो तुझे कहें करियो और उस आज्ञा से जो वे तुझे बतावें दहिने बायें मत मुड़ियो॥ १२। और जो मनुष्य ढिठाई करे और उस याजक की बात जो परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे सेवा करने के लिये खड़ा है अथवा उस न्यायी का बचन न सुने वही मनुष्य मार डाला जाय और तू इसराएल में से उस बुराई को यों मिटा दीजियो॥ १३। जिसतें समस्त लोग सुनें और डरें और फेर ढिठाई से अपराध न करें॥ १४। जब तू उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है पहुंचे और उसे अपने बश में करे और उस में बसे और कहे कि उन सब जातिगण के समान जो मेरे आस पास हैं मैं भी अपने लिये एक राजा बनाऊंगा॥ १५। जो तू किसी रीति से अपने

ऊपर राजा ठहराना जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुने तू अपने भाइयों में से एक को अपना राजा बनाना और किसी परदेशी को जो तेरा भाई नहीं है अपने ऊपर न ठहराना॥ १६। परंतु वुह अपने लिये घोड़े न बढ़ावे और न लोगों को मिस्र में फेर लेजाय जिसतें वुह घोड़े बढ़ावे कि परमेश्वर ने तुम्हें कहा है कि तुम उस मार्ग में फेर कभी न जाना॥ १७। और वुह अपने लिये पत्नी न बटोरे ऐसा न हो कि उस का मन फिर जाय और वुह अपने लिये बहुत रूपा और सोना बटोरे॥ १८। और यों होगा कि जब वुह अपने राज्य के सिंहासन पर बैठे तो इस व्यवस्था को पुस्तक में अपने लिये लिखे जो लावी याजकों के आगे है॥ १९। वुह उस के साथ रहा करे और अपने जीवन भर उसे पढ़ा करे जिसतें वुह परमेश्वर अपने ईश्वर का डर सीखे और इस व्यवस्था के समस्त वचन और इन बिधिन को पालन करे और माने॥ २०। जिसतें उस का अंतःकरण अपने भाइयों के ऊपर न उभड़े और कि वुह आज्ञा से दहिने अथवा बायें न मुड़े जिसतें उस के राज्य में उस के और उस के बंश के इसराएल के मध्य में जीवन बढ़ जायें॥

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

याजकों और लावी और लावियों की समस्त गोष्ठी का भाग और अधिकार इसराएल के साथ न होगा वे परमेश्वर के होम की भेंट और उस के अधिकार खायें॥ २। इस लिये वे अपने भाइयों में अधिकार न पावेंगे परमेश्वर उन का अधिकार है जैसा उस ने उन्हें कहा है॥ ३। और लोगों में से जो बलिदान चढ़ाते हैं चाहे बैल अथवा भेड़ याजक का भाग यह होगा कि वे याजक को कांधा और दोनों गाल और झोझ देवें॥ ४। और तू अपने अन्न और अपनी मदिरा और तेल में का पहिला भाग और अपनी भेड़ों के रोम में का पहिला उसे देना॥ ५। क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरी समस्त गोष्ठियों में से उसे चुना है कि वुह और उस के बेटे परमेश्वर के नाम की सदा सेवा करें॥ ६। यदि कोई लावी समस्त इसराएल में से तेरे किसी फाटकों से आवे जहां वुह बास करता था और उस स्थान में जिसे

परमेश्वर चुनेगा बड़ी लालसा से आ पज्ञंचे॥ ७। तो वुह परमेश्वर अपने
ईश्वर के नाम से सेवा करे जैसे उस के समस्त लावी भाई जो परमेश्वर के
आगे वहां खड़े रहते हैं॥ ८। अपने पितरों की बेची ज़ई बस्तुन के
मोल को छोड़के वे उन के भाग के समान खाने को पावें॥ ९। जब तू
उस देश में पज्ञंचे जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तो उन जातिगणों
के घिनित कार्य्य न सीखियो॥ १०। तुझ में कोई ऐसा न हो कि अपने
बेटे अथवा बेटी को आग में से चलावे अथवा दैवज्ञ कार्य्य करे अथवा
मुहूर्त्त माने अथवा मायावी अथवा टोनहिन॥ ११। अथवा तांत्रिक
अथवा बशकारी अथवा टोनहा अथवा गणक॥ १२। क्योंकि सब लोग
जो ऐसे कार्य्य करते हैं परमेश्वर से घिनित हैं और ऐसे घिन के कारण
से उन को परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे आगे से दूर करता है॥ १३। तू
परमेश्वर अपने ईश्वर से निष्कपट हो॥ १४। क्योंकि ये जातिगण
जिन का तू अधिकारी होगा मुहूर्त्त के मनवैये को और दैवज्ञ को सुनते थे
परंतु तू जो है परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे रोक रक्खा है॥ १५।
परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे कारण तेरे ही मध्य में से तेरे ही भाइयों में से
एक आगमज्ञानी मेरे तुल्य उदय करेगा तुम उस की सुनियो॥ १६।
इन सभों की नाईं जो तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर से हरिब में सभा के दिन
मांगा और कहा ऐसा न हो कि मैं परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुनूं
और ऐसी बड़ी आग मैं फेर देखूं जिसतें कि मैं मर न जाऊं॥ १७।
और परमेश्वर ने मुझे कहा कि उन्हों ने जो कुछ कहा सो अच्छा कहा॥
१८। मैं उन के लिये उन के भाइयों में से तेरे तुल्य एक आगमज्ञानी
उदय करूंगा और अपना बचन उस के मूंह में डालूंगा और जो कुछ मैं
उसे कहूंगा वुह उन से कहेगा॥ १९। और ऐसा होगा कि जो कोई
मेरी बातों को जिन्हें वुह मेरे नाम से कहेगा न सुनेगा मैं उस्से लेखा
लेऊंगा॥ २०। परंतु जो आगमज्ञानी ऐसी ढिठाई करे कि कोई बात
जो मैं ने उसे नहीं कही मेरे नाम से कहे अथवा जो और देवों के नाम से
कहे तो वुह आगमज्ञानी मार डाला जाय॥ २१। और यदि अपने मन
में कहे कि मैं उस बचन को क्योंकर जानूं जिसे परमेश्वर ने न कहा॥
२२। जब आगमज्ञानी परमेश्वर के नाम से कुछ कहे और वुह जो उस

ने कही है न होवे अथवा पूरी न हो तो वह बात परमेश्वर ने नहीं कही परंतु उस आगमज्ञानी ने ढिठाई से कही है तू उसे मत डर॥

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को जिन का देश परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है काट डाले और तू उन का अधिकारी होवे और उन के नगरों में और उन के घरों में बसे॥ २। तो तू अपने उस देश के मध्य में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे बश में करता है अपने लिये तीन नगर अलग करना॥ ३। तू अपने लिये एक मार्ग सिद्ध करना और अपने देश के सिवानों को जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार में देता है तीन भाग करना जिसतें हर एक घाती उधर भागे॥ ४। और घाती की व्यवस्था जो वहां भागे जिसतें वुह जीता रहे यह है जो कोई अपने परोसी को जो उसे आगे बैर न रखता था अजान में मार डाले॥ ५। अथवा कोई मनुष्य अपने परोसी के साथ लकड़ी काटने को बन में जाय और कुल्हाड़ा हाथ में उठावे कि लकड़ी काटे और कुल्हाड़ा बेंट से निकल जाय और उस के परोसी को ऐसा लगे कि वुह मर जाय तो वुह उन में से एक नगर में भाग के बचे॥ ६। न हो कि मार्ग के दूर होने के कारण लोहू का प्रतिफल दायक अपने मन के कोप से घाती का पीछा करे और उसे पकड़ लेवे और उसे मार डाले यद्यपि वुह मार डालने के योग्य नहीं क्योंकि वुह आगे से उस का डाह न रखता था॥ ७। इस लिये मैं तुझे आज्ञा करके कहता हूं कि तू अपने कारण तीन नगर अलग करना॥ ८। और यदि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा सिवाना बढ़ावे जैसा उस ने तेरे पितरों से किरिया खाके कहा है और वुह समस्त देश तेरे पितरों को देने को बाचा किई तुझे देवे॥ ९। यदि तू इस समस्त आज्ञाओं को पालन करे और उन्हें माने जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं और परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रखके सर्वदा उस के मार्ग पर चले तो तू इन तीन नगरों से अधिक अपने लिये तीन नगर बढ़ाना॥ १०। जिसतें तेरे देश पर जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा अधिकार कर देता है निर्दोष लोहू बहाया न जाय कि हत्या

तुझ पर होय॥ ११। परंतु यदि कोई जन जो अपने परोसी से बैर
रखता हो और उस की घात में लगा हो और उस के बिरोध में उठके
उसे ऐसा मारे कि वुह मर जाय और इन में से एक नगर में भाग जाय॥
१२। तो उस के नगर के प्राचीन भेज के उसे वहां से मगावें और लोहू
के प्रतिफलदाता के हाथ में सौंप देवें कि वुह घात किया जाय॥ १३।
तेरी आंख उस पर दया न करे परंतु तू निर्दोष लोहू के पाप को इसराएल
से यों दूर करना तेरा भला हो॥ १४। अपने परोसी के सिवाने को मत
हटा कि उसे अगिले लोगों ने तेरे अधिकार में रक्खा है तू उस देश में जो
परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार और बश में कर देता है अपने परोसी
के सिवाने को मत हटा जिसे अगिले लोगों ने तेरे अधिकार में रक्खा है॥
१५। किसी मनुष्य के अपराध और पाप पर कोई पाप क्यों न हो एक
साक्षी ठीक नहीं है परंतु दो अथवा तीन साक्षियों के मुंह से हर एक बात
ठहराई जायगी॥ १६। यदि कोई झूठा साक्षी उठके किसी मनुष्य पर
साक्षी देवे॥ १७। तो वे दोनों जिन में बिवाद है परमेश्वर के आगे
याजकों और न्यायियों के सन्मुख जो उन दिनों में हों खड़े किये जायें॥
१८। और न्यायी यत्न से बिचार करें सो यदि वुह साक्षी झूठा ठहरे और
उस ने अपने भाई पर झूठी साक्षी दिई हो॥ १९। तब तुम उस्से ऐसा
करना जो उस ने चाहा था कि अपने भाई से करे इस रीति से बुराई को
अपने में से दूर करना॥ २०। अब और जो हैं सुनके डरेंगे और आगे
को तुम्में ऐसी बुराई फिर न करेंगे॥ २१। और तेरी आंख दया न करे
कि प्राण की संती प्राण आंख की संती आंख दांत की संती दांत हाथ
की संती हाथ पांव की संती पांव होगा॥

२० बीसवां पर्ब्ब।

जब तू लड़ाई के लिये अपने बैरियों पर चढ़ जाय और देखे कि उन
के घोड़े और गाड़ियां और लोग तुझ से बड़त हैं तो तू उन से
मत डर क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र देश से निकाल
लाया तेरे साथ है॥ २। और यों होगा कि जब तू संग्राम के निकट
पड़ंचे तो याजक आगे होके लोगों को कहे॥ ३। और उन से बोले

कि हे इसराएलियो सुनो तुम आज के दिन अपने बैरियों से लड़ाई करने को जाते हो सो तुम्हारा मन न घटे डरो मत और मत घबराओ और उन से मत थर्थराओ॥ ४। क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे साथ जाता है कि तुम्हारे लिये तुम्हारे बैरियों से लड़ के तुम्हें बचावे॥ ५। और प्रधान लोगों से कहे और बोले कि तुम्में कौन मनुष्य है जिस ने नया घर बनाया हो और उसे नहीं स्थापा है वुह अपने घर को फिर जाय ऐसा न हो कि वुह लड़ाई में मारा जाय और दूसरा मनुष्य उसे स्थापे॥ ६। और कौन मनुष्य है जिस ने दाख की बारी लगाई हो और उस के फल न खाये हो वुह अपने घर को फिर जाय ऐसा न हो कि वुह लड़ाई में मारा जाय और दूसरा उसे खावे॥ ७। और कौन मनुष्य है जो किसी स्त्री से बचनदत्त हुआ है और वुह उसे घर न लाया हो वुह अपने घर को फिर जाय ऐसा न हो कि वुह लड़ाई में मारा जाय और दूसरा उसे लेवे॥ ८। और प्रधान लोगों से यह भी कहे कि कौन मनुष्य है जो डरपोकना और असाहसी अपने घर को फिर जाय न हो कि उस के भाइयों के मन उस के मन की नाईं बोदे हो जायें॥ ९। और यों हो कि जब प्रधान लोगों से कह चुके तो वे सेना के प्रधानों को ठहरावें कि लोगों की अगुआई करें॥ १०। जब तू लड़ाई के लिये किसी नगर के निकट पहुंचे तो पहिले उस्से मिलाप का प्रचार कर यदि वुह तुझे मिलाप का उत्तर देवे और तेरे लिये द्वार खोले॥ ११। तब यों होगा कि सब लोग जो उस नगर में हैं तेरे करदायक होंगे और तेरी सेवा करेंगे॥ १२। और यदि वुह तुझ से मिलाप न करे परंतु तुझ से लड़ाई करे तो तू उसे घेर ले॥ १३। और जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उसे तेरे हाथ में कर देवे तू वहां के हर एक पुरुष को तलवार की धार से मार डालियो॥ १४। केवल स्त्रियों और लड़कों और पशुन को उन सब समेत जो उस नगर में हों लूट ले और तू अपने बैरियों की लूट को जो तेरे परमेश्वर ईश्वर ने तुझे दिई हैं खा॥ १५। तू उन सब नगरों से जो तुझ से बहुत दूर हैं और इन जातिगणों के नगरों में से नहीं हैं ऐसा करना॥ १६। परंतु इन लोगों के नगरों को जिन्हें परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा अधिकार कर देता है किसी को जो सांस लेता हो जीता न छोड़ना॥

१७। परंतु उन्हें सर्बथा नाश कर डालना हित्ती और अमूरी और कनआनी और फरिज्जी और हवी और यबूसी को जैसी परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है॥ १८। जिसतें वे समस्त घिनौने कार्य जो उन्हों ने अपने देवों से किये तुम्हें न सिखावें कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के अपराधी हो जाओ॥ १९। जब तू किसी नगर के लेने के लिये लड़ाई में बहुत दिन ताईं घेरे रहे तो तू कुल्हाड़ी चलाय के उन के वृक्ष नाश मत करियो परंतु तू उन के फल खाइयो सो तू उन्हें काट न डालियो कि तेरे लिये घेरने के काम में आवें क्योंकि खेत के पेड़ मनुष्य के लिये हैं। २०॥ केवल वे वृक्ष जो खाने के काम के न हों उन्हें काट के नाश करियो और उस नगर के आगे जो तुझ से लड़ता है गढ़ बना जब ताईं वुह तेरे बश में होवे।

२१ इक्कीसवां पर्ब्ब।

यदि उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे बश में करता है किसी की लोथ खेत में पड़ी मिले और जाना न जाय कि किस ने उसे मारा॥ २। तब तेरे प्राचीन और तेरे न्यायी बाहर निकलें और उन नगरों को जो घातित के चारों ओर हैं नापें॥ ३। और यों होगा कि जो नगर घातित के समीप है उसी नगर के प्राचीन एक कलोर लेवें जिस से कार्य न किया गया हो और जूये तले न आई हो॥ ४। और नगर के प्राचीन उस कलोर को खड़बिड़ तराई में जो न जोता गया हो न उस में कुछ बोया गया हो ले जाय और उसी तराई में उस कलोर के सिर को उतारे॥ ५। तब याजक जो लावी के संतान हैं पास आवें क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपनी सेवा के लिये और परमेश्वर के नाम से आशीष देने के लिये उन्हीं को चुना है और उन्हीं के बचन से हर एक झगड़ा और हर एक बिपत्ति का निर्णय किया जायगा॥ ६। फिर उस नगर के समस्त प्राचीन जो घातित के पास हैं उस कलोर के ऊपर जो तराई में बलि किई गई अपने हाथ धोवें॥ ७। और उत्तर देके कहें कि हमारे हाथों ने यह लोहू नहीं बहाया है न हमारी आखों ने देखा है॥ ८। हे परमेश्वर अब अपने इसराएली लोगों पर दया कर

जिन्हें तू ने छुड़ाया है और वृथा हत्या अपने इसराएली लोगों पर मत रख तब वुह हत्या क्षमा किई जायगी॥ ९। सो जब तू इसी रीति से वुह करे जो परमेश्वर के आगे ठीक है तब तू हत्या को अपने में से दूर करेगा॥ १०। और जब तू युद्ध के लिये अपने बैरियों पर चढ़े और परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे हाथ में कर देवे और तू उन्हें बंधुआ करे॥ ११। और उन बंधुओं में सुंदर स्त्री देखे और तेरा मन उस पर चले कि उसे अपनी पत्नी करे॥ १२। तब तू उसे अपने घर में ला उस का सिर मुड़वा और नंह कटवा॥ १३। तब वुह बंधुआई का वस्त्र उतारे और तेरे घर में रहे और पूरा एक मास भर अपने मा बाप के लिये शोक करे उस के पीछे तू उसे ग्रहण करना और उस का पति होना और वुह तेरी पत्नी होा॥ १४। उस के पीछे यदि तू उस्से प्रसन्न न हो तो जिधर वुह चाहे उसे जाने दे पर तू उसे रोकड़ पर मत बेचना तू उस्से कुछ वाणिज्य न करना क्योंकि तू ने उस की पति लिई॥ १५। यदि किसी की दो पत्नियां हों एक प्रिया और दूसरी अप्रिया और प्रिया और अप्रिया दोनों से लड़के हों और पहिलौंठा अप्रिया से हो॥ १६। तो यों होगा कि जब वुह अपने पुत्रों को अधिकारी करे तब वुह प्रिया के बेटे को अप्रिया के बेटे पर पहिलौंठा न करे॥ १७। परंतु वुह अप्रिया के बेटे को अपनी समस्त संपत्ति से दूना भाग देके पहिलौंठा ठहरावे क्योंकि वुह उस के बल का आरंभ है और पहिलौंठे होने का भाग उसी का है॥ १८। यदि किसी का पुत्र ढीठ और झगरा होय जो अपने माता पिता की आज्ञा न माने और जब वे उसे ताड़ना करें और वुह उन्हें न माने॥ १९। तब उस के माता पिता उसे पकड़ के उस नगर के प्राचीनों पास उस स्थान के फाटक पर लावें॥ २०। और वहां के प्राचीनों से जाके कहें कि हमारा यह बेटा ढीठ और झगरा है हमारी बात नहीं मानता बड़ा ही खाऊ और पिअक्कड़ है॥ २१। और उस के नगर के सब लोग उस पर पथरवाह करें कि वुह मर जाय इस रीति से तू दुष्ट को अपने में से दूर करना जिसतें समस्त इसराएल सुनके डरें॥ २२। और यदि किसी ने मार डालने के योग्य पाप किया हो और वुह मारा जाय तू उसे पेड़ पर लटका देवे॥ २३। उस की लोथ रात भर

पेड़ पर लटकी न रहे परंतु तू उसी दिन उसे गाड़िये। क्योंकि जो फांसी दिया जाता है सो ईश्वर का धिक्कारित है इस कारण चाहिये कि तेरी भूमि जिस का अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है अशुद्ध न हो जाय॥

२२ बाईसवां पर्व्व।

तू अपने भाई के बैल श्रीर भेड़ के। भटकी ऊई देख के अपनी श्रांख उन से मत छिपा परंतु किसी न किसी भांति से उन्हें अपने भाई पास फेर ला॥ २। श्रीर यदि तेरा भाई तेरे परोस में न हो अथवा तू उसे पहिचानता न हो तब उसे अपने ही घर ला श्रीर वुह तेरे पास रहे जब लों तेरा भाई उस की खोज करे श्रीर तू उसे फेर देना॥ ३। श्रीर इसी रीति तू उस के गदहे श्रीर उस के बस्त्र श्रीर सब कुछ से जो तेरे भाई की खोई ऊई हो श्रीर तू ने पाई है ऐसा ही कर तू अपनी श्रांख उन से मत छिपाना॥ ४। अपने भाई का गदहा अथवा बैल मार्ग में गिरा ऊश्रा देख के श्राप के। उन से मत छिपा निश्चय उस का सहाय करके उठा देना॥ ५। पुरुष का बस्त्र स्त्री न पहिने श्रीर न पुरुष स्त्री का पहिने क्योंकि सब जो ऐसा करते हैं परमेश्वर तेरे ईश्वर के श्रागे घिनित हैं॥ ६। यदि पथ में चलते किसी पक्षी का खोता पेड़ पर अथवा भूमि पर तुझे दिखाई देवे चाहे उस में गेदे अथवा श्रंडे हों श्रीर मां गेदों पर अथवा श्रंडों पर बैठी ऊई हो तो तू गेदों के। मां समेत मत पकड़ना॥ ७। परंतु माता के। छोड़ देना श्रीर गेदों के। अपने लिये लेना जिसतें तेरा भला होय श्रीर तेरा जीवन बढ़ जाय॥ ८। जब तू नया घर बनावे तब अपनी छत पर श्राड़ के लिये मुंड़ेरा बना ऐसा न हो कि कोई ऊपर से गिरे श्रीर तू अपने घर में हत्या का कारण हो॥ ९। अपने दाख की बारी में नाना प्रकार के बीज मत बोना ऐसा न हो कि बीज की भरपूरी जिसे तू ने बोया है श्रीर तेरी दाख की बारी का फल अशुद्ध हो जाय॥ १०। तू गदहे के। बैल के साथ मत जोतना॥ ११। नाना भांति का बस्त्र जैसा कि ऊन श्रीर सूत का मत पहिनियो॥ १२। अपने श्रोढ़ने की चारों श्रोर झालर लगाना॥

१३। यदि कोई पत्नी करे और उसे ग्रहण करे और उस्से घिन करे॥ १४। और उस पर कलंक लगावे और कहे कि मैं ने इस स्त्री से ब्याह किया और जब मैं उस पास गया तब मैं ने उसे कुमारी न पाया॥ १५। तब उस कन्या के माता पिता उस के कुमारीपन का चिन्ह लेके उस नगर के फाटक पर प्राचीनों के आगे लावें॥ १६। और उस लड़की का पिता प्राचीनों से कहे कि मैं ने अपनी पुत्री इस पुरुष को ब्याह दिई है अब यह उस्से घिन करता है॥ १७। और देखो वुह उस पर कलंक की बात लगाता है कि मैं ने तेरी पुत्री को कुमारी न पाया तथापि ये मेरी पुत्री की कुमारीपन के चिन्ह हैं और वुह कपड़ा नगर के प्राचीनों के आगे फैलावे॥ १८। तब प्राचीन उस पुरुष को पकड़ के दंड देवे॥ १९। और वे उस्से सौ टुकड़ा चांदी डांड़ लेवें और लड़की के पिता को देवें इस लिये कि उस ने इसराएल की एक कुमारी पर कलंक लगाया और वुह उस की पत्नी बनी रहेगी वुह जीवन भर उसे त्याग न करे॥ २०। परंतु यदि यह बात ठीक ठहरे और लड़की की कुमारीपन का चिन्ह न पाया जाय॥ २१। तब वुह उस लड़की को उस के पिता के घर के द्वार पर निकाल लावे और उस नगर के लोग उस पर पथरवाह करके मार डालें क्योंकि उस ने अपने पिता के घर में छिनाला करके इसराएल में मूर्खता किई इस रीति से तू बुराई को अपने में से दूर करना।

२२। यदि कोई पुरुष बिवाहिता स्त्री से पकड़ा जाय तब वे दोनों ब्यभिचारी पुरुष और स्त्री मार डाले जावें इस रीति से तू अपने में से बुराई को दूर करना॥ २३। यदि कुमारी लड़की किसी से बचनदत्त होवे और कोई दूसरा पुरुष उस्से कुकर्म्म करे॥ २४। तब तुम उन दोनों को उस नगर के फाटक पर निकाल लाओ और उन पर पथरवाह करके उन दोनों को मार डालो कन्या को इस लिये कि वुह नगर में होते हुए न चिल्लाई और पुरुष को इस कारण कि उस ने अपने परोसी की पत्नी की पति लिई इस रीति से तू बुराई को अपने में से दूर करना॥ २५। परंतु यदि कोई पुरुष किसी बचनदत्त कन्या को खेत में पावे और पुरुष बरबस उस्से कुकर्म्म करे तो केवल पुरुष जिस ने यह कर्म्म किया

है मार डाला जाय॥ २६। परंतु उस लड़की को कुछ न कर क्योंकि
लड़की को घात का पाप नहीं है क्योंकि यह ऐसा है जैसे कोई अपने
परोसी पर झलड़ करे और उसे मार डाले॥ २७। क्योंकि उस ने उसे
खेत में पाया और वुह बचनदत्त लड़की चिल्लाई और छुड़ाने को कोई
न था॥ २८। यदि कोई कुमारी कन्या को जो किसी से बचनदत्त न
हो पकड़ के उस्से कुकर्म्म करे और वे पकड़े जावें॥ २९। तब वुह पुरुष
जिस ने उस्से कुकर्म्म किया लड़की के पिता को पचास टुकड़ा चांदी देवे
और वुह उस की पत्नी होगी इस कारण कि उस ने उसे अपत किया
वुह उसे जीवन भर त्याग न करे॥ ३०। कोई अपने पिता की पत्नी
को न ले और अपने पिता की नग्नता को न उघारे।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

जिस के अंडकोश में घाव होवे अथवा लिंग कट गया हो वुह परमेश्वर
की मंडली में प्रवेश न करे॥ २। जारज अपनी दसवीं पीढ़ी लों
परमेश्वर की मंडली में प्रवेश न करें॥ ३। और अम्मूनी और मोअबी
परमेश्वर की मंडली में दसवीं पीढ़ी लों प्रवेश न करें कोई उन में से
सनातन लों परमेश्वर की मंडली में प्रवेश न करेगा॥ ४। इस कारण
कि जब तुम मिस्र से निकले उन्हों ने पंथ में अन्न जल लेके तुम से भेंट न
किई इस कारण कि उन्हों ने बओर के पुत्र बलआम को अरम नहर के
फतूर से बुलाया जिसतें तुझे स्राप देवें॥ ५। तथापि परमेश्वर तेरे
ईश्वर ने तेरे लिये स्राप को आशीष की संती पलट दिया क्योंकि
परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझ पर प्रेम किया॥ ६। जीवन भर सदा लों
तू उन का कुशल और भलाई न चाहना॥ ७। और किसी अदूमी से
घिन न करना क्योंकि वुह तेरा भाई है और किसी मिस्री से घिन न
करना इस कारण कि तू उस के देश में परदेशी था॥ ८। उन की
तीसरी पीढ़ी के जो लड़के उत्पन्न हों परमेश्वर की मंडली में प्रवेश करें॥
९। जब सेना अपने बैरियों पर चढ़े तब हर एक पाप से आप को बचा
रखना॥ १०। यदि तुझ में कोई पुरुष रात्रि की अशुद्धता के कारण
अशुद्ध होवे तो वुह छावनी से बाहर निकल जाय और छावनी के भीतर

न आवे॥ ११। परंतु संध्या के समय में जल से स्नान करे और जब सूर्य्य अस्त हो चुके तब छावनी में आवे॥ १२। और छावनी के बाहर एक स्थान होगा वहां बाहर निकल के जाया करना॥ १३। और तेरे पास हथियार पर एक खंती होय और जब तू बाहर जाके बैठे तो उससे खोदना और मल को ढांप देना॥ १४। इस लिये कि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी छावनी के मध्य में फिरता है कि तुझे बचावे और तेरे बैरियों को तेरे बश में करे सो तेरी छावनी पवित्र रहे न होवे कि वुह तेरे मध्य में किसी वस्तु की अशुद्धता देखे और तुझ से फिर जाय॥ १५। यदि किसी का सेवक अपने स्वामी से भाग के तुझ पास आवे तू उसे उस के स्वामी को मत सौंप॥ १६। वुह तेरे स्थानों में से जहां चाहे तहां तेरे साथ रहे तेरे फाटकों में से किसी एक में जो उसे अच्छा लगे तू उसे क्लेश मत देना॥ १७। इसराएल की बेटियों में बेश्या न हों न इसराएल के बेटों में पुरुषगामी हों॥ १८। तू किसी छिनाल की कमाई अथवा कुत्ते का मोल किसी मनौती में परमेश्वर अपने ईश्वर के मंदिर में मत लाइयो कि ये दोनों परमेश्वर तेरे ईश्वर से घिनित हैं॥ १९। तू अपने भाई को बियाज पर ऋण मत देना रोकड़ अनाज अथवा और कोई वस्तु जो बियाज पर दिई जाती है बियाज पर मत देना॥ २०। परदेशी को बियाज पर उधार दे सके परंतु अपने भाई को बियाज पर उधार मत देना जिसतें परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का तू अधिकारी होने जाता है जिस जिस काम में तू हाथ लगावे तुझे आशीष देवे॥ २१। जब तू ने कोई मनौती परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मानी उसे पूरा करने में बिलम्ब मत कर इस लिये कि परमेश्वर तेरा ईश्वर निश्चय तुझ से उस का लेखा लेगा और तुझ पर पाप ठहरेगा॥ २२। परंतु यदि तू कुछ मनौती ना माने तो अपराधी नहीं॥ २३। जो कुछ तेरे मूंह से निकला अर्थात् बांछा की भेंट जैसा तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मानी है जिसे तू ने अपने मूंह से प्रण किया है उसे मान और पूरी कर॥ २४। जब तू अपने परोसी के दाख की बारी में जावे तब जितने दाख चाहे अपनी इच्छा भर खा परंतु अपने पात्र में मत रख॥ २५। जब तू अपने परोसी

के अन्न के खेत में जाय तब अपने हाथ से बालें तोड़ सके परंतु अपने भाई का खेत हंसुआ से मत काट॥

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

अब कोई पुरुष पत्नी से ब्याह करे और उस के पीछे ऐसा हो कि वुह उस की दृष्टि में अनुग्रह न पावे इस कारण कि उस ने उस में कुछ अशुद्ध बात पाई तो वुह त्याग पत्र लिखके उस के हाथ में देवे और उसे अपने घर से बाहर करे॥ २। और जब वुह उस के घर से निकल गई तब वुह दूसरे पुरुष की हो सके॥ ३। और दूसरा पति भी उसे देख न सके और त्याग पत्र लिखके उस के हाथ में देवे और अपने घर से निकाल देवे अथवा दूसरा उसे पत्नी करके मर जाय॥ ४। तो उचित नहीं कि उस का पहिला पति जिस ने उसे निकाल दिया था जब वुह अशुद्ध हो चुकी उसे फिर लेके पत्नी करे क्योंकि वुह परमेश्वर के आगे घिनित है सो उस देश को अशुद्ध मत कर जिसका अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है॥ ५। जब किसी का नया बिवाह होवे तब वुह लड़ाई को न जाय और उस्से कुछ कार्य न लिया जाय परंतु वुह एक बरस अपने घर में अवकाश से रहे और अपनी पत्नी को बहलावे॥ ६। कोई मनुष्य किसी की चक्की के ऊपर का अथवा नीचे का पाट बंधक न रक्खे क्योंकि वुह जीवन को बंधक रखता है॥ ७। यदि मनुष्य इसराएल के संतानों में से किसी भाई को चुराते हुए पकड़ा जाय और उस का बेपार करे अथवा उसे बेचे तो वुह चोर मारा जाय और तू बुराई को अपने में से दूर कर॥ ८। चौकस रह कि कोढ़ की मरी में तू चौकसी से देख और सब जो लावी याजक तुम्हें सिखावे उस की रीति पर चल जैसी मैं ने तुझे आज्ञा किई है वैसा ही करना॥ ९। चेत कर कि जब तुम मिस्र से निकले परमेश्वर तेरे ईश्वर ने मार्ग में मिरयम से क्या किया॥

१०। जब तू अपने भाई को कोई बस्तु मंगनी अथवा उधार देवे तब उस का बंधक लेने को उस के घर में मत पैठ॥ ११। तू बाहर खड़ा रह और उधारनिक आप अपना बंधक तेरे पास बाहर लावेगा॥ १२। और यदि वुह कंगाल होवे तो तू उस के बंधक को रखके

मत लेट रह॥ १३। किसी भांति से जब सूर्य अस्त होने लगे उस का बंधक उसे फिर देना जिसतें वुह अपने वस्त्र में सोवे और तुझे आशीष देवे सो तुझे परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे धर्म्म होगा॥ १४। ऐसा न हो कि तू कंगाल और दीन बनिहार को सतावे चाहे वुह तेरे भाई में से हो अथवा तेरे परदेशियों में से जो तेरे देश में तेरे फाटकों में रहते हैं॥ १५। तू उस दिन सूर्य अस्त होने से पहिले उस की बनी दे डालना क्योंकि वुह दरिद्र है और उस का मन उसी में है न हो कि परमेश्वर के आगे तुझ पर दोष देवे और तुझ पर पाप ठहरे॥ १६। संतान की संती पितर मारे न जावें न पितरों की संती संतान मारे जावें हर एक अपने ही पाप के कारण मारा जायगा॥ १७। तू परदेशी और अनाथ के विचार को मत बिगाड़ और बिधवा का कपड़ा बंधक मत रख॥ १८। परंतु चेत कर कि तू मिस्र में बंधुआ था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे वहां से छुड़ाया इस लिये मैं तुझे यह कार्य करने की आज्ञा करता हूं॥ १९। जब तू अपने खेत में कटनी करे और एक गट्ठी खेत में भूलके छूट जाय तो उस के लेने को फिर मत जा वुह परदेशी और अनाथ और बिधवा के लिये रहे जिसतें परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्यों में तुझे आशीष देवे॥ २०। जब तू अपने जलपाई के वृक्ष को झारे तो फिर के उस की डालियों को मत झाड़ वुह परदेशी और अनाथ और बिधवा के लिये रहे॥ २१। जब तू अपनी बारी के दाख एकट्ठा करे तो उस के पीछे मत बीनना वुह परदेशी और अनाथ और बिधवा के लिये रहे॥ २२। अब चेत कर कि तू मिस्र के देश में बंधुआ था इस लिये मैं तुझे यह कार्य करने को आज्ञा देता हूं॥

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

यदि लोगों में झगड़ा होवे और धर्म्म सभा में आवें कि न्यायी उन का न्याय करे तो वे धर्म्मी को निष्पापी और दुष्ट को पापी ठहरावें॥ २। और यदि वुह दुष्ट पीटे जाने के योग्य होवे तो न्यायी उसे लेटवावे और जैसा उस का अपराध होवे न्यायी अपने आगे ठहराये हुए के समान उसे पिटावे॥ ३। चालीस कोड़े मारें और उस्से बढ़ती नहीं

न होवे कि यदि वुह उस्से बढ़ जाय और इन्हों से बहुत अधिक मारे तब तेरा भाई तेरे आगे तुच्छ समझा जाय॥

४। दांवने के समय में बैल का मूंह मत बांध॥ ५। यदि कोई भाई एकट्ठे रहें और उन में से एक निर्बंश मर जाय तो उस मृतक की पत्नी का बिवाह किसी परदेशी से न किया जाय परंतु उस का दूसरा कुटुंब उसे ग्रहण करे और उसे अपनी पत्नी करे और पति के भाई का व्यवहार उस्से करे॥ ६। और यों होगा कि जो पहिलौंठा वुह जने मृतक के भाई के नाम पर होवे जिसतें उस का नाम इसराएल में से न मिटे॥ ७। और यदि वुह पुरुष कुटुंब की पत्नी को लेने न चाहे तो उस के भाई की पत्नी प्राचीनों पास फाटक पर जाय और कहे कि मेरे पति का भाई इसराएल में अपने भाई के नाम को स्थापने से नाह करता है मेरे पति का भाई मुझे अपनी पत्नी नहीं किया चाहता है॥ ८। तब उस नगर के प्राचीन उस पुरुष को बुलाके उसे समझावें यदि वुह उसी पर खड़ा होवे और कहे कि मैं उसे लेने नहीं चाहता॥ ९। तो उस के भाई की पत्नी प्राचीन के सन्मुख उस के पास आवे और उस के पाओं से जूती खोले और उस के मूंह पर थूक देवे और उत्तर देके कहे कि उस मनुष्य की यही दशा होगी जो अपने भाई के घर को न खड़ा करे॥ १०। और इसराएल में उस का यह नाम रक्खा जायगा कि यह उस जन का घर है जिसका जूता खोला गया॥ ११। जब मनुष्य आपुस में लड़ते हों और एक की पत्नी आवे कि अपने पति को उस के हाथ से जो उसे मार रहा है छोड़ावे और अपना हाथ बढ़ाके उस के गुप्तों को पकड़े॥ १२। तो तू उस का हाथ काट डालना तेरी आंख उस पर दया न करे॥ १३। तू अपने थैले में बड़े छोटे बटखरे न रखना॥ १४। अपने घर में छोटा बड़ा नपुआ मत रखना॥ १५। पूरे और ठीक बटखरे रखना और पूरे और ठीक नपुए रखना जिसतें उस देश में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तेरा जीवन बढ़ जाय॥ १६। क्योंकि सब जो ऐसा अधर्म्म करते हैं परमेश्वर तेरे ईश्वर से घिनित हैं॥ १७। चेत कर कि जब तू मिस्र से निकला तब मार्ग में अमालीक़ ने तुझ से क्या किया॥ १८। मार्ग में

तुझ पर क्योंकर चढ़ आया जब तू मूर्छित और थका था तब उस ने तेरे
पीछे के सब लोगों को जो दुर्बल पिछरे हुए थे मारा और वुह ईश्वर से
न डरा॥ १९। इस लिये ऐसा होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उस
देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार के लिये तुझे देता है
तुझे तेरे चारों ओर के बैरियों से चैन देवे तब तू स्वर्ग के तले से
अमालीक़ के नाम को मिटा डालना इसे मत भूलना।

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब।

और जब तू उस देश में प्रवेश करे जिस का अधिकारी परमेश्वर
तेरा ईश्वर तुझे करता है और उसे बश में करे और उस में बसे॥
२। तब तू उस देश का जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिया है समस्त
फलों का पहिला जिसे तू भूमि से लेके पहुंचावेगा एक टोकरे में रखके
उस स्थान में लेजा जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर अपने नाम को स्थापन
करने के लिये चुनेगा॥ ३। और उन दिनों में जो याजक होगा उस
के पास जा और कह कि आज परमेश्वर के आगे प्रण करता हूं कि मैं
ने उस देश में जिस के बिषय में परमेश्वर ने हमारे पितरों से किरिया
खाके हमें देने को कहा था प्रवेश किया॥ ४। और याजक वुह टोकरा
तेरे हाथ से लेके परमेश्वर तेरे ईश्वर की बेदी के आगे रख देवे॥ ५।
तब तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बिनती करके यों कहना कि
सुअरामी जो मरने पर था मेरा पिता था वुह मिस्र में उतरा और उस
ने थोड़े लोगों के साथ वहां बास किया फिर वहां एक बहुत बड़ी
बलवंती मंडली बनी॥ ६। और मिस्रियों ने हम से बुरा व्यवहार किया
और हमें सताया और हम से कठिन सेवा कराई॥ ७। और जब हम
ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर के आगे दोहाई दिई तब परमेश्वर
ने हमारा शब्द सुना और हमारे परिश्रम और अंधेर को देखा॥ ८।
और परमेश्वर सामर्थी हाथ और बढ़ाई हुई भुजा और महा आश्चर्य्यित
और अद्भुत लक्षणों के हाथ से हमें मिस्र देश से निकाल लाया॥
९। और हमें इस स्थान में लाया और उस ने हमें यह देश दिया
जिस में दूध और मधु बहता है॥ १०। और अब देख मैं इस देश के

पहिले फल जिसे हे परमेश्वर तू ने मुझे दिया लाया हूं सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उसे रख देना और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे दंडवत करना॥ ११। और तू और लावी और जो परदेशी तुझ में होवें मिल के हर एक भलाई पर जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे और तेरे घराने पर किई है आनंद करना॥ १२। जब तू तीसरे बरस जो दशांश का बरस है अपने समस्त बढ़ती के दशवें अंश को पूरा किया है लावी और परदेशी और अनाथ और बिधवा को दिया है जिसतें वे तेरे फाटकों के भीतर खावें और तृप्त होवें॥ १३। तब तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे यों कहना कि मैं अपने घर से पवित्र वस्तें लाया हूं और लावी और परदेशी और अनाथ और बिधवा को तेरी समस्त आज्ञा के समान जो तू ने मुझे किया और मैं ने तेरी आज्ञाओं से बिरुद्ध न किया और न उन्हें भूला॥ १४। और मैं ने उस में से अपने बिपत्ति में न खाया और मैं ने उस में से किसी अशुद्ध बात में न उठाया और न कुछ मृतकों के लिये दे डाला परंतु मैं ने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को माना और जो कुछ तू ने मुझे आज्ञा किई है मैं ने उन सभों के समान किया॥ १५। अपने पवित्र निवास स्वर्ग पर से नीचे दृष्टि कर और अपने इसराएल लोगों को और इस देश को जिसे तू ने हमें दिया है आशिष दे जैसी तू ने हमारे पितरों से किरिया खाई एक देश जिस में दूध और मधु बहता है॥ १६। आज के दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे इन बिधिन और बिचारों को पालन करने की आज्ञा दिई इस लिये उन्हें पालन कर और अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से उन्हें मान॥ १७। तू ने आज के दिन मान लिया है कि परमेश्वर मेरा ईश्वर है और मैं उस के मार्गों पर चलूंगा और उस की बिधिन को और उस की आज्ञाओं को और उस की व्यवस्थों को पालन करूंगा और उस के शब्द को सुनूंगा॥ १८। और परमेश्वर ने भी आज के दिन मान लिया है कि तू उस का निज लोग होवे और तू उस की समस्त आज्ञा को पालन करे॥ १९। और तुझे समस्त जातिगणों से जिन्हें उस ने उत्पन्न किया बड़ाई और नाम और प्रतिष्ठा में अधिक बढ़ावे और कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का पवित्र लोग होवे जैसा उस ने कहा।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब॥

फिर मूसा ने इसराएल के प्राचीनों के साथ होके लोगों को आज्ञा करके
कहा कि उस समस्त आज्ञाओं को जो आज के दिन मैं तुम्हें कहता हूं
पालन करो॥ २। और यों होगा कि जिस दिन तुम यरदन पार होके
उस देश में पहुंचो जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तब तू अपने
लिये बड़े बड़े पत्थर खड़े करना और उन पर गच करना॥ ३। और
जब तू पार उतरे तब इस व्यवस्था के समस्त बचन को उन पर लिखना
जिसतें तू उस देश में प्रवेश करे जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है वुह
एक देश है जिसमें दूध और मधु बहता है जैसी परमेश्वर तेरे पितरों के
ईश्वर ने तुझे देने को बाचा बांधी है॥ ४। सो जब तुम यरदन के पार
उतर जाओ तब तुम उन पत्थरों को जिन के विषय में मैं तुम्हें आज के
दिन आज्ञा करता हूं ऐबाल के पहाड़ पर खड़ा करना और उन पर
गच फेरना॥ ५। और वहां परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पत्थर की
एक बेदी बनाना और उन पर लोहा न उठाना॥ ६। तू परमेश्वर
अपने ईश्वर की बेदी ढोकों से बनाना और उस पर परमेश्वर अपने
ईश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाना॥ ७। और कुशल की भेंट चढ़ाना
और वहीं खाना और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे आनंद करना॥
८। और उन पत्थरों पर इस व्यवस्था के समस्त बचन खोलके
लिखना॥ ९। फिर मूसा और लावी याजकों ने समस्त इसराएलियों से
कहा कि हे इसराएल चौकस हो और सुन तू आज के दिन परमेश्वर
अपने ईश्वर की मंडली हुआ॥ १०। सो इस लिये परमेश्वर अपने
ईश्वर के शब्द को मान और उस की आज्ञाओं को और उस की बिधिन
को पालन कर जो आज के दिन मैं तुझे कहता हूं॥ ११। और मूसा
ने उस दिन मंडली को आज्ञा करके कहा॥ १२। कि जब यरदन
पार जाओ तब समऊन और लावी और यहूदाह और इशकार और
यूसुफ़ और बिनयमीन जरिज़ीम के पहाड़ पर खड़े होके लोगों को
आशीष देवें॥ १३। और रूबिन और जद और यसर और ज़बूलून
और दान और नफ़ताली ऐबाल के पहाड़ पर स्राप देने के लिये खड़े

होवें॥ १४। और लावी इसराएल के समस्त पुरुषों को बड़े शब्द से कहें॥ १५। कि वुह जन स्रापित है जो खोदके अथवा ढाल के मूर्त्ति बनावे जो परमेश्वर के आगे घिनित है और कार्य कारी के हाथ के बनाये ज़ए और गुप्त स्थान में रक्खे तब समस्त मंडली उत्तर देके कहें आमीन॥ १६। जो कोई अपने माता पिता की निंदा करे वुह स्रापित और समस्त लोग बोलें आमीन॥ १७। जो अपने परोसी के सिवाने के चिन्ह को हटावे सो स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन॥ १८। जो अंधे को मार्ग से बहकावे सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन॥ १९। जो परदेशी और अनाथ और बिधवा के बिचार को बिगाड़ देवे सो स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन॥ २०। जो अपने पिता की पत्नी के साथ कुकर्म्म करे सो स्रापित क्योंकि उस ने अपने पिता की नग्नता उघारी और समस्त लोग कहें आमीन॥ २१। जो किसी प्रकार के पशु से कुकर्म्म करे सो स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन॥ २२। जो कोई अपनी बहिन अपनी माता अथवा अपने पिता की पुत्री के साथ कुकर्म्म करे सो स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन॥ २३। जो कोई अपने सास के संग कुकर्म्म करे सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन॥ २४। जो कोई अपने परोसी को छिपके मारे सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन॥ २५। जो कोई घूस लेके किसी निर्दोषी को घात करे सो स्रापित सब लोग कहें आमीन॥ २६। जो कोई इस व्यवस्था के बचन को पालन करने को स्थिर न रहे सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन।

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

और ऐसा होगा कि यदि तू ध्यान से परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुनेगा और चेत में रखके उस की समस्त आज्ञाओं को मानेगा जो आज के दिन मैं तुझे देता हूं तो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे पृथिवी के समस्त जातिगणों में श्रेष्ठ करेगा॥ २। और यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुनेगा तो ये समस्त आशीष तुझ पर होंगे और तुझे घेर लेंगे॥ ३। तू नगर में धन्य और खेत में धन्य होगा॥ ४। तेरे शरीर का और तेरी भूमि का फल और तेरे ढोर का फल

तेरी गाय बैल की बढ़ती और तेरे भेड़ के झुंड धन्य॥ ५। तेरा टोकरा और तेरा कठरा धन्य॥ ६। तेरा बाहर भीतर आना जाना धन्य॥ ७। परमेश्वर तेरे बैरियों को जो तेरे बिरुद्ध उठेंगे तेरे सन्मुख मारेगा वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ आवेंगे और सात मार्गों से तेरे आगे से भाग निकलेंगे॥ ८। परमेश्वर तेरे भंडार पर और तेरे हाथ के समस्त कार्यों पर तेरे लिये आशीष की आज्ञा करेगा और उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तुझे आशीष देगा॥ ९। यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को पालन करे और उस के मार्गों पर चले तो परमेश्वर तुझे अपना पवित्र लोग बनावेगा जैसी उस ने तुझ से किरिया खाई है॥ १०। और पृथिवी के समस्त लोग देखेंगे कि तू परमेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है सो वे तुझ से डरते रहेंगे॥ ११। और परमेश्वर तेरी संपत्ति में और तेरे शरीर के फल में और तेरे ढोर के फल में और तेरी भूमि के फल में उस देश में जिस के बिषय में परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया खाके कहा कि तुझे देऊंगा तुझे बढ़ती देगा॥ १२। परमेश्वर अपना सुथरा भंडार तेरे आगे खोलेगा कि आकाश तेरे देश पर ऋतु में जल बरसावेगा और तेरे हाथ के समस्त कार्यों में आशीष देगा तू बहुत से जातिगणों को ऋण देगा परंतु तू ऋण न लेगा॥ १३। और परमेश्वर तुझे सिर बनावेगा और पोंछ नहीं और तू केवल ऊंचा होगा और नीचा न होगा आज के दिन जो आज्ञा मैं तुझे करता हूं यदि तू उन आज्ञाओं को सुने और पालन करके माने॥ १४। और तू उन सब बातों में जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं दहिने बायें न मुड़े अरु और देवतों का पीछा करके उन की सेवा न करे॥ १५। परंतु यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द न सुनेगा और ध्यान करके उस की समस्त आज्ञा को और उस की बिधिन को जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं न मानेगा तो ये समस्त स्राप तुझ पर पड़ेंगे और तुझे जा ही लगे॥ १६। तू नगर में स्रापित और खेत में स्रापित॥ १७। तेरा टोकरा और तेरी थाल स्रापित॥ १८। तेरे शरीर का फल और तेरी भूमि का फल तेरी गाय बैल की बढ़ती और

तेरी भेड़ बकरी के झुंड स्रापित॥ १९। तू अपने बाहर भीतर आने जाने में स्रापित॥ २०। परमेश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्यों में तुझ पर स्राप और झंझट और दपट भेजेगा यहां लों कि तू नाश हो जाय और शीघ्र मिट जाय तेरी करनी की दुष्टता के कारण जिस्से तू ने मुझे त्याग किया॥ २१। परमेश्वर तुझ पर मरी संयुक्त करेगा यहां लों कि तुझे उस देश से मिटा डालेगा जिस का तू अधिकारी होने जाता है॥ २२। परमेश्वर तुझे चयी और ज्वर और ज्वाला और अत्यंत ज्वलन और पियास और झुलुस से और लेंढ़ा से मारेगा और वे तुझे रगेद रगेद के नाश करेंगे॥ २३। और तेरे सिर पर का स्वर्ग पीतल और तेरे तले की पृथिवी लोहे की होगी॥ २४। परमेश्वर तेरे देश का बरसना बुकनी और धूल बना डालेगा यह स्वर्ग से तुझ पर उतरेगा जब लों तू नाश न हो जाय॥ २५। परमेश्वर तुझे तेरे बैरियों के आगे मारेगा तू एक मार्ग से उन पर चढ़ जायगा और उन के आगे सात मार्गों से भागेगा और पृथिवी के समस्त राज्यों में निकाला जायगा॥ २६। और तेरी लोथ आकाश के समस्त पक्षियों का और बन के पशुन का भोजन हो जायगी और कोई उन्हें न हांकेगा॥ २७। परमेश्वर तुझे मिस्र के फोड़े और बवासी और दिनाय और खजुली से मारेगा उन से तू कधी चंगा न होगा॥ २८। परमेश्वर तुझे बैाड़हापन और अंधापन और मन की घबराहट से मारेगा॥ २९। और जिस रीति से कि अंधा अंधेरे में टटोलता है तू दोपहर दिन को टटोलता फिरेगा और तू अपने मार्गों में भाग्यमान् न होगा और केवल तुझ पर अंधेर ज्ञआ करेगी और कोई न बचावेगा॥ ३०। तू पत्नी से मंगनी करेगा और दूसरा उसे ग्रहण करेगा तू घर बनावेगा परंतु उस में बास न करेगा तू दाख की बारी लगावेगा परंतु उस का फल न खायेगा॥ ३१। तेरा बैल तेरी आखों के साम्ने मारा जायगा और तू उस्से न खायेगा तेरा गदहा तेरे आगे से बरबस लिया जायगा और तुझे फेरा न जायगा तेरी भेड़ें तेरे बैरियों को दिई जायेंगी और कोई न छोड़ावेगा॥ ३२। तेरे बेटे और तेरी बेटियां और लोगों को दिई जायेंगी और तेरी आखें देखेंगी और दिन भर उन के लिये कुढ़ते कुढ़ते घट जायंगी और तेरे

हाथ में कुछ बूता न रहेगा॥ ३३। तेरे देश का और तेरे सारे परिश्रम का फल एक जाति जिसे तू नहीं जानता खा जायगी और तुझ पर नित्य केवल अंधेर होगी और पिसा जायगा॥ ३४। यहां लों कि तू आखों से देखते देखते बौड़हा हो जायगा॥ ३५। परमेश्वर तुझे घुटनों में और टांगों में ऐसे बुरे फोड़ों से मारेगा कि पांओं के तलवों से लेके चांदी ताईं चंगा न हो सकेगा॥ ३६। परमेश्वर तुझे और तेरे राजा को जिसे तू अपने ऊपर स्थापित करेगा उस जाति के पास ले जायगा जिसे तू और तेरे पितर ने न जाना और वहां तू लकड़ी पत्थर के देवतों की पूजा करेगा॥ ३७। और तू उन सब जातियों में जहां जहां परमेश्वर तुझे पहुंचावेगा एक आश्चर्य और कहावत और ओलाहना होगा॥ ३८। तू खेत में बहुत से बीज बोयेगा और थोड़ा बटोरेगा इस लिये कि उन्हें टिड्डी चाट लेंगी॥ ३९। तू दाख की बारी लगावेगा और उस की सेवा करेगा और मदिरा पीने और दाख एकट्ठा करने न पावेगा क्योंकि उन्हें कीड़े खा जायेंगे॥ ४०। तेरे समस्त सिवानों में जलपाई के पेड़ होंगे परंतु तू चिकनाई लगाने न पावेगा क्योंकि उन का जलपाई झड़ जायगा॥ ४१। तू बेटे बेटियां जन्मावेगा और वे तेरे न होंगे क्योंकि वे बंधुआई में जायेंगे॥ ४२। तेरे समस्त पेड़ को और तेरी भूमि के फल को टिड्डी चाट जायेंगी॥ ४३। परदेशी जो तुझ में होगा तुझ से प्रबल और ऊंचा होगा और तू नीचा हो जायगा॥ ४४। वुह तुझे उधार देगा परंतु तुझ से उधार न लेगा वुह सिर होगा और तू पोंछ होगा॥ ४५। और ये समस्त स्राप तुझ पर आवेंगे और तेरे पीछे पड़ेंगे और तुझे जाही लेंगे जब लों तू नाश न होवे इस कारण कि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को न सुना कि उस की आज्ञाओं को और उस की बिधिन को पालन करता जैसी उस ने तुझे आज्ञा किई है॥ ४६। और वे तुझ पर और तेरे बंश पर सदा के लिये चिन्ह और आश्चर्य होंगे॥ ४७। इस कारण कि तू ने समस्त बहुताई के लिये मन की आनंदता और मगनता से परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा न किई॥ ४८। इस लिये तू भूख में और पियास में और नग्नता में और दरिद्रता में अपने बैरियों की सेवा करेगा जिन्हें परमेश्वर

तुझ पर भेजेगा और वुह तेरे कंधे पर लोहे का जुआ डालेगा जब लों तुझे नाश न कर लेवे॥ ४९। परमेश्वर दूर से एक जाति को और पृथिवी के अंत सिवाने से एक ऐसी जाति जैसा गिद्ध उड़ता है तुझ पर चढ़ा लावेगा एक जाति जिस की भाषा तू न समझेगा॥ ५०। भयंकर रूप की जाति जो न बूढ़ों को समझेगी न तरुण पर दया करेगी॥ ५१। और वुह तेरे ढोर का फल और तेरे देश का फल खा जायगी जब लों तू नाश न हो जाय जो तेरे लिये अन्न और दाख रस अथवा तेल अथवा तेरी गाय बैल की बढ़ती अथवा भेड़ की झुंड न छोड़ेगी जब लों तुझे नाश न करे॥ ५२। और वे तुझे तेरे हर एक फाटकों में आ घेरेंगे यहां लों कि तेरी ऊंची और दृढ़ भीतें जिन पर तू ने भरोसा किया था गिर जायेंगी और वे तुझे उस समस्त देश में जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिया है तेरे हर एक फाटकों में आ घेरेंगे॥ ५३। सकेती और कष्ट में जो तेरे बैरियों के कारण से तुझ पर पड़ेंगे तू अपने देह का फल और अपने बेटे बेटियों का मांस खायेगा जिन्हें परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिया है॥ ५४। उस जन की आंखें जो तुम्में कोमल और अति सुकुआर होगा अपने भाई और अपनी गोद की पत्नी और अपने बचे हुए लड़कों से बुरी हो जायेंगी॥ ५५। यहां लों कि वुह अपने बालक के मांस में से जिसे वुह खायगा उन में से किसी को कुछ न देगा इस कारण कि उस सकेती और क्लेश में जो तेरे बैरियों के कारण से तेरे समस्त फाटकों में तुझ पर होंगे उस के लिये कुछ न बचेगा॥ ५६। तुम्में कोमल और सुकुआर स्त्री जो कोमलता और सुकुआरी के मारे अपने पांओं को भूमि पर न धरती थी अपने गोद के पति और अपने बेटा बेटी की ओर से उस की आंखें बुरी हो जायेंगी॥ ५७। और अपने नन्हे बालक से जो उस्से उत्पन्न होगा और अपने लड़कों से जिन्हें वुह जनेगी क्योंकि वुह सकेती के कारण से जो तेरे बैरी तेरे फाटकों में तुझ पर लावेंगे छिपके उन्हें खायगी॥ ५८। यदि तू पालन करके इस व्यवस्था के समस्त बचन पर जो इस पुस्तक में लिखे हैं न चलेगा जिसतें तू उस के तेज मय और भयंकर नाम से जो परमेश्वर तेरा ईश्वर है न डरे॥ ५९। तब परमेश्वर तेरी मरियों को

श्रीर तेरे बंश की मरियों को अर्थात् बड़ी बड़ी मरियों को जो बड़त दिनताईं रहेगी श्रीर बड़े बड़े रोगों को जो बड़त दिन लों रहेंगे श्राश्चर्यित बनावेगा॥ ६०। श्रीर मिस्र के सारे रोग जिन से तू डरता था तुझ पर लावेगा श्रीर वे सब तुझ पर चिपकेंगे॥ ६१। श्रीर हर एक रोग श्रीर हर एक मरी जो इस ब्यवस्था की पुस्तक में नहीं लिखी है परमेश्वर तुझ पर पड़ंचावेगा जब लों तू नाश न होवे॥ ६२। श्रीर जैसा कि तुम लोग स्वर्ग के तारों की नाईं थे गिनती में थोड़े से रह जाश्रोगे इस कारण कि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को न माना॥ ६३। श्रीर ऐसा होगा कि जिस रीति से परमेश्वर ने तुम पर श्रानंद होके तुम्हारे साथ भलाई करके तुम्हें बढ़ाया उसी रीति से परमेश्वर तुम्हें नाश करके मिटा देने में श्रानंदित होगा श्रीर तू उस देश से उखाड़ा जायगा जिस का अधिकारी तू होने जाता है॥ ६४। श्रीर परमेश्वर तुझे समस्त जातियों में पृथिवी के इस खूंट से उस खूंट लों छिन्न भिन्न करेगा श्रीर वहां तू श्रीर देवतों की जो काष्ठ श्रीर पत्थर हैं जिसे तू श्रीर तेरे पितर नहीं जानते थे पूजा करेगा॥ ६५। श्रीर उन जातिगणों में तुझ को चैन न मिलेगा श्रीर न तेरे पांश्रों के तलवों को बिश्राम मिलेगा परंतु परमेश्वर वहां तुझे कंपित मन श्रीर धुंधली श्रांखें श्रीर मन की उदासी देगा॥ ६६। श्रीर तेरा जीवन तेरे श्रागे दुबिधा में टंगा रहेगा श्रीर तू रात दिन डरता रहेगा श्रीर तेरे जीवन का भरोसा न रहेगा॥ ६७। अपने मन के डर से जिस्से तू डरेगा श्रीर उन बस्तुन से जिन्हें तेरी श्रांखें देखेंगी बिहान को तू कहेगा कि हाय कब सांझ होगी श्रीर सांझ को कि हाय कब बिहान होगा॥ ६८। श्रीर परमेश्वर तुझे उस मार्ग से जिस के बिषय में मैं ने तुझे कहा कि तू उसे फिर न देखेगा तुझे जहाज़ों में मिस्र को फेर लावेगा श्रीर तुम वहां दासों श्रीर दासियों की नाईं अपने बैरियों के हाथ बेचे जाश्रोगे श्रीर कोई मोल न लेगा॥ ६९। ये उस नियम की बातें हैं जो परमेश्वर ने मूसा को श्राज्ञा किई कि मोश्रब की भूमि में इसराएल के संतानों से करे उस नियम को छोड़ जो उस ने उन से हरिब में किया था॥

२९ उन्तीसवां पर्ब्ब।

और मूसा ने समस्त इसराएल को बुला के उन्हें कहा जो कुछ कि परमेश्वर ने तुम्हारी आंखों के आगे मिस्र के देश में फिरऊन और उस के समस्त सेवकों और उस के समस्त देश से किया तुम ने देखा है॥ २। वे बड़ी बड़ी परीक्षा जिन्हें तेरी आंखों ने देखा है वे लक्षण और बड़े बड़े आश्चर्य॥ ३। तथापि परमेश्वर ने तुम्हें समझने का मन और देखने की आंखें और सुन्ने के कान आज लों न दिये॥ ४। और मैं तुम्हें चालीस बरस बन में लिये फिरा तुम पर तुम्हारे कपड़े पुराने न ऊए न तुम्हारे जूते तुम्हारे पांओं में पुराने ऊए॥ ५। तुम ने रोटी न खाई और तुम ने मदिरा अथवा मद्य न पिया जिसतें तुम जानो कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ६। और जब तुम इस स्थान में आये तब हसबून का राजा सैहून और बसन का राजा ऊज संग्राम के लिये तुम पर चढ़ आये और हम ने उन्हें मारा॥ ७। और हम ने उन का देश ले लिया और रूबीनियों और जद्दियों और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को अधिकार में दिया॥ ८। सो तुम इस नियम की बातों को पालन करो और उन्हें मानो जिसतें अपने सब कामों में भाग्यमान् होओ॥ ९। आज के दिन तुम और तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधान और तुम्हारे प्राचीन और तुम्हारे करोड़े और समस्त इसराएल के लोग॥ १०। तुम्हारे बालक तुम्हारी पत्नियां और तुम्हारे परदेशी जो तुम्हारी छावनी में रहते हैं तुम्हारे लकड़हारे से लेके बनिहार लों परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे खड़े हो॥ ११। जिसतें तू परमेश्वर अपने ईश्वर के उस नियम और किरिया में प्रवेश करे जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ से आज के दिन करता है॥ १२। जिसतें वुह आज के दिन तुझे अपने लिये एक लोग स्थिर करे कि वुह तेरा ईश्वर होवे जैसा उस ने तुझे कहा और जैसा उस ने तेरे पितर अबिरहाम और इज़हाक़ यअ़कूब से किरिया खाई है॥ १३। सो मैं तुम्हारे ही साथ केवल यह नियम और किरिया नहीं करता॥ १४। परंतु उस के साथ भी जो आज के दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर के आगे

हमारे संग खड़ा है और उस के साथ भी जो आज के दिन हमारे साथ
नहीं है॥ १५। क्योंकि तुम जानते हो कि हम मिस्र में क्योंकर बास
करते थे और क्योंकर उन लोगों के मध्य में से जिन में तुम रहते थे
निकल गये॥ १६। और तुम ने उन की लकड़ी और पत्थर और
चांदी और सोने की घिनित मूर्त्तों को देखा है॥ १७। ऐसा न हो
कि तुम्हों में कोई पुरुष अथवा स्त्री अथवा घराना अथवा गोष्ठी ऐसी
हो कि जिस का मन आज के दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर से फिर जाय
और इन जातियों की देवतों की सेवा करे ऐसा न हो कि तुम्हारे
बीच ऐसी जड़ हो जो बिष की नाईं कड़ुआ और नागदौना उपजावे॥
१८। और यों होवे कि जब वुह इस स्राप की बातें सुने तो वुह आप
को अपने मन में आशीष देके कहे कि मैं चैन करूंगा यद्यपि अपने मन
की भावना में चलूं कि पियास में मतवालपन मिलाऊं॥ १९।
परमेश्वर उसे न छोड़ेगा परंतु उसी समय उस जन पर परमेश्वर का क्रोध
भड़केगा और समस्त स्राप जो इस पुस्तक में लिखे हैं उस पर पड़ेंगे और
परमेश्वर उस के नाम को स्वर्ग के तले से मिटा देगा॥ २०। और
परमेश्वर बाचा के समस्त स्रापों के समान जो इस व्यवस्था की पुस्तक में
लिखे हैं इसराएल की सारी गोष्ठियों में से बुराई के लिये उस को अलग
करेगा॥ २१। यहां लों कि अवैया पीढ़ी जो तुम्हारे बालकों में से
उठेगी और परदेशी जो दूर देश से आवेंगे उस देश की मरी और रोगों
को जो परमेश्वर ने उस पर धरे हैं देखके कहेंगे॥ २२। कि यह सारा
देश गंधक और लोन से जल गया कि न बोया जाता न उपजता और
न कुछ घास उगती है जैसे कि सदूम और अमूरः और अदमः और जिबी-
आन उलट गये परमेश्वर ने उसे भी अपनी रिस से और अपने कोप से
उलट दिया॥ २३। अर्थात् समस्त जातिगण कहेंगे कि परमेश्वर ने इस
देश पर ऐसा क्यों किया और इस महा कोप के तपन का क्या कारण है॥
२४। तब लोग कहेंगे इस लिये कि उन्हों ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर
की उस बाचा को त्याग किया जो मिस्र देश से निकालने के समय उन से
बांधी थी॥ २५। क्योंकि उन्हों ने जाके आन आन देवतों की सेवा
और उन्हें दंडवत किई उन देवतों को जिन्हें वे न जानते थे और जिन्हें

उस ने उन्हें न दिया था॥ २६। सो परमेश्वर का क्रोध इस देश पर भड़का कि उस ने समस्त स्राप जो इस पुस्तक में लिखे हैं इस पर प्रगट किये॥ २७। और परमेश्वर ने रिस और कोप और बड़े जलजलाहट से उन के देश से उन्हें उखाड़ा है और दूसरे देश पर आज के दिन की नाईं उन्हें डाल दिया॥ २८। गुप्त बातें परमेश्वर हमारे ईश्वर की हैं परंतु प्रकाशित हमारे और हमारे बंश के लिये सदालों हैं जिसतें हम इस व्यवस्था के समस्त बचन को पालें॥

३० तीसवां पर्ब्ब।

और यों होगा कि जब यह सब आशीष और स्राप जिन्हें मैं ने तेरे आगे रक्खा तुझ पर पड़ेगा और तू उन सब लोगों में जहां जहां परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे हांकेगा उन्हें चेत करेगा॥ २। और तू परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरेगा और उस की उन आज्ञाओं के समान जो आज मैं तुझे कहता हूं अपने लड़कों समेत अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से उसे पालन करेगा॥ ३। तब परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी बंधुआई को पलट डालेगा और तुझे उन सब लोगों में से जिन में परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे छिन्न भिन्न किया है दयाल होके फेरेगा और एकट्ठे करेगा॥ ४। यदि कोई तुझ में आकाश के अंत लों हांका गया होगा तो परमेश्वर तेरा ईश्वर वहां से एकट्ठा करके फेर लावेगा॥ ५। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश में जिस के तेरे पितर अधिकारी थे और तू उस का अधिकारी होगा और वुह तुझ से भलाई करेगा और तेरे पितरों से अधिक तुझे बढ़ावेगा॥ ६। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे और तेरे बंश के मन का खतनः करेगा कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से प्रेम करे जिसतें तू जीता रहे॥ ७। और परमेश्वर तेरा ईश्वर ये समस्त स्राप तेरे बैरियों पर और उन पर डालेगा जो तेरा डाह रखते हैं जिन्हों ने तुझे सताया॥ ८॥ और तू फिर आवेगा और परमेश्वर के शब्द को मानेगा और उस की उन आज्ञाओं को जो आज के दिन मैं तुझे करता हूं पालन करेगा॥ ९। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के हर एक

काम में और तेरे शरीर के फल में और तेरे ढोर के फल में और तेरी
भूमि के फल में भलाई के लिये तुझे अधिक करेगा क्योंकि परमेश्वर
आनन्दित होके तुझ से फिर भलाई करेगा जैसा वुह तेरे पितरों से
आनन्दित था॥ १०। यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुनेगा
जिसतें उस की आज्ञा और बिधि को जो ब्यवस्था की इस पुस्तक में
लिखी हुई है स्मरण करे और यदि तू अपने सारे मन से और अपने
सारे प्राण से परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरे॥ ११। क्योंकि यह
आज्ञा जो आज मैं तुझे करता हूं वुह तुझ से न छिपी है न दूर है॥
१२। वुह स्वर्ग पर नहीं जो तू कहे कि हमारे लिये कौन स्वर्ग पर
जायगा और हमारे पास उसे लावें जिसतें हम उसे सुनें और पालन
करें॥ १३। और न समुद्र पार है जो तू कहे कौन हमारे लिये समुद्र
पार जायगा और उसे हम पास लावे कि हम उसे सुनें और उसे पालन
करें॥ १४। परंतु बचन तेरे पास ही तेरे मुंह में और तेरे अंतःकरण
में है जिसतें तू उसे पालन करे॥ १५। देख मैं ने आज जीवन और
भलाई को और मृत्यु और बुराई को तेरे आगे रक्खा है॥ १६। सो
मैं तुझे परमेश्वर अपने ईश्वर पर प्रेम करने को और उस के मार्गों पर
चलने को और उस की आज्ञाओं और बिधिन और उस के बिचारों को
पालन करने को आज तुझे आज्ञा करता हूं जिसतें तू जीये और बढ़े
और परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का तू अधिकारी होने जाता
है तुझे आशीष देवे॥ १७। परंतु यदि तेरा मन फिर जाय यहां लों
कि तू न सुने परंतु फुसलाया जाय अरु और देवतों को दंडवत करे और
उन की सेवा करे॥ १८। तो आज मैं तुम्हें सुना रखता हूं कि तुम
निश्चय नाश हो जाओगे और उस देश पर जिस के अधिकारी होने
यरदन पार जाते हो तुम्हारी वय अधिक न होगी॥ १९। मैं आज
स्वर्ग और पृथिवी को तुम्हारे ऊपर साक्षी लाता हूं कि मैं ने जीवन और
मृत्यु और आशीष और स्राप तुम्हारे साम्ने रक्खे सो तुम जीवन को
चुनो जिसतें तुम और तुम्हारा बंश दोनों जीवें॥ २०। कि तू परमेश्वर
अपने ईश्वर से प्रेम करे और उस के शब्द को माने और उस्से लवलीन
रहे क्योंकि वही तेरा जीवन और तेरे वय की अधिकाई है जिसतें तू उस

देश में बास करे जिस के कारण परमेश्वर ने तेरे पितर अबिरहाम और
इज़हाक़ और यअक़ूब से किरिया खाके कहा कि मैं उसे तुम्हें देऊंगा॥

३१ एकतीसवां पर्व्व।

तब मूसा ने जाके ये बातें समस्त इसराएल से कहीं॥ २। और उस
ने उन्हें कहा कि मैं तो आज एक सौ बीस बरस का हूं आगे मैं भीतर
बाहर जा नहीं सक्ता और परमेश्वर ने भी मुझे कहा है कि तू यरदन
पार न जायगा॥ ३। परमेश्वर तेरा ईश्वर ही तेरे आगे आगे पार
जायगा और वही इन जातिगणों को तेरे आगे नाश करेगा और तू उन्हें
बश में करेगा और यहूसूअ परमेश्वर के कहने के समान तेरे आगे आगे
पार जायगा॥ ४। और परमेश्वर उन से वैसा ही करेगा जैसा उस ने
अमूरियों के राजा सीहून और ऊज से और उन की भूमि से किया जिन्हें
उस ने नाश किया॥ ५। और परमेश्वर उन्हें तुम्हारे आगे सौंप देगा
जिसतें तुम उन से सब आज्ञाओं के समान जो मैं ने तुम्हें कहीं करो॥ ६।
पोढ़ होओ और साहस करो भय न करो और उन से मत डरो क्योंकि
परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तेरे साथ जाता है वुह तुझे न छोड़ेगा न त्याग
करेगा॥ ७। फिर मूसा ने यहूसूअ को बुलाया और सारे इसराएल के
आगे उसे कहा कि दृढ़ हो और साहस कर क्योंकि तू इन लोगों के
साथ उस देश में प्रवेश करेगा जिस के देने के बिषय में परमेश्वर ने उन
के पितरों से किरिया खाई और तू उन्हें उस का अधिकारी करेगा। ८॥
और परमेश्वर तेरे आगे आगे जाता है वुह तेरे साथ रहेगा वुह तुझे न
छोड़ेगा न त्याग करेगा सो तू भय मत कर और मत डर॥ ९। और
मूसा ने इस व्यवस्था को लिखा और लावी के बेटे याजकों को जो परमेश्वर
के साक्षी की मंजूषा को उठाते थे और इसराएल के समस्त प्राचीनों को
सौंप दिया॥ १०। और मूसा उन्हें यह कहके बोला कि हर एक
सात बरस के अंत में छुटकारे के ठहराये हुए समय में तंबू के पर्व्व में॥
११। जब कि सारे इसराएल परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस स्थान
पर जिसे वुह चुनेगा जाया करें तब तू इस व्यवस्था को पढ़के समस्त
इसराएल को सुनाया कर॥ १२। समस्त पुरुषों और स्त्रियों को और

लड़कों और अपने परदेशी को जो तेरे फाटकों के भीतर हों एकट्ठे कीजियो कि वे सुनें और सीखें और परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर से डरें और इस व्यवस्था के समस्त बचन को पालन करें और मानें॥ १३। और उन के लड़के जिन्हों ने ये बातें नहीं जानी सुनें और जब लों तुम उस देश में जिस के अधिकारी होने को यरदन पार जाते हो रहो परमेश्वर अपने ईश्वर से डरा करो॥ १४। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख तेरे दिन आ पहुंचे हैं तुझे मरना है सो तू यहूसूअ को बुला और मंडली के तंबू में खड़े होओ जिसतें मैं उसे आज्ञा करूं सो मूसा और यहूसूअ चले और मंडली के तंबू में खड़े हुए॥ १५। और परमेश्वर मेघ के खंभों में होके तंबू में प्रगट हुआ और मेघ का खंभा तंबू के द्वार पर आके ठहरा।

१६। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख तू अपने पितरों के साथ शयन करेगा और इस मंडली के लोग उठेंगे और उस देश पर जहां ये बसने जाते हैं कुकर्म्मी होके वहां अन्यदेशी देवतों का पीछा करेंगे मुझे छोड़ देंगे और उस बाचा को जो मैं ने उन के साथ बांधी है तोड़ेंगे॥ १७। तब मेरा क्रोध उन पर भड़केगा और मैं उन्हें त्याग करूंगा और मैं उन से अपना मुंह छिपाऊंगा और बिपत्ति उन्हें पकड़ेगी तब वे उस दिन कहेंगे कि क्या हम पर ये बिपत्ति इस लिये नहीं पड़ीं कि हमारा ईश्वर हम्में नहीं॥ १८। और उन सब बुराइयों के कारण से जो वे करेंगे और इस लिये कि उपरी देवतों की ओर लवलीन होंगे मैं निश्चय उस दिन अपना मुंह छिपाऊंगा॥ १९। सो तुम यह गीत अपने लिये लिखो और उसे इसराएल के संतानों को सिखाओ और उन्हें पढ़ाओ जिसतें यह गीत इसराएल के संतानों पर मेरी साक्षी रहे॥ २०। इस लिये कि जब मैं उन्हें उस देश में पहुंचाऊंगा जिस के कारण मैं ने उन के पितरों से किरिया खाई जिस में दूध और मधु बहता है और वे उसे खायेंगे और तृप्त होवेंगे और मोटे हो जायेंगे तब वे और देवतों की ओर फिर जायेंगे और उन की सेवा करेंगे और मुझे खिजावेंगे और मुझ से बाचा तोड़ देंगे॥ २१। और यों होगा कि जब बहुत कष्ट और बिपत्ति उन पर पड़ेंगी तब यही गीत उन पर

साक्षी देगी क्योंकि वुह उन के बंश के मूंह से बिसर न जायगी क्योंकि
मैं उन के बिचारों को जानता हूं जो वे आज करते हैं उस्से आगे कि मैं
उस देश में जिस के कारण मैं ने किरिया खाई है उन्हें पहुंचाऊं॥ २२।
सो उसी दिन मूसा ने यह गीत लिखा और इसराएल के संतान को
सिखाया॥ २३। और उस ने नून के बेटे यहूसूअ को आज्ञा किई
और कहा कि दृढ़ हो और साहस कर क्योंकि इसराएल के संतान
को उस देश में जिस के कारण मैं ने उन से किरिया खाई है तू ले जायगा
और मैं तेरे साथ होऊंगा॥ २४। और ऐसा हुआ कि जब मूसा
इस व्यवस्था की बातों को पुस्तक में लिख चुका और उन्हें समाप्त किया॥
२५। तब मूसा ने लावियों को जो परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा को
उठाते थे कहा॥ २६। कि इस व्यवस्था की पुस्तक को लेके परमेश्वर
अपने ईश्वर की बाचा की मंजूषा के अलंग में रक्खो जिसतें यह तुम्हारी
साक्षी के लिये वहां रहे॥ २७। क्योंकि मैं तेरे झगड़े और तेरे गले
की कठोरता को जानता हूं देख अब लों मैं जीता और आज के दिन लों
तुम्हारे साथ हूं और तुम ईश्वर से फिर गये हो तुम मेरे मरने के पीछे
कितना अधिक करोगे॥ २८। अपनी गोष्ठियों के समस्त प्राचीनों
को और प्रधानों को मुझ पास एकट्ठा करो जिसतें मैं ये बातें उन्हें सुनाऊं
और स्वर्ग और पृथिवी को उन पर साक्षी में लाऊं॥ २९। क्योंकि मैं
जानता हूं कि मेरे मरने के पीछे तुम आप को नष्ट करोगे और उस मार्ग
से जो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई है फिर जाओगे और पिछले दिनों में तुम पर
बिपत्ति पड़ेगी क्योंकि तुम परमेश्वर के आगे बुराई करोगे कि अपने हाथ
के कार्यों से उसे खिझाओगे॥ ३०। सो मूसा ने इस गीत के बचन को
इसराएल की समस्त मंडली को कह सुना के पूरा किया।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब।

हे स्वर्गो कान धरो और मैं कहूंगा और हे पृथिवी मेरे मूंह की बातें
सुन॥ २। मेरी शिक्षा मेंह की नाईं टपकेगी और मेरी बातें ओस के
समान चूयेंगी जैसे सागपात पर फूही पड़ें और घास पर झड़ियां॥ ३।
कि मैं परमेश्वर के नाम को प्रगट करता हूं तुम हमारे ईश्वर के नाम की

महिमा करो॥ ४। वुह पहाड़ है उस का कार्य्य सिद्ध है क्योंकि उस के
सब मार्ग न्याय के हैं वुह सच्चा ईश्वर है और बुराई से रहित वुह आप्त
और सच्चा है॥ ५॥ उन्हों ने आप को नष्ट किया वे उस के बालक नहीं
वे अपने चिह्न हैं वे हठीली और टेढ़ी पीढ़ी हैं॥ ६। हे मूर्ख और
निर्बुद्धि लोगो क्या तुम परमेश्वर को यों पलटा देते हो क्या वुह तेरा
पिता नहीं है जिस ने तुझे मोल लिया क्या उस ने तुझे नहीं सिर्जा और
तुझे स्थिर न किया॥ ७। अगले दिनों को चेत करो और पीढ़ी पर
पीढ़ी के बरसों को सोचो अपने पिता से पूछ और वुह तुझे बतावेगा और
अपने प्राचीनों से और वे तुझ से कहेंगे॥ ८। जब अति महान ने जाति-
गणों के लिये अधिकार बांटा जब उस ने आदम के बेटों को अलग किया
इसराएल के संतानों की गिनती के समान उस ने लोगों का सिवाना
ठहराया॥ ९। क्योंकि परमेश्वर का भाग उस के लोग हैं यअकूब उस
के अधिकार की रस्सी है॥ १०। उस ने उसे उजाड़ देश और भयानक
अरण्य में पाया उस ने उसे घेर लिया और उस ने उसे शिक्षा दिई उस ने
अपनी आंख की पुतली की नाईं उस की रक्षा किई॥ ११। जैसा गिद्ध
अपने खोंते को हिलाता है और अपने बच्चों पर फरफराता है और अपने
पंखों को फैलाके उन्हें लेता है और अपने पंखों पर उन्हें उठाता है॥
१२। वैसा ही केवल परमेश्वर ने उस की अगुआई किई और उस के
साथ कोई उपरी देव न था॥ १३। उस ने उसे पृथिवी के ऊंचे स्थानों
पर बढ़ाया जिसतें वुह खेतों की बढ़ती खावे और उस ने उसे चटान में से
मधु और चकमक के चटान में से तेल चुसाया॥ १४। और गाय के
मखन और भेड़ के दूध और मेम्नों की चिकनाई और बसन देश के पाले
ऊए मेढ़ों और बकरों के गुर्दों गोहूं की चिकनाई सहित तू ने दाख का
निराला रस पीया॥ १५। परंतु यशूरन मोटा ऊआ और लतिआने
लगा तू मोटा ऊआ है और फैल गया है तू ढंप गया है तब उस ने ईश्वर
अपने परमेश्वर को छोड़ दिया और अपनी मुक्ति के पहाड़ को तुच्छ
जाना॥ १६। उन्हों ने उपरी देवतों के कारण उसे झल दिया और
उन्हों ने उसे घिनितों से रिस दिलाया॥ १७। उन्हों ने पिशाचों के लिये
बलिदान चढ़ाये जो ईश्वर न थे परंतु उन देवतों के लिये जिन को वे न

पहिच नते थे वे देवता जो थोड़े दिनों से प्रगट ऊए जिन से तुम्हारे पितर न डरते थे॥ १८। तू उस पहाड़ से अचेत है जिस ने तुझे उत्पन्न किया और उस ईश्वर को भूल गया जिस ने तेरा डौल किया॥ १९। और जब परमेश्वर ने देखा उस ने घिन किया इस कारण कि उस के बेटा बेटी ने उसे रिस दिलाया॥ २०। और उस ने कहा कि मैं उन से अपना मुंह छिपाऊंगा जिसतें मैं उन का अंत देखूं क्योंकि वे टेढ़ी पीढ़ी हैं और ऐसे लड़के जिन में बिश्वास नहीं॥ २१। उन्हों ने अनीश्वर से मुझे ज्वलन दिलाया उन्हों ने ब्यर्थों से मुझे रिस दिलाया सो मैं भी उन्हें अलोग से झल दिलाऊंगा और एक मूर्ख जाति से उन्हें रिस दिलाऊंगा॥ २२। क्योंकि मेरे रिस में आग भड़की है और अत्यंत नरक लों जली है और पृथिवी को उस की बढ़ती समेत भस्म कर गई और पहाड़ों की नेओं को जला दिया है॥ २३। मैं उन पर बिपत्ति की ढेर करूंगा और उन पर अपने बाणों को घटाऊंगा॥ २४। वे भूख से जल जायेंगे और भस्मक तपन और कड़वे बिनाश से भक्षण किये जायेंगे मैं पशुओं के दांतों को और पृथिवी के बिषधर सर्पों को छोड़ूंगा॥ २५। बाहर में तलवार और कोठरियों से भय तरुण मनुष्य को और कुआंरी को भी दूध पीवक को भी पुरनियां सहित नाश करेंगे॥ २६। मैं ने कहा कि मैं उन्हें कोने कोने छिन्न भिन्न करता मैं मनुष्यों में से उस का नाम मिटा देता॥ २७। यदि मैं शत्रु के क्रोध पर दृष्टि न करता न हो कि उन के बैरी घमंड करें और न हो कि वे कहें कि हमारा ही हाथ प्रबल ऊआ परमेश्वर ने ये सब नहीं किये॥ २८। क्योंकि वे मन्त्र रहित जाति हैं और उन में बुद्धि नहीं॥ २९। हाय कि वे बुद्धिमान होके इसे समझते और अपने अन्तकाल की चिन्ता करते॥ ३०। तो कैसे एक सहस्र को खेदता और दो दस सहस्र को भगाते यदि उन का पहाड़ उन्हें न बेंच डाले होता और परमेश्वर उन्हें बंद किये न होता॥ ३१। क्योंकि उन का पहाड़ हमारे पहाड़ के समान नहीं हां हमारे बैरी आप न्यायी हैं॥ ३२। क्योंकि उन का दाख सदूम के दाख में के और अमरः के खेतों का है उन के अङ्गूर पित्त के अंगूर हैं उन के गुच्छे कड़वे हैं॥ ३३। उन की मदिरा नागों का बिष है और सपोलों

का कठिन बिष॥ ३४। क्या यह मुझ पास धरा नहीं और मेरे भंडारों
में बंद नहीं॥ ३५। प्रतिफल और दण्ड देना मेरा है उन का पांव
समय पर फिसलेगा क्योंकि उन की बिपत्ति का दिन आ पहुंचा और उन
पर जो बस्तु आती है सो शीघ्र करती है॥ ३६। जब वुह देखेगा
कि सामर्थ्य जाती रही और कोई बन्द अथवा छूटा नहीं है तब
परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करेगा और अपने सेवकों के लिये पछता-
वेगा॥ ३७। और कहेगा कि उन के देवगण पहाड़ जिन का उन्हें
भरोसा था क्या हुये॥ ३८। जिन्हों ने उन के बलिदानों की चिकनाई
खाई और पीने की भेंट की मदिरा पीई वे उठें और तुम्हारा बचाव करें
और सहायक होवें॥ ३९। अब देखो कि मैं मैं ही हूं और कोई ईश्वर
मेरा साथी नहीं मैं ही मारता हूं और मैं ही जिलाता हूं मैं घायल करता
हूं और मैं ही चंगा करता हूं ऐसा कोई नहीं जो मेरे हाथ से छुड़ावे॥
४०। क्योंकि मैं अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाता हूं और कहता हूं
कि मैं सनातन जीवता हूं॥ ४१। यदि मैं अपना चमकता हुआ खड्ग
चोखा करूं और मेरा हाथ न्याय धारण करे तो मैं अपने शत्रुन से प्रति-
फल लूंगा और जो मुझ से बैर रखते हैं उन्हें पलटा दूंगा॥ ४२। मारे
हुओं को और बंधुओं के लोहू से और शत्रु पर पलटा लेने के आरंभ से
मैं अपने बाणों को रुधिर से उन्मत्त करूंगा और मेरी तलवार मांस
खायगी॥ ४३। हे जातिगणों उस के लोगों के साथ आनन्द से गाओ
क्योंकि वुह अपने सेवकों के लोहू का पलटा और अपने शत्रुन से प्रतिफल
लेगा अपने देश और अपने लोगों पर दयाल होगा॥ ४४। तब मूसा
और नून के बेटे यहूसूअ ने आके इस गीत की सारी बातें लोगों को कह
सुनाई॥ ४५। और जब मूसा ये सारी बातें इसराएल के सन्तानों को
कह चुका॥ ४६। तब उस ने उन्हें कहा कि उन सारी बातों से जिन की
मैं आज के दिन तुम्हों में साक्षी देता हूं अपने मन लगाओ और अपने
बालकों को कहो कि पालन करके इस व्यवस्था की सारी बातों को मानें॥
४७। क्योंकि वुह तुम्हारे लिये बृथा नहीं इस कारण कि तुम्हारा
जीवन है और इसी बात के लिये इस देश में जिस के अधिकारी होने
तुम यरदन पार जाते हो अपनी आयुर्दाय बढ़ाओगे॥ ४८। और

परमेश्वर ने उसी दिन मूसा से यह बचन कहा॥ ४९। अबरीम के इस पर्व्वत पर नबू पहाड़ी पर मोअब के देश में जो अरीहू के साम्ने है चढ़ जा और कनआन देश को देख जिसे मैं इसराएल के सन्तान को अधिकार में देता हूं॥ ५०। और उसी पहाड़ी पर जिस पर तू जाता है मर जा और अपने लोगों में बटुर जा जैसे तेरा भाई हारून हूर पहाड़ पर मर गया और अपने लोगों में बटुर गया॥ ५१। इस कारण कि तुम्हों ने इसराएल के सन्तान के मध्य कादिश के झगड़े के पानी पर सीन के अरण्य में मेरा अपराध किया क्योंकि तुम ने इसराएल के सन्तान के मध्य में मुझे पवित्र न किया॥ ५२। तथापि तू आगे के देश को देख लेगा परंतु जो देश मैं इसराएल के सन्तानों को देता हूं तू उस में न जायगा॥

३३ तेतीसवां पर्व्व।

और यह वुह आशीष है जिसे ईश्वर के जन मूसा ने अपने मरने से आगे इसराएल के सन्तानों को आशिष दिया॥ २। और कहा कि परमेश्वर सीना से आया और शईर से प्रगट हुआ और फ़ारान पहाड़ से उन पर चमक उठा और वुह दस सहस्र सिद्धों के साथ आया उस के दहिने हाथ से एक आग की व्यवस्था उन के लिये निकली॥ ३। हां उस ने लोगों से प्रेम किया उस के समस्त सिद्ध तेरे हाथ में और वे तेरे चरणों के पास बैठ गये और तेरी बातों से पावेंगे॥ ४। मूसा ने हम से अर्थात् यअ़क़ूब की मंडली के अधिकार के लिये एक व्यवस्था कही॥ ५। और जब लोगों के प्रधान इसराएल की गोष्ठी एकट्ठे थे वुह यशरून का राजा था॥ ६। रूबिन जीये और न मरे और उस के जन थोड़े न हों॥ ७। और यहूदाह के लिये उस ने कहा कि हे परमेश्वर यहूदाह का शब्द सुन और उसे उस के लोगों में पहुंचा उस के हाथ उस के लिये बहुत होवें और तू बैरियों से सहायक हो॥

८। और उस ने लावी के विषय में कहा कि तेरा तमीम और तेरा औरीम तेरे धर्ममय के साथ होवे जिसे तू ने मस्सः में परखा और जिस के साथ तू मरीबः के पानीयों पर झगड़ा॥ ९। जिस ने अपनी माता पिता से

कहा कि मैं ने उसे न देखा और उस ने अपने भाइयों को न माना न
अपने बालकों को पहिचाना क्योंकि उन्हों ने तेरे बचन को माना और
तेरी बाचा को धारण किया॥ १०। वे तेरे बिचार यअ़क़ूब को और
तेरी व्यवस्था इसराएल को सिखावें वे तेरी नासिका के आगे धूप रक्खें
और होम के पूरे बलिदान तेरी बेदी पर धरें॥ ११। हे परमेश्वर उस की
संपत्ति पर आशीष दे और उस के हाथों के कामों को ग्राह्य कर और
जो उस के बिरोध में उठे और जो उस्से बैर रक्खे उन की कटि बेधडाल
जिसतें वे फिर न उठें॥ १२। उस ने बिनयमीन के बिषय में कहा कि
परमेश्वर का प्रिय उस के पास चैन से रहेगा उसे दिन भर आड़ करेगा
और वुह उस के दोनों कांधों के बीच रहेगा॥ १३। और उस ने यूसुफ़
के बिषय में कहा कि उस की भूमि पर ईश्वर की आशीष होगी स्वर्ग की
बहु मूल्य बस्तुन के लिये और ओस के कारण और गहिराव के कारण
जो नीचे झुका है॥ १४। और सूर्य्य के निकाले हुए अच्छे फलों में
से और चन्द्रमा की निकाली हुई अच्छी बस्तुन के कारण॥ १५। प्राचीन
पहाड़ों की श्रेष्ठ बस्तुन के लिये दृढ़ टीलों की बहु मूल्य बस्तुन के कारण॥
१६। और पृथिवी की बहु मूल्य बस्तें और उस की भरपूरी के कारण
और उस की भलाई के लिये जो झाड़ी में रहता था यूसुफ़ के सिर पर
उतरे और उस के मस्तक पर जो अपने भाइयों से अलग किया गया था॥
१७। उस का बिभव उस के बैल के पहिलौंठे की नाईं और उस के सींग
गैंडे के सींग वुह उन्हीं से लोगों को पृथिवी के सिवाने लों रेलेगा और वे
इफ़रायम के दस सहस्र और वे मुनस्सी के दस सहस्र॥ १८। और उस
ने जबूलून के बिषय में कहा कि हे जबुलून अपने बाहर जाने में आनंद
हो और इशकार तू अपने तंबूओं में॥ १९। वे लोगों को पहाड़
पर बुलावेंगे और वहां धर्म के बलिदान चढ़ावेंगे क्योंकि वे समुद्रों की
अधिकाई को और भंडारों को जो बालू में छिपे हैं चूसेंगे॥ २०।
और उस ने जद के बिषय में कहा कि धन्य है वुह जो जद को
फैलाता है वुह सिंह के समान पड़ा रहता है और सिर की चांदी
को भुजा सहित फाड़ता है॥ २१। उस ने पहिला भाग अपने
लिये ठहराया उस ने वहां व्यवस्थादायक के भाग को चुना और

वुह लोगों के प्रधानों के साथ आया वुह परमेश्वर के न्याय को और उस के बिचार को इसराएल से बजा लाया॥

२२। और दान के बिषय में कहा कि दान एक सिंह का बच्चा है जो बसन से उछलेगा॥ २३। और उस ने नफ़ताली के बिषय में कहा कि हे नफ़ताली तू अनुग्रह से तृप्त और परमेश्वर की आशीष से पूर्ण तू पश्चिम और दक्षिण का अधिकारी हो॥ २४। और उस ने यशर के बिषय में कहा कि यशर बालकों की आशीष पावे और अपने भाइयों का ग्राह्य होवे और अपना पांव तेल में डुबोवे॥ २५। तेरे जूते के तले लोहा और पीतल होगा और तेरे समय के समान तेरा बल होगा॥ २६। यशूरून के ईश्वर के समान कोई नहीं जो स्वर्ग पर तेरी सहाय के लिये चढ़ता है और उस की प्रतिष्ठा में आकाश पर॥ २७। सनातन का ईश्वर तेरा शरण है और नीचे सनातन की भुजा और बैरियों को तेरे आगे से वुह हांकेगा और कहेगा कि उन्हें नाश कर॥ २८। तब इसराएल अकेला चैन से रहेगा यअकूब का सोता अन्न और मदिरा की भूमि पर होगा उस के आकाश से ओस पड़ेगी॥ २९। हे इसराएल तू धन्य है लोग तुझ सा कौन है कि परमेश्वर ने तुझे बचाया है वुह तेरी सहाय के लिये ढाल और तेरी बड़ाई की तलवार है तेरे शत्रु तेरे बश में होंगे और तू उन के ऊंचे स्थानों को लताड़ेगा।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब॥

और मूसा मोअब के चौगानों से नबू के पहाड़ पर पिसगः की चोटी पर जो यरीहो के साम्ने है चढ़ गया और परमेश्वर ने दिखाया जिलिअद के समस्त देश दान लों॥ २। और समस्त नफ़ताली और इफ़रायम और मुनस्सी के देश और यहूदाह के समस्त देश अत्यंत समुद्र लों॥ ३। और दक्षिण और यरीहो के चौगान की नीचाई जो खजूर के पेड़ का नगर है सुग़र लों उस को दिखाया॥ ४। और परमेश्वर ने उसे कहा कि यह वुह देश है जिस की मैं ने अबिरहाम और इज़हाक़ और यअकूब से किरिया खाके कहा कि मैं उसे तेरे बंश को दूंगा मैं ने तुझे आंखों से दिखा दिया परंतु तू उधर पार न जायगा॥ ५। सो

परमेश्वर का सेवक मूसा परमेश्वर के बचन के समान वहां मोअब के देश
में मर गया॥ ६। और उस ने उसे मोअब के देश की तराई में बैत-
फ़ाऊर के साम्ने गाड़ा पर आज के दिन लों कोई उस की समाधि को नहीं
जानता॥ ७। और मूसा अपने मरने के समय में एक सौ बीस बरस
का था उस की आखें धुंधली न हुईं और उस का स्वाभाविक बल
न घटा॥ ८। और इसराएल के संतानों ने मूसा के लिये मोअब के
चौगानों में तीस दिन लों बिलाप किया और मूसा के लिये उन के रोने
पीटने के दिन समाप्त हुए॥ ९। और नून का बेटा यहूसूअ बुद्धि के
आत्मा से भर गया क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रक्खे थे और
इसराएल के संतान ने उसे माना और जैसा परमेश्वर ने मूसा को कहा
था उस ने वैसा ही किया॥ १०। और तब से इसराएल में मूसा के
समान कोई आगमज्ञानी फेर न हुआ जिसे परमेश्वर आम्ने साम्ने जानता
था॥ ११। उन सब अचंभित और आश्चर्य्यित में फ़िरऊन और उस
के सब सेवकों के और उस के समस्त देश में परमेश्वर ने मिस्र के
देश में उसे भेजा था॥ १२। और समस्त सामर्थी हाथ और समस्त
बड़े बड़े भय में जो मूसा ने समस्त इसराएल के आगे दिखाये।